करेंट अफेयर्स की राष्ट्रीय पत्रिका

परीक्षा मंथन®

empowering aspirants since 1984

Buy ONLINE
manthanprakashan.in
www.instamojo.com/manthanprakashan
Follow us on Facebook
www.facebook.com/pariksh amanthan
www.facebook.com/groups/pariksh amanthan

VDO
ग्राम विकास अधिकारी

हिंदी परिज्ञान एवं लेखनयोग्यता
(सामान्य हिन्दी)

भाग I

अद्यतन सामान्य ज्ञान पर आधारित करेंट अफेयर्स का अंक भाग IV परीक्षा तिथि घोषित होने से एक माह पूर्व प्रकाशित होगा

परीक्षा मंथन

(अतिरिक्तांक)

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित 'ग्राम विकास अधिकारी' परीक्षा हेतु

हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता (सामान्य हिन्दी)

V.D.O.

भाग-I

ग्राम विकास अधिकारी विशेषांक

नवीनतम् पाठ्यक्रम पर आधारित

ऑनलाइन बिक्री हेतु

पाठकों,

यदि आपको ऑनलाइन पुस्तकें मंगवानी हैं तो निम्न वेबसाइट पर लॉगइन करें।

manthanprakashan.in अथवा

www.instamojo.com/manthanprakashan

Paytm : 8299267967

Email:manthan.prakashan@gmail.com

Facebook: www.facebook.com/parikshamanthan

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 7526073820

मूल्य : रुपये 150.00

(एक सौ पचास रुपये मात्र)

मंथन प्रकाशन

प्रधान कार्यालय : 7R/5 कैलाशपुरी कालोनी, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइंस, इलाहाबाद-211001, मोबाइल नं. : 09335151971

Pariksha Manthan

परीक्षा मंथन®

हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता (सामान्य हिन्दी)

संपादक :
अनिल अग्रवाल

प्रधान कार्यालय :
मंथन प्रकाशन 7R/5 कैलाशपुरी कालोनी, ताशकन्द मार्ग (स्प्रिंग डेल नर्सरी स्कूल के सामने),
सिविल लाइंस, इलाहाबाद, पिनकोड : 211001

संस्करण : 2018-19

मूल्य : ₹ 150/- (एक सौ पचास रुपए मात्र)

कॉपीराइट © प्रकाशकाधीन

website : www.manthanprakashan.in
email : manthan.prakashan@gmail.com
www.facebook.com/parikshamanthan

वैधानिक सूचना

संपादक की लिखित अनुमति के बिना परीक्षा मंथन 'हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता' (सामान्य हिन्दी) से किसी सामग्री का न तो अनुकरण किया जा सकता है और न ही इसे किसी रूप में पुनः किसी माध्यम द्वारा प्रकाशित या प्रसारित किया जा सकता है। परीक्षा मंथन 'हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता' (सामान्य हिन्दी) में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। समस्त वाद-प्रतिवाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायिक क्षेत्राधिकार के अधीन ही मान्य होंगे।

Pariksha Manthan

परीक्षा मंथन

सम्पादकीय

ग्राम विकास अधिकारी (V.D.O.) परीक्षा विशेषांक
'परीक्षा मंथन हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता' (सामान्य हिन्दी)

प्रिय पाठकों,

'परीक्षा मंथन हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता' (सामान्य हिन्दी) आपके हाथों में है। इस अतिरिक्तांक को हमने विशेष रूप से आगामी ग्राम विकास अधिकारी (VDO) परीक्षा को ध्यान में रखकर विशेषज्ञों द्वारा तैयार करवाया है। इस परीक्षा के प्रश्नपत्र का पहला खण्ड (प्रश्न 50, अंक 100) 'हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता' पर केन्द्रित होगा, जिसमें आपका अच्छा प्रदर्शन निर्णायक साबित हो सकता है। इस खंड में अभ्यर्थियों से हिन्दी भाषा के ज्ञान, समझ तथा लेखन योग्यता से संबंधित प्रश्न पूछे जाएंगे। पूछे जाने वाले प्रश्न अलंकार, लोकोक्तियों एवं मुहावरों, अनेकार्थी शब्दों, विलोम, तत्सम एवं तद्भव, रस, समास, पर्यायवाची, संधि, वाक्यांशों के लिए एक शब्द निर्माण एवं वाक्य संशोधन आदि पर केन्द्रित होंगे। इसी पाठ्य-सामग्री को ध्यान में रखकर हमने यह अतिरिक्तांक विशेषज्ञों द्वारा तैयार करवाया है, जो कि परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है। इसकी सबसे खास बात यह है कि इसमें हमने 'गागर में सागर' भरने का काम किया है। यानी छोटे स्वरूप में महत्त्वपूर्ण सामग्री को प्रचुरता में दिया गया है। इस अतिरिक्तांक की प्रकृति भले ही वस्तुनिष्ठ है, किंतु प्रतियोगियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अध्याय के आरंभ में विषय को समझाने के लिए पर्याप्त पाठ्य-सामग्री भी विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत की गई है। विषयों को व्यावहारिक ढंग से समझाने का प्रयास उदाहरणों के माध्यम से किया गया है।

परीक्षा योजना

प्रिय पाठकों,

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (UPSSSC) द्वारा ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी (VDO) और समाज कल्याण पर्यवेक्षक के 1953 पदों की भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा चुके हैं। परीक्षा तिथि की घोषणा किसी भी समय की जा सकती है। यह प्रस्तावित परीक्षा वस्तुनिष्ठ प्रकार (Objective Type) की होगी। प्रश्नपत्र 300 अंकों का होगा, जिसमें 50-50 प्रश्नों के तीन खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड 100 अंकों का होगा, जिसमें प्रत्येक प्रश्न दो अंक का होगा। पहला खण्ड 'हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता' (प्रश्न 50, अंक 100), दूसरा खण्ड 'सामान्य बुद्धि परीक्षण' (प्रश्न 50, अंक 100) एवं तीसरा खण्ड 'सामान्य जानकारी' (प्रश्न 50, अंक 100) का होगा। इन तीनों खण्डों पर केन्द्रित हमारे अतिरिक्तांक बाजार में उपलब्ध हैं, जबकि करेंट अफेयर्स पर केन्द्रित हमारा चौथा अतिरिक्तांक परीक्षा तिथि की घोषणा के ठीक बाद उपलब्ध होगा। यह चौथा अतिरिक्तांक 'सामान्य जानकारी' पर केन्द्रित अतिरिक्तांक के पूरक जैसा होगा। कुल 150 प्रश्नों के इस समग्र प्रश्नपत्र को आपको दो घंटे में हल करना होगा। स्मरण रहे कि इस प्रस्तावित परीक्षा में 'निगेटिव मार्किंग' (ऋणात्मक अंक) दिए जाने का भी प्रावधान है। प्रश्न का गलत उत्तर देने पर प्रति प्रश्न ऋणात्मक अंक 0.5 होंगे।

परीक्षार्थियों के सम्मुख यह एक अच्छा अवसर है। जहां पदों की संख्या अच्छी है, वहीं परीक्षा की तैयारी के लिए आपके पास पर्याप्त समय भी है। नियमित तैयारी से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। प्रस्तावित परीक्षा को लेकर गंभीर होकर तैयारी शुरू कर दें। प्रत्येक विषय पर प्रतिदिन पर्याप्त समय दें तथा अनर्गल एवं अप्रासंगिक पाठ्य-सामग्री से बचते हुए स्वयं को परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री पर केन्द्रित रखें। परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री को हमने अपने उन चार अतिरिक्तांकों में संजो कर प्रस्तुत किया है, जो इस प्रस्तावित परीक्षा को ध्यान में रखकर विशेषज्ञों द्वारा तैयार करवाए गए हैं। इनमें से तीन—(1) हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता, (2) सामान्य बुद्धि परीक्षण तथा (3) सामान्य जानकारी पर केन्द्रित अतिरिक्तांक बाजार में उपलब्ध हैं, जबकि चौथा करेंट अफेयर्स पर केन्द्रित अतिरिक्तांक परीक्षा तिथि की घोषणा के बाद शीघ्र ही आपको उपलब्ध कराया जाएगा, जिसमें परीक्षोपयोगी करेंट-अफेयर्स का निचोड़ होगा। ये चारों अतिरिक्तांक आपकी शत-प्रतिशत सफलता का पथ प्रशस्त करेंगे। अपनी तैयारी में पढ़ने के साथ-साथ अभ्यास और समय प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान दें। पिछली परीक्षाओं के प्रश्नपत्र नियमित रूप से हल करें तथा ऐसा करते हुए आपका समय प्रबंधन ऐसा होना चाहिए कि आप दो घंटे में पूरा प्रश्नपत्र हल कर लें। हमेशा याद रखें—`Practice Makes a Man Perfect'.

अनिल अग्रवाल

संपादक

Pariksha Manthan

अतिरिक्तांक

परीक्षा मंथन

हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता
[सामान्य हिन्दी]

विषय-प्रवेश

- सूची ...1-4
- उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ग्राम विकास अधिकारी (VDO) भर्ती परीक्षा, 2016 ...5-8
- उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ग्राम विकास अधिकारी (VDO) भर्ती परीक्षा, 2015 ...9-13

1. अलंकार ...14-18
2. रस ...19-21
3. समास ...22-31
4. पर्यायवाची या समानार्थी शब्द ...32-47
5. विलोम शब्द ...48-61
6. तत्सम एवं तद्भव ...62-70
7. संधियां ...71-80
8. वाक्यांशों (अनेक शब्दों) के लिए एक शब्द ...81-101
9. लोकोक्तियां एवं मुहावरे ...102-131
10. वाक्य अशुद्धि और संशोधन ...132-141
11. अनेकार्थी शब्द ...142-146
12. छन्द ...147-150
13. भाषा एवं बोलियां : एक परिचय ...151-156

◆◆◆

Pariksha Manthan

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग
ग्राम विकास अधिकारी (VDO) भर्ती परीक्षा, 2016

परीक्षा तिथि : 05-06-2016

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

भाग-I : हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता

निर्देश : (1-5) : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सूरदास के गुरु कौन थे?

(a) रामानन्द (b) रामदास

(c) वल्लभाचार्य (d) विट्ठलनाथ

उत्तर (c)

व्याख्या : सूरदास के गुरु वल्लभाचार्य थे, जिनसे उन्हें पुष्टि मार्ग की दीक्षा मिली। वल्लभाचार्य से ही सूरदास को कृष्णालीला के पद गाने की प्रेरणा मिली और वे कृष्ण भक्ति में लीन हो गए। वल्लभाचार्य कृष्ण के उपासक थे। गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी वह मोक्ष प्राप्ति के पक्षधर थे। वल्लभाचार्य से प्रेरणा प्राप्त कर सूरदास ने अपने काव्य के माध्यम से कृष्ण भक्ति का खूब प्रचार-प्रसार किया। सूरदास की प्रमुख रचनाएं हैं—'सूरसागर', 'सूरसारावली' एवं 'साहित्यलहरी'।

2. छंद पढ़ते समय आने वाले विराम को क्या कहते हैं?

(a) गति (b) यति

(c) तुक (d) गण

उत्तर (b)

व्याख्या : छंद के संदर्भ में यति का अर्थ है रुकना (विराम)। छंद के प्रवाह या लय को बनाए रखने के लिए जहां रुकना अनिवार्य हो, वहां रुकना ही 'यति' है। 'यति' छंद के नौ अंगों में से एक है।

3. जहां वाक्य की गति अन्तिम रूप ले ले, विचार के तार टूट जाएं, वहां किस चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(a) योजक (b) अल्पविराम

(c) उद्धरण चिह्न (d) पूर्ण विराम

उत्तर (d)

व्याख्या : पूर्णविराम का अर्थ है, पूरी तरह रुकना या ठहरना। जहां वाक्य की गति अंतिम रूप ले ले, विचार के तार एकदम टूट जाएं, वहां पूर्णविराम का प्रयोग होता है। यह भी कह सकते हैं कि प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

4. अमर्ष क्या है?

(a) एक काव्य दोष (b) एक संचारी भाव

(c) एक काव्य गुण (d) एक अलंकार

उत्तर (b)

व्याख्या : 'अमर्ष' का शाब्दिक अर्थ है—'अपनी अवज्ञा या तिरस्कार आदि से उत्पन्न क्षोभ।' यह शब्द आवेश, क्रोध एवं असहिष्णुता के लिए भी प्रयुक्त होता है। यह एक संचारी भाव है, क्योंकि यह मन का एक प्रकार का विकार है, जो कि संचारी भाव की श्रेणी में आता है।

5. कबीरदास की भाषा कौन-सी थी?

(a) ब्रज (b) खड़ी बोली

(c) कन्नौजी (d) सधुक्कड़ी

उत्तर (d)

व्याख्या : भक्ति आंदोलन के प्रभावशाली संत, महान समाज सुधारक एवं निर्गुण ब्रह्म के उपासक कबीर ने अपनी रचनाओं में 'सधुक्कड़ी' भाषा का प्रयोग किया, जिसमें ब्रज, अवधी, पंजाबी, राजस्थानी, फारसी आदि अनेक बोलियों और भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है।

निर्देश : (प्रश्न संख्या 6-7) : निम्नलिखित मुहावरों के लिए उचित विकल्प चुनिए।

6. ''द्रौपदी का चीर'' का अर्थ है—

(a) नारी का अपमान करना

(b) शर्मनाक कार्य

(c) कभी समाप्त न होना

(d) सुंदर स्त्री

उत्तर (c)

व्याख्या : हिंदी में कुछ ऐसे मुहावरे प्रयुक्त होते हैं, जिनका संबंध प्राचीन पौराणिक अथवा ऐतिहासिक गाथाओं से है। इन मुहावरों को अंतर्कथा संबंधी मुहावरा कहा जाता है। 'द्रौपदी का चीर' एक ऐसा ही मुहावरा है, जिसका अर्थ है—'कभी समाप्त न होना'।

Parikha Manthan

7. ''कूप मंडूक होना'' का अर्थ है–

(a) कुएं में गिरना

(b) मूर्ख होना

(c) मात देना

(d) सीमित ज्ञान या सीमित अनुभव होना

उत्तर (d)

व्याख्या : सीमित ज्ञान या सीमित अनुभव के लिए 'कूप-मंडूक होना' मुहावरे का इस्तेमाल किया जाता है।

8. इस प्रश्न के वाक्य के पहले और अंतिम भाग को क्रमशः (1) और (6) की संख्या दी गई है। बीच में आने वाले अंश को चार भागों में बांटकर (य), (र), (ल), (व) संख्या दी गई है। यह चारों उचित क्रम में नहीं है। इन चारों को उचित क्रम में लगाइए। ताकि एक शुद्ध वाक्य का निर्माण हो।

(1) सामाजिक जीवन में

(य) क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है

(र) मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुंचाए जाने वाले बहुत से

(ल) यदि क्रोध न हो तो

(व) कष्टों की चिर निवृत्ति का

(6) उपाय ही न कर सके।

(a) य ल र व (b) व य र ल

(c) र य ल व (d) ल र व य

उत्तर (a)

व्याख्या : उचित क्रम में लगाने पर सही वाक्य बनेगा— 'सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है, यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुंचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर निवृत्ति का उपाय ही न कर सके।'

9. दिये गये वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए।

पूरब और उत्तर के बीच की दिशा।

(a) आग्नेय (b) ईशान

(c) वायव्य (d) नैऋत्व

उत्तर (b)

व्याख्या : 'ईशान' शब्द 'पूरब और उत्तर के बीच की दिशा' के लिए प्रयुक्त होता है। इस शब्द के अन्य अर्थ हैं—स्वामी, ईश्वर एवं ज्योति।

10. ''वलय'' शब्द का अर्थ चिह्नित कीजिए।

(a) वृक्ष की छाल

(b) गोलाकार घेरा

(c) मृग की छाल

(d) आवरण

उत्तर (b)

व्याख्या : गोलाकार घेरा के लिए वलय शब्द प्रयुक्त होता है। यह संस्कृत भाषा का शब्द है।

11. नीचे दिए गए शब्दों में से अव्ययीभाव समास का चयन कीजिए।

(a) पाप-पुण्य (b) आजीवन

(c) घुड़सवार (d) पीताम्बर

उत्तर (b)

व्याख्या : 'आजीवन' अव्ययीभाव समास है। जिस सामासिक शब्द का प्रथम पद प्रधान हो और अव्यय भी हो, तो उसे अव्ययीभाव समास कहा जाता है। इसके अन्य उदाहरण हैं— यथाक्रम, यथासंभव, प्रतिदिन आदि।

12. ''ठीक समय पर आ जाना'' में कौन-सा कारक है?

(a) कर्म (b) करण

(c) सम्प्रदान (d) अधिकरण

उत्तर (d)

व्याख्या : यहां 'अधिकरण' कारक है, जिसके चिह्न 'पर' और 'में' होते हैं।

13. ''मंदिर-मंदिरा'' युग्म का उपयुक्त अर्थ वाला युग्म कौन सा होगा?

(a) पूजाघर-पुजारी (b) घर-सवारी

(c) गुफा-बड़ी गुफा (d) देवालय-अश्वशाला

उत्तर (d)

व्याख्या : 'मंदिर' का शाब्दिक अर्थ देवालय होता है, जबकि 'मंदिरा' शब्द 'अश्वशाला' (घुड़साल) के लिए प्रयुक्त होता है।

14. निम्नलिखित में मिश्र वाक्य है–

(a) मेरे आते ही वर्षा होने लगी।

(b) उसके जाने के बाद वर्षा होने लगी।

(c) वह घर से निकला और वर्षा होने लगी।

(d) ज्यों ही वह घर से निकला, वर्षा होने लगी।

उत्तर (d)

व्याख्या : 'ज्यों ही वह घर से निकला, वर्षा होने लगी', मिश्र वाक्य है। जिस वाक्य में एक वाक्य प्रधान हो और अन्य वाक्य उसके अधीन हों या उस पर आश्रित हों, उसे मिश्र वाक्य कहा जाता है।

निर्देश : (प्रश्न संख्या 15-18) : काव्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Pariksha Manthan

आज बरसों बाद उठी है इच्छा
हम कुछ कर दिखाएं
एक अनोखा जश्न मनाएं
अपना कोरा अस्तित्व जमाएं
आज बरसों बाद सूखे पत्तों पर
वसंत ऋतु आई है
विचार रूपी कलियों पर
बहार खिल आई है
गहनता की फसल लहलहाई है
शायद इसी कारण
आज बरसों बाद
उठी है इच्छा हम कुछ कर दिखाएं
अपना कोरा अस्तित्व जमाएं।

15. कवि के मन में इच्छा उत्पन्न हुई है.....।

(a) कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने की
(b) मन से बात करने की
(c) खुशियां मनाने की
(d) अपनी पहचान बनाने की

उत्तर (a)

व्याख्या : काव्यांश से ध्वनित हो रहा है कि कवि के मन में कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने की इच्छा उत्पन्न हुई है।

16. 'सूखे पत्ते' प्रतीक हैं.....।

(a) पतझड़ के (b) अकाल के
(c) मन के सूनेपन के (d) शुष्कता के

उत्तर (c)

व्याख्या : काव्यांश में 'सूखे पत्ते' कवि के मन के सूनेपन को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

17. किन कलियों पर बहार का आगमन हुआ है?

(a) भाव रूपी कलियों पर
(b) विचारों की कलियों पर
(c) छोटी नई कलियों पर
(d) शुष्क कलियों पर

उत्तर (b)

व्याख्या : काव्यांश के अनुसार 'विचारों की कलियों पर' बहार का आगमन हुआ है।

18. 'गहनता की फसल' से कवि का क्या आशय है?

(a) विचारों में परिपक्वता (b) अपना अस्तित्व
(c) लहलहाती फसलें (d) विचारों की गंभीरता

उत्तर (a)

व्याख्या : 'गहनता की फसल' से कवि का आशय 'विचारों में परिपक्वता' से है, जिससे कुछ कर दिखाने की इच्छा जागी है।

19. रिक्त स्थान हेतु दिए गए विकल्पों में उचित विकल्प चुनिए।

रामू की.....केवल इसलिए हुई, क्योंकि राजीव उसकी.....अधिक बुद्धिमान है।

(a) अपेक्षा अपेक्षा (b) अपेक्षा, उपेक्षा
(c) उपेक्षा, अपेक्षा (d) उपेक्षा, उपेक्षा

उत्तर (c)

व्याख्या : 'उपेक्षा' और 'अपेक्षा' उचित विकल्प हैं, जो कि वाक्य को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं।

20. निम्न पंक्ति में सही अलंकार का चयन कीजिए।

पानी विच मीन प्यासी।
मोहि सुनि सुनि आवै हांसी॥

(a) विभावना (b) अतिशयोक्ति
(c) विशेषोक्ति (d) उपमा

उत्तर (c)

व्याख्या : दी गई पंक्ति में 'विशेषोक्ति' अलंकार है। प्रबल कारणों के होते हुए भी जब कार्य सिद्ध न होने का वर्णन किया जाए, तब 'विशेषोक्ति' अलंकार होता है।

21. निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएं हैं?

(a) राम, रामचरितमानस, गंगा
(b) कृष्ण, कामायनी, मिठास
(c) लखनऊ, आम, बुढ़ापा
(d) ममता, वकील, पुस्तक

उत्तर (a)

व्याख्या : विकल्प (a) में सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएं हैं। जो संज्ञाएं स्थान, व्यक्ति और वस्तु का बोध कराती हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञाएं कहलाती हैं।

22. निम्नलिखित में क्या 'गंगा' का पर्यायवाची नहीं है?

(a) मंदाकिनी (b) भागीरथी
(c) कालिन्दी (d) सुरसरिता

उत्तर (c)

व्याख्या : 'कालिन्दी', यमुना का पर्यायवाची है, जबकि शेष विकल्प 'गंगा' के पर्यायवाची हैं।

23. सही वर्तनी शब्द का चयन कीजिए।

(a) अवन्नति (b) श्रृंगार

Pariksha Manthan

(c) मुशकिल (d) मात्रभूमि

उत्तर (b)

व्याख्या : दिए गए दिए गए विकल्पों में 'शृंगार' शब्द की वर्तनी शुद्ध है। अन्य विकल्पों का सही स्वरूप है—अवनति, मुश्किल, मातृभूमि।

24. समूहार्थक शब्द चिह्नित कीजिए।

(a) पुरुष (b) स्त्री

(c) मनुष्य (d) भीड़

उत्तर (d)

व्याख्या : 'भीड़' शब्द समूह के लिए प्रयुक्त होता है, अतः यह समूहार्थक शब्द है। अन्य विकल्प समूह का बोध नहीं करा रहे हैं।

25. ''आंशिक'' शब्द में प्रत्यय क्या है?

(a) अ (b) क

(c) इक (d) शिक

उत्तर (c)

व्याख्या : प्रत्यय उस अक्षर या अक्षर समूह को कहते हैं, जो शब्द के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाते हैं। 'आंशिक' में प्रत्यय 'इक' है।

26. नीचे दिए गए वाक्य के त्रुटिपूर्ण खण्ड को चिह्नित कीजिए, यदि कोई त्रुटि न हो तो (d) भाग को चिह्नित कीजिए।

पुलिस द्वारा चोरी / का माल बरामद /

(a) (b)

हो गया है / कोई त्रुटि नहीं /

(c) (d)

उत्तर (a)

व्याख्या : दिए गए वाक्य में त्रुटिपूर्ण खण्ड (a) है। सही वाक्य है—'चोरी का माल पुलिस द्वारा बरामद हो गया है।'

27. वधूर्मि का सन्धि विच्छेद है–

(a) वधू + उर्मि (b) वधू + ऊर्मि

(c) वधु + उर्मि (d) वधु + उर्मि

उत्तर (b)

व्याख्या : वधू+ऊर्मि सही विकल्प है। वधूर्मि (ऊ+ऊ=ऊ) में दीर्घ संधि है। ध्यातव्य है कि जब दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं, तब 'दीर्घ संधि' होती है। वेदान्त, शिवालय, परीक्षार्थी, महाशय, कपीन्द्र, हरीश, यतीन्द्र, नदीश, सूक्ति एवं लघूर्मि आदि दीर्घ संधि के उदाहरण हैं।

28. भिन्नार्थक शब्द का चयन कीजिए।

(a) पावक (b) अनिल

(c) अनल (d) कृशानु

उत्तर (b)

व्याख्या : दिए गए विकल्पों में 'अनिल' शब्द भिन्नार्थक है। यह वायु का पर्यायवाची है। अन्य तीन विकल्प-पावक, अनल एवं कृशानु 'अग्नि' के पर्यायवाची हैं।

29. ''हर्ष'' का विलोम बताएं–

(a) खुशी (b) विषाद

(c) उल्लास (d) आनन्द

उत्तर (b)

व्याख्या : 'हर्ष' का विलोम 'विषाद' होता है। हर्ष शब्द का अर्थ प्रसन्नता या खुशी है, जबकि विषाद का शाब्दिक अर्थ दुख है।

30. गंदला, मैला, मलिन किस शब्द के पर्यायवाची हैं?

(a) प्रलय (b) धवल

(c) पंकिल (d) पामर

उत्तर (c)

व्याख्या : गंदला, मैला एवं मलिन 'पंकिल' के पर्यायवाची हैं। 'पंकिल' विशेषण है। अन्य विकल्पों में 'प्रलय' का अर्थ 'नाश', 'धवल' का अर्थ 'उजला' तथा 'पामर' का अर्थ 'दुष्ट' होता है।

◆◆◆

Pariksha Manthan

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग
ग्राम विकास अधिकारी (VDO) भर्ती परीक्षा, 2015

परीक्षा तिथि : 21-02-2016

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

भार-1 : हिंदी परिज्ञान और लेखन योग्यता

1. ''कर्कश'' का विलोम, नीचे दिए गए विकल्पों में से चुनें।

(a) कठोर (b) विवेकी

(c) मधुर (d) विनम्र

उत्तर (c)

व्याख्या : कर्कश के शाब्दिक अर्थ—कठोर, निर्दय एवं अप्रिय आदि हैं। इसका विलोम 'मधुर' होगा।

निर्देश प्र. सं. (2-3) : वाक्यांशों के लिए एक उचित विकल्प चुनें—

2. जो इन्द्र पर विजय प्राप्त कर चुका हो।

(a) इन्द्रजेय (b) इन्दु

(c) इन्द्रजीत (d) जितेन्द्रिय

उत्तर (c)

व्याख्या : 'इन्द्रजीत' उसे कहते हैं, जिसने इन्द्र पर विजय प्राप्त की हो।

3. उच्च कुल में पैदा व्यक्ति।

(a) धनी (b) सवर्ण

(c) श्रेष्ठ (d) कुलीन

उत्तर (d)

व्याख्या : उच्च कुल में जन्म लेने वाला 'कुलीन' कहलाता है।

4. ''ईश्वर तुम्हें दीर्घायु दे''। अर्थ के आधार पर वाक्य का भेद बताएं।

(a) प्रश्नवाचक वाक्य (b) विस्मयवाचक वाक्य

(c) इच्छावाचक वाक्य (d) निषेधवाचक वाक्य

उत्तर (c)

व्याख्या : ''ईश्वर तुम्हें दीर्घायु दे।'' इस वाक्य से आशीर्वाद का बोध हो रहा है, अतएव यह 'इच्छावाचक' वाक्य है। वह वाक्य, जो इच्छा, स्तुति या आशीर्वाद का बोध कराता है, 'इच्छावाचक' वाक्य कहलाता है।

5. ''श्रीगणेश'' का विलोम शब्द है—

(a) श्री राधा (b) इति श्री

(c) विनाश (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b)

व्याख्या : 'इतिश्री', 'श्रीगणेश' का विलोम है। 'श्रीगणेश' शुरुआत करने के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि 'इतिश्री' समाप्ति के लिए।

6. ''फूल'' का पर्यायवाची नहीं है—

(a) सुमन (b) पुष्प

(c) तनुजा (d) कुसुम

उत्तर (c)

व्याख्या : 'तनुजा' पुत्री का पर्यायवाची है। शेष विकल्प फूल के पर्यायवाची हैं।

7. किस रस को रसराज कहा जाता है?

(a) वीर रस (b) हास्य रस

(c) श्रृंगार रस (d) शांति रस

उत्तर (c)

व्याख्या : 'श्रृंगार रस' को 'रसराज' के रूप में अभिहित किया जाता है। श्रृंगार रस को अधिक व्यापक और गहरा माना जाता है। श्रृंगार रस का आधार स्त्री-पुरुष का आकर्षण है, जिसे शास्त्रीय भाषा में रति स्थायी भाव कहते हैं।

8. मन रे मन कागद का पुतला।
लागै बूंद बिनसि जाय छिन में,
गरब करे क्या इतना।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है?

(a) भक्ति रस (b) श्रृंगार रस

(c) करुण रस (d) शांत रस

उत्तर (d)

व्याख्या : दी गई पंक्तियों में शांत रस है। शाम या निर्वेद नामक स्थायी भाव का उत्कर्ष होने पर शांत रस की प्रतीति होती है। शाम का अर्थ शांत हो जाना और निर्वेद का अर्थ वेदना रहित होना है। ऐसी स्थिति में मनोविकार शांत हो जाते हैं। यह स्थिति दी गई पंक्तियों में परिलक्षित हो रही है।

9. जिस छन्द में चार चरण और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं वह कहलाता है

Pariksha Manthan

(a) दोहा (b) सोरठा

(c) रोला (d) चौपाई

उत्तर (d)

व्याख्या : चौपाई मात्रिक सम छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं। प्रत्येक चरण के अंत में 'यति' होती है।

10. ''कल्पवृक्ष'' का पर्यायवाची है—

(a) पारिजात (b) कल्पतरु

(c) देववृक्ष (d) ये सभी

उत्तर (d)

व्याख्या : कल्पवृक्ष का शाब्दिक अर्थ 'इच्छा पूरी करने वाला वृक्ष' होता है। दिए गए सभी विकल्प कल्पवृक्ष के पर्यायवाची हैं।

11. हिन्दी की आदि जननी क्या है?

(a) पालि (b) संस्कृत

(c) अपभ्रंश (d) प्राकृत

उत्तर (b)

व्याख्या : 'संस्कृत', जो कि 'देवभाषा' कहलाती है, हिंदी की आदि जननी है। हिंदी के जो तीन निश्चित शैली रूप उभर कर सामने आए है, उनमें संस्कृतनिष्ठ हिंदी पहले पायदान पर है, जिसमें अधिकतर संस्कृत के तत्सम शब्द हैं।

12. हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है?

(a) 14 अक्टूबर (b) 14 सितंबर

(c) 11 जून (d) 15 सितंबर

उत्तर (b)

व्याख्या : प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। 14 सितंबर, 1949 को भारत के संविधान में राजभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्रदान की गई थी। इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

13. दिन रात अध्यन करके भी वह प्रथम स्थान न प्राप्त कर सका। नीचे दिए गए विकल्पों में से इस वाक्य में रेखांकित शब्द की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

(a) आध्यन (b) अध्ययन

(c) अध्ध्यन (d) अद्ध्यन

उत्तर (b)

व्याख्या : दिए गए वाक्य में 'अध्यन' दिया गया है। सही वर्तनी 'अध्ययन' है।

14. अविकारी शब्द क्या होता है?

(a) संज्ञा (b) सर्वनाम

(c) अव्यय (d) विशेषण

उत्तर (c)

व्याख्या : वचन, लिंग, कारक आदि की वजह से जिन शब्दों का रूप परिवर्तित नहीं होता है अथवा उनमें विकार नहीं होता है, वे अव्यय कहलाते हैं। अव्ययों का रूप समान होता है। ये अपरिवर्तित रहते हैं। इन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे— अभी, और, भी, जब आदि।

15. हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या है—

(a) 32 (b) 34

(c) 33 (d) 36

उत्तर (c)

व्याख्या : हिंदी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या 33 है। व्यंजन वे वर्ण होते हैं, जिनके उच्चारण के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है।

निर्देश : प्र. सं. (16-20) : निम्नलिखित काव्यांश को पढ़िए और उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए।

कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ठोकर मार, पटक मत माथा
तेरी राह रोकते पाहन
कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ले-देकर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आंसू पीना?
मानवता ने तुझको सींचा
बहा युगों तक खून पसीना!

16. कवि क्या करने की प्रेरणा दे रहा है?

(a) गम के आंसू पीने की

(b) आत्म समर्पण की

(c) रुकावटों को ठोकर मारने की

(d) कुछ भी न बनने की

उत्तर (c)

व्याख्या : इस काव्यांश में कवि 'रुकावटों को ठोकर मारने की प्रेरणा' दे रहा है।

17. इन पंक्तियों में कायर का अर्थ है—

(a) सहज (b) समझौतावादी

(c) चालाक (d) दुष्ट

उत्तर (b)

व्याख्या : काव्यांश में 'कायर' से अभिप्राय 'समझौतावादी' से है। जीवन की मुश्किलों से बचने के लिए कायर समझौतावादी बन जाते हैं।

18. ''कुछ भी बन बस कायर मत बन'' कवि ने क्यों कहा है?

Pariksha Manthan

(a) कुछ भी बनना आसान है

(b) कुछ भी बनना मुश्किल है

(c) कायर मनुष्य का जीवन व्यर्थ है

(d) कायर मनुष्य अच्छा नहीं होता

उत्तर (c)

व्याख्या : ऐसा कवि ने इसलिए कहा है, क्योंकि 'कायर मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।'

19. पाहन शब्द का पर्यायवाची है—

(a) मेहमान (b) पैर

(c) पत्थर (d) पर्वत

उत्तर (c)

व्याख्या : 'पत्थर', पाहन का पर्यायवाची है।

20. कवि के अनुसार किस प्रकार का जीवन व्यर्थ है?

(a) आदर्शवादी (b) समझौतावादी

(c) खून-पसीना बहाकर (d) रुकावटों को ठोकर मारना

उत्तर (b)

व्याख्या : कवि के अनुसार समझौतावादी जीवन व्यर्थ है।

21. इस समास में पहला पद संख्यावाचक होता है—

(a) अव्ययीभाव (b) द्विगु

(c) द्वन्द्व (d) कर्मधारय

उत्तर (b)

व्याख्या : जिस सामासिक शब्द का पूर्व (पहला) पद संख्यावाचक विशेषण हो, उसे द्विगु समास कहा जाता है। जैसे—नवग्रह, त्रिभुवन, चतुर्भुज आदि।

22. ''राजपुत्र'' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) द्विगु

(c) द्वन्द्व (d) कर्मधारय

उत्तर (a)

व्याख्या : जिस सामासिक शब्द का उत्तर पद प्रधान हो, उसे 'तत्पुरुष समास' कहा जाता है।

निर्देश : प्र. सं. (23-24) : निम्नलिखित प्रत्येक चार विकल्पों में से बेमेल शब्द को चिह्नित कीजिये।

23. (a) समस्या (b) खेद

(c) कठिनाई (d) जटिलता

उत्तर (c) ।

व्याख्या : दिए गए विकल्पों में 'खेद' बेमेल शब्द है, जबकि शेष तीनों विकल्प एक जैसे भाव को व्यक्त करते हैं।

24. (a) घर (b) प्रियजन

(c) परिवार (d) बच्चे

उत्तर (a)

व्याख्या : दिए गए विकल्पों में 'घर' बेमेल शब्द है, जबकि शेष तीनों विकल्प संबंध को दर्शाने के कारण एक जैसे हैं।

25. जिस समास का पूर्वपद (पहला पद) प्रधान हो उसे कौन सा समास कहते हैं?

(a) संबंध तत्पुरुष (b) कर्मधारय

(c) अव्ययीभाव (d) द्वन्द्व

उत्तर (c)

व्याख्या : जिस सामासिक शब्द का प्रथम पद प्रधान हो और अव्यय भी हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहा जाता है। प्रायः इन शब्दों का प्रयोग क्रिया-विशेषण की भांति होता है। जैसे—यथाक्रम, प्रत्येक, प्रतिदिन आदि।

निर्देश : प्र. सं. (26-29) : निम्न भक्ति काव्य के प्रमुख कवि कौन हैं?

26. दिए गए विकल्पों में से निर्गुण भक्ति काव्य के प्रमुख कवि कौन हैं?

(a) सूरदास (b) कबीर

(c) तुलसीदास (d) केशव

उत्तर (b)

व्याख्या : निर्गुण भक्ति काव्य के प्रमुख कवि कबीर थे। वह भक्ति आंदोलन के प्रभावशाली संत थे तथा निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। वह जाति प्रथा और आडम्बरों के विरोधी थे।

27. भारतीय संविधान में किस भाषा को ''राजभाषा'' के रूप में स्वीकार किया गया है?

(a) अंग्रेजी (b) उर्दू

(c) हिन्दी (d) तमिल

उत्तर (c)

व्याख्या : भारतीय संविधान के तहत (अनुच्छेद 343) राजभाषा के रूप में हिंदी तथा लिपि के रूप में देवनागरी स्वीकृत है।

28. ''कामायनी'' महाकाव्य के रचयिता कौन हैं?

(a) सूरदास (b) प्रेमचंद

(c) जयशंकर (d) कबीरदास

उत्तर (c)

व्याख्या : 'कामायनी' के रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। कामायनी के अतिरिक्त इनकी अन्य प्रमुख काव्य कृतियां हैं—प्रेमपथिक, चित्राधार, झरना, आंसू एवं लहर आदि।

29. ''पृथ्वीराज रासो'' किस काल की रचना है?

Pariksha Manthan

(a) आदिकाल (b) रीतिकाल

(c) भक्तिकाल (d) आधुनिक काल

उत्तर (a)

व्याख्या : 'पृथ्वीराज रासो' की रचना आदिकाल में हुई। यह चन्दबरदाई की कृति है, जो कि पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे।

30. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संख्या-सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे
इन पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?

(a) रूपक (b) उपमा

(c) श्लेष (d) मानवीकरण

उत्तर (d)

व्याख्या : दी गई पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार है। जहां जड़ वस्तुओं या प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं का आरोप किया जाता है, वहां मानवीकरण अलंकार होता है। जैसे—फूल हंसे कलियां मुसकाईं। यहां फूलों का हंसना, कलियों का मुसकाना मानवीय चेष्टाएं हैं।

31. हिन्दी शब्दकोश में ''क्ष'' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?

(a) क (b) छ

(c) त्र (d) ज्ञ

उत्तर (a)

व्याख्या : हिंदी शब्द कोश में 'क्ष' का क्रम 'क' के बाद आता है।

32. ''खग जाने खग की भाषा'' लोकोक्ति का उचित अर्थ, नीचे दिए गए विकल्पों में से बताइए।

(a) पक्षियों की तरह बोलना

(b) पक्षियों की भाषा न जानना

(c) पक्षी अपनी भाषा स्वयं समझते हैं

(d) समान प्रवृत्ति वाले लोग एक-दूसरे को सराहते हैं

उत्तर (d)

व्याख्या : दिए गए विकल्पों में इस लोकोक्ति का सही अर्थ है—'समान प्रवृत्ति वाले लोग एक-दूसरे को सराहते हैं'। ध्यातव्य है कि वे उक्तियां, जो अनुभव व व्यवहार के कारण लोक में प्रचलित हो जाती हैं, लोकोक्तियां कहलाती हैं। ये साहित्य सृजन के बजाय वार्तालाप में अधिक प्रयुक्त होती हैं।

33. नीचे दिए गए वाक्य के पहले और अंतिम भाग को क्रमशः (1) और (6) की संख्या दी गई है इनके बीच के अंशों को चार भागों में बांट कर (य), (र), (ल) तथा (व) की संख्या दी गई हैं। ये चारों भाग उचित क्रम में नहीं हैं इन चारों को उचित क्रम में लगाएं ताकि एक सही वाक्य बन सके।

(1) जिस प्रकार

(य) दहकना है उसी प्रकार

(र) उसके स्वभाव का

(ल) मनुष्य का धैर्य

(व) अग्नि का धर्म

(6) पर्याय होना चाहिये।

(a) र ल य व (b) व य र ल

(c) व य ल र (d) ल य व र

उत्तर (c)

व्याख्या : सही विकल्प 'व य ल र' है। सही वाक्य है—'जिस प्रकार अग्नि का धर्म दहकना है, उसी प्रकार मनुष्य का धैर्य उसके स्वभाव का पर्याय होना चाहिए।'

34. ''अक्ल का दुश्मन'' मुहावरे का अर्थ है—

(a) मित्र (b) महापंडित

(c) महामूर्ख (d) शत्रु

उत्तर (c)

व्याख्या : यह मुहावरा 'महामूर्ख' के लिए प्रयुक्त होता है।

35. वाक्य के अशुद्ध भाग (त्रुटिपूर्ण भाग) का चयन कीजिये। यदि कोई त्रुटि न हो तो भाग (d) को चिह्नित कीजिये।

धनवान को व्यर्थ / बेकार में/ सहायता

(a) (b)

देकर कोई लाभ न होगा! कोई त्रुटि नहीं।

(c) (d)

उत्तर (b)

व्याख्या : वाक्य का (b) भाग अशुद्ध है। सही वाक्य है—'धनवान को व्यर्थ में सहायता देकर कोई लाभ न होगा।'

36. दिए गए शब्दों में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—

(a) सर्वोतम (b) संसरिक

(c) सच्चिदानन्द (d) कीर्ती

उत्तर (c)

व्याख्या : शुद्ध वर्तनी वाला शब्द 'सच्चिदानन्द' है। शेष विकल्पों का शुद्ध स्वरूप है—सर्वोतम (सर्वोत्तम) संसरिक (सांसारिक), कीर्ती (कीर्ति)।

Parikshā Manthan

37. उपसर्ग का प्रयोग होता है—

(a) शब्द के आदि में (b) शब्द के मध्य में

(c) शब्द के अन्त में (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (a)

व्याख्या : 'उपसर्ग' उस शब्दांश को कहते हैं जो किसी शब्द के आदि (पूर्व) में प्रयुक्त होकर उसके नए अर्थ का बोध कराता है। जैसे—हार = प्र+हार = प्रहार। 'हार' शब्द के पहले 'प्र' उपसर्ग जोड़ देने से नया शब्द 'प्रहार' बना।

38. ''मिठास'' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग है?

(a) मीठा (b) ठास

(c) आस (d) प्यास

उत्तर (c)

व्याख्या : 'मिठास' शब्द में 'आस' प्रत्यय का प्रयोग है। प्रत्यय उस अक्षर या अक्षर समूह को कहते हैं, जो शब्द के अंत में जुड़कर अर्थ बदल देता है। जैसे—गाड़ी+वाला = गाड़ीवाला।

39. ''सत्याग्रह'' का सही संधि-विच्छेद है—

(a) सत्या + ग्रह (b) सत + आग्रह

(c) सत्य + ग्रह (d) सत्य + आग्रह

उत्तर (d)

व्याख्या : 'सत्याग्रह' का सही संधि-विच्छेद है—सत्य+आग्रह। यह दीर्घ स्वर संधि है। जोड़ या मेल की प्रक्रिया संधि कहलाती है। भाषा व्यवहार में भी इसी प्रक्रिया से दो शब्दों के बीच संधि होती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि निकटवर्ती वर्णों के आपसी मेल से पैदा होने वाला विकार या परिवर्तन संधि कहलाता है।

40. दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को कहते हैं—

(a) संधि (b) समास

(c) उपसर्ग (d) प्रत्यय

उत्तर (a)

व्याख्या : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

◆◆◆

Pariksha Manthan

अध्याय - 1

अलंकार

अलंकार न सिर्फ काव्य की सुन्दरता और लालित्य को बढ़ाते हैं, बल्कि उसमें चमत्कारिक प्रभाव भी उत्पन्न करते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि अलंकार भाषा का मनोहर स्वरूप होते हैं। जिस प्रकार सुन्दर वस्त्र और आभूषण शारीरिक सौन्दर्य को बढ़ाते हैं, ठीक उसी प्रकार अलंकार भाषा के सौन्दर्य को बढ़ाकर उसके स्वरूप को निखारने-संवारने का काम करते हैं। अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है-जो भूषित करे। ये भाषा को भूषित करते हैं, अतएव इन्हें भाषा का आभूषण कहा जा सकता है। आचार्य वामन ने अलंकार की बहुत सहज और सटीक व्याख्या करते हुए कहा है कि-'जो किसी वस्तु को अलंकृत करे, वह अलंकार है।'

काव्य में अलंकारों को प्रोत्साहित करने के लिए आचार्य वामन, भामह, उद्भट, रूद्रट तथा दण्डी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अलंकार किस प्रकार काव्य के सौन्दर्य और लालित्य को बढ़ाते हैं तथा भाषा में अनूठा प्रवाह लाते हैं, उसे इस पंक्ति से समझ सकते हैं-

पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश
पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश।

इन पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार अनुप्रास है। 'प' वर्ण की आवृत्ति भाषा को लयात्मक बनाकर उसे रम्यता प्रदान कर रही है।

मुख्य रूप से अलंकार तीन प्रकार के होते हैं। ये हैं-(1) शब्दालंकार, (2) अर्थालंकार तथा (3) उभयालंकार

(1) शब्दालंकार

जब शब्दों के कारण काव्य की सुन्दरता बढ़ती है तथा उसमें चमत्कारिक प्रभाव पैदा होता है, तो वहां शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार काव्य की बाहरी सुन्दरता को बढ़ाता है।

जैसे-कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराय जग या पाये बौराय।

इन पंक्तियों में शब्दों को बरतने का ढंग विशेष है। यही विशिष्टता काव्य के लालित्य और सौन्दर्य को बढ़ा रही है।

शब्दालंकार मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं। ये हैं-(1) अनुप्रास, (2) यमक, (3) श्लेष तथा (4) वक्रोक्ति।

(1) अनुप्रास अलंकार : इसमें एक ही वर्ण की आवृत्ति एक या एक से अधिक बार होती है।

यथा-तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

इस पंक्ति में 'त' वर्ण कई बार आया है अर्थात् उसकी आवृत्ति अनेक बार हुई है।

अनुप्रास अलंकार के भी पांच प्रकार होते हैं। ये हैं-(i) छेकानुप्रास, (ii) वृत्यानुप्रास, (iii) लाटानुप्रास, (iv) श्रुत्यानुप्रास तथा (v) अन्त्यानुप्रास

(i) छेकानुप्रास : इसमें वर्ण दो बार आता है।

यथा-लंपट कपटी कुटिल विशेषी।

यहां 'क' वर्ण दो बार प्रयुक्त हुआ है।

(ii) वृत्यानुप्रास : इसमें वृत्तियों के अनुसार वर्णों की आवृत्ति होती है। यह आवृत्ति एक या अधिक वर्णों में अनेक बार हो सकती है।

यथा-रघुनंद आनंद कंद कोशल चंद दशरथ नंदनम्।

(iii) लाटानुप्रास : इसमें शब्द या वाक्य की आवृत्ति होती है। विशिष्टता यह होती है कि सामान्य रूप से तो इसमें अर्थ की एकरूपता होती है, किंतु अन्वय करने पर अर्थ परिवर्तित हो जाता है।

यथा-पूत सपूत तो का धन संचय
पूत कपूत तो का धन संचय।

यहां सपूत और कपूत के साथ अन्वय अर्थ परिवर्तन का बोध करवा रहा है।

(iv) श्रुत्यानुप्रास : इसमें एक ही ओष्ठ से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

यथा-मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

यहां 'म' 'भ' और 'ब' एक ही ओष्ठ से उच्चारित हैं।

(v) अन्त्यानुप्रास : इसमें छंद के अंत में प्रयुक्त वर्णों में साम्य होता है।

यथा-कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि।
कहत लखन सन राम हृदय गुनि।

यहां सुनि और गुनि में 'इ' का साम्य है।

(2) यमक अलंकार : इसमें शब्दों का दोहराव तो होता है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें भिन्नता होती है।

यथा-हरि हरि रूप दियो नारद को।

इस पंक्ति में पहला हरि भगवान विष्णु के लिए प्रयुक्त हुआ है, जबकि दूसरा हरि वानर के लिए।

(3) श्लेष अलंकार : इसमें कोई शब्द आता तो एक ही बार है, किंतु उससे अनेक अर्थ ध्वनित होते हैं।

यथा-चरण धरत चिन्ताकरत, भावत नींद न शोर।
सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, कामी और चोर।

यहां कवि, कामी और चोर तीनों के लिए 'सुबरन' के अलग-अलग अर्थ हैं।

(4) वक्रोक्ति अलंकार : इसमें किसी शब्द विशेष के माध्यम से वक्ता जो कहना चाहता, सुनने वाला उससे भिन्न अर्थ निकालता है।

यथा-को तुम? माधव हो प्रिये! नहीं बसन्त सों काज।
भामिनि! हरि हौं, तो बसौ सुरपुर मधि सुरराज।

इन पंक्तियों में श्रीकृष्ण 'माधव' और 'हरि' शब्दों के माध्यम से राधा रानी को अपना परिचय दे रहे हैं, किन्तु वह इनसे क्रमशः

Pariksha Manthan

'बसंत' और 'इन्द्र' का अर्थ निकालते हुए कहती हैं कि यहां बसंत का क्या काम तथा इन्द्र हैं तो स्वर्ग में जाकर बसिये।

(2) अर्थालंकार

यह अलंकार काव्य की अर्थगत विशेषता का बोध करवाता है। प्रमुख अर्थालंकार निम्नवत हैं-

(1) उपमा अलंकार : इसमें उपमेय के साथ उपमान की किसी संदर्भ विशेष में तुलना की जाती है।

यथा-प्रियंवदा रति के समान सुन्दरी है।

यहां प्रियंवदा उपमेय है तथा रति उपमान है। तुलना का संदर्भ सौन्दर्य है।

जिसकी तुलना की जाती है, वह उपमेय तथा जिससे तुलना की जाती है, वह उपमान कहलाता है। जिस संदर्भ विशेष में तुलना की जाती है, वह 'साधारण धर्म' कहलाता है तथा तुलना के लिए प्रयुक्त शब्द को 'वाचक' कहते हैं। इस प्रकार उपमेय, उपमान, वाचक और साधारण धर्म उपमा अलंकार के आवश्यक अवयव हैं। जब ये चारों समाहित रहते हैं तो 'पूर्णोपमा' होती है। जब इनमें से कोई अवयव उपस्थित नहीं रहता है, तो इसे 'लुप्तोपमा' कहते हैं।

(2) रूपक अलंकार : इसमें उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है। ऐसा गुण में अधिकाधिक साम्य के कारण होता है।

यथा-आज तो इस भवन-गगन में मुख चन्द्र द्योतित है हुआ।

यहां भवन-गगन और मुख चंद्र रूपक अलंकार का बोध करा रहे हैं।

(3) अपन्हुति अलंकार : इसमें उपमेय का निषेध कर उपमान को स्थापित किया जाता है।

यथा-नहिं सखि, राधा वदन यह, है पूनो का चाँद।

यहां राधा के वदन यानी मुख का निषेध करते हुए उपमान चाँद के रूप में स्थापित किया गया है।

(4) उत्प्रेक्षा अलंकार : इसमें उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है।

यथा-सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।

मानो नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात।।

यहां श्रीकृष्ण के स्याम शरीर पर प्रातः की रवि रश्मियों की शोभा में नीलमणि पर्वत की संभावना की गई है।

(नोट-उत्प्रेक्षा अलंकार में मुख्य रूप से जनु, जानहु, जानो, मानो, मनु, मानहु, इव, निश्चय आदि वाचक शब्द प्रयुक्त होते हैं।)

(5) अतिशयोक्ति अलंकार : इसमें किसी बात या वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ा कर किया जाता है।

यथा-देखो दो-दो मेघ बरसते, मैं प्यासी की प्यासी।

(6) दृष्टांत अलंकार : इसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्मों में निहित भाव बिम्ब-प्रतिबिम्ब का होता है।

यथा-करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।।

(7) स्वभावोक्ति अलंकार : इसमें स्वभाव के वर्णन में चमत्कृत कर देने वाले प्रभाव का बोध होता है।

यथा-छकि रसाल सौरभ सने, धुर माधवी गंध।

ठौर-ठौर झूमत झपत, भौंर भौर मधु अन्ध।।

(8) विरोधाभास अलंकार : इसमें विरोध का आभास होता है, यद्यपि विरोध होता नहीं है।

यथा-या अनुरागी चित्त की, गति समझै नहिं कोय।

ज्यों-ज्यों बढ़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।।

(9) अत्युक्ति अलंकार : इसमें किया गया वर्णन असंभव की सीमा तक होता है।

यथा-फबि फहरे अति उच्च निसाना।

जिनमें अहकत विवुध विमाना।

यहां झण्डों की ऊंचाई इतनी अधिक बताई गई है कि उनमें देवताओं के विमान अटक जाएं।

(3) उभयालंकार

इसमें शब्द और अर्थ दोनों मिल कर काव्य का सौन्दर्य बढ़ाते हैं तथा अपने प्रभाव से चमत्कृत करते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से अलंकार सम्प्रदाय का प्रवर्तक किसे माना जाता है?
   (क) विश्वनाथ (ख) भामह
   (ग) दण्डी (घ) हजारी प्रसाद
2. काव्य-शास्त्र का प्रथम सम्प्रदाय कौन है?
   (क) रीति (ख) रस
   (ग) अलंकार (घ) वक्रोक्ति
3. अलंकारों को कहा जाता हैं-
   (क) भाषा का आदर्श। (ख) भाषा का प्रतिमान।
   (ग) भाषा का विवेचन। (घ) भाषा का आभूषण।
4. 'पीपर पात सरसि मन डोला'-इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
   (क) श्लेष (ख) अतिशयोक्ति
   (ग) अनुप्रास (घ) उपमा
5. जब शब्द और अर्थ दोनों के सम्मिलन से काव्य की शोभा बढ़ती है, तब होता है-
   (क) उभयालंकार (ख) शब्दालंकार
   (ग) अर्थालंकार (घ) रूपक अलंकार
6. रहिमन पानी राखिए बिनु पानी सब सून।
   पानी गए न ऊबरै मोती, मानुस, चून।।
   यहां कौन-सा अलंकार है?
   (क) यमक (ख) उपमा
   (ग) श्लेष (घ) अनुप्रास

Pariksha Manthan

7. 'सूर सूर तुलसी ससि' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) श्लेष (ख) अनुप्रास
(ग) यमक (घ) उपमा

8. अनुप्रास अलंकार के मुख्य प्रकार कितने होते हैं?
(क) नौ (ख) आठ
(ग) चार (घ) पाँच

9. 'मो सम कौन कुटिल खल कामी।' यहां कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(क) श्लेष (ख) वक्रोक्ति
(ग) यमक (घ) उपमा

10. 'अनुप्रास' किस अलंकार के मुख्य भेदों में से एक है?
(क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार
(ग) उभयालंकार (घ) इनमें से कोई नहीं

11. 'भूरि भूरि भेदभाव भूमि से भगा दिया।' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) अतिशयोक्ति (ख) श्लेष
(ग) अनुप्रास (घ) यमक

12. अन्त्यानुप्रास किस अलंकार का एक प्रकार है?
(क) अनुप्रास (ख) वक्रोक्ति
(ग) यमक (घ) श्लेष

13. 'तरनि तनुजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक (ख) अनुप्रास
(ग) श्लेष (घ) यमक

14. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मानो नीलमणि सैलपर आपत पर्‌यो प्रभात।।
यहां प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइये?
(क) उत्प्रेक्षा (ख) रूपक
(ग) यमक (घ) श्लेष

15. 'वक्रोक्ति' किस अलंकार के प्रमुख भेदों में से एक है?
(क) उभयालंकार (ख) अर्थालंकार
(ग) शब्दालंकार (घ) इनमें से कोई नहीं

16. 'चरण कमल बन्दौ हरि राई।' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक (ख) अतिशयोक्ति
(ग) उपमा (घ) श्लेष

17. कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग या पाये बौराय।।
यहां प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइये?
(क) श्लेष (ख) उपमा
(ग) अनुप्रास (घ) यमक

18. कबिरा सोई पीर है, जे जाने पर पीर।
जे पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर।
(क) श्लेष (ख) यमक
(ग) रूपक (घ) पुनरुक्ति

19. 'चरर मरर खुल गये अरर.....', यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक (ख) यमक
(ग) अनुप्रास (घ) श्लेष

20. 'सुनीता तो अप्सरा मेनका के समान सुन्दर है।' यहां सुनीता है—
(क) उपमेय (ख) उपमान
(ग) वाचक (घ) साधारण धर्म

21. रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारे लगै, बढ़ै अंधेरो होय।।
यहां कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(क) यमक (ख) श्लेष
(ग) रूपक (घ) उपमा

22. 'पट पीत मानहुं तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरं।'
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) उदाहरण (ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) उपमा

23. 'तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) अन्योक्ति (ख) यमक
(ग) श्लेष (घ) अनुप्रास

24. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुन्दर परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।
उक्त पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बजाइये?
(क) रूपक (ख) अतिशयोक्ति
(ग) यमक (घ) उपमा

25. नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास येहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल।।
यहां कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(क) अन्योक्ति (ख) अतिशयोक्ति
(ग) विशेषोक्ति (घ) रूपक

26. 'शिवदत्त' सूर्य के समान तेजस्वी है।' यहां सूर्य है-
(क) उपमेय (ख) वाचक
(ग) साधारण धर्म (घ) उपमान

27. 'नवल सुन्दर श्याम शरीर' में कौन-सा अलंकार है?

Pariksha Manthan

(क) उपमा (ख) उल्लेख
(ग) अतिशयोक्ति (घ) रूपक

28. 'अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार।' यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) अन्योक्ति (ख) उपमा
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिशयोक्ति

29. अति मलीन बृषभानुकुमारी
अधोमुख रहति उरध नहिं चितवत, ज्यों गत हारे थकित जुआरी
छूटे चिहुर वदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।
यहां प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइये?
(क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) रूपक (घ) अनुप्रास

30. 'संदेसनि मधुवन कूप भरे।'
इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) अतिशयोक्ति (ख) वक्रोक्ति
(ग) रूपक (घ) अन्योक्ति

31. पूत कपूत तो का धन संचय।
पूत सपूत तो का धन संचय।।
यहां कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(क) अन्त्यानुप्रास (ख) लाटानुप्रास
(ग) छेकानुप्रास (घ) वृत्यानुप्रास

32. कुन्द इन्दु सन देह
उमा रमन वरुण अमन।
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक (ख) अनुप्रास
(ग) श्लेष (घ) उपमा

33. ध्वनि मयी कर के गिरि कंदरा
कलित कानन केलि निकुंज को।
यहां कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(क) वृत्यानुप्रास (ख) छेकानुप्रास
(ग) लाटानुप्रास (घ) यमक

34. कोई चाहे या न चाहे, मूक-सी इस जिन्दगी को,
शंख-सा बजना पड़ेगा। यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक (ख) उपमा
(ग) श्लेष (घ) अतिशयोक्ति

35. बाँधा था विधु को किसने, इन काली जंजीरों से।
मणिवाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।।
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) अतिशयोक्ति (ख) श्लेष
(ग) यमक (घ) अनुप्रास

36. माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मनका मनका फेर।।
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) श्लेष (ख) यमक
(ग) अतिशयोक्ति (घ) छेकानुप्रास

37. प्रभा का सौन्दर्य रति के समान है। यहां साधारण धर्म है-
(क) प्रभा (ख) रति
(ग) सौन्दर्य (घ) समान

38. नदियाँ जिनकी यशधारा सी।
बहती हैं अब भी निशि-वासर।।
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) उपमा (ख) अतिशयोक्ति
(ग) छेकानुप्रास (घ) उत्प्रेक्षा

39. हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिकरी जल गई, गये निसाचर भाग।।
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) छेकानुप्रास (ख) लाटानुप्रास
(ग) दृष्टांत (घ) अतिशयोक्ति

40. बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी।
यहां कौन-सा अलंकार है?
(क) रूपक (ख) छेकानुप्रास
(ग) अपन्हुति (घ) उत्प्रेक्षा

41. जब शब्दों के कारण काव्य की सुन्दरता बढ़ती है तथा उसमें चमत्कारिक प्रभाव पैदा होता है, तो वहां होता है—
(क) उपमा अलंकार (ख) दृष्टांत अलंकार
(ग) अर्थालंकार (घ) शब्दालंकार

42. निम्नलिखित में से कौन शब्दालंकार का प्रकार नहीं है—
(क) अत्युक्ति अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार
(ग) वक्रोक्ति अलंकार (घ) श्लेष अलंकार

43. किस अलंकार में शब्दों का दोहराव तो होता है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें भिन्नता होती है?
(क) अनुप्रास अलंकार (ख) लाटानुप्रास
(ग) यमक अलंकार (घ) छेकानुप्रास

44. एक ही ओष्ठ से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति किस अलंकार में होती है?
(क) अन्त्यानुप्रास (ख) श्रुत्यानुप्रास
(ग) छेकानुप्रास (घ) लाटानुप्रास

45. अर्थगत विशेषता का बोध करवाने वाले अलंकार को कहते हैं—
(क) शब्दालंकार (ख) उभयालंकार

Pariksha Manthan

(ग) अर्थालंकार (घ) इनमें से कोई नहीं

46. जब किसी बात या वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है, तो होता है—
(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार
(ग) अत्युक्ति अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार

47. जब किया गया वर्णन असंभव की सीमा तक होता है, तब इसे कहते हैं—
(क) अत्युक्ति अलंकार (ख) स्वभावोक्ति अलंकार
(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) विरोधाभास अलंकार

48. जब किसी शब्द विशेष के माध्यम से वक्ता जो कहना चाहता है, सुनने वाला उससे भिन्न अर्थ निकालता है, तो होता है—
(क) रूपक अलंकार (ख) वक्रोक्ति अलंकार
(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) दृष्टांत अलंकार

49. निम्नलिखित में से कौन अर्थालंकार का भेद नहीं है—
(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार
(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार (घ) अनुप्रास अलंकार

50. छंद के अंत में प्रयुक्त वर्णों में साम्य की स्थिति में कौन-सा अलंकार होता है?
(क) अन्त्यानुप्रास (ख) श्रुत्यानुप्रास
(ग) लाटानुप्रास (घ) छेकानुप्रास

उत्तरमाला

1. (ख)	2. (ग)	3. (घ)	4. (घ)	5. (क)
6. (ग)	7. (ख)	8. (घ)	9. (ख)	10. (क)
11. (ग)	12. (क)	13. (ख)	14. (क)	15. (ग)
16. (क)	17. (घ)	18. (ख)	19. (ग)	20. (क)
21. (ख)	22. (घ)	23. (ख)	24. (घ)	25. (क)
26. (घ)	27. (ख)	28. (क)	29. (क)	30. (क)
31. (ख)	32. (घ)	33. (क)	34. (ख)	35. (क)
36. (ख)	37. (ग)	38. (क)	39. (घ)	40. (क)
41. (घ)	42. (क)	43. (ग)	44. (ख)	45. (ग)
46. (घ)	47. (क)	48. (ख)	49. (घ)	50. (क)

◆◆◆

Pariksha Manthan

अध्याय - 2

रस

साहित्यिक संदर्भों में 'सुखद तत्व' को 'रस' के रूप में अभिहित किया गया है। काव्य में हमें जो सुख की अनुभूति करवाता है, वह रस ही है। इसीलिए हिन्दी काव्य में रस का विशेष महत्त्व है। रस अनुभूति से जुड़ा होता है तथा भाव के अनुरूप अपना प्रभाव छोड़ता है। 'नाट्यशास्त्र' में सबसे पहले 'रस' की व्याख्या की गई। इसे परिभाषित करते हुए भरत मुनि ने कहा है—

विभावानु भावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पतिः।

यानी विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। अधिकांश हिन्दी विद्वानों ने रस की व्याख्या करते समय भरत मुनि की इसी परिभाषा को आधार बनाया है।

रस को समझने के लिए इस चौपाई को हृदयंगम करें-

सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देख चाप खंड महि डारे।

अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।

उपर्युक्त चौपाई में रौद्र रस है तथा इसमें क्रोध स्थायी भाव है।

रस के प्रमुख तत्व हैं-(1) स्थायी भाव, (2) अनुभाव, (3) विभाव, (4) संचारी या व्यभिचारी भाव। यहां रस के इन प्रमुख तत्वों के बारे में संक्षेप में जान लेना उचित रहेगा। जैसा कि नाम से ही विदित होता है, जो भाव मन में स्थायी रूप से बने रहते हैं, वे 'स्थायी भाव' कहलाते हैं। 'विभाव' से अभिप्राय उस सामग्री से है, जो रसों को जागृत करती है। 'अनुभाव से अभिप्राय उन शारीरिक एवं मानसिक चेष्टाओं से है, जो मन के भावों को अभिव्यक्त करती हैं। 'संचारी भाव' से आशय उन भावों से है, जो मन में क्षण भर के लिए आते हैं तथा स्थायी भावों को उद्दीपित कर विलुप्त हो जाते हैं। विद्वानों ने इनकी संख्या 33 बताई है। विभाव के तीन भेद इस प्रकार हैं—(1) आलम्बन (2) उद्दीपन (3) आश्रय, जबकि अनुभाव के दो भेद इस प्रकार हैं—कायिक अनुभाव (2) सात्विक अनुभाव। स्मरण रहे कि स्थायी भाव 9 होते हैं, इन्हीं के आधार पर रस भी 9 माने गए हैं।

रस के प्रकार

स्थायी भाव के आधार पर रस के नौ प्रकार निर्धारित किये गये हैं। ये इस प्रकार हैं-

(1) शृंगार रस (इसमें स्थायी भाव रति है।)
(2) हास्य रस (इसमें स्थायी भाव हास है।)
(3) करुण रस (इसमें स्थायी भाव शोक है।)
(4) रौद्र रस (इसमें स्थायी भाव क्रोध है।)
(5) वीर रस (इसमें स्थायी भाव उत्साह है।)
(6) भयानक रस (इसमें स्थायी भाव भय है।)
(7) वीभत्स रस (इसमें स्थायी भाव जुगुप्सा है।)
(8) अद्भुत रस (इसमें विस्मय स्थायी भाव है।)
(9) शान्त रस (इसमें निर्वेद अथवा शम स्थायी भाव है।)

(**नोट**-बाद में हिन्दी विद्वानों ने दसवें रस के रूप में 'वात्सल्य रस' को भी स्वीकार कर लिया। हालांकि परम्परागत रसों के रूप में नौ रसों को ही मान्यता मिली है।)

रस से संबंधित प्रश्न प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रमुखता से पूछे जाते हैं। परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए हम यहां परीक्षा की दृष्टि से कुछ चुनिंदा प्रश्न दे रहे हैं, ताकि अभ्यास द्वारा परीक्षार्थी रसों के बारे में जान सकें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'रस' का सर्वप्रथम उल्लेख कहां मिलता है?
   (क) आल्हा (ख) रामायण
   (ग) महाभारत (घ) नाट्यशास्त्र
2. काव्य में रसों की संख्या निर्धारित की गई है-
   (क) दस (ख) नौ
   (ग) आठ (घ) सात
3. स्थायी भावों की संख्या कुल कितनी है?
   (क) बारह (ख) ग्यारह
   (ग) दस (घ) नौ
4. शांत रस का स्थायी भाव क्या है?
   (क) निर्वेद अथवा शम (ख) उत्साह
   (ग) क्रोध (घ) जुगुप्सा
5. रस के प्रमुख तत्व कुल कितने होते हैं?
   (क) तीन (ख) पांच
   (ग) सात (घ) चार
6. शृंगार रस का स्थायी भाव क्या है?
   (क) शोक (ख) हास
   (ग) रति (घ) उत्साह
7. स्थायी भाव 'विस्मय' किस रस में होता है?
   (क) शान्त रस (ख) हास्य रस
   (ग) वीभत्स रस (घ) अद्भुत रस
8. करुण रस का स्थायी भाव बताइये?
   (क) शोक (ख) क्रोध
   (ग) जुगुप्सा (घ) उत्साह
9. निम्नांकित में से कौन-सा रस सर्वश्रेष्ठ रस की श्रेणी में आता है?
   (क) शृंगार रस (ख) वीर रस
   (ग) करुण रस (घ) रौद्र रस

Pariksha Manthan

10. 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायी भाव है?
(क) करुण रस (ख) वीभत्स रस
(ग) श्रृंगार रस (घ) शान्त रस

11. वैराग्य होने पर किस रस की उत्पत्ति होती है?
(क) करुण रस (ख) वीर रस
(ग) शान्त रस (घ) अद्भुत रस

12. कवि बिहारी किस रस के लिए जाने जाते थे?
(क) वीर रस (ख) करुण रस
(ग) अद्भुत रस (घ) श्रृंगार रस

13. वीर रस का स्थायी भाव है-
(क) उत्साह (ख) क्रोध
(ग) विस्मय (घ) हास

14. 'भय' की अनुभूति कराने वाला रस होता है-
(क) वीर रस (ख) वीभत्स रस
(ग) रौद्र रस (घ) भयानक रस

15. रौद्र रस का स्थायी भाव कौन-सा है?
(क) शोक (ख) क्रोध
(ग) उत्साह (घ) विस्मय

16. मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) हास्य रस (ख) करुण रस
(ग) शांत रस (घ) श्रृंगार रस

17. किलक अरे मैं नेह निहारूँ।
इन दाँतों पर मोती वारूँ।।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) वात्सल्य रस (ख) श्रृंगार रस
(ग) वीर रस (घ) शांत रस

18. प्रिय वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है
दुख जल निधि में डूबी का सहारा कहाँ है।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) श्रृंगार रस (ख) रौद्र रस
(ग) करुण रस (घ) शांत रस

19. अति मलीन, वृषभानु कुमारी।
अधमुख रहित, उरध नहिं चितवत्,
ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलानो,
ज्यों नलिनी हिसकर की मारी।।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) करुण रस (ख) विप्रलम्भ श्रृंगार रस
(ग) संयोग श्रृंगार (घ) हास्य

20. शोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनु चलत रेन तन मंडित मुख दधि लेप किए।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) वात्सल्य रस (ख) श्रृंगार रस
(ग) करुण रस (घ) हास्य रस

21. रसोत्पत्ति में आश्रय की चेष्टाओं को कहते हैं-
(क) उद्दीपन (ख) अनुभाव
(ग) विभाव (घ) आलम्बन

22. 'माधुर्य' किस रस का गुण है?
(क) भयानक (ख) रौद्र
(ग) शांत (घ) श्रृंगार

23. तन सँकोच मन परम उछाहूँ। गूढ़ प्रेम लखि परइ न काहूँ।
जाइ समीप राम छवि देखी। रहिं जनु कुँअरि चित्र अनुरेखी।।
उक्त चौपाई में प्रयुक्त स्थाई भाव क्या है?
(क) रति (ख) जुगुप्सा
(ग) शोक (घ) उत्साह

24. रामहि चितइ रहेउ नरनाहू। चला बिलोचन बारि प्रबाहू।
सोक बिबस कछु कहै न पारा। हृदय लगावत बारहि बारा।
उक्त चौपाई में कौन-सा रस है?
(क) शांत रस (ख) करुण रस
(ग) वीर रस (घ) रौद्र रस

25. हिन्दी साहित्य में नौवां रस कौन-सा है?
(क) शांत रस (ख) वात्सल्य रस
(ग) करुण रस (घ) भक्ति रस

26. मेरे हृदय के हर्ष हा!
अभिमन्यु अब तू है कहाँ!
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) वीर रस (ख) रौद्र रस
(ग) करुण रस (घ) अद्भुत रस

27. उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उसका लगा।
मानो हवा के वेग से, सोता हुआ सागर जगा।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) अद्भुत रस (ख) वीर रस
(ग) करुण रस (घ) रौद्र रस

28. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करे भौंहनि हँसे, देनि कहे नहि जाय।।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) हास्य रस (ख) श्रृंगार रस
(ग) वीर रस (घ) वीभत्स रस

29. एक ओर अजगरहि लखि एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही पर्‌यो मूरछा खाय।।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?

Pariksha Manthan

(क) शृंगार रस (ख) भयानक रस
(ग) वीर रस (घ) करुण रस

30. राग है कि, रूप है कि
रस है कि, जस है कि
तन है कि, मन है कि
प्राण है कि, प्यारी है।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) करुण रस (ख) शृंगार रस
(ग) अद्‌भुत रस (घ) वीर रस

31. हाथिन सों हाथी मारे, घोरे सों सँघारो घोरे,
रथिन सों रथ बिदरनि बलवान की
चंचल चपेट, चोट चरन, चकोट चाहें,
हहरानी फौजें भहरानीं जातुधान की।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) करुण रस (ख) वीर रस
(ग) अद्‌भुत रस (घ) वीभत्स रस

32. भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप विचारी।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी।
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) वीर रस (ख) शृंगार रस
(ग) शांत रस (घ) अद्‌भुत रस

33. हा राम! हा प्राण प्यारे!
जीवित रहूँ किसके सहारे!
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) वीभत्स रस (ख) करुण रस
(ग) शांत रस (घ) शृंगार रस

34. मन मस्त हुआ फिर क्यों डोले
हीरा पायो गांठ गठियायो, बार-बार वाको क्यों खोले?
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) अद्‌भुत रस (ख) करुण रस
(ग) भयानक रस (घ) शांत रस

35. 'विभाव' के कितने भेद हैं?
(क) दो (ख) चार
(ग) आठ (घ) तीन

उत्तरमाला

1. (घ)	2. (ख)	3. (घ)	4. (क)	5. (घ)
6. (ग)	7. (घ)	8. (क)	9. (क)	10. (ख)
11. (ग)	12. (घ)	13. (क)	14. (घ)	15. (ख)
16. (घ)	17. (क)	18. (ग)	19. (ख)	20. (क)
21. (ख)	22. (घ)	23. (क)	24. (ख)	25. (क)
26. (ग)	27. (घ)	28. (क)	29. (ख)	30. (ग)
31. (ख)	32. (घ)	33. (ख)	34. (घ)	35. (क)

◆◆◆

Pariksha Manthan

समास

हिन्दी व्याकरण में समास का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि कम शब्दों में ये अधिक अर्थ प्रदान करते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ 'संक्षेप' होता है। शब्द संरचना में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। समास को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि वह क्रिया जिसके द्वारा दो या दो से अधिक शब्दों को जोड़कर नया शब्द बनाया जाता है, समास कहलाती है। इसे और स्पष्ट करते हुए हम कह सकते हैं कि दो या दो से अधिक शब्दों का संयोग समास कहलाता है तथा इस संयोग से बनने वाले नये शब्द को 'सामासिक शब्द' कहते हैं। इन्हें 'समस्त-पद' नाम से भी जाना जाता है। इनको अलग-अलग करने की क्रिया 'समास-विग्रह' कहलाती है।

जैसे—आज्ञा के अनुसार को जब संक्षिप्त करेंगे तो नया शब्द 'आज्ञानुसार' बनेगा। यह सामासिक शब्द है। इसी प्रकार 'खूबी के साथ' को संक्षिप्त करेंगे तो नया शब्द बनेगा 'बखूबी'। यह उर्दू सामासिक शब्द है। एक और उदाहरण देखें—समय के अनुकूल को जब हम संक्षिप्त करेंगे, तो नया शब्द 'समयानुकूल' सामने आता है। इसका विग्रह करने पर 'समय के अनुकूल' लिखा जाएगा। इसी क्रिया को समास-विग्रह कहते हैं।

समास के लिए यह आवश्यक है कि कम से कम दो पद अवश्य हों। जैसे—सूर्य का उदय से 'सूर्योदय' सामासिक शब्द निर्मित होता है। यहां पहला पद सूर्य है तथा दूसरा पद उदय है। इन्हें खण्ड या अवयव भी कहते हैं। पहले पद को पूर्वपद या पूर्व खण्ड तथा दूसरे पद को उत्तर पद या उत्तर खण्ड कहते हैं। जैसे—सूर्योदय में पहला पद सूर्य है, यह पूर्वपद या पूर्वखण्ड कहलाएगा तथा दूसरा पद उदय है, यह उत्तर पद या उत्तर खण्ड कहलाएगा।

समास की क्रिया के अन्तर्गत दो या अधिक पदों का संक्षेपीकरण होता है तथा एक नया सार्थक शब्द निर्मित होता है, जो लघु होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से व्यापक होता है यानी अधिक अर्थ देता है। बीच की विभक्तियों का लोप इस क्रिया के अन्तर्गत हो जाता है।

संधि और समास में अन्तर

अक्सर परीक्षार्थी समास और संधि को लेकर भ्रमित हो जाते हैं, जबकि दोनों में अंतर होता है। समास और संधि में मुख्यतः निम्नलिखित अंतर होते हैं—

(1) समास दो पदों के योग से बनता है, जबकि संधि दो वर्णों के योग से होती है।

(2) समास में प्रत्यय नहीं रहते, क्योंकि इस प्रकार का मेल या विकार (परिवर्तन) से संबंध नहीं रहता, जबकि संधि में मेल और विकार संभव रहता है।

(3) समास में पृथकीकरण की क्रिया विग्रह कहलाती है, जबकि संधि में इसे विच्छेद कहा जाता है। जैसे—धर्मार्थ का संधि विच्छेद धर्म+अर्थ होगा, जबकि यथाक्रम का विग्रह क्रम के अनुसार होगा।

समास के भेद

हिन्दी व्याकरण में समास के छह प्रकार बताए गये हैं। ये हैं—तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, अव्ययीभाव समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास तथा बहुव्रीहि समास।

1. तत्पुरुष समास : जिन सामासिक शब्दों में उत्तर पद प्रधान होता है, वे तत्पुरुष समास कहलाते हैं। इनमें पूर्वपद गौण होता है और अधिकांशतः यह विशेषण होता है, जबकि उत्तरपद विशेष्य होता है। इसमें न सिर्फ विभक्तियों का लोप होता है, बल्कि आवश्यकतानुसार बीच के अन्य पदों का भी लोप होता है।

जैसे—गिरह को काटने वाला का सामासिक शब्द 'गिरहकट' है। समास बनाने पर 'को काटने वाला' का लोप हो गया है।

तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष : जहां पूर्वपद में कर्मकारक की विभक्ति का लोप हो, वहां 'कर्म तत्पुरुष' होता है। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
परलोकगमन	परलोक को गमन
ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
गृहागत	गृह को आया हुआ
स्वर्गगत	स्वर्ग को गया हुआ
मरणासन्न	मरण को पहुंचा हुआ
यशप्राप्त	यश को प्राप्त

(ii) करण तत्पुरुष : जहां पूर्व पक्ष में करण कारक की विभक्ति का लोप हो, वहां 'करण तत्पुरुष' होता है। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
भुखमरा	भूख से मरा
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
अनुभवजन्य	अनुभव से जन्य
ईश्वरप्रदत्त	ईश्वर द्वारा प्रदत्त
कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य
गुणयुक्त	गुण से युक्त
गुरुदत्त	गुरु द्वारा दत्त
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
दयार्द्र	दया से आर्द्र
प्रेमातुर	प्रेम से आतुर
भयाकुल	भय से आकुल
रेखांकित	रेखा से अंकित

Parisha Manthan

मदमस्त	मद से मस्त
मदांध	मद से अंधा
मनगढ़ंत	मन से गढ़ा हुआ
मनमाना	मन से माना
रोगमुक्त	रोग से मुक्त
वाग्दत्ता	वाणी द्वारा दत्त
शोकाकुल	शोक से आकुल
स्वरचित	स्व द्वारा रचित
सूररचित	सूर द्वारा रचित

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष : जहां समास के पूर्व पक्ष में संप्रदान की विभक्ति अर्थात् 'के लिए' का लोप होता है, वहां संप्रदान तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
हवनसामग्री	हवन के लिए सामग्री
आरामकुर्सी	आराम के लिए कुर्सी
क्रीड़ाक्षेत्र	क्रीड़ा के लिए क्षेत्र
गौशाला	गौ के लिए शाला
पाठशाला	पाठ के लिए शाला
राहखर्च	राह के लिए खर्च
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी
हथघड़ी	हाथ के लिए घड़ी
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी
देवबलि	देव के लिए बलि
देशार्पण	देश के लिए अर्पण
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला
बलिपशु	बलि के लिए पशु
युद्धक्षेत्र	युद्ध के लिए क्षेत्र

(iv) अपादान तत्पुरुष : जहां समास के पूर्व पक्ष में अपादान की विभक्ति अर्थात् 'से (विलग)' का भाव हो, वहां अपादान तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
गुणहीन	गुणों से हीन
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
धर्मविमुख	धर्म से विमुख
धर्मभ्रष्ट	धर्म से भ्रष्ट
जन्मांध	जन्म से अंधा
जातिच्युत	जाति से च्युत
देशनिकाला	देश से निकाला
धनहीन	धन से हीन
लक्ष्यभ्रष्ट	लक्ष्य से भ्रष्ट
पदच्युत	पद से च्युत
रोगमुक्त	रोग से मुक्त
भयभीत	भय से भीत

(v) संबंध तत्पुरुष : जहां समास के पूर्व पक्ष में संबंध तत्पुरुष की विभक्ति अर्थात् का, के, की का लोप हो, वहां संबंध तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
अमृतधारा	अमृत की धारा
अछूतोद्धार	अछूतों का उद्धार
आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार
गंगातट	गंगा का तट
उद्योगपति	उद्योग का पति
कनकघट	कनक का घट
गृहस्वामी	गृह का स्वामी
घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़
जीवनसाथी	जीवन का साथी
जलधारा	जल की धारा
जलप्रवाह	जल का प्रवाह
दिनचर्या	दिन की चर्या
देशवासी	देश का वासी
देवमूर्ति	देव की मूर्ति
देशरक्षा	देश की रक्षा
परनिंदा	पर की निंदा
पराधीन	पर के अधीन
प्रसंगानुसार	प्रसंग के अनुसार
पूँजीपति	पूँजी का पति
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय
प्रजापति	प्रजा का पति
भारतरत्न	भारत का रत्न
प्रेमसागर	प्रेम का सागर
भ्रातृस्नेह	भ्रातृ का स्नेह
राजनीतिज्ञ	राजनीति का ज्ञाता
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
यदुवंश	यदु का वंश
रघुकुलमणि	रघुकुल का मणि
राजपुरुष	राजा का पुरुष

Pariksha Manthan

राजभक्ति	राजा की भक्ति
राजमाता	राजा की माता
राष्ट्रपतिभवन	राष्ट्रपति का भवन
राजसभा	राजा की सभा
राजकुमार	राजा का कुमार
रामभक्ति	राम की भक्ति
लखपति	लाखों का पति
लोकसभा	लोक की सभा
स्वास्थ्यरक्षा	स्वास्थ्य की रक्षा
विद्याभंडार	विद्या का भंडार
सचिवालय	सचिव का आलय
सेनानायक	सेना का नायक

(vi) अधिकरण तत्पुरुष : जहां अधिकरण कारक की विभत्ति अर्थात् 'में', 'पर' का लोप होता है, वहां 'अधिकरण तत्पुरुष' समास होता है। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
आपबीती	आप पर बीती
आनंदमग्न	आनंद में मग्न
कलानिपुण	कला में निपुण
कुलश्रेष्ठ	कुल में श्रेष्ठ
कानाफूसी	कानों में फुसफुसाहट
कार्यकुशल	कार्य में कुशल
धर्मवीर	धर्म में वीर
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम
नीतिनिपुण	नीति में निपुण
युद्धवीर	युद्ध में वीर
लोकप्रिय	लोक में प्रिय
दानवीर	दान में वीर
ग्रामवास	ग्राम में वास
जगबीती	जग पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
डिब्बाबंद	डिब्बे में बंद
सिरदर्द	सिर में दर्द
विद्याप्रवीण	विद्या में प्रवीण
व्यवहारकुशल	व्यवहार में कुशल
विचारमग्न	विचार में मग्न
शरणागत	शरण में आगत

(vii) नञ् तत्पुरुष : जिस समस्तपद में पहला पद नकारात्मक (अभावात्मक) हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। जैसे—

समस्त पद	**विग्रह**
अनादर	न आदर
अकर्मण्य	न कर्मण्य
अजर	न जर
अधीर	न धीर
अनर्थ	न अर्थ
अधर्म	न धर्म
अनचाही	न चाही
अनदेखी	न देखी
अनंत	न अंत
अनश्वर	न नश्वर
अनाथ	न नाथ
अनहोनी	न होनी
असत्य	न सत्य
अनिच्छा	न इच्छा
अन्याय	न न्याय
अब्राह्मण	न ब्राह्मण
अमर	न मर
अयोग्य	न योग्य
असंभव	न संभव
असत्य	न सत्य
अस्थिर	न स्थिर
अज्ञान	न ज्ञान
नास्तिक	न आस्तिक
अनादि	न आदि

(2) कर्मधारय समास : जिन सामासिक शब्दों में उत्तरपद प्रधान है तथा विशेष्य होता है, वे कर्मधारय समास कहलाते हैं। इनमें पूर्वपद विशेषण होता है। यानी पूर्वपद और उत्तरपद विशेषण तथा विशेष्य के रूप में जुड़े रहते हैं। यह संबंध उपमान और उपमेय का भी होता है। कर्मधारय समास को निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं—

(क) विशेषण-विशेष्य कर्मधारय

समस्तपद	**विग्रह**
अश्रुगैस	अश्रु को लाने वाली गैस
नीलकमल	नीला है जो कमल
अंधकूप	अंधा है जो कूप
का पुरुष	कायर है जो पुरुष
कृष्णसर्प	कृष्ण है जो सर्प
कुबुद्धि	बुरी है जो बुद्धि
दुरात्मा	बुरी है जो आत्मा
घृतान्त	घृत से युक्त अन्न
दुश्चरित्र	बुरा है जो चरित्र

Pariksha Manthan

नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलाबंर	नीला है जो अंबर
नीलगाय	नीली है जो गाय
नीलकंठ	नीला है जो कंठ
पीतांबर	पीत है जो अंबर
पर्णकुटी	पर्ण से बनी कुटी
बैलगाड़ी	बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी
महाजन	महान है जो जन
प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
महात्मा	महान है जो आत्मा
महापुरुष	महान है जो पुरुष
महादेव	महान है जो देव
महाराजा	महान है जो राजा
महाविद्यालय	महान है जो विद्यालाय

(ख) उपमेयोपमान कर्मधारय समास—

समस्तपद	**विग्रह**
देहलता	देह रूपी लता
कनकलता	कनक के समान लता
करकमल	कमल के समान कर
घनश्याम	घन के समान श्याम
कुसुमकोमल	कुसुम-सा कोमल
कमलनयन	कमल के समान नयन
क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
ग्रंथरत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
चरणकमल	कमल के समान चरण
लालटोपी	लाल है जो टोपी
श्वेताम्बर	श्वेत है जो अंबर
सद्धर्म	सत् है जो धर्म
रेलगाड़ी	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
स्त्रीरत्न	स्त्री रूपी रत्न
प्राणप्रिया	प्राणों के समान प्रिय
भुजदंड	दंड के समान भुजा
मुखचंद्र	चंद्र के समान मुख
वचनामृत	वचन रूपी अमृत
मृगलोचन	मृग के समान लोचन
विद्याधन	विद्या रूपी धन
नरसिंह	सिंह रूपी नर

(3) अव्ययीभाव समास : अव्ययीभाव समास में पहला शब्द (पद) प्रधान होता है तथा यही पद अव्यय भी होता है। जैसे— यथासंभव शब्द में 'यथा' अव्यय है। इस प्रकार के सामासिक शब्दों का प्रयोग क्रिया विशेषण की तरह होता है। अर्थात् ये क्रिया की विशेषता को इंगित करते हैं। इन्हें निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है—

समस्तपद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रसंगानुकूल	प्रसंग के अनुकूल
आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार
यथासामर्थ्य	सामर्थ्य के अनुसार
बीचोंबीच	बीच ही बीच
निःसंकोच	संकोच के बिना
सपरिवार	परिवार सहित
भरसक	पूरी शक्ति से
निडर	बिना डर
बखूबी	खूबी के साथ
बाकायदा	कायदे के अनुसार
हररोज	रोज-रोज
बेफायदा	फायदे के बिना
बेशक	शक के बिना
आजीवन	जीवन-पर्यंत/जीवन भर
आजन्म	जन्म से लेकर
आमरण	मरण तक
गांव-गांव	प्रत्येक गांव
आसमुद्र	समुद्र तक
गली-गली	प्रत्येक गली
यथाविधि	विधि के अनुसार
बेकाम	बिना काम के
भरपेट	पेट भर के
यथानियम	नियम के अनुसार
यथामति	मति के अनुसार
बेखटके	बिना खटके के

(4) द्विगु समास : जिन सामासिक शब्दों में पहला शब्द (पद) संख्या को व्यक्त करने वाला विशेषण होता है, वे द्विगु समास कहलाते हैं। इस प्रकार के सामासिक शब्द समाहार और समूह का ज्ञान कराते हैं। हिन्दी व्याकरण के विद्वानों का मत है कि द्विगु समास, कर्मधारय समास का ही एक प्रकार है।

द्विगु समास को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है—

समस्तपद	**विग्रह**
दोपहर	दो पहरों का समाहार
नवग्रह	नौग्रहों का समूह
सतसई	सात सौ दोहों का समूह
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
अठन्नी	आठ आनों का समूह
नवरत्न	नौ रत्नों का समूह

Parikha Manthan

चौपाई	चार पदों का समूह
त्रिभुवन	तीन भुवनों (लोकों) का समूह
सप्ताह	सात दिनों का समूह
चतुष्पदी	चार पदों का समाहार
अष्टाध्यायी	अष्ट अध्यायों का समाहार
अष्टसिद्धि	आठ सिद्धियों का समाहार
चवन्नी	चार आनों का समाहार
चौमासा	चार मासों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
पंचतंत्र	पंच तंत्रों का समाहार
पंचवटी	पंच वटों का समाहार
पंजाब	पांच आबों का समाहार
षड्रस	छः रसों का समाहार

(5) द्वंद्व समास : इस प्रकार के सामासिक शब्दों में प्रधानता की दृष्टि से दोनों पद समान होते हैं। इनको पृथक करने पर एवं, और, अथवा जैसे योजक प्रयुक्त होते हैं।

जैसे—मां-बाप। यहां दोनों पद समान हैं, किंतु जब इन्हें अलग करेंगे तो लिखेंगे मां और बाप। यहां 'और' का प्रयोग योजक के रूप में हुआ है।

द्वंद्व समास को निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं—

समस्तपद	**विग्रह**
दाल-भात	दाल और भात
राजा-रंक	राजा और रंक
सीताराम	सीता और राम
नमक-मिर्च	नमक और मिर्च
राम-लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
धूप-दीप	धूप और दीप
राजा-प्रजा	राजा और प्रजा
लोटा-डोरी	लोटा और डोरी
आचार-व्यवहार	आचार और व्यवहार
खरा-खोटा	खरा या खोटा
धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
दिन-रात	दिन और रात
अन्न-जल	अन्न और जल
अपना-पराया	अपना और पराया
अमीर-गरीब	अमीर और गरीब
आटा-दाल	आटा और दाल
आशा-निराशा	आशा और निराशा
धनी-मानी	धनी और मानी
नर-नारी	नर और नारी
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
फूल-पत्ती	फूल और पत्ती
भला-बुरा	भला और बुरा

(6) बहुव्रीहि समास : इस प्रकार के सामासिक शब्दों में हालांकि दोनों पद प्रधान नहीं होते हैं, यानी किसी भी पद की प्रधानता नहीं होती है, किंतु दोनों पदों के योग से किसी तीसरे शब्द का विशेषण ध्वनित होता है।

जैसे—'गजानन' में कोई पद प्रधान नहीं है, किंतु दोनों पद मिलकर गणेश के अर्थ का बोध करा रहे हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों से बहुव्रीहि समास को समझ सकते हैं—

समस्तपद	**विग्रह**
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
दशानन	दस हैं आनन जिसके (रावण)
श्वेताम्बर	श्वेत है अंबर जिसका (सरस्वती)
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
पीताम्बर	पीत है अंबर जिसका (विष्णु)
चतुर्मुख	चार हैं मुख जिसके (ब्रह्मा)
पंचानन	पांच हैं आनन जिसके (शिव)
चारपाई	चार हैं पाए जिसके
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी
उदारहृदय	उदार है हृदय जिसका
कमलनयन	कमल जैसे नयनों वाला (राम)
नकटा	नाक कटा है जिसका
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
निर्दय	नहीं है दया जिसमें
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका (शिव)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के आगे सुझाए गये विकल्पों में से सही विकल्प का चयन करिए—

1. दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने नये सार्थक शब्द को कहते हैं—
   (क) छंद (ख) अव्यय
   (ग) संधि (घ) समास
2. हिन्दी व्याकरण में समास के कितने प्रकार बताए गये हैं?
   (क) दो (ख) आठ
   (ग) छह (घ) दस
3. समास का शाब्दिक अर्थ होता है—
   (क) विच्छेद (ख) विग्रह
   (ग) विस्तार (घ) संक्षेप
4. तत्पुरुष समास में होता है—
   (क) उत्तर पद प्रधान (ख) पूर्व पद प्रधान
   (ग) दोनों पद प्रधान (घ) इनमें से कोई नहीं
5. जिस समास में उत्तरपद प्रधान होने के साथ ही पूर्वपद और

Pariksha Manthan

उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, वह कहलाता है—

(क) द्वंद्व समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) बहुव्रीहि समास

6. निम्नलिखित में से किसमें पहला पद प्रधान तथा अव्यय होता है?

(क) बहुव्रीहि समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) अव्ययीभाव समास

7. निम्नलिखित में से किसमें पहला पद संख्यात्मक विशेषण होता है?

(क) द्विगु समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) कर्मधारय समास

8. किस समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है?

(क) द्विगु समास (ख) बहुव्रीहि समास
(ग) अव्ययीभाव समास (घ) कर्मधारय समास

9. निम्नलिखित में कौन अव्ययीभाव समास है?

(क) कुमारी (ख) आचारकुशल
(ग) गृहागत (घ) प्रतिदिन

10. निम्नलिखित में से किसमें कर्मधारय समास है?

(क) नीलोत्पलम् (ख) चक्रपाणि
(ग) चतुर्युगम् (घ) माता-पिता

11. अनायास है—

(क) द्विगु समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) तत्पुरुष समास

12. 'जितेन्द्रिय' में कौन-सा समास है?

(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष
(ग) बहुव्रीहि (घ) द्वंद्व

13. हैदराबाद है—

(क) तत्पुरुष समास (ख) बहुव्रीहि समास
(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

14. निशाचर है—

(क) बहुव्रीहि समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) अव्ययीभाव समास (घ) कर्मधारय समास

15. 'देशांतर' में कौन-सा समास है?

(क) द्विगु समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) द्वंद्व समास

16. 'दीनानाथ' में कौन सा समास है?

(क) द्वंद्व (ख) द्विगु
(ग) कर्मधारय समास (घ) बहुव्रीहि समास

17. गोशाला है—

(क) द्वंद्व समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

18. 'मुख-दर्शन' में कौन-सा समास है?

(क) तत्पुरुष समास (ख) द्विगु समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) द्वंद्व समास

19. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द बहुव्रीहि समास का सही उदाहरण है?

(क) त्रिभुवन (ख) निशिदिन
(ग) पुरुषसिंह (घ) पंचानन

20. कविश्रेष्ठ है—

(क) तत्पुरुष समास (ख) द्विगु समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) द्वंद्व समास

21. 'चौराहा' में कौन-सा समास है?

(क) तत्पुरुष समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) द्विगु समास (घ) बहुव्रीहि समास

22. मारपीट है—

(क) द्विगु समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) अव्ययीभाव समास (घ) कर्मधारय समास

23. 'दशमुख' में कौन सा समास है?

(क) बहुव्रीहि समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) द्विगु समास (घ) तत्पुरुष समास

24. कन्यादान है—

(क) बहुव्रीहि समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

25. निम्नलिखित में से एक शब्द में द्विगु समास है, उस शब्द का चयन करिये—

(क) भूदान (ख) पुरुषसिंह
(ग) आजीवन (घ) सप्ताह

26. देशप्रेम है—

(क) तत्पुरुष समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

27. निम्नलिखित में से द्विगु समास का उदाहरण कौन सा है?

(क) दिन-रात (ख) त्रिभुवन
(ग) अन्वय (घ) चतुरानन

28. निम्न में से द्वंद्व समास का उदाहरण है—

(क) नेत्रहीन (ख) पीताम्बर
(ग) रुपया-पैसा (घ) चौराहा

29. देवासुर है—

(क) द्वंद्व समास (ख) बहुव्रीहि समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) कर्मधारय समास

30. 'यथाशक्ति' का सही विग्रह क्या होगा?

(क) यथा जो शक्ति (ख) जितनी शक्ति
(ग) जैसी शक्ति (घ) शक्ति के अनुसार

31. सपरिवार है—

Parikshā Manthan

(क) बहुव्रीहि समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) कर्मधारय समास

32. 'पाप-पुण्य' में कौन सा समास है?
(क) तत्पुरुष समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) बहुव्रीहि समास

33. तन-मन-धन है—
(क) द्विगु समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) अव्ययीभाव समास

34. आनंदमठ है—
(क) तत्पुरुष समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) बहुव्रीहि समास

35. 'परमेश्वर' में कौन सा समास है?
(क) तत्पुरुष समास (ख) द्विगु समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) अव्ययीभाव समास

36. 'नवग्रह' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) द्विगु समास

37. 'विद्यार्थी' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) तत्पुरुष
(ग) बहुव्रीहि (घ) द्वंद्व

38. 'साग-पात' में कौन सा समास है?
(क) द्वंद्व समास (ख) द्विगु समास
(ग) अव्ययीभाव समास (घ) कर्मधारय समास

39. 'नीलकमल' में कौन सा समास है?
(क) कर्मधारय समास (ख) द्विगु समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) बहुव्रीहि

40. 'त्रिफला' है—
(क) कर्मधारय समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) द्विगु समास

41. पाकिटमार है—
(क) बहुव्रीहि समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) द्वंद्व समास

42. अष्टाध्यायी है—
(क) द्विगु समास (ख) बहुव्रीहि समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) द्वंद्व समास

43. धक्का-मुक्की में है—
(क) कर्मधारय समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) द्विगु समास

44. 'चतुर्भुज' में कौन सा समास है?
(क) बहुव्रीहि समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) तत्पुरुष समास

45. 'भाई-बहन' में कौन सा समास है?
(क) द्विगु समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) बहुव्रीहि समास

46. 'वनवास' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) तत्पुरुष समास

47. 'पंचवटी' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय समास (ख) द्विगु समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) तत्पुरुष समास

48. 'पीताम्बर' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

49. 'नरोत्तम' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) अव्ययीभाव समास

50. 'युधिष्ठिर' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय समास (ख) द्विगु समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) बहुव्रीहि समास

51. 'आजन्म' शब्द में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) अव्ययीभाव समास (घ) तत्पुरुष समास

52. 'अठन्नी' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) तत्पुरुष समास

53. 'मिठबोला' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) तत्पुरुष समास

54. 'सुमति' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) कर्मधारय समास

55. 'सुखप्राप्त' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) द्वंद्व समास

56. 'लौहपुरुष' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष समास (ख) द्विगु समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) बहुव्रीहि समास

57. निम्न में से किसमें कर्मधारय समास है?
(क) लेन-देन (ख) चरणकमल
(ग) नीलाम्बर (घ) विद्यारत्न

58. निम्न में से किसमें द्वंद्व समास नहीं है?
(क) हरिशंकर (ख) धन-धान्य
(ग) घर-बाहर (घ) दिन-दिन

59. बारहसिंगा है—

Pariksha Manthan

(क) बहुव्रीहि समास (ख) कर्मधारय समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) द्विगु समास

60. 'शैलनंदिनी' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) द्विगु समास

61. चौहद्दी है—
(क) द्वंद्व समास (ख) द्विगु समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) बहुव्रीहि समास

62. खटमीठा है—
(क) द्विगु समास (ख) बहुव्रीहि समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) कर्मधारय समास

63. 'मनोहर' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) तत्पुरुष समास

64. त्रिनेत्र है—
(क) बहुव्रीहि समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) द्विगु समास (घ) तत्पुरुष समास

65. 'गिरिधर' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) द्वंद्व समास

66. 'अकारण' में कौन-सा समास है?
(क) द्वंद्व समास (ख) द्विगु समास
(ग) तत्पुरुष समास (घ) अव्ययीभाव समास

67. मंत्रिपरिषद है—
(क) द्वंद्व समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) द्विगु समास (घ) कर्मधारय समास

68. 'पदच्युत' में है—
(क) तत्पुरुष समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) कर्मधारय समास

69. 'न्यूनाधिक' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि समास (ख) द्विगु समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) बहुव्रीहि समास

70. 'मृत्युंजय' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) द्वंद्व
(ग) अव्ययीभाव (घ) बहुव्रीहि

71. 'रातोंरात' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु
(ग) द्वंद्व (घ) बहुव्रीहि

72. 'बेकाम' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) तत्पुरुष
(ग) बहुव्रीहि (घ) अव्ययीभाव

73. 'प्रेमातुर' में कौन-सा समास है—
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष
(ग) द्विगु (घ) द्वंद्व

74. 'तुलसीकृत' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) अव्ययीभाव
(ग) द्वंद्व (घ) द्विगु

75. 'बैलगाड़ी' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) द्विगु
(ग) द्वंद्व (घ) बहुव्रीहि

76. 'देहलता' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) कर्मधारय
(ग) द्वंद्व (घ) तत्पुरुष

77. 'पंसेरी' में कौन-सा समास है?
(क) द्वंद्व (ख) बहुव्रीहि
(ग) द्विगु (घ) अव्ययीभाव

78. 'सतसई' में कौन-सा समास है?
(क) द्वंद्व (ख) बहुव्रीहि
(ग) अव्ययीभाव (घ) द्विगु

79. 'देश-विदेश' शब्द है—
(क) द्विगु समास (ख) द्वंद्व समास
(ग) अव्ययीभाव समास (घ) तत्पुरुष समास

80. नाना-नानी—
(क) द्विगु समास (ख) तत्पुरुष समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) द्वंद्व समास

81. 'दुरात्मा' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) द्वंद्व
(ग) बहुव्रीहि (घ) तत्पुरुष

82. 'सुलोचना' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि (ख) द्वंद्व
(ग) द्विगु (घ) अव्ययीभाव

83. 'भरपेट' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि (ख) कर्मधारय
(ग) अव्ययीभाव (घ) द्वंद्व

84. 'अल्पबुद्धि' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि (ख) कर्मधारय
(ग) अव्ययीभाव (घ) द्विगु

85. 'अनुदान' में कौन-सा समास है?
(क) बहुव्रीहि (ख) तत्पुरुष
(ग) द्विगु (घ) द्वंद्व

86. 'बेलाग' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि
(ग) अव्ययीभाव (घ) द्विगु

87. 'समक्ष' में कौन-सा समास है?

Parikshā Manthan

(क) तत्पुरुष (ख) द्विगु
(ग) द्वंद्व (घ) अव्ययीभाव

88. 'चिड़ीमार' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय
(ग) द्विगु (घ) द्वंद्व

89. 'माखनचोर' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) अव्ययीभाव
(ग) तत्पुरुष (घ) द्विगु

90. 'लव-कुश' में कौन-सा समास है?
(क) द्वंद्व (ख) द्विगु
(ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय

91. 'माल गोदाम' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्विगु
(ग) द्वंद्व (घ) कर्मधारय

92. 'कपड़ा-लत्ता' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) द्वंद्व
(ग) अव्ययीभाव (घ) बहुव्रीहि

93. 'गोपाल' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) द्वंद्व
(ग) बहुव्रीहि (घ) कर्मधारय

94. 'शिव-पार्वती' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) कर्मधारय
(ग) बहुव्रीहि (घ) द्वंद्व

95. 'पद-पंकज' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) द्विगु
(ग) द्वंद्व (घ) तत्पुरुष

96. 'मदमाता' में कौन-सा समास है??
(क) द्विगु (ख) तत्पुरुष
(ग) अव्ययीभाव (घ) बहुव्रीहि

97. 'देवालय' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व
(ग) द्विगु (घ) बहुव्रीहि

98. 'मृगछौना' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) कर्मधारय
(ग) द्वंद्व (घ) तत्पुरुष

99. 'सन्मार्ग' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु (ख) कर्मधारय
(ग) द्वंद्व (घ) बहुव्रीहि

100. 'निधड़क' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु
(ग) कर्मधारय (घ) द्वंद्व

101. निम्नलिखित में से कौन तत्पुरुष समास का उदाहरण नहीं है?
(क) राजकुमार (ख) यज्ञवेदी
(ग) आजन्म (घ) ग्रामवासी

102. 'यथारुचि' में समास है—
(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि
(ग) अव्ययीभाव (घ) द्वन्द्व

103. 'दाल-भात' में समास है—
(क) अव्ययीभाव समास (ख) द्वन्द्व समास
(ग) कर्मधारय समास (घ) तत्पुरुष समास

104. निम्नलिखित में से कौन अव्ययीभाव समास का उदाहरण है?
(क) रजा-रंक (ख) त्रिभुवन
(ग) पंजाब (घ) गांव-गांव

105. निम्नलिखित में से कौन उपमेयोपमान कर्मधारय समास का उदाहरण है?
(क) यथामति (ख) आजन्म
(ग) लालटोपी (घ) अमीर-गरीब

106. निम्नलिखित में से कौन विशेषण-विशेष्य कर्मधारय समास का उदाहरण है?
(क) नीलकलम (ख) आजीवन
(ग) पंचतंत्र (घ) नमक-मिर्च

107. 'गली-गली' में है—
(क) द्विगु समास (ख) अव्ययीभाव समास
(ग) अश्रुगैस (घ) वचनामृत

108. निम्नलिखित में से कौन बहुव्रीहि समास का उदाहरण है?
(क) अधीर (ख) अमृतधारा
(ग) अल्पबुद्धि (घ) बेखटके

109. 'नमक-मिर्च' में है—
(क) द्वन्द्व समास (ख) द्विगु समास
(ग) बहुव्रीहि समास (घ) इनमें से कोई नहीं

110. निम्नलिखित में से कौन द्विगु समास का उदाहरण है?
(क) यथाशक्ति (ख) त्रिलोक
(ग) धूप-दीप (घ) लोटा-डोरी

111. 'यथाविधि' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव समास (ख) द्विगु समास
(ग) द्वंद्व समास (घ) कर्मधारय समास

112. निम्नलिखित में से कौन संबंध तत्पुरुष का उदाहरण है?
(क) अनादर (ख) अनर्थ
(ग) व्यवहारकुशल (घ) राष्ट्रपतिभवन

113. 'गुरुदत्त' में कौन-सा समास है?
(क) द्वंद्व समास (ख) द्विगु समास
(ग) अपादान तत्पुरुष समास (घ) करण तत्पुरुष समास

114. निम्नलिखित में से कौन कर्म तत्पुरुष समास का उदाहरण है?
(क) अनंत (ख) अनश्वर

Pariksha Manthan

(ग) राजमाता (घ) परलोकगमन

115. समास में पृथकीकरण की क्रिया कहलाती है—
(क) विच्छेद (ख) विग्रह
(ग) संयोग (घ) संक्षेपीकरण

116. समास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(क) यह दो वर्णों के योग से बनता है।
(ख) यह दो ध्वनियों के योग से बनता है।
(ग) यह दो पदों के योग से बनता है।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

117. 'दयार्द्र' में कौन-सा समास है?
(क) द्विगु समास (ख) करण तत्पुरुष समास
(ग) कर्म तत्पुरुष समास (घ) द्वंद्व समास

118. निम्नलिखित में से कौन-सा द्विगु समास का उदाहरण है?
(क) मुखचन्द्र (ख) पंचदेव
(ग) धर्माधर्म (घ) बेफायदा

119. किस प्रकार के सामासिक शब्दों का प्रयोग 'क्रिया विशेषण' की तरह होता है?
(क) अव्ययीभाव सामासिक शब्द
(ख) द्विगु सामासिक शब्द
(ग) द्वंद्व सामासिक शब्द
(घ) बहुव्रीहि सामासिक शब्द

120. समाहार और समूह का ज्ञान करवाने वाले सामासिक शब्द होते हैं—
(क) द्विगु सामासिक शब्द (ख) द्वंद्व सामासिक शब्द
(ग) बहुव्रीहि सामासिक शब्द (घ) तत्पुरुष सामासिक शब्द

उत्तरमाला

1. (घ)	2. (ग)	3. (घ)	4. (क)	5. (ग)
6. (घ)	7. (क)	8. (ख)	9. (घ)	10. (क)
11. (ख)	12. (ग)	13. (क)	14. (ख)	15. (घ)
16. (ग)	17. (ख)	18. (क)	19. (घ)	20. (क)
21. (ग)	22. (ख)	23. (क)	24. (ख)	25. (घ)
26. (क)	27. (ख)	28. (ग)	29. (क)	30. (घ)
31. (क)	32. (ग)	33. (ख)	34. (क)	35. (ग)
36. (घ)	37. (ख)	38. (क)	39. (क)	40. (घ)
41. (ख)	42. (क)	43. (ख)	44. (क)	45. (ग)
46. (घ)	47. (ख)	48. (क)	49. (ख)	50. (घ)
51. (ग)	52. (क)	53. (ख)	54. (घ)	55. (ग)
56. (ग)	57. (ख)	58. (क)	59. (घ)	60. (क)
61. (ख)	62. (ग)	63. (घ)	64. (क)	65. (ग)
66. (घ)	67. (ख)	68. (क)	69. (ग)	70. (घ)
71. (क)	72. (घ)	73. (ख)	74. (क)	75. (क)
76. (ख)	77. (ग)	78. (घ)	79. (ख)	80. (घ)
81. (ग)	82. (क)	83. (ग)	84. (क)	85. (ख)
86. (ग)	87. (घ)	88. (क)	89. (ग)	90. (क)
91. (क)	92. (ख)	93. (ग)	94. (घ)	95. (क)
96. (ख)	97. (क)	98. (घ)	99. (ख)	100. (क)
101. (ग)	102. (ग)	103. (ख)	104. (घ)	105. (ग)
106. (क)	107. (ख)	108. (ग)	109. (क)	110. (ख)
111. (क)	112. (घ)	113. (घ)	114. (घ)	115. (ख)
116. (ग)	117. (ख)	118. (ख)	119. (क)	120. (क)

◆◆◆

Pariksha Manthan

पर्यायवाची या समानार्थी शब्द

पर्याय का शाब्दिक अर्थ होता है समान। जो शब्द समान अर्थ का बोध कराते हैं, यानी एकार्थ बोधक होते हैं, वे पर्यायवाची या समानार्थी कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में एक अर्थ को व्यक्त करने वाले अनेक शब्द हैं। इन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्दों के रूप में जाना जाता है। किसी भी भाषा की समृद्धता की दृष्टि से ऐसे शब्दों का विशेष महत्त्व होता है। भाषा में शब्दों के दोहराव से बचने में पर्यायवाची व समानार्थी शब्द सहायक होते हैं तथा इनके प्रयोग से भाषा का लालित्य बढ़ता है।

जैसे—अग्नि के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द हैं—पावक, आग, अनल, वैश्वानर आदि।

प्रतियोगी छात्रों की सुविधा के लिए हम यहां परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची व समानार्थी शब्दों की सूची दे रहे हैं।

- **अंधकार** - अँधेरा, तम, तिमिर
- **अच्छा** - शुभ, शोभन, उचित, उपयुक्त
- **अजेय** - अजित, अपराजेय, अपराजित
- **अतिथि** - अभ्यागत, आगंतुक, मेहमान, पाहुना
- **अनुचर** - सेवक, दास, भृत्य, परिचारक, नौकर
- **अन्य** - भिन्न, पृथक, और, दूसरा
- **अंग** - अंश, अवयव, हिस्सा, भाग
- **अनुपम** - अपूर्व, अद्वितीय, अद्‌भुत, अतुल, अनोखा।
- **अमृत** - सोम, सुधा, अमिय, पीयूष, मधु, अमी, सुरभोग।
- **अरण्य** - जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।
- **अश्व** - तुरंग, हय, घोड़ा, घोटक, बाजि, सैन्धव।
- **असुर** - दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, तमीचर, निशाचर, निश्चर, सुरारि, रजनीचर, यातुधान, इन्द्रारि।
- **अनिवार्य** - आवश्यक, अपरिहार्य, बाध्यकर, जरूरी, लाजिमी
- **अंगूठी** - मुँदरी, मुद्रिका, अंगुलिका, मुद्रा
- **अंधा** - सूरदास, अंध, नेत्रहीन, प्रज्ञाचक्षु, चक्षुहीन
- **अचला** - धरती, पृथ्वी, धरा, वसुधा, वसुन्धरा, महि
- **अकेला** - तनहा, एकाकी, एकमात्र, अनन्य, केवल
- **अचेत** - चेतनाहीन, संज्ञाहीन, बेहोश, मूर्च्छित
- **अज्ञानी** - अनजान, मूर्ख, अनभिज्ञ, मूढ़
- **अतीत** - भूत, गत, विगत, व्यतीत
- **अद्‌भुत** - अनोखा, अनूठा, विचित्र, विलक्षण, अजीब
- **अधीन** - पराश्रित, पराधीन, आश्रित, निर्भर, मातहत
- **अनजान** - अपरिचित, अजनबी, अज्ञात, नावाकिफ, नादान
- **अनुमति** - मंजूरी, स्वीकृति, आज्ञा, इजाजत, सहमति
- **अनुरोध** - निवेदन, याचना, प्रार्थना, विनती, अभ्यर्थना
- **अमर** - नित्य, अमर्त्य, अनश्वर, अक्षय
- **अल्प** - न्यून, कम, थोड़ा, अपर्याप्त
- **असभ्य** - अशिष्ट, दुःशील, बर्बर, गँवार, अभद्र
- **अध्यापक** - आचार्य, शिक्षक, गुरु, व्याख्याता, अवबोधक
- **अध्यापिका** - आचार्या, शिक्षिका, अध्यापयित्री, गुरुआणी
- **अनाज** - धान्य, अन्न, गल्ला, शस्य
- **अकाल** - सूखा, दुर्भिक्ष, दुष्काल, कुकाल, अनावृष्टि
- **अखण्ड** - पूर्ण, समूचा, अविभक्त, समग्र, सारा, पूरा
- **अर्जुन** - धनंजय, पार्थ, भारत, गुडाकेश, गांडीवधारी
- **अधिकार** - हक, स्वत्व, दावा, शक्ति, सामर्थ्य
- **अध्ययन** - अनुशीलन, पढ़ाई, परिशीलन, जाँच, परीक्षण
- **अदृश्य** - लुप्त, तिरोहित, गायब, ओझल, अंतर्धान, अस्त
- **अशुद्ध** - दूषित, अपवित्र, मलिन, गंदा, अशुचि
- **अवनति** - ह्रास, गिरावट, घटाव, अपकर्ष
- **अलग** - विलग, भिन्न, पृथक, जुदा, अलहदा
- **अहीर** - गोप, ग्वाला, गोपाल, आभीर
- **असीम** - अपरिमित, निःसीम, बेहिसाब, बेहद
- **अमीर** - धनाढ्य, धनवान, सम्पन्न, धनी
- **अभिप्राय** - प्रयोजन, आशय, तात्पर्य, मंशा, उद्देश्य, प्रयोजन
- **अभिमान** - गर्व, मद, दर्प, गरूर, घमंड, दंभ, अहंकार
- **अभागा** - भाग्यहीन, बदकिस्मत, हतभाग्य, मंदभाग्य
- **अधीर** - आकुल, आतुर, बेचैन, उतावला
- **अच्छा** - उत्तम, बढ़िया, उम्दा, चोखा, उचित, ठीक
- **अर्वाचीन** - आधुनिक, नवीन, वर्तमानकालीन
- **अनमोल** - मूल्यवान, अमूल्य, बेशकीमती, बहुमूल्य
- **अन्वेषण** - शोध, अनुसंधान, गवेषण, जांच, खोज
- **अचल** - दृढ़, अटल, अडिग, अविचल, स्थिर
- **अधर्म** - दुराचार, दुष्कर्म, कुकर्म, पाप, अंधेर, विधर्म
- **अप्सरा** - दिव्यांगना, देवबाला, देवांगना, सुरबाला, सुरसुंदरी
- **अभिजात** - उच्च, श्रेष्ठ, कुलीन
- **अपमान** - तिरस्कार, निरादर, बेइज्जती, अवमान, उपेक्षा, अनादर
- **अपयश** - अपकीर्ति, बदनामी, निन्दा, अकीर्ति, अपवाद
- **आँख**—नयन, दृग, लोचन, चक्षु, नेत्र, अक्षि
- **आँगन**—अँगना, अजिर, प्राङ्गण
- **आकाश**—गगन, नभ, अम्बर, व्योम, अन्तरिक्ष, अनन्त, आसमान, शून्य, पुष्कर, अभ्र, द्यौ, तारापथ
- **आनन्द**—सुख, हर्ष, प्रसन्नता, प्रमोद, उल्लास, आह्लाद
- **आम**—आम्र, रसाल, पिकबन्धु, सहकार, अतिसौरभ, अमृतफल
- **आग** - अग्नि, पावक, हुताशन, दहन, वाह्नि, ज्वाला, अनल

Pariksha Manthan

- **आज्ञा** - आदेश, निर्देश, हुक्म
- **आभूषण** - अलंकार, भूषण, विभूषण, गहना
- **आहार** - भोजन, खाना, खाद्य वस्तु, भक्ष्य पदार्थ
- **आडम्बर** - पाखण्ड, ढकोसला, प्रपंच, दिखावा, ढोंग
- **आँसू** - नयननीर, अश्रु, नयनजल, नेत्रवारि
- **आरोप** - दोषारोपण, आक्षेप, अभियोग, इल्जाम
- **आचरण** - व्यवहार, चाल-चलन, सदाचार, आचार, चरित्र
- **आदरणीय** - सम्माननीय, पूज्य, पूजनीय, माननीय, मान्यवर
- **आधार** - अवलंब, मूल, आश्रय, सहारा, बुनियाद
- **आलसी** - सुस्त, निकम्मा, काहिल, निरुद्यमी
- **आदित्य** - भास्कर, सूर्य, रवि, भानु, प्रभाकर, दिवाकर
- **आतंक** - संत्रास, अतिभय, दहशत, उपद्रव, भीषिका
- **आश्चर्य** - अचरज, अचंभा, ताज्जुब, कौतुक
- **आदर्श** - प्रतिमान, नमूना, मानक
- **आख्यान** - वृत्तान्त, इतिवृत्ति, कथा, कहानी, किस्सा
- **आलोचना** - टीका, समीक्षा, नुक्ताचीनी, टिप्पणी, समालोचना
- **आशय** - अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब, अर्थ, सारांश
- **आकर्षक** - मनोहर, मनोज्ञ, मोहक, मंजुल, दिलकश
- **आकाशगंगा** - मंदाकिनी, नभगंगा, सुरनदी, नभोनदी
- **आँधी** - प्रभंजन, तूफान, महावात, अंधड़
- **आकुल** - बेचैन, व्याकुल, उद्विग्न, क्षुब्ध, बेकल, व्यग्र
- **आयुष्मान** - चिरंजीव, चिरायु, शतायु, दीर्घायु, दीर्घजीवी
- **आरम्भ** - प्रारम्भ, श्रीगणेश, सूत्रपात, उद्‌भव, शुरुआत
- **आवाज** - ध्वनि, शब्द, स्वर
- **आरोग्य** - स्वस्थ, तंदुरुस्त, नीरुज, रोगरहित, नीरोग
- **इच्छा**—आकांक्षा, वाञ्छा, अभिलाषा, मनोरथ, स्पृहा, चाह, कामना, ईहा, वासना
- **इन्द्र**—सुरपति, देवराज, महेन्द्र, मधवा, शचीपति, पुरन्दर, सुरेश, देवेन्द्र, मेघवाहन, पाकशासन, यासव
- **इन्द्राणि**—इन्द्रवधू, मधवानी, शची, शतावरी, पोलोमी
- **ईश्वर**—परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, ब्रह्मा, जगदीश, अगोचर, अनन्त, जगन्नाथ, परमेश, जगतप्रभु
- **ईर्ष्या** - जलन, कुढ़न, मत्सर, द्वेष, डाह
- **ईमानदारी** - निष्कपटता, निश्छलता, सत्यनिष्ठा
- **उद्यान** - बागीचा, उपवन, बाग, वाटिका
- **उत्पत्ति** - आविर्भाव, उद्‌भव, उद्‌गम, जन्म
- **उत्साह** - जोश, साहस, हौसला, उमंग
- **उपस्थित** - मौजूद, हाजिर, वर्तमान, विद्यमान, प्रस्तुत
- **उपवास** - व्रत, अनशन, फाका, निराहार
- **उपासना** - अर्चना, आराधना, इबादत, पूजा
- **उपमा** - तुलना, सादृश्य, समानता, मिलान
- **उन्नति** - प्रगति, उत्थान, तरक्की, विकास
- **उद्देश्य** - निमित्त, ध्येय, लक्ष्य, मकसद, प्रयोजन, हेतु
- **उदारता** - औदार्य, दानशीलता, दरियादिली, वदान्यता
- **उपयुक्त** - उचित, ठीक, समीचीन, मुनासिब, वाजिब
- **उजाला** - आलोक, ज्योति, प्रकाश, रोशनी, प्रभा
- **उत्तम** - श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, बढ़िया, प्रकृष्ट, प्रशस्त
- **उपेक्षा** - उदासीनता, विरक्ति, अनासक्ति, विराग, लापरवाही
- **उलटा** - विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल, प्रतिलोम
- **उपकार** - भलाई, कल्याण, परहित, नेकी, परोपकार
- **ऊष्मा** - तपन, गर्मी, ताप, उष्णता
- **ऊँचा** - शीर्षस्थ, उच्च, ऊर्ध्व, ऊपर, उत्तुंग, बुलंद
- **ऊसर** - अनुपजाऊ, सस्यहीन, अनुर्वर
- **ऋषि** - मनीषी, मुनि, संत, साधु, महात्मा
- **ऋद्धि** - समृद्धि, बढ़ोत्तरी, वृद्धि, संपन्नता
- **ऊँट** - उष्ट्र, महाग्रीव, लम्बोष्ठ, क्रमेलक
- **एकान्त** - निर्जन, एकाकी, सूना, सुनसान
- **एकता** - ऐक्य, अभेद, एकरूपता, एकसूत्रता
- **एकाएक** - सहसा, अचानक, अकस्मात, एकदम
- **ऐश्वर्य** - समृद्धि, सम्पन्नता, वैभव, श्री, सम्पदा, सम्पत्ति, ऋद्धि
- **ऐच्छिक** - वैकल्पिक, स्वेच्छाकृत, सविकल्प, मनचाहा
- **ओंठ** - ओष्ठ, होंठ, दंतच्छद, रदनच्छद, अधर
- **ओज** - पराक्रम, बल, ताकत, दम
- **ओस** - तुषार, हिमकण, हिमबिन्दु, तुहिनकण
- **औषधि** - दवा, दवाई, भेषज, औषध
- **कमर** - कटि, श्रोणि
- **कोयल** - कोकिला, पिक, श्यामा, मदनशलाका, बासंत
- **कर्ण** - राधेय, सूतपुत्र, अंगराज, सूर्यपुत्र
- **कली** - मुकुल, कलिका, गुंचा, कोरक, पंखुड़ी
- **कस्तूरी** - मृगमद, मदलता, मृगनाभि
- **कारीगर** - शिल्पी, शिल्पकार
- **केला** - भानुफल, कदली, रम्भा
- **कारागार** - कारावास, कैद, कैदखाना, बन्दीगृह, जेल
- **कर** - महसूल, टैक्स, शुल्क
- **कंगाल** - दरिद्र, गरीब, निर्धन, अकिंचन
- **कंदरा** - गुफा, गुहा, खोह, गह्वर
- **कटु** - कर्कश, कड़ा, तीक्ष्ण, चरपरा, तीखा
- **कानूनी** - विधिसंगत, वैध, वैधानिक, विधिसम्मत
- **कामुकता** - विषयासक्ति, लंपटता, भोगासक्ति, व्यभिचारिता
- **काला** - श्याम, कृष्ण, स्याह, असित, सुरमई
- **किनारा** - तट, तीर, कूल, छोर, सिरा, पुलिन
- **किसान** - खेतिहर, काश्तकार, जोतकार, कृषक
- **किला** - दुर्ग, गढ़, कोट, कोटला
- **कीचड़** - कीच, पंक, कर्दभ, कांदो
- **कुरूप** - बदसूरत, बदशक्ल, बेडौल
- **कुत्सित** - अधम, नीच, बुरा, खराब, निकृष्ट

Pariksha Manthan

- **कृतज्ञ** - उपकृत, आभारी, कृतार्थ, ऋणी, अनुग्रहीत
- **कन्या** - बाला, बालिका, कुमारी, किशोरी, कुमारिका
- **कपट** - छल, चकमा, फरेब, झांसा, धोखा
- **कमजोर** - दुर्बल, निर्बल, अशक्त, क्षीण, असमर्थ
- **कर्मठ** - कर्मनिष्ठ, उद्यमी, उद्योगशील, कर्मपरायण
- **कष्ट** - दुःख, पीड़ा, तकलीफ, क्लेश, संताप
- **काँटा** - कण्टक, थूल, खार
- **कायर** - डरपोक, भीरू, बुजदिल, कातर, सभय, पामर
- **कृत्रिम** - नकली, अवास्तविक, बनावटी, दिखावटी
- **केवट** - मांझी, नाविक, मल्लाह, धीवर
- **केश** - अलक, गेसू, बाल, कुंतल, कच
- **कोमल** - मुलायम, सुकुमार, नर्म, नाजुक, मृदुल
- **कपड़ा** - चीर, बसन, पट, अम्बर, वस्त्र, परिधान।
- **कमल** - कज, पंकज, जलज, सरोज, नीरज, अम्बुज, वारिज, इन्दीवर, राजीव, उत्पल, अरविन्द।
- **कामदेव** - काम, मदन, मनोज, मयन, अनंग, पंचशर, मन्थन, रतिपति, मनसिज, पुष्पधन्या, स्मर, मीनकेतु, मकरध्वज।
- **कार्तिकेय** - कुमार, षडानन, शरभव, स्कन्द।
- **किरण** - रश्मि, मयूख, मरीचि, अंशु, कर।
- **कुबेर** - अनद, यक्षराज, धनाधिप, किन्नरेश, राजराज।
- **कोकिल** - कोयल, पिक, वसन्तदूत, कोकिला, परभूत।
- **कपोत** - कबूतर, हारीत, रक्तलोचन।
- **कुत्ता** - श्वा, श्वान, कुक्कुर, शुनक, सारमेव।
- **कृष्ण** - मोहन, मुरारी, गोपाल, गिरिधर, केशव, वासुदेव, नन्दनन्दन, राधारमण, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, मुरलीधर, द्वारिकाधीश, यदुनन्दन, कंसारि, बंशीधर।
- **कल्पद्रुम** - देवद्रुम, कल्पवृक्ष, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दन।
- **काक** - कौआ, वायस, काग, करठ, पिशुन।
- **कृपा** - दया, अनुग्रह, अनुकम्पा।
- **क्रोध** - कोप, रोष, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश।
- **खग** - विहग, विहंग, पक्षी, द्विज, चिड़िया, पंछी, शकुनि, पखेरू।
- **खंभा** - स्तूप, स्तम्भ, खंभ।
- **खल** - दुर्जन, दुष्ट, धूर्त, कुटिल।
- **खून** - रक्त, लहू, शोणित, रुधिर।
- **खिड़की** - वातायान, गवाक्ष, रोशनदान, झरोखा
- **खतरा** - आशंका, जोखिम, डर, भय, अंदेशा
- **खामोश** - शांत, चुप, मौन, निःशब्द, नीरव
- **खाल** - चमड़ा, चर्म, चमड़ी
- **गंगा** - सुरसरि, सुरसरिता, अमरतरंगिनी, भागीरथी, मंदाकिनी, देवनदी, जाह्नवी, देवपगा, त्रिपथगा, विष्णुनदी, नदीश्वरी।
- **गणेश** - गणपति, गजवदन, गजानन, लम्बोदर, एकदन्त, भवानीनन्दन, वक्रतुण्ड, गौरीसुत, मोदकप्रिय, विनायक।
- **गदहा** - खर, गर्दभ, बैसाखनन्दन, रासभ, धूसर, वेशर, चक्रीवान।
- **गेह** - भवन, सदन, घर, मन्दिर, निकेतन, आवास, निवास, धाम, गृह, आलय, आगार, ओक, निलय।
- **गाय** - गौरी, गौ, गो, दोग्धी, धेनु, गऊ, सुरभी।
- **गरुड़** - वैनतेय, सर्पारि, नागांतक, खगेश्वर
- **गूढ़** - क्लिष्ट, जटिल, गंभीर, दुरूह
- **गौरव** - मान, गुरुता, सम्मान, बड़प्पन, महत्त्व
- **गीला** - आर्द्र, तर, नम, क्लिग्न
- **गोद** - अंक, गोदी
- **गीदड़** - शृगाल, जंबूक, सियार
- **ग्रीष्म** - ताप, गर्मी, घाम, निदाघ
- **घट** - घड़ा, कलश, कुम्भ, निप
- **घृत** - घी, अमृत, नवनीत
- **घास** - तृण, दूर्वा, दूब, कुश, शाद
- **घिनौना** - घृण्य, वीभत्स, गर्हणीय, गंदा, घृणास्पद
- **घाव** - जख्म, व्रण, क्षत
- **घोड़ा** - बाजि, अश्व, तुरंग, हय,
- **घर** - गृह, निकेतन, सदन, भवन, धाम, आलय, आवास, निकेत, निवास
- **चतुर** - विज्ञ, निपुण, नागर, पटु, कुशल, दक्ष, प्रवीण, योग्य
- **चन्द्रमा** - सोम, सुधांशु, राकापति, द्विजराज, विधु, मयंक, सुधाकर, निशाकर, शशि, राकेश, हिमकर, कलाधर, इन्दु, मृगांक
- **चन्द्रिका** - चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी
- **चाँदी** - रजत, सौध, रूपा, रूपक, रौप्य
- **चोटी** - मूर्धा, शीश, सानु, शृंग
- **चोर** - खनक, दस्यु, साहसिक, रजनीचर, मोषक
- **चंदन** - संदल, मलयज, गंधसार, श्रीखण्ड
- **चमक** - द्युति, आभा, कांति, दीप्ति, जगमगाहट, छवि
- **चिकना** - मसृण, चिक्कण, स्निग्ध, स्नेहिल
- **छाया** - छाँह, छाँव, बिंब, परछाईं, साया, झाईं
- **छूट** - ढील, कटौती, सहूलियत, सुविधा, रियायत
- **छेद** - रंध्र, सूराख, छिद्र
- **छाती** - उर, वक्ष, वक्षस्थल, सीना
- **जल** - पानी, नीर, अम्बु, सलिल, अमृत, तोय, उदक, वारि
- **जंगल** - विपिन, कानन, अरण्य, वन
- **जहाज** - पोत, जलयान
- **जानकी** - सीता, वैदेही, जनकसुता, जनकतनया, जनकात्मजा
- **जीभ** - रसज्ञा, जिह्वा, रसना, जबान
- **जगत** - विश्व, संसार, दुनिया, लोक, भव, जग
- **जुगनू** - खद्योत, प्रभाकीट, पट, पटवीजना
- **जागरूक** - सचेत, सजग, चौकस, प्रबुद्ध, चेतन

Pariksha Manthan

- **जिद्दी** - हठीला, हठी, दुराग्रही, धृष्ट, दुर्दान्त
- **जीव** - देही, प्राणी, प्राणधारी, देहधारी
- **जूता** - उपानह, पनही, पदत्राण, चरणपादुका
- **ज्वलनशील** - दाह्य, दहनीय, दहनशील
- **झरना** - उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्रवण
- **झण्डा** - ध्वजा, पताका, केतु
- **झूठ** - मिथ्या, अनृत, असत्य, अतथ्य, वितथ्य
- **झोपड़ी** - कुंज, कुटी, कुटिया, मड़वा, पर्णकुटी, छानी
- **झुण्ड** - मंडली, पुंज, समूह, दल, गिरोह, जत्था
- **झगड़ा** - बखेड़ा, बवाल, तकरार, वितंडा, खटपट, कलह
- **टक्कर** - संघट्ट, ठोकर, धक्का, भिड़ंत, समाघात
- **टीका** - व्याख्या, भाष्य, वृत्ति, भाषान्तरण, विवृत्ति
- **टुकड़ा** - खंड, अंश, टूक, हिस्सा, भाग, अवयव
- **ठग** - छली, वंचक, जालसाज, प्रतारक, धूर्त
- **ठिठोली** - उपहास, मजाक, हँसी, दिल्लगी
- **डर** - भय, आतंक, खौफ, त्रास
- **डोरी** - रज्जु, तनी, सुतली, डोर, रस्सी
- **डाकू** - डकैत, दस्यु, बटमार, लुटेरा
- **ढाढ़स** - दिलासा, तसल्ली, धीरज, सांत्वना
- **ढीठ** - धृष्ट, प्रगल्भ, अविनीत, बेशरम, गुस्ताख
- **तरकस** - निषंग, तूण, तूणी, इषुधि, तूणीर
- **तलवार** - असि, कृपाण, करवाल, चन्द्रहास, खड्ग, खंग
- **ताँबा** - ताम्र, ताम्रक, रक्तधातु
- **तारा** - तारक, उडगन, सितारा, नक्षत्र
- **तालाब** - जलाशय, तड़ाग, पुष्कर, सर, सरोवर, ताल
- **तोता** - सुग्गा, शुक, कीर, दाडिमप्रिय, सुवा
- **तम** - अंधकार, तिमिर, अंधेरा
- **तटस्थ** - निरपेक्ष, उदासीन, निर्लिप्त, बेलाग, निष्पक्ष
- **तत्पर** - उद्यत, तैयार, कटिबद्ध, सन्नद्ध, मुस्तैद
- **तन्मय** - ध्यानस्थ, लीन, मग्न, तल्लीन
- **तंबू** - शिविर, डेरा, खेमा
- **तिरस्कार** - निरादर, उपेक्षा, अवमानना, बेइज्जती, अपमान
- **तिमिर** - तम, अंधकार, अंधेरा, तमिस्रा
- **तीर** - शर, बाण, सायक, नाराच, शिलीमुख
- **त्योहार** - पर्व, उत्सव, समारोह
- **त्रुटि** - गलती, चूक, भूल
- **थोड़ा** - तनिक, किंचित, लेशमात्र, रंचमात्र, जरा
- **थोथा** - पोला, खाली, छूछा, खोखला, रिक्त
- **थकावट** - थकन, क्लान्ति, श्रान्ति, थकान
- **दाँत** - दन्त, दशन, द्विज, रद, रदन।
- **दास** - नौकर, सेवक, अनुचर, चाकर, भृत्य, परिचायक, किंकर।
- **दिन** - दिन, दिवा, दिवस, वासर।
- **दीन** - दरिद्र, रंक, कंगाल, अकिंचन, निर्धन।
- **दुःख** - शोक, वेदना, कष्ट, पीड़ा, संताप, खेद, यातना, संकट, क्लेश, यंत्रणा, व्यथा।
- **दुर्गा** - चण्डिका, सिंहवाहिनी, कालिका, कल्याणी, कुमारी, कामाक्षी, सुभद्रा, महागौरी।
- **दूध** - दुग्ध, पय, क्षीर, अमृत।
- **देव** - अमर, देवता, सुर, निर्जर, वृन्दारक, आदित्य।
- **द्रव्य** - धन, सम्पत्ति, दौलत, विभूति, सम्पदा, वित्त।
- **दासी** - परिचारिका, भृत्या, बाँदी, अनुचरी, सेविका, किंकरी
- **दुष्ट** - नीच, दुर्जन, पिशुन, पामर, खल
- **दैत्य** - रजनीचर, असुर, सुरारि, दनुज, दानव, दैतेय, यातुधान
- **द्रौपदी** - पांचाली, कृष्णा, द्रुपदसुता, सैरंध्री, याज्ञसेनी
- **दर्पण** - शीशा, आदर्श, प्रतिमान, मुकुर, आईना, आरसी
- **दिनांक** - तारीख, तिथि, मिति
- **दामिनी** - बिजली, चपला, तड़ित, प्रभा, विद्युत
- **दंगा** - उपद्रव, फसाद, ऊधम, झगड़ा, उत्पाद
- **दया** - अनुकंपा, रहम, तरस, करुणा
- **द्वार** - दरवाजा, किवाड़, कपाट, पल्ला
- **दर्शन** - भेंट, मुलाकात, साक्षात्कार
- **दिव्य** - लोकोत्तर, स्वर्गिक, अलौकिक, लोकातीत
- **दुविधा** - धर्मसंकट, ऊहापोह, असमंजस, कशमकश
- **दाग** - धब्बा, दोष, ऐब, कलंक, लांछन
- **दीपावली** - दीपमालिका, दीवाली, दीपमाला, दीपोत्सव
- **धनुष** - धनु, कोदण्ड, शरासन, पिनाक, सारंग, चाप, कमान
- **धरती** - भू, धरा, पृथ्वी, अवनि, वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, इला, भूमि, धरणी, धरित्री, जगती, उर्वी
- **धूप** - घाम, आतप, द्योत
- **धंधा** - व्यवसाय, व्यापार, कारोबार, रोजगार
- **धनवान** - अमीर, धनी, धनाढ्य, मालदार, दौलतमंद
- **धन्यवाद** - आभार, शुक्रिया, कृतज्ञता, मेहरबानी
- **धनंजय** - अर्जुन, पार्थ, गुडाकेश, कौन्तेय, गांडीवधर
- **नदी** - सरिता, तटनी, तरंगिनी, आपगा, निर्झरिणी, निम्नगा, वाहिनी।
- **नर्क** - यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।
- **नर** - जन, मानव, मनुष्य, पुरुष, मर्त्य, मनुज।
- **नाव** - नौका, पतंग, तरणी, बेड़ा, नैया, तरी, जलयान।
- **नंगा** - नग्न, दिगम्बर, अनावृत खुला, निर्वस्त्र
- **नियति** - भाग्य, प्रारब्ध, होनी, भवितव्यता, भावी
- **नारद** - ब्रह्मर्षि, देवमुनि, देवर्षि
- **नया** - अभिनव, नव, नवीन, नूतन, नव्य
- **नरेश** - भूप, राजा, भूपति, नरेन्द्र, नरपति, भूपाल
- **नवयुवक** - नौजवान, तरुण, किशोर, कुमार
- **निकाय** - निगम, संगठन, प्रतिष्ठान, समिति, संस्था
- **निर्जीव** - प्राणहीन, निष्प्राण, मृत, मुरदा, जीवरहित

Parikshā Manthan

- **नीरस** - रसहीन, स्वादहीन, बेरस, फीका
- **निरर्थक** - व्यर्थ, बेकार, अर्थहीन, बेमतलब
- **निर्णय** - फैसला, निश्चय, निष्कर्ष, परिणाम
- **नाता** - रिश्तेदारी, वास्ता, नातेदारी, संबंध
- **पति** - नाथ, स्वामी, कांत, भर्त्ता, वल्लभ, आर्यपुत्र, ईश
- **पत्नी** - कान्ता, भार्या, वल्लभा, अर्द्धांगिनी, त्रिया, वामा, दारा, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, तिय, प्राणप्रिय, जाया
- **पत्थर** - पाहन, पाषाण, प्रस्तर, उपल
- **पथ** - मग, मार्ग, राह, पंथ, रास्ता
- **पर्वत** - पहाड़, गिरिजा, शैल, अचल, नग, भूधर, महिधर, धराधर
- **पार्वती** - गौरा, गिरिजा, उमा, शैलसुता, ईश्वरी, शिवा, भवानी, अर्पणा, दुर्गा, आर्या, अम्बिका
- **पिता** - जनक, तात, पितृ, बाप
- **पुत्र** - बेटा, सुत, तनय, आत्मज, नन्दन, पूत, नन्द
- **पुत्री** - बेटी, सुता, तनया, आत्मजा, नन्दिनी, तनुजा, दुहिता
- **पवन** - वायु, वात, हवा, समीर, बयार, अनिल, पवमान, मारुत
- **पंडित** - बुध, विद्वान, कोविद, सुधी, मनीषी, धीर, प्रज्ञ, विलक्षण
- **पुष्प** - प्रसून, गुल, सुमन, कुसुम, फूल
- **प्रकाश** - ज्योति, चमक, प्रभा, छवि, द्युति
- **पेड़** - तरु, द्रुम, वृक्ष, पादप, रूक्ष
- **पैर** - पाँव, पद, चरण, पाद, पग
- **पक्षी** - विहग, विहंग, खग, पखेरू, परिन्द, द्विज, पतंग
- **परिवर्तन** - हेर-फेर, बदलाव, तबदीली, फेरबदल
- **प्रसन्नता** - हर्ष, आनन्द, खुशी, आह्लाद, प्रफुल्लता, मोद
- **पृथ्वी** - वसुन्धरा, भूमि, धरा, धरणी, जगती, क्षोणी, वसुमती, भू, रसा, महि, अवनि, धात्री, अचला, वसुधा, धारित्री, रत्नगर्भा
- **प्रभात** - सवेरा, प्रातःकाल, उषाकाल, अरुणोदय
- **प्रपात** - झरना, सोता, निर्झर, स्रोत, उत्स
- **पत्ता** - किसलय, पल्लव, पर्ण, दल, पत्र
- **पान** - ताम्बूल, नागवेल, मुखमण्डन
- **पानी** - सलिल, नीर, पय, जल, तोय, वारि
- **पाला** - तुषार, नीहार, हिम, तुहिन, प्रालेय
- **पूर्ण** - समग्र, अखंड, निखिल, सम्पूर्ण, पूरा, सकल, सारा
- **प्रभा** - छवि, दीप्ति, द्युति, प्रकाश, चमक, आभा
- **प्रेम** - आसक्ति, रति, अनुराग, प्रीति, स्नेह, अनुरक्ति, राग
- **पवित्र** - पावन, पूत, शुचि, शुद्ध, साफ, विशुद्ध, पुनीत
- **पथिक** - बटोही, यात्री, राही, पंथी, मुसाफिर
- **परशुराम** - परशुधर, भृगुनंदन, भृगुसुत, भार्गव
- **परतंत्र** - अधीन, पराधीन, गुलाम, पराश्रित, परवश
- **प्रथा** - रीति, पद्धति, परिपाटी, परम्परा, रूढ़ि, रिवाज, दस्तूर
- **प्रजातंत्र** - लोकतंत्र, जनतंत्र
- **पशु** - जंतु, जानवर, चतुष्पद, चौपाया, मवेशी
- **पाप** - पातक, अघ, कलुष, गुनाह, दोष
- **प्यास** - तृष्णा, पिपासा, तृषा, पियास
- **पुण्य** - सत्कर्म, सुकृत, शुभकर्म, धर्म
- **प्यासा** - पिपासित, पिपासु, पियासा, तृषित
- **प्रसिद्ध** - विख्यात, प्रख्यात, मशहूर, नामवर, विश्रुत
- **प्रणाम** - नमस्ते, नमस्कार, अभिवादन, नमन
- **प्रतिभा** - मेधा, बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा, समझ
- **प्रतिकार** - बदला, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा, वैरशोधन
- **प्रबल** - सबल, सशक्त, जोरदार, ताकतवर
- **पर्याप्त** - प्रभूत, विपुल, बहुत, प्रचुर
- **प्रयत्न** - प्रयास, चेष्टा, कोशिश, उद्यम, उद्योग
- **प्रशंसा** - सराहना, बड़ाई, तारीफ, गुणगान, श्लाघा
- **प्रस्तावना** - भूमिका, प्राक्कथन, आमुख, पुरोवचन
- **प्रांजल** - साफ-सुथरा, निर्मल, स्वच्छ, बेदाग
- **फरेब** - छल, प्रवंचना, धोखा, प्रताड़ना, कपट
- **बंदर** - वानर, मर्कट, शाखामृग, हरि, कपि
- **बाण** - सर, विशिख, नाराच, सायक, शर, शिलीमुख, तीर
- **बड़ा** - विशाल, दीर्घ, वृहत, विराट
- **बर्तन** - पात्र, बरतन, भाजन, भांडा
- **बलराम** - रोहिणेय, बलभद्र, बलदेव, रेवतीरमण
- **बहिन** - सहोदरी, स्वसा, स्वसृ, भगिनी
- **विधाता** - प्रजापति, विधि, ब्रह्मा, विरंचि, स्वयंभू
- **बगीचा** - बाग, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी
- **बाल** - कच, केश, चिकुर, चूह
- **बिजली** - चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, विद्युत, बीजुरी, क्षणप्रभा, घनवल्ली, करका
- **ब्रह्मा** - विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, पितामह, चतुरानन, विरंचि, अज, कर्तार, कमलासन, नाभिजन्म, हिरण्यगर्भ
- **बहुत** - अनेक, अतीव, अति, बहुल, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार, अमित, अत्यन्त, असंख्य
- **ब्राह्मण** - द्विज, भूदव, विप्र, महीदेव, भूमिसुर, भूमिदेव
- **बाघ** - व्याल, व्याघ्र, शार्दूल, हिंस्रक, चित्रक
- **बाज** - कपोतारि, श्येन
- **बादल** - जलधर, अभ्र, वारिद, वारिवाह, घन, नीरद, वारिधर, अम्बु, मेघ
- **बालिका** - गौरी, किशोरी, बेटी, कुमारी, कन्या
- **बुद्धि** - प्रज्ञा, मति, धी, इड़ा, मेधा, अक्ल
- **बलात्कार** - शीलहरण, शीलभंग, बलात्संभोग, सतीत्वहरण
- **बहेलिया** - शिकारी, अहेरी, आखेटक, व्याध
- **बुढ़ापा** - वृद्धावस्था, वार्द्धक्य, वृद्धत्व, जीर्णावस्था, जरा
- **बेदर्द** - निर्दय, निष्ठुर, क्रूर, दयाहीन, निर्मम
- **बारिश** - बरसात, वर्षा, वृष्टि, पावस, मेह

Pariksha Manthan

- **भौंरा** - मधुप, मधुकर, द्विरेप, अलि, षट्पद, भृंग, भ्रमर
- **भाई** - तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ
- **भय** - डर, त्रास, आतंक, खौफ, भीति
- **भाँग** - चपला, विजया, शिवा, भंग, जया
- **भगिनी** - जीजी, बहन, सहोदरा, दीदी
- **भाव** - अभिप्राय, तात्पर्य, आशय, अर्थ, मतलब
- **भोला** - सरल, सीधा, निष्कपट, निश्छल
- **भेदी** - जासूस, गुप्तचर, दूत, भेदिया
- **भंगिमा** - वक्रता, टेढ़ापन
- **मछली** - मत्स्य, मीन, झख, सफरी, जलजीवन
- **मदिरा** - शराब, मद्य, मधु, हाला, आसव, वारुणी, सुरा
- **मनुष्य** - नर, मानव, मनुज, मानुष, जन, आदमी
- **महादेव** - शिव, शम्भू, शंकर, कैलाशनाथ, उमापति, त्रिलोचन, महेश, आशुतोष, चन्द्रशेखर, पशुपति
- **माँ** - अम्बा, अम्बिका, अम्मा, जननी, धात्री
- **मेघ** - घन, बादल, वारिद, नीरद, अम्बुद, पयोद, जलद, जगजीवन, अभ्र
- **मुर्गा** - तमचूक, अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट
- **मोर** - केकी, शिखी, शिखण्डी, नीलकंठ, मयूर, कलापी
- **मोक्ष** - मुक्ति, कैवल्य, अपवर्ग, परमधाम, परमपद, सदगति, निर्वाण
- **मरण** - निधन, मौत, देहान्त, देहावसान, पंचतत्त्व, मृत्यु
- **मीत** - सहचर, सखा, सुहृद, सपक्ष, मित्र, साथी
- **मूढ़** - मूर्ख, अज्ञानी, निर्बुद्धी, जड़, गंवार
- **मैना** - सारी, सारिका, त्रिलोचना, मधुरालाषा, कहहप्रिया
- **मनोहर** - मनोरम, चारु, मनोज्ञ, मंजु, मंजुल, मोहक
- **मंगल** - शुभ, कल्याण, भला, हित
- **मक्खन** - माखन, दधिसार, नैनू, नवनीत
- **मट्ठा** - छाछ, गोरस, माठा, तक्र
- **मस्तक** - ललाट, भाल, कपालक, माथा
- **मांस** - अमिष, गोश्त, पलल, पिशित
- **मुँह** - मुखड़ा, मुख, आनन, आस्य, वदन, चेहरा
- **मूंगा** - रक्तांग, प्रवाल, विद्रुम, लतामणि, रक्तमणि
- **मेढक** - दादुर, मण्डूक, दर्दुर, भेक, वर्षा भू
- **मोती** - शशिप्रभा, सीपिज, मुक्ता, मौक्तिक
- **मंडली** - जत्था, दल, समूह, झुंड टोली
- **मन** - अन्तःकरण, चित्त, मानस, जी, अंतर
- **मौलिक** - मूलभूत, आधारभूत, बुनियादी, वास्तविक
- **मेहनत** - परिश्रम, श्रम, अध्यवसाय, उद्योग, कर्मठता
- **मुनि** - तपस्वी, योगी, तापस, व्रती, साधु
- **यमुना** - कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।
- **युद्ध** - लड़ाई, रण, समर, संग्राम, जंग
- **युवती** - रमणी, तरुणी, सुंदरी, किशोरी, नवयौवना
- **यौवन** - जवानी, तारुण्य, युवावस्था
- **यश** - ख्याति, कीर्ति, प्रसिद्धि, नेकनामी
- **रक्त** - लहू, खून, रुधिर, शोणित, लोहित
- **रमा** - इन्दिरा, हरिप्रिया, श्री, लक्ष्मी, कमला, पद्मा, पद्मासना, समुद्रजा, श्रीभार्गवी, क्षीरोदतनया
- **राजा** - भूपाल, नरेश, नरपाल, महीप, राव, नरेन्द्र, नृप, नरनाह
- **रात्रि** - निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, शर्वरी, तमस्विनी, विभावरी
- **रामचन्द्र** - अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुबीर, रावणारि, जानकीवल्लभ, कमलेन्द्र, कौशल्यानन्दन
- **रावण** - दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र
- **राधिका** - राधा, ब्रजरानी, हरिप्रिया, वृषभानुजा
- **रश्मि** - अंशु, किरण, मयूख, मरीचि, कर
- **रुग्ण** - अस्वस्थ, रोगी, व्याधिग्रस्त, बीमार
- **राका** - पूर्णिमा, पूनम, पूर्णमासी, पौर्णमी, पूनो
- **राक्षस** - दैत्य, असुर, निशाचर, दानव, सुरारि
- **राहगीर** - राही, यात्री, मुसाफिर, बटोही, पथिक
- **राय** - मत, सलाह, सम्मति, परामर्श, मंत्रणा
- **रिक्त** - खाली, रीता, शून्य
- **लड़का** - बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार
- **लड़की** - बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला
- **लता** - बल्लरी, बल्ली, बेली
- **लक्ष्मण** - शेषावतार, रामानुज, लखन, शेष, सौमित्र
- **लक्ष्मी** - इंदिरा, कमला, सिन्धुसुता, रमा, हरिप्रिया, चंचला, विष्णुवल्लभा, श्री, पद्मा, भार्गवी
- **लाल** - रक्ताभ, अरुण, लोहित, रक्तितम, सुर्ख
- **लोहा** - लोहा, लौह, सार, अयस, लोह
- **लगातार** - अनवरत, सतत, निरंतर, अविराम, अजस्त्र
- **लघु** - न्यून, छोटा, थोड़ा
- **लज्जा** - हया, शर्म, व्रीड़ा, लाज, संकोच
- **लहर** - उर्मि, तरंग, हिलोर, वीचि, लहरी
- **लाचार** - मजबूर, निरुपाय, बेबस, विवश, बाध्य
- **लाभ** - फायदा, नफा, प्राप्ति, मुनाफा
- **लोभ** - तृष्णा, लालच, लिप्सा, लोलुपता
- **वर्षा** - पावस, बरसात, वर्षण, वृष्टि, बारिश
- **वसन्त** - मधुमास, माधव, कुसुमाकर, ऋतुराज
- **विष्णु** - माधव, केशव, गोविन्द, चतुर्भुज, उपेन्द्र, दामोदर, पीताम्बर, जनार्दन, चक्रपाणि, विश्वम्भर, लक्ष्मीपति, नारायण, मधुरिपु
- **वीर्य** - जीवन, सार, तेज, शुक्र, बीज
- **वज्र** - कुलिस, पवि, अशनि, दभोलि
- **विशाल** - विराट, दीर्घ, वृहत्, बड़ा, महा, महान

Pariksha Manthan

- **वस्त्र** - वसन, पट, परिधान, अम्बर, चीर, कपड़ा
- **वाण** - सर, विशिख, शिलिमुख, इषु, नाराच
- **वाणी** - बोली, गिरा, भारती, वचन, भाषा, बात
- **विद्वान** - विज्ञ, मतिमान, कोविद, सुधी, विशारद
- **विधवा** - पतिहीना, अनाथा, राँड
- **वृक्ष** - पादप, द्रुम, विटप, शाखी, पेड़
- **व्यभिचारिणी** - भ्रष्टा, कुलटा, पुश्चली, छिनाल, कामारा, स्वैरिणी, नष्टा
- **व्यसन** - आदत, टेक, आसक्ति, बान, लत
- **व्यास** - द्वैपायन, पाराशर, वेदव्यास
- **विद्युत** - तड़ित, दामिनी, बिजली, क्षणप्रभा, चपला
- **वंदना** - पूजा, अर्चना, स्तुति, आराधना, प्रार्थना
- **वस्तुतः** - दरअसल, यथार्थतः, सचमुच
- **वस्तु** - चीज, पदार्थ, द्रव्य
- **विलोम** - विपरीत, विरुद्ध, खिलाफ, उल्टा
- **वायु** - हवा, अनिल, समीर, मारुत, पवन,
- **वक्ष** - उर, सीना, छाती, वक्षस्थल
- **विमान** - वायुयान, हवाई जहाज, नभयान
- **वातावरण** - पर्यावरण, वायुमण्डल, परिवेश
- **विद्या** - शिक्षा, गुण, हुनर, सरस्वती, ज्ञान, इल्म
- **विधि** - तरीका, रीति, प्रणाली, पद्धति
- **विमल** - स्वच्छ, निर्मल, साफ, पावन, विशुद्ध
- **वक्ता** - वाचक, व्याख्याता, भाषणकर्ता
- **वक्र** - तिरछा, कुटिल, तिर्यक, टेढ़ा
- **वपु** - देह, काया, शरीर, जिस्म, वदन, तन
- **वर्ग** - कोटि, जमात, श्रेणी, समुदाय, सम्प्रदाय
- **विकृति** - विकार, दोष, बुराई, खराबी
- **विघ्न** - व्यवधान, बाधा, रोड़ा, अड़चन, अड़ंगा, रुकावट
- **विभा** - प्रभा, शोभा, आभा, कांति, चमक
- **विभोर** - मुग्ध, लीन, मस्त, मग्न, तल्लीन
- **विलासी** - कामुक, विषयी, कामी, भोगी, लंपट
- **व्याध** - बहेलिया, आखेटक, लुब्धक, शिकारी, अहेरी
- **शत्रु** - दुश्मन, रिपु, वैरी, अरि, अमित्र
- **शब्द** - घोष, ध्वनि, रव, नाद, स्वर, निनाद
- **शराब** - वारुणी, मदिरा, हाला, मद्य, दारू, सुरा, वीरा
- **शरीर** - देह, कलेवर, वपु, काया, तन, बदन
- **शहद** - मधु, मकरंद, पुष्परस, पुष्पासव
- **शिव** - पशुपति, महेश, शंकर, चन्द्रशेखर, भूतेश, गिरीश, श्रीकंठ, महादेव, त्रिलोचन, रुद्र, उमापति, व्योमकेश, महेश्वर, हर, स्मरारि
- **शीघ्र** - त्वरित, क्षिप्र, द्रुत, सत्वर, अविलम्ब
- **शेषनाग** - फणीश, अहीश, धरणीधर, शेष
- **श्वेत** - शुक्ल, धवल, शुचि, शुभ्र, सित, गौर, अवदात
- **शपथ** - सौगंध, सौंह, कसम हलफ
- **शस्य** - उपज, फसल, पैदावार
- **शाश्वत** - नित्य, सनातन, अक्षय, अनश्वर
- **शिष्ट** - भद्र, शालीन, सौम्य, संभ्रांत
- **शृंगार** - रूपसज्जा, सजावट, सिंगार, साजसज्जा, भूषा
- **शोभा** - सुन्दरता, सुषमा, छटा, सौन्दर्य, मनोहरता
- **षडयंत्र** - अभिसंधि, दुरभिसंधि, साजिश, कुचक्र
- **सर्प** - अहि, नाग, भुजंग, विषधर, ब्याल, उरग, पन्नग, साँप, सारंग
- **स्वर्ण** - सुवर्ण, कंचन, हेन, हारक, जातरूप, सोना, तामरस, हिरण्य
- **सरस्वती** - गिरा, शारदा, भारती, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी, वीणावादिनी
- **समुद्र** - सागर, सिन्धु, उदधि, नदीश, वारीश, अम्बुधि, नीरनिधि, रत्नाकर, पयोनिधि, अर्णव, तोयनिधि, सरित्पति
- **सूर्य** - दिनकर, रवि, भानु, भास्कर, अर्क, तरणि, पतंग, आदित्य, सविता, हंस, अंशुमाली, मार्तण्ड
- **समूह** - दल, झुण्ड, समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृन्द, गण, संघ, समुच्चय
- **सिंह** - शेर, केहरि, मृगेन्द्र, मृगराज, केशरी, नखायुध, बहुबल, व्याघ्र, वनराज, शार्दूल, हरि
- **सुन्दर** - ललित, ललाम, मंजुल, रुचिर, चारु, रम्य, मनोहर, सुहावना, चित्ताकर्षक, रमणीक, कमनीय, उत्कृष्ट, उत्तम, सुरम्य
- **सन्ध्या** - सायंकाल, शाम, साँझ, प्रदोषकाल, गोधूलि
- **स्त्री** - सुन्दरी, कान्ता, कलत्र, रमणी, महिला, ललना, वनिता, सुन्दरी
- **स्वर्ग** - सुरलोक, देवलोक, दिव्य, ब्रह्मधाम, द्यौ
- **सीता** - वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया
- **सहेली** - आली, सखी, सहचरी, सजनी, सैरन्ध्री
- **संसार** - लोक, जग, जहान, जगत, विश्व
- **समीप** - सन्निकट, आसन्न, निकट, पास
- **सेना** - ऊनी, कटक, दल, चमू, अनीक, अनीकिनी
- **साधु** - सज्जन, भद्र, सभ्य, शिष्ट, कुलीन
- **सगर्भ** - बंधु, भाई, सजात, सहोदर, भ्राता, सोदर
- **सगर्भा** - सजाता, सहोदरा, बहिन, सोदरा, भगिन
- **हस्त** - हाथ, कर, पाणि, बाहु, भुजा
- **हाथी** - कुंजर, गज, हस्ति, करि, नाग, मतंग, दन्ती, वारण
- **हिमालय** - नगपति, हिमपति, नगराज, हिमाद्रि, हिमगिरि, गिरिराज
- **हिरण** - सुरभी, कुरग, मृग, सारंग, हिरन
- **होंठ** - ओष्ठ, ओंठ, अधर
- **हनुमान** - पवनसुत, पवनकुमार, महावीर, रामदूत, मारुततनय, मारुतनंदन।

- **हंस** - कलकंठ, मराल, सिपपक्ष, मानसौक, सरस्वती वाहन
- **हर्ष** - आनन्द, प्रसन्नता, मोद, आह्लाद, उल्लास
- **हवा** - बयार, अनिल, पवन, वायु, समीर, समीरण, प्रभंजन
- **हिस्सा** - टुकड़ा, अंश, भाग, अंग, खण्ड, अवयव
- **हार** - पराभव, पराजय, शिकस्त, मात
- **हितैषी** - शुभेच्छु, मंगलाकांक्षी, हितचिंतक, शुभचिंतक
- **हँसी** - मुस्कुराहट, मुस्कान, हास्य, स्मित
- **हित** - भलाई, भला, कल्याण, उपकार, मंगल

परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द

- **अचल** - स्थिर, दृढ़, अविचल
- **अमृत** - सुधा, पीयूष, अमिय, अमी
- **अग्नि** - आग, अनल, पावक, वैश्वानर
- **अंधकार** - अंधेरा, तम, तिमिर, तमस
- **अधर्म** - पाप, अपकर्म, अन्याय
- **अश्व** - घोड़ा, तुरंग, बाजि, घोटक
- **अवज्ञा** - अनादर, उपेक्षा, तिरस्कार
- **आंख** - दृग, चक्षु, नेत्र, लोचन, नयन
- **आकाश** - व्योम, नभ, अंबर, गगन
- **आम** - रसाल, आम्र, अतिसौरभ
  (नोट : हिन्दी भाषा में अरबी भाषा का 'आम' शब्द भी प्रचलित है। अरबी भाषा में 'आम' का अर्थ फल नहीं होता। इस भाषा में 'आम' शब्द सामान्य, साधारण, व्यापक जैसे अर्थों का बोध करवाता है। जैसे- 'आम आदमी का जीवन परेशानियों से भरा है' वाक्य में 'आम' 'साधारण' के अर्थ में प्रयुक्त है। याद रहे संस्कृत भाषा में 'आम' अपक्व अवस्था का बोध करवाता है।
- **इच्छा** - चाह, कामना, अभिलाषा, आकांक्षा
- **इंद्र** - देवेश, देवेन्द्र, सुरेश, देवराज
- **उपवन** - वाटिका, उद्यान, बाग, बगीचा
- **उपहास** - परिहास, मजाक, खिल्ली, दिल्लगी, हंसी (निंदासूचक)
- **क्रोध** - कोप, गुस्सा, अमर्ष
- **किरण** - रश्मि, अंशु, कर, मरीचि, मयूख
- **कृष्ण** - मुरलीधर, केशव, मधुसूदन, द्वारिकाधीश, श्याम, मोहन
- **कमल** - पंकज, जलज, इंदीवर, उत्पल, नीरज, सरोज
- **कामदेव** - प्रद्युम्न, मनोज, मदन, रतिपति, अनंग
- **किनारा** - तट, तीर, कूल
- **कपड़ा** - वसन, चीर, अंबर, वस्त्र
- **गंगा** - भागीरथी, मंदाकिनी, पुण्यतोया, सुरसरि, विष्णुपदी
- **गजानन** - वक्रतुंड, हेरम्ब, गणेश, एकदंत, विनायक
- **चाँद** - सुधाकर, शशि, चन्द्रमा, राकेश, शशांक
- **चाँदनी** - ज्योत्स्ना, कौमुदी, चंद्रिका
- **जीव** - जान, प्राणी, प्राण, जीवन, देही, देहधारी, प्राणधारी
- **जल** - नीर, पानी, अंबु, वारि
- **जीभ** - रसना, जिह्वा, जबान, रसज्ञा
- **तरु** - वृक्ष, पेड़, विटप
- **देवता** - सुर, देव, परमात्मा, विबुध
- **तालाब** - जलाशय, सरोवर, ताल
- **धरती** - वसुंधरा, पृथ्वी, भूमि, धरणी, धरा
- **दर्पण** - शीशा, आइना, मुकुर, आरसी, आदर्श, प्रतिमान
- **नरक** - यमालय, यमपुर, यमलोक
- **सरिता** - नदी, तटनी, निर्झरिणी, निम्नगा, वाहिनी
- **निशा** - रजनी, रात्रि,रात, विभावरी, यामिनी, रैन, निशि
- **नदी** - सरिता, तटनी, वाहिनी, निम्नगा, निर्झरिणी
- **नियति** - भाग्य, प्रारब्ध, होनी
- **प्रशंसा** - स्तुति, बड़ाई, सराहना, तारीफ, श्लाघा
- **पुत्र** - वत्स, सुत, तनय, आत्मज, पूत, लड़का, बेटा
- **पहाड़** - शैल, पर्वत, भूधर, महिधर, गिरि
- **पवन** - अनिल, वायु, वात, हवा, समीर, बयार, मारुत
- **बहिन** - भगिनी, सहोदरा, स्वसा
- **बाघ** - व्याल, व्याघ्र, शार्दूल, चित्रक
- **बरसात** - वृष्टि, वर्षा, पावस, बारिश
- **बादल** - जलधर, अभ्र, वारिद, घन, मेघ, अम्बु
- **भौंरा** - भ्रमर, मधुप, भृंग, अलि
- **मोर** - केकी, मयूर,शिखी, नीलकंठ, सारंग
- **मछली** - मत्स्य, मीन, सफरी, झख
- **महादेव** - शिव, शंकर, पशुपति, शंभु, महेश्वर, नीलकंठ, पिनाकी, आशुतोष, उमापति, महेश
- **मार्ग** - राह, रास्ता, पथ, बाट
- **मुनि** - तपस्वी, योगी, तापस, व्रती, साधु
- **युद्ध** - लड़ाई, रण, समर, संग्राम, जंग
- **यमुना** - कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, भानुजा, अर्कजा
- **रमा** - इन्दिरा, हरिप्रिया, कमला, पद्मा, चंचला, लक्ष्मी
- **राजा** - नरेश, नृप, महीप, भूपति, भूपाल, राव
- **लहर** - ऊर्मि, तरंग, हिलोर, वीचि, लहरी
- **विष्णु** - चतुर्भुज, उपेन्द्र, जनार्दन, चक्रपाणि, नारायण
- **शारदा** - सरस्वती, विमला, भारती, वाग्देवी, वागेश्वरी, वीणावादिनी
- **सिंह** - मृगेन्द्र, वनराज, नाहर, केसरी
- **सूर्य** - दिनकर, रवि, भानु, भास्कर आदित्य, मार्तण्ड
- **समुद्र** - सागर, सिन्धु, नदीश, रत्नाकर, उदधि, वारीश
- **सांप** - सर्प, अहि, भुजंग, विषधर, उरग, पन्नग
- **शिष्ट** - भद्र, शालीन, सौम्य, संभ्रांत, सुशील, विनीत
- **हाथ** - हस्त, कर, पाणि, बाहु, भुजा

Pariksha Manthan

- **हाथी** - कुंजर, गज, हस्ति, मतंग, नाग, दन्ती
- **हिमालय** - हिमपति, हिमगिरि, हिमाद्रि, गिरिराज, नगपति
- **विडौजा** - देवराज, वज्रधर, पुरंदर, सुरपति, शचीपति
- **मार** - मन्मथ, अनंग, मनोज, केतन
- **मृगेन्द्र** - शार्दूल, सिंह, वनराज, केसरी, नाहर
- **बगीचा** - आराम, उद्यान, वाटिका, उपवन
- **बिजली** - चपला, चंचला, तड़ित, दामिनी
- **जंगल** - कानन, कांतार, अरण्य, वन
- **बुद्धि** - अक्ल, मति, प्रज्ञा, मेधा
- **बंदर** - कपि, वानर, मर्कट, हरि
- **नारी** - महिला, रमणी, वनिता, वामा
- **ध्वज** - केतु, झंडा, निशान, पताका, वैजयंती
- **अतिथि** - मेहमान, पाहुन, अभ्यागत, आगंतुक
- **अभिप्राय** - मतलब, आशय, अर्थ, तात्पर्य
- **बसंत** - ऋतुराज, मधुमास, माधव, कुसुमाकर
- **दिनांक** - दिवसांक, तिथि, तारीख, मिति
- **अभिजात** - श्रेष्ठ, कुलीन, आर्य
- **घर** - सदन, गृह, धाम, निकेतन
- **पक्षी** - पखेरू, खग, विहग, परिंदा
  (नोट : पक्षी का एक अर्थ 'पक्ष लेने वाला' भी है।)
- **पुरुष** - मनुष्य, नर,जन, आदमी, मानव
- **अरविन्द** - कमल, जलज, पंकज, अम्बुज

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नीचे दिये गये विकल्पों में से समानार्थी शब्द का चयन कीजिए—

1. आसन्न
   (क) आमंत्रित (ख) निकृष्ट
   (ग) निकट (घ) किनारा
2. उद्यत
   (क) तैयार (ख) परेशान
   (ग) समूह (घ) सहारा
3. गतिविधि
   (क) कार्यप्रणाली (ख) कार्यवाही
   (ग) योजना (घ) कार्य
4. मिथ्या
   (क) वैभव (ख) कठिन
   (ग) स्वभाव (घ) झूठ
5. दिवंगत
   (क) दिव्य (ख) पूर्व
   (ग) स्वर्गवासी (घ) सम्मानित
6. व्यग्र
   (क) उग्र (ख) बेचैन
   (ग) ज्ञान (घ) अपमान
7. व्यापक
   (क) विस्तृत (ख) पर्याप्त
   (ग) प्रकट (घ) सार्वजनिक
8. अमृत
   (क) अमरत्व (ख) पीयूष
   (ग) अनमोल (घ) अवमानना
9. संकीर्ण
   (क) दकियानूसी (ख) रूढ़िवादिता
   (ग) संकुचित (घ) नीचा
10. आयुष्मान
    (क) चिरंजीव (ख) सारांश
    (ग) सादर (घ) अमर
11. क्षमता
    (क) शक्ति (ख सामर्थ्य
    (ग) ताकत (घ) बल
12. अचला
    (क) पृथ्वी (ख) सम्पत्ति
    (ग) आंचल (घ) अल्प
13. प्रत्यक्ष
    (क) पूर्णतः (ख) स्पष्ट
    (ग) समक्ष (घ) प्रकट
14. बलिदान
    (क) उत्सर्ग (ख) दान
    (ग) वैर (घ) समाप्ति
15. पर्याप्त
    (क) न्यून (ख) भरपूर
    (ग) संपूर्ण (घ) बहुत
16. प्राकृतिक
    (क) नैसर्गिक (ख) कृत्रिम
    (ग) पुराना (घ) निषिद्ध
17. कृतज्ञ
    (क) खामोश (ख) कर्म
    (ग) काया (घ) आभारी
18. निःशब्द
    (क) वातायन (ख) शब्द
    (ग) वाचाल (घ) मौन
19. परिवेश
    (क) व्यवहार (ख) वातावरण
    (ग) आचरण (घ) आंगन
20. मृदुल
    (क) कोमल (ख) कठोर
    (ग) पामर (घ) नीरव
21. मधुसूदन
    (क) परशुराम (ख) कृष्ण
    (ग) आशुतोष (घ) कौशल्यानंदन
22. परिणति
    (क) परिणय (ख) प्रारंभ

Pariksha Manthan

(ग) अंत (घ) परित्राण

23. पुरस्कार
(क) योग्य (ख) पारितोषिक
(ग) परमार्थ (घ) प्रयत्न

24. मनोज
(क) कामदेव (ख) सूर्य
(ग) इंद्र (घ) कोप

25. द्वेष
(क) उत्साह (ख) ईर्ष्या
(ग) वैर (घ) घृणा

26. परिमल
(क) सहवास (ख) सुख
(ग) विमर्दन (घ) सर्वोत्तम गंध

27. मांझी
(क) केवट (ख) नाई
(ग) शिल्पकार (घ) वैद्य

28. अचेत
(क) चंचल (ख) मूर्छित
(ग) दिवंगत (घ) चेतना

29. राधेय
(क) कर्ण (ख) कंस
(ग) रावण (घ) अर्जुन

30. धनंजय
(क) नकुल (ख) भीष्म
(ग) अर्जुन (घ) अजामिल

31. विष्णुपदी
(क) यमुना (ख) गंगा
(ग) गोदावरी (घ) चंबल

32. तूणीर
(क) तरकश (ख) तीर
(ग) तैराक (घ) तराजू

33. हेरम्ब
(क) रामचन्द्र (ख) कन्हैया
(ग) गणेश (घ) मलयज

34. पांचाली
(क) मंदोदरी (ख) द्रौपदी
(ग) सीता (घ) सावित्री

35. उमा
(क) पार्वती (ख) भार्या
(ग) कृष्णा (घ) नूतन

36. पाहुन
(क) परिवार (ख) परिवेश
(ग) परिणाम (घ) अतिथि

37. अमरेश
(क) इन्द्र (ख) गणेश
(ग) लक्ष्मण (घ) जगन्नाथ

38. आदित्य
(क) चन्द्रमा (ख) सूर्य
(ग) ध्रुवतारा (घ) शतायु

39. धनेश्वर
(क) मदन (ख) मुरारी
(ग) कुबेर (घ) रश्मि

40. बाला
(क) लड़का (ख) कन्या
(ग) गाय (घ) बकरी

41. ज्योत्स्ना
(क) चन्द्रहास (ख) किरण
(ग) चांदनी (घ) रज्जु

42. तल्लीन
(क) तिरस्कार (ख) तन्मय
(ग) तरुण (घ) तीव्र

43. खल
(क) दुष्ट (ख) सभ्य
(ग) सुर (घ) प्रदीप

44. भगिनी
(क) बेटी (ख) मौसी
(ग) मामी (घ) बहन

45. बलभद्र
(क) बलराम (ख) भास्कर
(ग) प्रज्ञा (घ) कृष्ण

46. हाला
(क) हाल-चाल (ख) हाव-भाव
(ग) मदिरा (घ) पानी

47. राका
(क) पूर्णिमा (ख) पूर्ण
(ग) रानी (घ) रागिनी

48. रुग्ण
(क) बीमार (ख) रोना
(ग) सेहत (घ) बलवान

49. दामिनी
(क) सहेली (ख) सखी
(ग) रीति (घ) विद्युत

50. शार्दूल
(क) सियार (ख) खरगोश
(ग) सिंह (घ) सुग्गा

<u>नीचे दिये गये विकल्पों में से पर्यायवाची शब्द चुनिए</u>—

51. अरण्य
(क) मैदान (ख) वाटिका
(ग) वन (घ) वल्लरी

52. ऋतुराज
(क) वसंत (ख) सावन
(ग) ग्रीष्म (घ) सलिल

53. विभा
(क) नाद (ख) प्रभा

Pariksha Manthan

(ग) कोटि (घ) सुरा

54. मकरंद
(क) हलाहल (ख) शराब
(ग) दूध (घ) शहद

55. सुहागिन
(क) सधवा (ख) विधवा
(ग) सती (घ) साध्वी

56. चंद्रमा
(क) निशि (ख) शशि
(ग) मार्तण्ड (घ) ज्योति

57. अंज
(क) गुलाब (ख) पद्म
(ग) काजल (घ) ब्रह्मा

58. वैदेही
(क) द्रौपदी (ख) सुलोचना
(ग) अनसुइया (घ) सीता

59. समीर
(क) हवा (ख) खिड़की
(ग) सुशील (घ) असीम

60. हरिण
(क) खग (ख) कम
(ग) हंस (घ) मृग

61. वायु
(क) अनल (ख) अनिल
(ग) अभिमानी (घ) हितैषी

62. धरणीधर
(क) शेषनाग (ख) बटुकनाथ
(ग) अहेरी (घ) सारंग

63. विनायक
(क) पुत्र (ख) शत्रु
(ग) गणेश (घ) सुर

64. कालिन्दी
(क) गंगा (ख) यमुना
(ग) गोदावरी (घ) नर्मदा

65. मछली
(क) जलज (ख) जलचर
(ग) मेष (घ) पंकज

66. माता
(क) अम्ब (ख) देवी
(ग) द्वार (घ) चपला

67. धाता
(क) धाय (ख) विष्णु
(ग) हार (घ) पक्ष

68. स्तन्य
(क) दूध (ख) पेय
(ग) खीर (घ) कौंध

69. पावक
(क) हुताशन (ख) ज्वाला
(ग) लपट (घ) अंगारा

70. मयूर
(क) तोता (ख) मैना
(ग) सारंग (घ) कबूतर

71. केतु
(क) कामी (ख) दुष्ट
(ग) खल (घ) झंडा

72. घर
(क) नक्षत्र (ख) विहार
(ग) निकेतन (घ) इला

73. जंबूक
(क) कुत्ता (ख) घोड़ा
(ग) हाथी (घ) सियार

74. रत्नाकर
(क) समुद्र (ख) भुजंग
(ग) दिनेश (घ) सौरभ

75. दशानन
(क) राम (ख) महेश
(ग) कंस (घ) रावण

76. समर
(क) युद्ध (ख) गर्मी
(ग) व्याकुल (घ) पानी

77. नृप
(क) नौकर (ख) राजा
(ग) नारी (घ) सखा

78. हिमांशु
(क) सुरभि (ख) उद्भव
(ग) चंद्रमा (घ) सूर्य

79. पुष्कर
(क) पुष्प (ख) तालाब
(ग) कौमुदी (घ) वारि

80. नभचर
(क) पक्षी (ख) पशु
(ग) बेटा (घ) मनुज

81. देहावसान
(क) जन्म (ख) मृत्यु
(ग) शिशु (घ) बुढ़ापा

82. उरोज
(क) स्तन (ख) पैर
(ग) मुख (घ) केश

83. भर्ता
(क) पत्नी (ख) पति
(ग) पाप (घ) भाई

84. मर्कट
(क) बंदर (ख) भालू
(ग) हिरण (घ) हाथी

Pariksha Manthan

85. कच
(क) बालक (ख) बाल
(ग) बालू (घ) चूना

86. विप्र
(क) ब्राह्मण (ख) वैश्य
(ग) क्षत्रिय (घ) बेटा

87. निशांत
(क) रात्रि (ख) दोपहर
(ग) प्रभात (घ) वृक्ष

88. गजेन्द्र
(क) घोड़ा (ख) शेर
(ग) बंदर (घ) हाथी

89. तिमिर
(क) उजाला (ख) अंधेरा
(ग) तराजू (घ) तेल

90. रनिवास
(क) अंतःपुर (ख) परिश्रम
(ग) प्राण (घ) प्रिया

91. मुद्रिका
(क) कंगन (ख) अंगूठी
(ग) पाजेब (घ) हार

92. ऋद्धि
(क) समृद्धि (ख) स्वामी
(ग) विपन्नता (घ) स्त्री

93. पुण्डरीक
(क) गुलाब (ख) गेंदा
(ग) कदम्ब (घ) कमल

94. काग
(क) चील (ख) गिद्ध
(ग) कौआ (घ) गौरैया

95. कंदरा
(क) गुफा (ख) कुआं
(ग) खाईं (घ) शिखर

96. आर्द्र
(क) सूखा (ख) गीला
(ग) कमजोर (घ) शत्रु

97. रसना
(क) रसिक (ख) दयालु
(ग) जीभ (घ) रिसना

98. खद्योत
(क) जुगनू (ख) कबूतर
(ग) बुलबुल (घ) खंड

99. दिगंबर
(क) निर्वस्त्र (ख) पुष्ट
(ग) देवर्षि (घ) दिन

100. बटोही
(क) पथिक (ख) परिवर्तन
(ग) आखेटक (घ) सीधा

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द का समानार्थी दिए हुए विकल्पों में से चुनिए—

101. उसकी कृति अद्‌भुत थी।
(क) अनूठा (ख) निरर्थक
(ग) सुंदर (घ) शांत

102. पारितोषिक पाकर वह प्रसन्न था।
(क) दंड (ख) खाना
(ग) धन (घ) पुरस्कार

103. उसकी शिकायत पूर्णतया सही थी।
(क) प्रक्षर (ख) अक्षरशः
(ग) प्रतिशब्द (घ) प्रतिअक्षर

104. जिसने मान रूपी मतवाले हाथी को वश में कर लिया वही सच्चा शूरवीर है।
(क) आकुल (ख) चंचल
(ग) व्याकुल (घ) उद्विग्न

105. देखते ही देखते वह उन्नति के शिखर पर पहुंच गया।
(क) प्रगति (ख) अवनति
(ग) विद्यमान (घ) विद्वता

106. वह वंचक लोगों की श्रेणी में आता है।
(क) ठग (ख) अपराधी
(ग) हत्यारा (घ) धूर्त

107. विष्णु के अनेक अभिधान हैं।
(क) नाम (ख) रूप
(ग) लीला (घ) धाम

108. पुलिस मुख्यालय में आधुनिक यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
(क) मशीनों (ख) औजारों
(ग) उपकरणों (घ) संसाधनों

109. मैं उसे ऐसा करने की अनुमति कैसे देता।
(क) अनुज्ञा (ख) प्रज्ञा
(ग) आज्ञा (घ) निवेदन

110. वह महिला अपने वाक्‌चातुर्य के बल पर सबका मन जीत लेती है?
(क) आधार (ख) जोश
(ग) ताकत (घ) कारण

111. हमारे देश में पाखण्ड करने वालों की कमी नहीं है।
(क) देशभक्ति (ख) आडम्बर
(ग) सदाचार (घ) अपराध

112. उस समय वह उमंग से भरा हुआ था।
(क) क्रोध (ख) उत्कंठा
(ग) उतावलापन (घ) उल्लास

113. मेरे कहने का आशय समझो।
(क) तात्पर्य (ख) इच्छा
(ग) कामना (घ) उपमा

114. जीने का कुछ तो उद्देश्य होना ही चाहिए।
(क) प्रलोभन (ख) प्रयोजन
(ग) अनुरोध (घ) अवरोध

Pariksha Manthan

115. मनोवांछित फल पाने के लिए तुम्हें कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।
(क) इच्छित (ख) प्रतीक्षित
(ग) उत्तम (घ) श्रेष्ठ

116. खग कुल कुल कुल सा बोल रहा। किसलय का अंचल डोल रहा।
(क) फूल (ख) फल
(ग) कोमल पत्ता (घ) उपवन

117. मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं।
(क) आभारी (ख) भारी
(ग) खाली (घ) नाजुक

118. विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीत।
(क) मूर्ख (ख) उद्दंड
(ग) नदी (घ) समुद्र

119. कर्कश वाणी से कलह का जन्म होता है।
(क) अशांति (ख) झगड़ा
(ग) द्वेष (घ) विद्रोह

120. सभी द्वारपाल चौकस होकर खड़े थे।
(क) निस्तब्ध (ख) सजग
(ग) जंगम (घ) कटिबद्ध

121. वह आगे-आगे ध्वज लेकर चल रहा था।
(क) कपड़ा (ख) कबूतर
(ग) डंडा (घ) झंडा

122. राम ने रावण का संहार किया।
(क) विनाश (ख) वध
(ग) सत्यानाश (घ) हत्या

123. अर्जुन के तूणीर में दिव्य तीर थे।
(क) रथ (ख) तरकश
(ग) घर (घ) कोई नहीं

124. यह असंदिग्ध सत्य है कि देश अनेक क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है।
(क) निर्विवाद (ख) निःसंदेह
(ग) निष्पक्ष (घ) असंदेहास्पद

125. मुझे व्यर्थ सराहना पसंद नहीं है।
(क) चपलता (ख) खुशामद
(ग) प्रशंसा (घ) चाटुकारिता

126. मुझे झूठी दिलासा मत दो।
(क) तसल्ली (ख) प्यार
(ग) धोखा (घ) गहन

127. संसार से तरने का एक सुन्दर उपाय श्रीराम की शरण होना है।
(क) ठहरने (ख) तैरने
(ग) उद्धार (घ) लांघने

128. पदों के चयन में उसने भारतीय वन सेवा को प्राथमिकता दी।
(क) वरीयता (ख) मान्यता
(ग) श्रेष्ठता (घ) गंभीरता

129. उसने बड़े मनोयोग से ग्रंथ का पारायण किया।
(क) अवदान (ख) अभिधान
(ग) अवधान (घ) आधान

130. फिजूलखर्ची करना बुरी आदत है।
(क) मितव्यय (ख) अपव्यय
(ग) परिव्यय (घ) अव्यय

131. असफलताओं के कारण वह अवसाद से घिर गया।
(क) विषाद (ख) प्रसाद
(ग) विवाद (घ) वेग

132. रूपवती भार्या शत्रु होती है।
(क) प्रेमिका (ख) प्रेयसी
(ग) पत्नी (घ) नौकरानी

133. आप मेरी जिज्ञासा शांत करिए।
(क) जिजीविषा (ख) उत्कंठा
(ग) क्षुधा (घ) इच्छा

134. अपने मित्र को देखकर वह पुलकित हो उठा।
(क) परेशान (ख) अधीर
(ग) हर्षित (घ) उद्वेलित

135. मेरी समस्या का निराकरण करिए।
(क) विवेचना (ख) विचार
(ग) स्पष्ट (घ) समाधान

136. पथिक थका हुआ था।
(क) राहगीर (ख) शिकारी
(ग) सिपाही (घ) घुड़सवार

137. मुझे लौकिक सुख की चाह नहीं।
(क) अलौकिक (ख) प्रत्यक्ष
(ग) सांसारिक (घ) प्राकृतिक

138. जन्माष्टमी पर देवालय सजाए गए थे।
(क) मंदिर (ख) घर
(ग) नगर (घ) राजधानी

139. कितना सुन्दर परिवेश है।
(क) वातावरण (ख) पर्यावरण
(ग) रुकावट (घ) परिणय

140. वे लोग तुम्हारे शुभेच्छु नहीं हैं।
(क) सहयोगी (ख) शुभचिंतक
(ग) अनुगामी (घ) अनुज

141. पं. जवाहर लाल नेहरू को महात्मा गांधी का सामीप्य प्राप्त था।
(क) आशीर्वाद (ख) स्नेह
(ग) सान्निध्य (घ) कृपा

142. विजय बाबू का ऐश्वर्य देखकर वह चकित रह गई।
(क) वैभव (ख) महल
(ग) दफ्तर (घ) स्नेह

143. मेरा घर-आंगन अलोकित हो उठा।
(क) प्रकाशित (ख) निर्वासित
(ग) आभासित (घ) कोई नहीं

144. उसकी कृति बेजोड़ है।
(क) छवि (ख) रचना
(ग) घर (घ) व्यवहार

Parikrsha Manthan

145. मैं वहां चलने को उद्यत बैठा हूं।
(क) तैयार (ख) आधार
(ग) गंभीर (घ) निमंत्रित

146. आज श्रम के स्वेद में डूबा हुआ हूं।
(क) स्वाद (ख) कठिनाई
(ग) पसीना (घ) मिठास

147. उसकी इस हरकत ने मुझे विस्मित कर दिया।
(क) चकित (ख) हर्षित
(ग) फलित (घ) मिश्रित

148. अब आप राजनीति में शुचिता की उम्मीद न करिए।
(क) पवित्रता (ख) धृष्टतता
(ग) उन्नति (घ) उद्धार

149. मुझे शिकायती पत्र लिखने के लिए बाध्य न करें।
(क) प्रेरित (ख) विवश
(ग) अविराम (घ) विशेष

150. उसके चेहरे पर कांति थी।
(क) चमक (ख) खामोशी
(ग) विपन्नता (घ) मायूसी

नीचे दिए गए शब्दों में से एक शब्द दिये गये शब्द का पर्यायवाची नहीं है, उसे छांटिए—

151. वसंत
(क) ऋतुराज (ख) जलधार
(ग) मधुमास (घ) ऋतुपति

152. लता
(क) वेलि (ख) रमा
(ग) लतिका (घ) वल्ली

153. दांत
(क) दंत (ख) दाड़िम
(ग) दशन (घ) रदन

154. पृथ्वी
(क) पुष्कर (ख) धरा
(ग) वसुन्धरा (घ) अचला

155. कलाधर
(क) चन्द्रमा (ख) निशापति
(ग) सुधांशु (घ) कलाकार

156. कमल
(क) रसाल (ख) राजीव
(ग) उत्पल (घ) नलिन

157. हाथी
(क) द्विप (ख) तरणि
(ग) द्विरद (घ) सिंधुर

158. कण्टक
(क) कांटा (ख) शूल
(ग) खार (घ) संताप

159. शिखर
(क) चोटी (ख) श्रीखण्ड
(ग) तुंग (घ) शिरोबिन्दु

160. तृषा
(क) प्यास (ख) पिपासा
(ग) तृष्णा (घ) पातक

नीचे दिए गए शब्दों में से एक, तीन शब्दों से अलग है। अलग शब्द को चिह्नित करिए।

161. (क) बारिश (ख) वर्षा
(ग) बरसात (घ) बयार

162. (क) अतिथि (ख) अभ्यागत
(ग) अन्तर्गत (घ) आगन्तुक

163. (क) भुवन (ख) गृह
(ग) घर (घ) गेह

164. (क) भ्रमर (ख) भौंरा
(ग) चंचरीक (घ) चम्पा

165. (क) पृथ्वी (ख) लोक
(ग) जगत (घ) संसार

166. (क) अनिल (ख) अनल
(ग) समीर (घ) बयार

167. (क) शपथ (ख) सौगंध
(ग) कसम (घ) फसल

168. (क) सेविका (ख) दासी
(ग) सहचरी (घ) परिचारिका

169. भुजंग
(क) विषधर (ख) पयोधि
(ग) सर्प (घ) सांप

170. (क) विघ्न (ख) वैरी
(ग) बाधा (घ) व्यवधान

नीचे दिये वाक्यों में एक शब्द रेखांकित है। दिए गए विकल्पों में से उसका पर्यायवाची छांटिए—

171. गर्मी बहुत थी। पत्ता तक नहीं हिल रहा था।
(क) पर्ण (ख) पर्व
(ग) पतंग (घ) पाषाण

172. जनक की सुता का नाम सीता था।
(क) पुत्री (ख) पुत्र
(ग) पौत्र (घ) पिता

173. अभिमन्यु के तूणीर में तीर खत्म हो गये थे।
(क) रथ (ख) रेखा
(ग) युद्ध (घ) तरकस

174. भगवान शिव को आशुतोष माना जाता है।
(क) लम्बोदर (ख) पिनाकी
(ग) पिपासु (घ) पिनाक

175. कौवा कांय-कांय कर रहा था।
(क) वायस (ख) वयस्
(ग) मराल (घ) वारण

176. सरस्वती और लक्ष्मी विरल ही एकत्र होती हैं।
(क) वाचिका (ख) वाग्देवी
(ग) बदरिका (घ) वाग्मिता

177. दमकैं दतियां दुति दामिनि
(क) नीरद (ख) वर्षा
(ग) विद्युत (घ) बादल

178. अरावली पर्वत लाल पत्थरों के लिए प्रसिद्ध है।

Pariksha Manthan

(क) अद्रि (ख) आर्द्र
(ग) आर्द्रा (घ) शृंग

179. पुष्कर नामक तीर्थ में ब्रह्मा का मंदिर है।
(क) प्रसून (ख) अवनि
(ग) रुद्र (घ) चतुरानन

180. पुरुष का भाग्य तो देवता भी नहीं जानते हैं।
(क) सुर (ख) असुर
(ग) उत्स (घ) कोविद

181. निम्नलिखित में कौन-सा 'किरण' का पर्यायवाची शब्द नहीं है?
(क) मरीचि (ख) रश्मि
(ग) पुष्कर (घ) दीप्ति

182. 'अतिथि' के लिए पर्यायवाची है—
(क) अभ्यागत (ख) मदन
(ग) मधुर (घ) नारायण

183. 'इंद्र' के लिए पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(क) अमरपति (ख) देवेश
(ग) शक्र (घ) स्पृहा

184. 'जीभ' का पर्याय है—
(क) वचन (ख) रसना
(ग) ध्वनि (घ) जीव

185. कौन-सा शब्द 'अहि' का पर्यायवाची नहीं है—
(क) उरग (ख) सरीसृप
(ग) पवनाश (घ) सिंधुर

186. 'नैसर्गिक' का पर्यायवाची है—
(क) सत्कृत (ख) चमत्कृत
(ग) प्राकृतिक (घ) चतुर्दिक

187. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'हाथ' का पर्यायवाची नहीं है—
(क) कटि (ख) हस्त
(ग) पाणि (घ) कर

188. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द सूर्य का पर्यायवाची नहीं है?
(क) प्रभाकर (ख) विभाकर
(ग) दिनकर (घ) दिनेश

189. 'चांदनी' का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(क) चन्द्रातप (ख) कौमुदी
(ग) ज्योत्स्ना (घ) मयंक

190. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'सरस्वती' का पर्यायवाची नहीं है?
(क) वीणापाणि (ख) महाश्वेता
(ग) पद्मा (घ) भारती

191. 'जनार्दन' किसका पर्यायवाची है?
(क) राम (ख) कृष्ण
(ग) विष्णु (घ) ब्रह्मा

192. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द समुद्र का पर्यायवाची नहीं है?
(क) पयोधि (ख) जलद
(ग) जलधि (घ) वारिधि

193. निम्नलिखित में 'शिव' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) शिवालय (ख) रुद्र
(ग) रुद्राक्ष (घ) हरि

194. इनमें से एक शब्द 'देवता' का पर्याय है—
(क) अलकेश (ख) विबुध
(ग) अनीक (घ) ज्योतिष्क

195. 'बगीचा' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) निर्जन (ख) व्यंजन
(ग) आराम (घ) कल्पशाला

196. इनमें से 'तुरंग' शब्द का पर्याय है—
(क) बाजि (ख) अम्बुधर
(ग) विजन (घ) किंकर

197. 'विडौजा' पर्यायवाची शब्द है—
(क) नक्षत्र का (ख) अप्सरा का
(ग) इन्द्र का (घ) पत्थर का

198. 'मार' शब्द पर्यायवाची है—
(क) जादू का (ख) स्वर्ण का
(ग) अधम का (घ) अनंग का
(नोट : अनंग, कामदेव को कहते हैं)

199. इनमें से एक 'रसा' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) रत्नगर्भा (ख) अचला
(ग) धरित्री (घ) तमिस्रा

200. 'मृगेन्द्र' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) कुरंग (ख) केसरी
(ग) भुजंग (घ) तुरंग

201. 'षट्पट' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) तितली (ख) भ्रमर
(ग) मकड़ी (घ) केकड़ा

202. इनमें से एक शब्द 'मछली' का पर्यायवाची नहीं है—
(क) मत्स्य (ख) मीन
(ग) शफरी (घ) जलोदरी

203. 'पर्यायवाची' शब्द का अर्थ है—
(क) विलोमवाची (ख) प्रतिविलोमवाची
(ग) समानाभास (घ) समानार्थी

204. 'यमुना' का पर्यायवाची है—
(क) कालिन्दिनी (ख) भागीरथी
(ग) यामिनी (घ) कालिन्दी

205. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'निशीथ' का पर्यायवाची नहीं है?
(क) रात्रि (ख) रजनी
(ग) तम (घ) निशा

206. 'सूर्य' का पर्यायवाची है—
(क) भास्कर (ख) मार्तण्ड
(ग) प्रकाश (घ) तेज

207. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'अरविन्द' का पर्यायवाची नहीं है?
(क) मिलिन्द (ख) पंकज
(ग) जलज (घ) अम्बुज

208. 'बिजली' शब्द का पर्यायवाची नहीं है—
(क) वितुंडा (ख) दामिनी

Parikshā Manthan

(ग) चंचला (घ) तड़ित

209. 'प्राची' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) प्राचीन (ख) प्रकृत
(ग) पूर्व (घ) प्रज्ञा

210. 'तरंग' शब्द का पर्यायवाची है—
(क) पुष्कर (ख) कूल
(ग) जलधि (घ) ऊर्मि

211. 'जंगल' शब्द का पर्यायवाची है—
(क) प्रमोद (ख) विश्रान्ति
(ग) कान्तार (घ) दिव

212. 'क्रोध' शब्द का पर्यायवाची है—
(क) संताप (ख) अमर्ष
(ग) वैमनस्य (घ) भीति

213. निम्नलिखित शब्दों में कौन 'सरिता' का पर्याय नहीं है?
(क) तटिनी (ख) त्रिपथगा
(ग) निम्ना (घ) तरंगिणी

214. निम्नलिखित में से कौन-सा 'रात्रि' का पर्यायवाची नहीं है?
(क) रजनी (ख) विभावरी
(ग) समीर (घ) निशि

215. 'मृगेन्द्र' का पर्यायवाची शब्द है—
(क) शार्दूल (ख) अहि
(ग) हिरन (घ) कुरंग

उत्तरमाला

1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)
6. (ख) 7. (क) 8. (ख) 9. (ग) 10. (क)
11. (ख) 12. (क) 13. (घ) 14. (क) 15. (घ)
16. (क) 17. (घ) 18. (घ) 19. (ख) 20. (क)
21. (ख) 22. (ग) 23. (ख) 24. (क) 25. (ग)
26. (घ) 27. (क) 28. (ख) 29. (क) 30. (ग)
31. (ख) 32. (क) 33. (ग) 34. (ख) 35. (क)
36. (घ) 37. (क) 38. (ख) 39. (ग) 40. (ख)
41. (ग) 42. (ख) 43. (क) 44. (घ) 45. (क)
46. (ग) 47. (क) 48. (क) 49. (घ) 50. (ग)
51. (ग) 52. (क) 53. (ख) 54. (घ) 55. (क)
56. (ख) 57. (ग) 58. (घ) 59. (क) 60. (घ)
61. (ख) 62. (क) 63. (ग) 64. (ख) 65. (ख)
66. (क) 67. (ख) 68. (क) 69. (क) 70. (ग)
71. (घ) 72. (ग) 73. (घ) 74. (क) 75. (घ)
76. (क) 77. (ख) 78. (ग) 79. (ख) 80. (क)
81. (ख) 82. (क) 83. (ख) 84. (क) 85. (ख)
86. (क) 87. (ग) 88. (घ) 89. (ख) 90. (क)
91. (ख) 92. (क) 93. (घ) 94. (ग) 95. (क)
96. (ख) 97. (ग) 98. (क) 99. (क) 100. (क)
101. (क) 102. (घ) 103. (ख) 104. (ख) 105. (क)
106. (घ) 107. (क) 108. (ग) 109. (ग) 110. (क)
111. (ख) 112. (घ) 113. (क) 114. (ख) 115. (क)
116. (ग) 117. (क) 118. (घ) 119. (ख) 120. (ख)
121. (घ) 122. (ख) 123. (ख) 124. (क) 125. (ग)
126. (क) 127. (ग) 128. (क) 129. (क) 130. (ख)
131. (क) 132. (ग) 133. (ख) 134. (ग) 135. (घ)
136. (क) 137. (ग) 138. (क) 139. (क) 140. (ख)
141. (ग) 142. (क) 143. (क) 144. (ख) 145. (क)
146. (ग) 147. (क) 148. (क) 149. (ख) 150. (क)
151. (ख) 152. (ख) 153. (ख) 154. (क) 155. (घ)
156. (क) 157. (ख) 158. (घ) 159. (ख) 160. (घ)
161. (घ) 162. (ग) 163. (क) 164. (घ) 165. (क)
166. (ख) 167. (घ) 168. (ग) 169. (ख) 170. (ख)
171. (क) 172. (क) 173. (घ) 174. (ख) 175. (क)
176. (ख) 177. (ग) 178. (क) 179. (घ) 180. (क)
181. (ग) 182. (क) 183. (घ) 184. (ख) 185. (ख)
186. (ग) 187. (क) 188. (घ) 189. (घ) 190. (ग)
191. (ग) 192. (ख) 193. (ख) 194. (ख) 195. (ग)
196. (क) 197. (ग) 198. (घ) 199. (क) 200. (ख)
201. (घ) 202. (ख) 203. (घ) 204. (घ) 205. (ग)
206. (ख) 207. (क) 208. (क) 209. (ग) 210. (घ)
211. (ग) 212. (ख) 213. (ख) 214. (ग) 215. (क)

◆◆◆

Parikha Manthan

विलोम शब्द

जो शब्द किसी दूसरे शब्द के उलटे अर्थ में प्रयुक्त होता है, उसे विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे—आरंभ का विलोम अंत, आर्द्र का शुष्क तथा अलभ्य का लभ्य आदि।

विलोमार्थक शब्दों का प्रयोग भाषा के प्रभाव को बढ़ाता है तथा रचनात्मक दृष्टि से सहायक होता है। इनके प्रयोग के समय यह सावधानी अवश्य बरतनी चाहिए कि जो पद जिस श्रेणी का हो, विलोम भी उसी का होना चाहिये। कहने का आशय यह कि विशेषण पद का विलोम विशेषण पद, संज्ञा पद का विलोम संज्ञा पद, क्रिया पद का विलोम क्रिया पद और क्रिया विशेषण पद का विलोम क्रिया विशेषण पद होगा।

कुछ शब्दों के स्वतंत्र विलोम होते हैं। जैसे—'जन्म' का 'मृत्यु', 'उत्थान' का 'पतन' एवं 'अमृत' का 'विष' आदि। जब स्वतंत्र विलोम शब्द नहीं मिलते, तब विलोम शब्द बनाने के लिए अ, अन्, अप्, निर्, निस्, कु, प्रति, तथा वि आदि उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे—सत्य से असत्य, सुपात्र से कुपात्र तथा आमिष से निरामिष आदि। इसके अलावा लिंग परिवर्तन से भी विलोम शब्द बनाए जाते हैं। जैसे—'पुत्र' का 'पुत्री', 'लड़का' का 'लड़की' एवं 'नाना' का 'नानी' आदि।

प्रतियोगी छात्रों की सुविधा के लिए हम यहां कुछ ऐसे चुने हुए शब्दों के विलोम शब्दों की सूची दे रहे हैं, जो परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

शब्द	विलोम
अंगीकार	अस्वीकार
अंधकार	प्रकाश
अंत	अनन्त
अनंत	अंत
अंतरंग	बहिरंग
अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
अवनि	अम्बर
अनुकूल	प्रतिकूल
अधः	उपरि
अधम	उत्तम
अनुरक्ति	विरक्ति
अनुरक्त	विरक्त
अक्षर	क्षर
अपेक्षित	अनपेक्षित
अधुनातन	पुरातन
अपव्यय	मितव्यय
अपकार	उपकार
असली	नकली
अग्रज	अनुज
अत्यधिक	स्वल्प
अल्प	बहु
अधीत्यका	उपत्यका
अर्जन	वर्जन
अकाल	सुकाल
अरुचि	सुरुचि
अभ्यस्त	अनभ्यस्त
अस्वस्थ	स्वस्थ
अर्थ	अनर्थ
अकाम	सकाम
अभिमान	निरभिमान
अभिमानी	निरभिमानी
अधोगामी	ऊर्ध्वगामी
अल्पज्ञ	बहुज्ञ/सर्वज्ञ
असीम	ससीम
अनभिज्ञ	भिज्ञ
अनुराग	विराग
अमावस्या	पूर्णिमा
अल्पायु	दीर्घायु
अपमान	सम्मान
अनिवार्य	वैकल्पिक
अनाथ	सनाथ
अर्थी	प्रत्यर्थी
अवनत	उन्नत
अपेक्षा	उपेक्षा
अमर	मर्त्य
अवर	प्रवर
अमित	परिमित
अगम	सुगम
अधिकृत	अनधिकृत
अनुलोम	प्रतिलोम
अथ	इति
अघ	अनघ
अवनति	उन्नति
अतल	वितल
अस्त	उदय
अर्पित	गृहीत

Parikshā Manthan

शब्द	विलोम
अंतर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अग्नि	जल
अस्वस्थ	स्वस्थ
अगम	सुगम
अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक
अलभ्य	लभ्य
अति	अल्प
अमृत	विष
अधिक	अल्प
अर्वाचीन	प्राचीन
अनुग्रह	विग्रह
अद्यतन	पुरातन
आकर्षण	विकर्षण
आदर	अनादर
आग्रह	दुराग्रह
आलोक	अंधकार
आलस्य	स्फूर्ति
आभ्यंतर	वाह्य
आतुर	अनातुर
आय	व्यय
आमिष	निरामिष
आर्द्र	शुष्क
आहार	निराहार
आरोह	अवरोह
आदान	प्रदान
आहूत	अनाहूत
आजादी	गुलामी
आश्रित	निराश्रित
आशा	निराशा
आकाश	पाताल
आस्तिक	नास्तिक
आशावादी	निराशावादी
आयात	निर्यात
आर्य	अनार्य
आदि	अनादि
आगत/आगामी	विगत
आकृष्ट	विकृष्ट
आग्रह	दुराग्रह
आश्रित	अनाश्रित
आदत्त	प्रदत्त
आदर	अनादर
आवाहन	विसर्जन
आवृत्त	अनावृत्त
आयात	निर्यात
आधुनिक	प्राचीन
आकंपित	निष्कंपित
आहार	अनाहार

शब्द	विलोम
आख्यात	अनाख्यात
आचार	अनाचार
आकीर्ण	विकीर्ण
आत्मा	परमात्मा
आधार	आधेय, लंब
आरम्भ	अन्त
आगमन	निर्गमन
आध्यात्मिक	सांसारिक
आवर्तक	अनावर्तक
आविर्भाव	तिरोभाव
आद्य	अन्त्य
आच्छादित	अनाच्छादित
आसक्त	अनासक्त
आय	व्यय
आरूढ़	अनारूढ़
आस्था	अनास्था
आतप	अनातप
आदृत	अनादृत
आहत	अनाहत
इच्छा	अनिच्छा
ईप्सित	अनीप्सित
इति	अथ
इच्छित	अनिच्छित
ईश्वर	जीव
इहलोक	परलोक
ईश	अनीश
उपकार	अपकार
उदय	अस्त
उन्मूलन	रोपण
उदात्त	अनुदात्त
उत्साह	अनुत्साह
उचित	अनुचित
उत्तम	अधम
उद्यम	निरुद्यम
उपयुक्त	अनुपयुक्त
उत्थान	पतन
उधार	नगद
उपरि	अधः
उपचय	अपचय
उपमेय	अनुपमेय
उग्र	सौम्य
उपसर्ग	प्रत्यय
उत्कर्ष	अपकर्ष
उन्नति	अवनति
उदार	कृपण
उत्कृष्ट	निकृष्ट
उपस्थित	अनुपस्थित
उपयोग	दुरुपयोग
उन्मीलन	निमीलन
उच्च	निम्न
उन्मुख	विमुख
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपचार	अपचार
उद्दंड	विनीत
उदयाचल	अस्ताचल

Parikshā Manthan

शब्द	विलोम
उत्तरायण	दक्षिणायन
उद्धृत	अनुधृत
उपादेय	अनुपादेय
उक्त	अनुक्त
एक	अनेक
एकता	अनेकता
ऐक्य	अनैक्य
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
ऋत	अनृत
एकतंत्र	बहुतंत्र
एकमुख	बहुमुख
एड़ी	चोटी
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
ऐहिक	पारलौकिक
ऋजु	वक्र
कटु	मधुर
कपटी	निष्कपटी
कुरूप	सुरूप
कृतज्ञ	कृतघ्न
क्रिया	प्रतिक्रिया
क्रय	विक्रय
कृपण	उदार
कर्मण्य	अकर्मण्य
कोप	कृपा
कुमार्ग	सुमार्ग
कृत्रिम	प्रकृत
कृश	पुष्ट
कुसुम	वज्र
कर्कशा	सुशीला
क्रोध	क्षमा
कपूत	सपूत
कर्म	निष्कर्म
कायर	निडर
कनिष्ठ	वरिष्ठ
क्रम	अक्रम
कठोर	कोमल
कल्पित	अकल्पित
कृपा	कोप
कलुष	निष्कलुष
क्रूर	अक्रूर
करुण	निष्ठुर
कृष्ण	श्वेत
कीर्ति	अपकीर्ति
खाद्य	अखाद्य
गंभीर	अगंभीर
गणतंत्र	राजतंत्र
गौरव	लाघव
गृही	त्यागी
ग्राम्य	नागर, वन्य
गत	आगत
गगन	पृथ्वी
घर	बाहर

शब्द	विलोम
खंडन	मंडन
खीझना	रीझना
गरल	सुधा
गुप्त	प्रकट
गृहस्थ	संन्यासी
ग्रस्त	मुक्त
गुण	दोष/अवगुण
गोचर	अगोचर
ग्राह्य	अग्राह्य
गुरु	लघु/शिष्य
घरेलू	बाहरी
घात	प्रतिघात
चतुर	मूर्ख
चल	अचल
चर	अचर
चिर	अचिर
चाह	अनचाह
चिरंतन	नश्वर
चोर	साधु
चेतन	अचेतन/जड़
चुस्त	सुस्त
छाँह	धूप
ज्येष्ठ	कनिष्ठ
जड़	चेतन
ज्योति	तम
जेय	अजेय
जीवन	मरण
जंगम	स्थावर
जाति	विजाति
जन्म	मरण
जय	पराजय
जागरण	निद्रा
जल/नभ	थल
जागृत	सुप्त
जीवित	मृत
जोड़	घटाव
ज्वार	भाटा
जटिल	सरल
तिमिर	प्रकाश
तामसिक	सात्विक
तरल	ठोस
तृष्णा	वितृष्णा
तेजस्वी	निस्तेज
थोक	फुटकर
देव	दानव
दिवा	रात्रि
दूषित	स्वच्छ
तम	प्रकाश
ताप	शीत
तीव्र	मन्द
तुच्छ	महान
तिक्त	मधुर

Parikshā Manthan

शब्द	विलोम
दुष्ट, दुर्जन	सज्जन
देय	अदेय
दुराचारी	सदाचारी
दुदान्त	शान्त
दक्षिण	वाम, उत्तर
दृढ़	अदृढ़
दुर्बल	सबल
दुःशील	सुशील
दुर्गम	सुगम
दृश्य	अदृश्य
धरा	गगन
ध्वंस	निर्माण
न्यून	अधिक
नूतन	पुरातन
निर्दोष	सदोष
निर्माण	विनाश
नख	शिख
नमकहलाल	नमकहराम
निर्मल	मलिन
नित्य	अनित्य
निष्काम	सकाम
निर्लज्ज	सलज्ज
नया	पुराना
धनी	निर्धन
धृष्ट	विनीत
नश्वर	शाश्वत
निन्दा	स्तुति
निंद्य	स्तुत्य
निद्रा	जागरण
निरामिष	सामिष
नैतिक	अनैतिक
निर्दय	सदय
नैसर्गिक	कृत्रिम
निरर्थक	सार्थक
निरक्षर	साक्षर
निषिद्ध	विहित
नेकी	बदी
पतिव्रता	कुलटा
पवित्र	अपवित्र
पाप	पुण्य
प्रवृत्ति	निवृत्ति
पेय	अपेय
प्रश्न	उत्तर
परतंत्र	स्वतंत्र
प्रशंसा	निन्दा
प्राची	प्रतीची
प्रत्यक्ष	परोक्ष
पश्चात्य	पौर्वात्य
प्राचीन	अर्वाचीन
प्रारंभिक	अन्तिम
प्रवृत्ति	निवृत्ति
प्रसारण	संकोचन

शब्द	विलोम
प्रसाद	विषाद
प्रलय	सृष्टि
पुरुष	कोमल
पंडित	मूर्ख
परकीय	स्वकीय
पुष्ट	क्षीण
परिश्रम	विश्राम
परास्त	विजित
पदोन्नत	पदानवत
प्रधान	गौण
परमार्थ	स्वार्थ
फल	कुफल
बंधन	मुक्ति
बाढ़	सूखा
बर्बर	सभ्य
मुख्य	गौण
महान	तुच्छ/अधम
महात्मा	दुरात्मा
मूक	वाचाल
बुराई	भलाई
भूगोल	खगोल
मंगल	अमंगल
मान	अपमान
मसृण	कठोर/खुरदुरा
मितव्यय	अपव्यय
भेद	अभेद
भाव	अभाव
भौतिक	आध्यात्मिक
भोगी	योगी
योग	वियोग
योगी	वियोगी
यश	अपयश
राम	रावण
रथी	विरथी
रूपवान्	कुरूप
रंगीन	बेरंग
रिक्त	पूर्ण
रूक्ष	स्निग्ध
राग	विराग
राजतंत्र	जनतंत्र
रक्षक	भक्षक
रचना	ध्वंस
राजा	प्रजा
लाभ	हानि
लिखित	अलिखित
लघु	गुरू
लौकिक	अलौकिक
वाद	प्रतिवाद
विवाद	निर्विवाद
विपन्न	संपन्न
विस्मरण	स्मरण
वैतनिक	अवैतनिक

Parikshā Manthan

शब्द	विलोम
विकीर्ण	संकीर्ण
वैमनस्य	सौमनस्य
वृष्टि	अनावृष्टि
बहिष्कार	अंगीकार
बसन्त	पतझड़
व्यावहारिक	अव्यावहारिक
विष	अमृत
विज्ञ	अज्ञ
वन्य	पालित
व्यष्टि	समष्टि
विस्तृत	संक्षिप्त
विजय	पराजय
विस्तार	संक्षेप
वीर	कायर
विपद	संपद्
विधवा	सधवा
विश्लेषण	संश्लेषण
विशिष्ट	सामान्य
विस्मृति	स्मृति
विरोध	समर्थन
विलास	तप
विजय	पराजय
विमुख	सम्मुख
विपुल	न्यून
विधि	निषेध
विशेष	साधारण
विभव	पराभव
वादी	प्रतिवादी
वक्र	ऋजु
विवेकी	अविवेकी
विग्रह	संधि
शयन	जागरण
शासक	शासित
शुक्लपक्ष	कृष्णपक्ष
शिव	अशिव
शेष	अशेष
शुष्क	आर्द्र
संश्लेषण	विश्लेषण
संयोग	वियोग
श्रव्य	दृश्य
स्थूल	सूक्ष्म
सुलभ	दुर्लभ
स्वतंत्र	परतंत्र
सम	विषम
सर्द	गर्म
सनाथ	अनाथ
सच्चरित्र	दुश्चरित्र
ससीम	असीम
सावधान	असावधान
सामान्य	विशिष्ट
सत्याग्रह	दुराग्रह
स्पष्ट	अस्पष्ट

शब्द	विलोम
सामिष	निरामिष
संघटन	विघटन
स्वागत	तिरस्कार
सापेक्ष	निरपेक्ष
साक्षर	निरक्षर
संश्लिष्ट	विश्लिष्ट
सरस	नीरस
स्वाधीन	पराधीन
समष्टि	व्यष्टि
सफल	विफल
सबल	दुर्बल
सजीव	निर्जीव
सगुण	निर्गुण
सत्	असत्
सुकर	दुष्कर
सरल	कठिन
सहयोगी	प्रतियोगी
सजल	निर्जल
सवर्ण	असवर्ण
स्वदेश	विदेश
स्वजाति	विजाति
स्तुति	निन्दा
सुशील	दुःशील
सुपथ	कुपथ
सुमार्ग	कुमार्ग
सुख	दुःख
सुलभ	दुर्लभ
सुगम	दुर्गम
सुपात्र	कुपात्र
सुकर्म	कुकर्म
साकार	निराकार
संकोच	निःसंकोच
सकाम	निष्काम
सार्थक	निरर्थक
सम्मान	अपमान
संयोग	वियोग
सदय	निर्दय
सुमति	कुमति
सत्य	असत्य
सादर	निरादर
समूल	निर्मूल
सदाचार	दुराचार
सौम्य	उग्र
सुकाल	अकाल
सौभाग्य	दुर्भाग्य
सामान्य	विशिष्ट
स्वीकृति	अस्वीकृति
सुराज	कुराज
सुबह	शाम
सदाचारी	दुराचारी
सार्थक	निरर्थक
संकीर्ण	विस्तीर्ण

Parikshā Manthan

शब्द	विलोम
सुलभ	दुर्लभ
सदाशय	दुराशय
स्वप्न	जागृत
सुकृति	दुष्कृति
संकोच	प्रसार
समास	व्यास
सभ्य	असभ्य
स्वल्पायु	चिरायु
सुदुर	सन्निकट
स्वार्थ	निःस्वार्थ
सर्वधर्म	परधर्म
सूक्ष्म	स्थूल
स्मरण	विस्मरण
सुयश	अपयश
संगत	असंगत
संशक	निःशंक
स्थावर	जंगम
साधु	असाधु
सुर	असुर
सित	असित
स्वामी	सेवक
सुधा	गरल
सृष्टि	प्रलय
संकल्प	विकल्प
संपन्न	विपन्न
संधि	विग्रह
सामयिक	असामयिक

शब्द	विलोम
स्पृश्य	अस्पृश्य
संन्यासी	गृहस्थ
सक्षम	अक्षम
शुक्ल	कृष्ण
श्वेत	श्याम
शाम	सुबह
शुभ्र	अशुभ्र
शोषक	पोषक
श्रोता	वक्ता
शासक	शासित
शोक	हर्ष
श्रीगणेश	इतिश्री
शृंखला	विशृंखला
श्रद्धा	घृणा
श्याम	गौर
हँसना	रोना
ह्रास	वृद्धि
हास	रोदन
हार	जीत
हर्ष	विषाद/शोक
ह्रस्व	दीर्घ
हिंसा	अहिंसा
क्षम्य	अक्षम्य
क्षुद्र	महान
ज्ञेय	अज्ञेय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नीचे लिखे प्रत्येक शब्द के आगे चार विकल्प दिये गये हैं। इनमें से दिए गए शब्द के लिए सही विलोम शब्द का चयन करिये—

1. मूक
   (क) झूठ (ख) मोना
   (ग) वाचाल (घ) वांछित
2. आरंभ
   (क) शुरुआत (ख) कमी
   (ग) असत्य (घ) अंत
3. सुपात्र
   (क) कुपात्र (ख) स्रोत
   (ग) ओत (घ) पात्रता
4. आयोजन
   (क) विघटन (ख) वियोजन
   (ग) नियोजन (घ) योजन
5. सत्कार
   (क) शाश्वत (ख) दिव्य
   (ग) तिरस्कार (घ) उपकार
6. अल्पसंख्यक
   (क) महासंख्यक (ख) अतिसंख्यक
   (ग) बहुसंख्यक (घ) बाहुल्य
7. हिंसा
   (क) प्रतिहिंसा (ख) अहिंसा
   (ग) कायरता (घ) उग्रता
8. सुर
   (क) देव (ख) अदेव
   (ग) असुर (घ) अनीश
9. सकारात्मक
   (क) निराशात्मक (ख) नकारात्मक
   (ग) संभवात्मक (घ) आशात्मक
10. स्मृति
    (क) स्मिता (ख) अनुरक्ति
    (ग) विस्मृति (घ) चूक
11. अपशकुन
    (क) शकुन (ख) शकुनि
    (ग) अनादर (घ) आशीर्वाद
12. वादी
    (क) ज्ञेय (ख) तुच्छ
    (ग) प्रतिवादी (घ) प्रतिकार
13. विस्तार
    (क) छोटा (ख) संक्षेप
    (ग) लघु (घ) सूक्ष्म

Pariksha Manthan

14. अद्यतन
(क) आधुनिक (ख) पौराणिक
(ग) पुरातन (घ) आभारी

15. आदर
(क) अनादर (ख) सम्मान
(ग) श्रेष्ठ (घ) पूज्य

16. अनुग्रह
(क) कृपा (ख) विग्रह
(ग) आहार (घ) आदरणीय

17. ज्ञेय
(क) सुविज्ञ (ख) अज्ञेय
(ग) अवधूत (घ) पूर्ण

18. अर्वाचीन
(क) प्राचीन (ख) अल्प
(ग) ऐतिहासिक (घ) रुचि

19. आकर्षण
(क) अपकार (ख) विकर्षण
(ग) विकृति (घ) विकराल

20. गरल
(क) अगम (ख) सरल
(ग) विरल (घ) अमृत

21. अनुरक्ति
(क) विरक्ति (ख) रिक्त
(ग) भित्त (घ) चित्त

22. अर्थ
(क) निहितार्थ (ख) अनर्थ
(ग) कथ्य (घ) कथानक

23. अकाम
(क) सकाम (ख) नाकाम
(ग) काम (घ) कृत्य

24. एकाधिकार
(क) पराधिकार (ख) अनेकाधिकार
(ग) सर्वाधिकार (घ) परमाधिकार

25. आलोक
(क) परलोक (ख) इहलोक
(ग) लोप (घ) अंधकार

26. कनिष्ठ
(क) कुटिल (ख) वरिष्ठ
(ग) ज्येष्ठ (घ) गरिष्ठ

27. कृश
(क) स्थूल (ख) मस्तूल
(ग) रुग्ण (घ) कृपण

28. अनौचित्य
(क) बेहोश (ख) दोष
(ग) औचित्य (घ) तन्द्रा

29. वर
(क) वरण (ख) वरुण
(ग) शाप (घ) श्रद्धा

30. श्वास
(क) उच्छ्वास (ख) निःशब्द
(ग) सांस (घ) श्वसन

31. अल्पज्ञ
(क) कृतज्ञ (ख) सर्वज्ञ
(ग) अवज्ञा (घ) अभिज्ञ

32. चिरायु
(क) चिरंजीव (ख) दीर्घजीवी
(ग) अल्पायु (घ) दीर्घजीवी

33. आसक्त
(क) सशक्त (ख) निःशक्त
(ग) आकर्षण (घ) अनासक्त

34. आदान
(क) अवदान (ख) अभयदान
(ग) प्रदान (घ) अनादि

35. संशय
(क) सुनिश्चित (ख) निश्चय
(ग) निःसंशय (घ) संशय रहित

36. ऐक्य
(क) अनैक्य (ख) एकल
(ग) ऐहिक (घ) मतैक्य

37. उर्वरा
(क) वत्सला (ख) ऊसर
(ग) उर्वरक (घ) उदासीन

38. इहलोक
(क) दिव्य (ख) आलोक
(ग) परलोक (घ) परकाया

39. भूषण
(क) दूषण (ख) भूषा
(ग) मंजूषा (घ) दनुज

40. साक्षर
(क) पाठक (ख) निरक्षर
(ग) अक्षर (घ) अक्षत

41. नैसर्गिक
(क) स्वर्गीय (ख) कृत्रिम
(ग) कांति (घ) प्रारंभिक

42. उत्थान
(क) पतन (ख) उन्नति
(ग) पराभव (घ) उत्कर्ष

43. अमर
(क) मर्त्य (ख) मारकेश
(ग) अतुल्य (घ) ईश्वर

44. सुकारथ
(क) दुखी (ख) अकारथ
(ग) सुकर्म (घ) अकारण

45. मंडन
(क) खंडन (ख) मुंडन
(ग) वंदन (घ) चंदन

46. निरुत्साह
(क) हतोत्साह (ख) उमंग
(ग) उल्लास (घ) उत्साह

Pariksha Manthan

47. अनीश्वर
(क) अर्धनारीश्वर (ख) बागीश्वर
(ग) ईश्वर (घ) दैत्य

48. अम्बर
(क) स्वयंवर (ख) अवनि
(ग) पाताल (घ) पवन

49. गरिमा
(क) लघिमा (ख) घृणा
(ग) नीचता (घ) अंधकार

50. कोलाहल
(क) अलकोहल (ख) शांति
(ग) निर्जीव (घ) निर्विकार

51. आरूढ़
(क) अनारूढ़ (ख) अनास्था
(ग) अनादृत (घ) अनमोल

52. उत्तरायण
(क) वातायन (ख) वातानुकूल
(ग) अस्ताचल (घ) दक्षिणायन

53. नास्तिक
(क) भाषिक (ख) आस्तिक
(ग) स्वास्तिक (घ) वास्तविक

54. कलुष
(क) निष्पाप (ख) निष्कलुष
(ग) पापशून्य (घ) निकरूण

55. वक्र
(क) ऋजु (ख) विकीर्ण
(ग) ऋतु (घ) चक्र

56. अखाद्य
(क) कृपा (ख) खाद
(ग) खाद्य (घ) भूख

57. उथला
(क) पतला (ख) दुबला
(ग) छिछला (घ) गहरा

58. गमन
(क) आगमन (ख) आहूत
(ग) गति (घ) गरिमा

59. प्रतिघात
(क) घात (ख) प्रगति
(ग) प्रतिहिंसा (घ) प्रभाव

60. नीरस
(क) नीरज (ख) रसीला
(ग) पनीला (घ) पीला

61. गौण
(क) गुरु (ख) गंभीर
(ग) प्रधान (घ) प्रमुदित

62. करुण
(क) कठोर (ख) निष्ठुर
(ग) निठुर (घ) निर्दय

63. ध्वंस
(क) नवीन (ख) प्रवीण
(ग) निवृत्ति (घ) निर्माण

64. रंक
(क) अंक (ख) भंग
(ग) राजा (घ) भोज

65. भोगी
(क) योगी (ख) रोगी
(ग) फौजी (घ) भोजन

66. ऋणात्मक
(क) अनात्मक (ख) धनात्मक
(ग) मानात्मक (घ) रिणात्मक

67. विनीत
(क) वनिता (ख) वामा
(ग) धृष्ट (घ) धूर्त

68. यथार्थ
(क) कल्पित (ख) काव्य
(ग) व्यर्थ (घ) कृतार्थ

69. निर्लिप्त
(क) विरक्ति (ख) लिप्त
(ग) दिव्य (घ) मिथ्या

70. अभद्र
(क) भद्र (ख) नृत्य
(ग) अशिष्ट (घ) अवशिष्ट

71. वन्द्य
(क) वंदनीय (ख) निन्द्य
(ग) नित्य (घ) विज्ञ

72. अस्ताचल
(क) उदयाचल (ख) वनांचल
(ग) हिमाचल (घ) नामांकन

73. भक्षक
(क) तक्षक (ख) रक्षक
(ग) भोजन (घ) व्यंजन

74. बदी
(क) सदी (ख) अली
(ग) सती (घ) नेकी

75. रत
(क) रथ (ख) विरत
(ग) रति (घ) सहवास

76. संहारक
(क) सारथी (ख) पालक
(ग) पालन (घ) प्रफुल्ल

77. सम
(क) श्वेत (ख) अधम
(ग) विषम (घ) समयानुकूल

78. दुर्गम
(क) सुगम (ख) दुरुस्त
(ग) दूरस्थ (घ) दृढ़

Pariksha Manthan

79. इतिश्री
(क) इतवारी (ख) श्रीगणेश
(ग) गौरी (घ) श्रीमुख
80. प्रीति
(क) प्रतिज्ञा (ख) दोस्ती
(ग) वैर (घ) भाव
81. उग्र
(क) सौम्य (ख) साधु
(ग) संतोषी (घ) उत्साहित
82. अकर्मण्य
(क) कर्मण्य (ख) अक्रम
(ग) अक्रूर (घ) कामी
83. मुक्त
(क) हस्त (ख) ग्रस्त
(ग) त्रस्त (घ) भ्रष्ट
84. अगोचर
(क) गऊ (ख) गोजर
(ग) गोचर (घ) अनचाहा
85. कृत्घ्न
(क) कृत्य (ख) कृषक
(ग) कृपालु (घ) कृतज्ञ
86. नमकहराम
(क) नमकीन (ख) नमकहलाल
(ग) नमकखोर (घ) नौसिखिया
87. फल
(क) कुफल (ख) कुमार्गी
(ग) संन्यासी (घ) फलित
88. पाश्चात्य
(क) पौर्वात्य (ख) परिष्कृत
(ग) प्रारंभिक (घ) पराकाष्ठा
89. अनैतिक
(क) उदार (ख) नैतिक
(ग) नयनाभिराम (घ) उन्मूलन
90. पारदर्शी
(क) मखमली (ख) वनमाली
(ग) अपारदर्शी (घ) आकार
91. सृष्टि
(क) वृष्टि (ख) प्रलय
(ग) दृष्टि (घ) पराभव
92. दृश्य
(क) श्रृव्य (ख) शृंगार
(ग) सूक्ति (घ) भक्ति
93. निर्जल
(क) जलचर (ख) सजल
(ग) समीर (घ) मरुस्थल
94. अवैतनिक
(क) वैतनिक (ख) पगार
(ग) पारितोष (घ) पारंगत
95. निर्विवाद
(क) झगड़ा (ख) कलह
(ग) विवाद (घ) समझौता
96. कुमति
(क) सुमति (ख) आपत्ति
(ग) सुलोचन (घ) सुन्दर
97. दुराशय
(क) दुर्गुण (ख) सदाशय
(ग) शालीन (घ) कुलीन
98. अस्पृश्य
(क) स्पृश्य (ख) गृहस्थ
(ग) वंशानुगत (घ) दृष्टा
99. बाहर
(क) मार्ग (ख) वाटिका
(ग) शहर (घ) घर
100. परकीय
(क) स्वकीय (ख) सौन्दर्य
(ग) स्वाधीन (घ) पराधीन

नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द के लिए उचित विलोम शब्द विकल्पों में से चुनिए—

101. वीर भोग्या वसुंधरा।
(क) वियोगी (ख) योगी
(ग) कायर (घ) बहादुर
102. जिसके पास आशा है, उसके पास सब कुछ है।
(क) निराशा (ख) भाषा
(ग) रूप (घ) उमंग
103. आत्मा की आवाज सदैव सुननी चाहिए।
(क) आकाश (ख) परमात्मा
(ग) आत्मिक (घ) अमर
104. सज्जन मृदु भाषी होते हैं।
(क) स्निग्ध (ख) मधुर
(ग) कटु (घ) ललित
105. आलोचना की उपेक्षा कर पूर्ण शक्ति से उत्तम कार्य करो।
(क) अवहेलना (ख) इच्छा
(ग) याचना (घ) अपेक्षा
106. इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होतीं।
(क) अतृप्त (ख) अधूरी
(ग) आस (घ) त्याग
107. तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी उस मूर्ख को नहीं समझ सकता।
(क) विचक्षण (ख) प्राज्ञ
(ग) अज्ञ (घ) विलक्षण
108. इच्छा और आंसू जुड़वां बहनें हैं।
(क) कामेच्छा (ख) अभिलाषा
(ग) अनिच्छा (घ) ईर्ष्या
109. ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया है।
(क) आकाश (ख) अंधकार
(ग) उदास (घ) प्रेम
110. साहित्य के प्रति अनुराग पैदा करो।
(क) राग (ख) अनुगमन
(ग) विराग (घ) वैमनस्य

Pariksha Manthan

111. गृहस्थी के बंधन के कारण मैं कहीं आ-जा नहीं सकता।
(क) विमोचन (ख) मोक्ष
(ग) पार्थक्य (घ) उद्घाटन

112. जो ईश्वर को पा लेता है, मूक और शांत हो जाता है।
(क) पंगु (ख) वाचाल
(ग) उत्साही (घ) उन्मत्त

113. हिन्दी साहित्य अत्यंत समृद्ध है।
(क) विपन्न (ख) दरिद्र
(ग) अकिंचन (घ) सुखद

114. वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।
(क) उदात्त (ख) संतति
(ग) अवनति (घ) अमंगल

115. ऐसा आदि काल से होता चला आ रहा है।
(क) अनादि (ख) अनश्वर
(ग) प्राचीन (घ) पुरातन

116. यदि उद्देश्य शुभ न हो तो ज्ञान पाप हो जाता है।
(क) अच्छा (ख) उपयुक्त
(ग) अशुभ (घ) अतुल

117. अंतर्द्वन्द्व शुरू होते ही उसने गहरी सांस छोड़ी।
(क) लड़ाई (ख) बहिर्द्वन्द्व
(ग) बहिष्कृत (घ) चिंतन

118. समझो न अलभ्य किसी धन को।
(क) अछूत (ख) कठिन
(ग) लभ्य (घ) भस्म

119. क्रोध से कीर्ति नष्ट होती है।
(क) रीति (ख) भीति
(ग) कनिष्ठ (घ) अपकीर्ति

120. राजतंत्र में राजा महत्वपूर्ण होता है।
(क) गणतंत्र (ख) स्वतंत्र
(ग) तंत्र-मंत्र (घ) स्थावर

121. कृष्ण पक्ष कल से शुरू होगा।
(क) पक्ष (ख) विपक्ष
(ग) शुक्लपक्ष (घ) पक्षधर

122. शासक को अगंभीर नहीं होना चाहिए।
(क) मूर्ख (ख) उग्र
(ग) भ्रष्ट (घ) गंभीर

123. संपादक को उस खबर का खंडन छापना पड़ा।
(क) शेषभाग (ख) पूरा भाग
(ग) मंडन (घ) खंड

124. पहले बाहरी झगड़ों से तो निपट लो।
(क) घरेलू (ख) गोचर
(ग) जातीय (घ) नस्लीय

125. अचल सम्पत्ति को लेकर न्यायालय में वाद चल रहा है।
(क) विदेशी (ख) देशी
(ग) चल (घ) अकूत

126. खाप पंचायतें मध्य युग के बर्बर न्याय की पक्षधर हैं।
(क) वृद्ध (ख) सभ्य
(ग) उन्नत (घ) क्रूर

127. गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है।
(क) इल्म (ख) कौशल
(ग) अवगुण (घ) अपंग

128. अभिमान अपने अपमान को नहीं भूलता।
(क) अनादर (ख) सम्मान
(ग) स्वागत (घ) आगत

129. जो जीवन को जैसे-तैसे घसीटते हुए जीता है, वह नित्य मरता है।
(क) रोज (ख) प्रतिदिन
(ग) अनित्य (घ) अनेक

130. उसकी प्रवृत्ति ही ऐसी बन गई है।
(क) निवृत्ति (ख) प्रकृति
(ग) नीति (घ) चाल

131. मैं तो तुच्छ प्राणी हूं।
(क) कुरूप (ख) चालाक
(ग) महान (घ) अधम

132. अब ऐसे नमकहलाल लोग कहां मिलते हैं
(क) हरामखोर (ख) नमकहराम
(ग) नटवरलाल (घ) नटखट

133. प्रत्यक्ष रूप से इस काम में उसकी कोई भूमिका नहीं है।
(क) स्पष्ट (ख) अस्पष्ट
(ग) पूर्ण (घ) परोक्ष

134. तुम्हारी बातों ने मुझे आहत कर दिया।
(क) अनाहत (ख) उत्साहित
(ग) हतोत्साहित (घ) आनंदित

135. अभी इस काम को करने के लिए समय अनुकूल नहीं है।
(क) अच्छा (ख) प्रतिकूल
(ग) उचित (घ) अद्यतन

136. वह आलस्य का शिकार है।
(क) स्फूर्ति (ख) जोश
(ग) उत्तेजना (घ) निराशा

137. अल्पायु में ही उसका निधन हो गया।
(क) बुढ़ापे (ख) दीर्घायु
(ग) यौवन (घ) योनि

138. ऐसा करना न्याय संगत होगा।
(क) उत्तम (ख) असंगत
(ग) सुविधाजनक (घ) सुखद

139. मैं आपका ध्यान इस समस्या की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूं।
(क) आकर्षित (ख) विकृष्ट
(ग) निकृष्ट (घ) विमुख

140. उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति बढ़ी है।
(क) क्षमता (ख) सामर्थ्य
(ग) उपादेयता (घ) विक्रय

141. पूत कपूत तो क्या धन संचय।
(क) सपूत (ख) निपूत
(ग) बुरा (घ) प्रकट

142. वह रोग ग्रस्त है।

Pariksha Manthan

(क) त्रस्त (ख) अस्त
(ग) व्यस्त (घ) मुक्त

143. अनेक लोगों को दौलत ने तबाह कर दिया और अनेक उसके अभाव में बर्बाद हो गए।
(क) बहुत (ख) सूक्ष्म
(ग) एक (घ) असंख्य

144. नम्रता की ऊंचाई का नाप नहीं।
(क) अभिमान (ख) घमंड
(ग) ईर्ष्या (घ) वैर

145. पुरुष यश का स्वप्न देखता है, जबकि नारी प्रेम करने के लिए जागती रहती है।
(क) कीर्ति (ख) अपयश
(ग) शुभ (घ) ऐश्वर्य

146. वह निष्काम भाव से ईश्वर का स्मरण करता है।
(क) बेकार (ख) सकाम
(ग) आर्द्र (घ) सादर

147. जो पुरुषार्थ नहीं करते वे धन, मित्र, ऐश्वर्य, उत्तम कुल तथा दुर्लभ लक्ष्मी का उपभोग नहीं कर सकते।
(क) वैभव (ख) दरिद्रता
(ग) अनैश्वर्य (घ) सम्पन्नता

148. सरकार मलिन बस्तियों की काया पलटना चाहती है।
(क) निर्मल (ख) विमल
(ग) संक्रमित (घ) शांत

149. वह बुद्धि से प्रखर है।
(क) कुशाग्र (ख) मंद
(ग) मूर्ख (घ) बुद्धू

150. यह कृत्य निंदनीय है।
(क) आलोच्य (ख) निष्ठा
(ग) निन्द्य (घ) प्रशंसनीय

निम्नांकित वाक्यों में एक शब्द रेखांकित है। रेखांकित शब्द का विलोम शब्द दिये गये विकल्पों में से चुनकर रिक्त स्थान को भरिये—

151. भारत में मौसम गर्म है, मगर ब्रिटेन में.....है।
(क) उष्ण (ख) सर्द
(ग) अनुकूल (घ) सम

152. सामान्य लोग तो इसी मार्ग से जाएंगे, मगर.....लोगों के लिए दूसरा मार्ग निर्धारित किया गया है।
(क) विपन्न (ख) प्रभावशाली
(ग) विशिष्ट (घ) अभिजात्य

153. आपका पहला सुझाव तो व्यावहारिक है, मगर दूसरा सुझाव .....लग रहा है।
(क) उपयुक्त (ख) टेढ़ा
(ग) जटिल (घ) अव्यावहारिक

154. सबल व्यक्ति का सभी साथ देते हैं, किंतु.....का साथ देने वाले बिरले ही होते हैं।
(क) निर्बल (ख) निःशक्त
(ग) कृश (घ) रुग्ण

155. सुनीता का प्रफुल्ल मन एकाएक.....हो गया।
(क) शुष्क (ख) उदास
(ग) प्रसन्न (घ) उष्ण

156. मेरा छोटा भाई सूरज अपव्ययी है, जबकि बड़ी बहन शुभी .....है।
(क) उदार (ख) समर्थ
(ग) मितव्ययी (घ) कृपण

157. घृणा को.....से जीतो।
(क) छल (ख) प्रेम
(ग) आसक्ति (घ) अनुरक्ति

158. जहां कुछ लोगों ने मेरे प्रस्ताव का विरोध किया, वहीं कुछ लोगों ने इसका.....भी किया।
(क) पारित (ख) त्याज्य
(ग) समर्थन (घ) ध्वनिमत

159. पहले वक्ता ने विषय पर संक्षिप्त विचार व्यक्त किए, मगर दूसरे ने.....।
(क) लघु (ख) पर्याप्त
(ग) विपद (घ) विस्तृत

160. गांधीजी के अनुसार अत्याचार का उत्तर.....से देना ही मनुष्यता है।
(क) सदाचार (ख) शिष्टाचार
(ग) आचार (घ) नमस्कार

161. उसने मेरी समस्या का.....सुझाया।
(क) निवारण (ख) समाधान
(ग) सुधार (घ) सुंदर

162. इस क्लिष्ट गद्यांश को.....भाव में प्रकट करो।
(क) लघु (ख) अपने
(ग) सरल (घ) बोलचाल

163. कार्ल मार्क्स की विचारधारा भौतिकवादी है, परंतु महात्मागांधी.....।
(क) अध्यात्मवादी (ख) यथार्थवादी
(ग) आदर्शवादी (घ) प्रकृतवादी

164. अभी समय प्रतिकूल है। .....समय की प्रतीक्षा करो।
(क) अमर (ख) अनुकूल
(ग) समयानुकूल (घ) यथेष्ट

165. व्यापार में आदान.....तो चला ही करता है।
(क) प्रदान (ख) अवदान
(ग) देहदान (घ) ग्रहण

166. उसने आकाश.....एक कर दिया।
(क) पृथ्वी (ख) तालाब
(ग) अंतरिक्ष (घ) पाताल

167. कितना भी कर ले तुम्हारा भूत तुम्हारे.....को प्रभावित अवश्य करेगा।
(क) वर्तमान (ख) आज
(ग) कल (घ) भविष्य

168. दान सुपात्र को दिया जाता है,.....को नहीं।

Parikha Manthan

(क) दरिद्र (ख) भिक्षु
(ग) कुपात्र (घ) कृपापात्र

169. मानव को मुक्ति प्राप्त करने के लिए आसुरी प्रवृतियों को त्यागकर.....प्रवृत्तियों को अपनाना चाहिए।
(क) देवी (ख) दैवी
(ग) दिव्य (घ) पाशवी

170. यद्यपि इस शहर की गणना महानगरों में होती है,..... यहां की यातायात व्यवस्था अच्छी नहीं है।
(क) किन्तु (ख) हालांकि
(ग) लेकिन (घ) तथापि

171. असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि.....का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
(क) समाधान (ख) निराकरण
(ग) सफलता (घ) उद्यम

172. जितनी वस्तुएं हम निर्यात करते हैं, उनसे कहीं अधिक हमें.....करनी पड़ती है।
(क) आयात (ख) विक्रय
(ग) क्रय (घ) विग्रह

173. आशावादी लोग जीवन को सुखमय बनाते हैं, जबकि.....इसे नारकीय बना डालते हैं।
(क) संदिग्ध (ख) भोगवादी
(ग) आलसी (घ) निराशावादी

174. इसे मैं आपका आग्रह समझूं अथवा.....।
(क) आदर (ख) निरादर
(ग) दुराग्रह (घ) निवेदन

175. राजनीति में घात.....का खेल चलता रहता है।
(क) प्रतिहिंसा (ख) प्रतिघात
(ग) प्रतिकूल (घ) नेपथ्य

176. अपने चंचल मन को.....रखो।
(क) अंकुश (ख) चल
(ग) अचल (घ) स्थिर

177. जो कुछ उसने व्यक्त किया, उससे कहीं अधिक.....रह गया।
(क) प्रस्तुत (ख) अव्यक्त
(ग) प्रकट (घ) व्याख्या

178. जीवन में कुछ शत्रु तो ज्ञात होते हैं, किन्तु कुछ.....भी होते हैं।
(क) निष्ठुर (ख) अज्ञात
(ग) विख्यात (घ) प्रख्यात

179. जालसाजों ने ऐसे नोट छापे थे कि असली.....का फर्क करना मुश्किल था।
(क) उत्तम (ख) फर्जी
(ग) पारदर्शी (घ) नकली

180. उनकी कुछ रचनाएं तो प्रकाशित हुईं, किन्तु कुछ..... ही रह गईं।
(क) मुद्रित (ख) अप्रकाशित
(ग) स्वरचित (घ) प्रेषित

181. 'अनभिज्ञ' का विलोम है—
(क) अज्ञ (ख) प्रज्ञ
(ग) अभिज्ञ (घ) अविज्ञ

182. 'सौम्य' शब्द का विलोम है—
(क) सौभाग्य (ख) उग्र
(ग) शत्रु (घ) दुराशय

183. 'चिरंतन' शब्द का विलोम है—
(क) चिंता करने वाला (ख) चिंता नहीं करने वाला
(ग) नश्वर (घ) चिता

184. 'ह्रास' का विलोम है—
(क) हास्य (ख) वृद्धि
(ग) हंसी (घ) वृद्धि

185. 'न्यून' शब्द का विलोम है—
(क) अधिक (ख) नवीन
(ग) नवनीत (घ) नगर

186. 'पुष्ट' शब्द का विलोम है—
(क) क्षीण (ख) दुष्ट
(ग) पुरस्कार (घ) प्रकृति

187. 'गुण' शब्द का विलोम है—
(क) दोष (ख) गुड़
(ग) गुणा (घ) गृहस्थ

188. 'ईप्सित' शब्द का विलोम है—
(क) अनीप्सित (ख) अभीप्सित
(ग) अधीप्सित (घ) कुत्सित

189. 'स्वजाति' का विलोम है—
(क) अजाति (ख) कुजाति
(ग) सुजाति (घ) विजाति

190. 'उन्मूलन' का विलोम है—
(क) आमूलन (ख) निमीलन
(ग) समूलन (घ) रोपण

191. 'अमित' शब्द का विलोम है—
(क) सुमित (ख) कुमित
(ग) परिमित (घ) दुर्मित

192. 'श्रीगणेश' शब्द का विलोम है—
(क) इति (ख) इतिश्री
(ग) अथ (घ) इत्यालम्

193. 'धनी' का विलोम है—
(क) धनहीन (ख) अधीन
(ग) अधनी (घ) निर्धन

194. 'उन्मीलन' का विलोम है—
(क) अवमीलन (ख) सुमेलन
(ग) अनुमीलन (घ) निमीलन

195. 'अधिकृत' शब्द का विलोम है—
(क) अनाधिकृत (ख) अनधिकृत
(ग) अनाधिकारिक (घ) प्राधिकृत

Pariksha Manthan

196. 'अनुलोम' शब्द का विलोम है—
(क) सुलोम (ख) प्रतिलोम
(ग) अनमोल (घ) अवलोम

197. 'परिश्रम' का विलोम है—
(क) आश्रम (ख) विश्रम
(ग) विश्राम (घ) विश्रांत

198. 'संयोग' शब्द का विलोम है—
(क) दुर्योग (ख) वियोग
(ग) सहयोग (घ) कुयोग

199. 'ऋजु' शब्द का विलोम है—
(क) वक्र (ख) तक्र
(ग) सीधा (घ) विरल

200. 'आकलन' शब्द का विलोम है—
(क) विकलन (ख) संकलन
(ग) समाकलन (घ) प्राक्कलन

201. निम्नलिखित में कौन-सा विलोम युग्म त्रुटिपूर्ण है—
(क) क्षर-अक्षर (ख) समास-व्यास
(ग) स्वल्पायु-चिरायु (घ) आहार-विहार

202. 'अथ' का विलोम है—
(क) पूर्ण (ख) समाप्त
(ग) इति (घ) खत्म

203. 'अभिज्ञ' का विलोम है—
(क) अज्ञ (ख) तज्ञ
(ग) प्रज्ञ (घ) चतुर

204. 'कृतज्ञ' का विलोम है—
(क) अकृतज्ञ (ख) संवेदनहीन
(ग) कृत्घन (घ) जड़

205. 'संकीर्ण' का विलोम है—
(क) संक्षेप (ख) विस्तार
(ग) विकीर्ण (घ) विस्तीर्ण

206. 'अनुरक्ति' का विलोम है—
(क) विराग (ख) विरक्ति
(ग) तिरोभाव (घ) संसक्ति

207. 'सापेक्ष' का विलोम है—
(क) असापेक्ष (ख) निष्पक्ष
(ग) निरपेक्ष (घ) आक्षेप

208. 'विग्रह' का विलोम है—
(क) संधि (ख) अविग्रह
(ग) आग्रह (घ) ग्रहण

209. निम्नलिखित में कौन-सा विलोम युग्म त्रुटिपूर्ण है?
(क) अपेक्षा-उपेक्षा (ख) अग्रज-अनुज
(ग) उन्नत-अवगत (घ) आदान-प्रदान

210. 'यथार्थ' का विलोम है—
(क) कृत्रिम (ख) आदर्श
(ग) उचित (घ) अनुचित

211. 'साधु' का विलोम है—
(क) साधुनी (ख) संन्यासिनी
(ग) साध्वी (घ) असाधु

212. 'तिमिर' शब्द का विलोम है—
(क) आलोक (ख) किरण
(ग) रंगीन (घ) रंगहीन

213. 'प्रत्यक्ष' शब्द का विलोम है—
(क) अपरोक्ष (ख) परोक्ष
(ग) सुंदर (घ) प्रत्यय

214. 'सामान्य' शब्द का विलोम है—
(क) श्रेष्ठ (ख) सर्वज्ञ
(ग) साधारण (घ) विशिष्ट

215. 'अमर' शब्द का विलोम है—
(क) मृतक (ख) मृत्यु
(ग) मरण (घ) मर्त्य

216. 'उपकार' शब्द का विलोम है—
(क) विकार (ख) अनुपकार
(ग) अपकार (घ) तिरस्कार

217. 'आविर्भाव' शब्द का विलोम है—
(क) अनाविर्भाव (ख) विभाव
(ग) अविर्भाव (घ) तिरोभाव

218. 'उक्त' शब्द का विलोम है—
(क) अनुक्त (ख) उपयुक्त
(ग) अनुपयुक्त (घ) उपर्युक्त

219. 'निर्दय' शब्द का विलोम है—
(क) सह्य (ख) सहृदय
(ग) सदय (घ) समय

220. 'उन्मीलन' शब्द का विलोम है—
(क) अनुमीलन (ख) निमीलन
(ग) अदमीलन (घ) मीलन

221. 'उत्कर्ष' शब्द का विलोम है—
(क) अकर्ष (ख) अनुत्कर्ष
(ग) अपकर्ष (घ) आकर्ष

222. 'मूक' शब्द का विलोम है—
(क) अल्पभाषी (ख) वाचाल
(ग) मृदुभाषी (घ) कटुभाषी

223. कौन-सा युग्म गलत है?
(क) अक्षर-क्षर (ख) कुसुम-वज्र
(ग) रथी-मंडल (घ) मानवता-नृशंसता

224. 'आहूत' का विलोम है—
(क) हूत (ख) अनहूत
(ग) अपहूत (घ) अनाहूत

225. 'अथ' का विलोम है—
(क) अथक (ख) पृथक
(ग) इति (घ) अति

226. 'वादी' का विलोम शब्द है—

Pariksha Manthan

(क) अबादी (ख) विवादी
(ग) प्रतिवादी (घ) अनावादी

227. 'अवर' का विलोम है—
(क) लघु (ख) प्रवर
(ग) सुवर (घ) कनिष्ठ

228. 'जटिल' का विलोम शब्द है—
(क) सरल (ख) कुटिल
(ग) सहज (घ) अजटिल

229. विलोम की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है—
(क) आयात-निर्यात (ख) दृश्य-अदृश्य
(ग) प्रत्यक्ष-परोक्ष (घ) आमिष-सामिष

230. 'स्थावर' का विलोम शब्द है—
(क) सचल (ख) चंचल
(ग) चेतन (घ) जंगम

उत्तरमाला

1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)
6. (ग) 7. (ख) 8. (ग) 9. (ख) 10. (ग)
11. (क) 12. (ग) 13. (ख) 14. (ग) 15. (क)
16. (ख) 17. (ख) 18. (क) 19. (ख) 20. (घ)
21. (क) 22. (ख) 23. (क) 24. (ग) 25. (घ)
26. (ग) 27. (क) 28. (ग) 29. (ग) 30. (क)
31. (ख) 32. (ग) 33. (घ) 34. (ग) 35. (ख)
36. (क) 37. (ख) 38. (ग) 39. (क) 40. (ख)
41. (ख) 42. (क) 43. (क) 44. (ख) 45. (क)
46. (घ) 47. (ग) 48. (ख) 49. (क) 50. (ख)
51. (क) 52. (घ) 53. (ख) 54. (ख) 55. (क)
56. (ग) 57. (घ) 58. (क) 59. (क) 60. (ख)
61. (ग) 62. (ख) 63. (घ) 64. (ग) 65. (क)
66. (ख) 67. (ग) 68. (क) 69. (ख) 70. (क)
71. (ख) 72. (क) 73. (ख) 74. (घ) 75. (ख)
76. (ख) 77. (ग) 78. (क) 79. (ख) 80. (ग)
81. (क) 82. (क) 83. (ख) 84. (ग) 85. (घ)
86. (ख) 87. (क) 88. (क) 89. (ख) 90. (ग)
91. (ख) 92. (क) 93. (ख) 94. (क) 95. (ग)
96. (क) 97. (ख) 98. (क) 99. (घ) 100. (क)
101. (ग) 102. (क) 103. (ख) 104. (ग) 105. (घ)
106. (क) 107. (ख) 108. (ग) 109. (ख) 110. (ग)
111. (क) 112. (ख) 113. (ख) 114. (ग) 115. (क)
116. (ग) 117. (ख) 118. (ग) 119. (घ) 120. (क)
121. (ग) 122. (घ) 123. (ग) 124. (क) 125. (ग)
126. (ख) 127. (ग) 128. (ख) 129. (ग) 130. (क)
131. (ग) 132. (ख) 133. (घ) 134. (क) 135. (ख)
136. (क) 137. (ख) 138. (ख) 139. (ख) 140. (घ)
141. (क) 142. (घ) 143. (ग) 144. (क) 145. (ख)
146. (ख) 147. (ग) 148. (क) 149. (ख) 150. (घ)
151. (ख) 152. (ग) 153. (घ) 154. (क) 155. (ख)
156. (ग) 157. (ख) 158. (ग) 159. (घ) 160. (क)
161. (ख) 162. (ग) 163. (क) 164. (ख) 165. (क)
166. (घ) 167. (घ) 168. (ग) 169. (ख) 170. (घ)
171. (ग) 172. (क) 173. (घ) 174. (ग) 175. (ख)
176. (घ) 177. (ख) 178. (ख) 179. (घ) 180. (ख)
181. (ग) 182. (ख) 183. (ग) 184. (ख) 185. (क)
186. (क) 187. (क) 188. (क) 189. (घ) 190. (घ)
191. (ग) 192. (ख) 193. (घ) 194. (घ) 195. (ख)
196. (ख) 197. (ग) 198. (ख) 199. (क) 200. (ग)
201. (घ) 202. (ग) 203. (क) 204. (ग) 205. (घ)
206. (ख) 207. (ग) 208. (क) 209. (ग) 210. (क)
211. (घ) 212. (क) 213. (ख) 214. (घ) 215. (घ)
216. (ग) 217. (घ) 218. (क) 219. (ग) 220. (ख)
221. (ग) 222. (ख) 223. (ग) 224. (घ) 225. (ग)
226. (ग) 227. (ख) 228. (क) 229. (घ) 230. (घ)

Pariksha Manthan

◆◆◆

तत्सम एवं तद्भव

हिन्दी भाषा में तत्सम और तद्भव शब्द अच्छी संख्या में हैं। परीक्षा की दृष्टि से ये महत्त्वपूर्ण हैं। यहां हम इनके बारे में जानकारी दे रहे हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में शब्दों से संबंधित प्रश्न प्रमुखता से पूछे जाते हैं, जिनमें 'तत्सम' एवं 'तद्भव' शब्दों का विशेष महत्त्व है। परीक्षा की दृष्टि से 'तत्सम' एवं तद्भव शब्दों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर हम यहां इन शब्दों की विस्तृत सूची दे रहे हैं।

(1) तत्सम : हिन्दी भाषा में अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो संस्कृत से लिए गए हैं। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त इन शब्दों की विशिष्टता यह है कि इनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है, यानी अपने अपरिवर्तित रूप में ही ये प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों को 'तत्सम' कहते हैं।

जैसे—गृह, अंगुष्ठ, अट्टालिका, सर्प, रात्रि तथा अग्नि आदि।

(2) तद्भव : हिन्दी भाषा में प्रयुक्त वे शब्द, जिनकी उत्पत्ति तो संस्कृत से हुई, किंतु प्रचलन में आने के बाद इनके मूल रूप में परिवर्तन हो गया, तद्भव कहलाते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि तत्सम का बिगड़ा या परिवर्तित रूप तद्भव के नाम से जाना जाता है।

जैसे—रात, सांप, सिंगार, सिल तथा सूरज आदि।

परीक्षोपयोगी तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची

(अ)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अग्निष्ठिका	अंगीठी	—	—
अकार्य	अकाज	—	—
अज्ञान	अजान	—	—
अक्षि	आँख	—	—
अश्रु	आँसू	—	—
अमूल्य	अमोल	—	—
अक्षर	अच्छर	—	—
अष्टदश	अठारह	—	—
अगम्य	अगम	—	—
अमृत	अमिय	—	—
अनार्य	अनाड़ी	—	—
अन्न	अनाज	—	—
अंगुष्ठ	अंगूठा	—	—
अंगरक्षक	अंगरखा	—	—
अट्टालिका	अटारी	अँगुली	अँगुरी
अन्यत्र	अनत	अंधकार	अंधियारा
अमरुत	अमरूद	अंध	अन्धा
अग्नि	आग	अग्रहन	अग्रहायण
अशीति	अस्सी	अवतार	औतार
अवगुण	औगुन	अद्य	आज
अंक	आँक	अगणित	अनगिनत
अर्द्ध	आधा	अग्रणी	अगाड़ी
अर्पण	अरपन	अंगुष्ठ	अँगूठा
अर्क	आक	अवधर	औधर
अमावस्या	अमावस	अम्लिका	इमली
आश्रय	आसरा	आश्विन	आसिन
आदित्यवार	इतवार	आशीष	आसीस
—	—	आलस्य	आलस
आभीर	अहीर	आम्र	आम
आमलक	आँवला	आखेट	अहेर
ओष्ठ	होठ	—	—

(इ)

इष्टका	ईंट		
ईक्ष	ईख	ईर्ष्या	ईर्षा
एला	इलायची	एकादश	ग्यारह

(उ, ऊ)

उत्साह	उछाह	उपवास	उपास
उपाध्याय	ओझा	उपालम्भ	उलाहना
उलूक	उल्लू	उद्वर्तन	उबटन
उष्ट्र	ऊँट	उच्च	ऊँचा
उलूखन	ओखली	उपाख्यान	उपखान
उल्लास	हुलास		

(क)

कज्जल	काजल	कच्छप	कछुआ
कन्दुक	गेंद	कृषक	किसान
कर्त्तरी	कैंची	कोकिल	कोयल
कर्पूर	कपूर	कल्लोल	कलोल
कार्य	काज	—	—
कोटि	करोड़	कुक्कुर	कुत्ता
कपाट	किवाड़	कुष्ठ	कोढ़
काष्ठ	काठ	कर्ण	कान

Pariksha Manthan

कुक्षि	कोख	कुपुत्र	कपूत
कार्तिक	कातिक	केशरी	केहरी
क्लेश	कलेश	कर्त्तव्य	करतब
कण	कन	कंटक	काँटा
काक	कौआ	कर्पट	कपड़ा
कंकन	कंगन	कटु	कड़ुआ
कोण	कोना	कर्म	काम
कदली	केला	स्कन्ध	कन्धा
कुम्भकार	कुम्हार	कर्त्तन	कतरना
कथावत	कहावत	—	—
काँस्यकार	कसार	कापसि	कपास
किंचित	कुछ	कुटुम्ब	कुटुम
कैवर्त	केवट	कीर्ति	कीरति
कुमार	कुँअर		

(ख)

क्षेत्र	खेत	क्षार	खार
स्तम्भ	खम्भ	—	—
क्षीर	खीर	क्षत्रिय	क्षत्री

(ग)

गर्त्त	गड्ढा	गोमय	गोबर
ग्रामीण	गँवार	गुहा	गुफा
ग्राहक	गाहक	गायक	गवैया
गात्र	गात	ग्राम	गाँव
ग्रंथि	गाँठ	गोस्वामी	गुसाईं
गो	गाय	—	—
गृद्ध	गिद्ध	गर्दभ	गदहा
गर्भिण	गाभिन	गुण	गुन
गम्भीर	गहरा	—	—
गुम्फ	गूँथन	—	—
गौर	गोरा	गोपाल	ग्वाल
गोधूम	गेहूँ	गृह	घर
गुच्छ	गुच्छा		

(घ)

घृत	घी	घट	घड़ा
घृणा	घिन		

(च)

चर्म	चमड़ा, चाम	चन्द्रिका	चाँदनी
चित्रकार	चितेरा	चक्रवाक	चकवा
चूर्ण	चूरन	चतुष्पद	चौपाया
चतुर्थ	चौथा	चतुर्दश	चौदह
चतुष्कोण	चौकोर	चतुर्दिक	चहुँओर, चहुँदिसि
चैत्र	चैत	चन्द्र	चन्दा
चिक्कण	चिकना	चुम्बन	चूमना
चंचु	चोंच	चक्र	चाक
चर्वण	चबाना	चछ	चख
चौर	चोर	—	—

(छ)

छत्र	छाता	छिद्र	छेद
छाँह	छाया	क्षोभ	छोह

(ज)

ज्येष्ठ	जेठ	जिह्वा	जीभ
ज्योति	जोति	जंघा	जाँघ
जन्यवास	जनवास	जगत्	जग
जन्म	जनम	जामाता	जमाई
जीर्ण	जीरन	—	—

(ट, ठ, ड, ढ)

टंकशाला	टकसाल	—	—

(त)

तृण	तिनका	तैल	तेल
ताम्र	ताँबा	ताम्बूल	पान
तिलक	टीका	तपस्वी	तपसी
तुन्द	तोंद	तम्बोली	तमोली
तीक्ष्ण	तीखा	त्वरित	तुरन्त
तप्त	तपना, तपन	तीर्थ	तीरथ
त्रयोदश	तेरह	तंडुल	तन्दुल
ताम्रचूड़	तमचूर	—	—

(द)

दीपक	दीया	दाह	डाह
दंड	डंडा	दंश	डंक
दृष्टि	दीठि	दुर्बल	दुबला
द्रष्टा	डाढ़	द्विपहरी	दुपहरी
दूर्बा	दूब	दन्त	दाँत
दुग्ध	दूध	दक्षिण	दाहिना
दीपावली	दिवाली	दुःख	दुख
दैव	दई	—	—
दधि	दही	द्विवेदी	दुबे
दृक	दृग	दन्तधावन	दातून
द्वादश	बारह	द्विगुण	दूना

(ध)

धैर्य	धीरज	धौत्र	धोती
धनश्रेष्ठि	धन्नासेठ	धर्म	धरम
धर्त्तूर	धतूरा	धान्य	धान
धात्री	दाई	धरित्री	धरती

Parikṣha Manthan

धूलि	धूरि	धर	धुर
धूम्र	धुआँ	धृष्टता	ढिठाई

(न)

निम्ब	नीम	निर्झर	झरना
नृत्य	नाच	नासिक	नाक
—	—	नव्य	नया
निद्रा	नींद	नस्य	नस
नारिकेल	नारियल	नकुल	नेवला
निम्बुक	नींबू	नक्षत्र	नखत
नयन	नैन	निष्ठुर	निठुर
नक्र	नाक	—	—

(प)

पौत्री	पोती	पीत	पीला
पत्र	पत्ता	पुत्र	पूत
पृष्ठ	पीठ	पार्श्ववर्ती	पड़ोसी
पक्षी	पंक्षी	पर्यंक	पलंग
परीक्षा	परख	पाषाण	पाहन
पिप्पल	पीपल	पाद	पैर
पौष	पूस	प्रिय	पिया
प्रहर	पहर	प्रतिच्छाया	परछाई
पूर्ण	पूरा	प्रस्तर	पत्थर
पुष्कर	पोखर	पर्पट	पापड़
परमार्थ	परमारथ	पक्ष	पंख
स्पर्श	परस	पंक्ति	पंगत
पक्वान्न	पकवान	—	—
प्रस्वेद	पसीना	पुच्छ	पूँछ
प्रतिवास	पड़ौस	पुत्रवधू	पतोहू
पूर्व	पूरब	पर्पटा	परांठा
पक्व	पका	पन्थ	पथ
परश्वः	परसों	पुराण	पुरान
पिपासा	प्यास	परशु	फरसा
पुष्प	पुहुप, फूल	पश्चाताप	पछतान
पाश	फन्दा	प्रहरी	पहरुआ

(फ)

फाल्गुन	फागुन	—	—

(ब)

बंसी	बाँसुरी	बालुका	बालू
वधू	बहू	बक	बगुला
वृश्चिक	बिच्छू	बिन्दु	बिन्दी
व्याघ्र	बाघ	बज्रांग	बजरंग
बधिर	बहिर	बन्ध्या	बाँझ
बन्ध	बाँध	—	—

(भ)

भद्र	भला	भ्रम	भरम
भ्रमर	भौंरा	भिक्षा	भीख
भीष्म	भीसम	भिक्षारी	भिखारी
भ्रातृवधू	भाभी	भिक्षुक	भिच्छुक
भाद्र	भादों	भल्लूक	भालू
भ्रातृ	भाई	भगिनीपति	बहनोई
भ्रू	भौं	भगिनी	बहिन
भागिनेय	भानजा	—	—

(म)

मकर	मगर	मर्कटी	मकड़ी
मातुल	मामा	मशक	मच्छर
मृत्यु	मौत	मार्ग	मारग
मित्र	मीत	मक्षिका	माखी
मेघ	मेह	मुक्ता	मोती
मयूर	मोर	महिषी	भैंस
मास	महीना	मिष्ठान्न	मिठाई
मानुष	मानुस	मल	मैल
मुख	मुँह	—	—

(य)

यमुना	जमुना	यूथ	जत्था
यव	जौ	यज्ञोपवीत	जनेऊ
यम	जम	युवा	जवान
योगी	जोगी	यजमान	जजमान
यन्त्र	जन्त्र	—	—

(र)

राजपुत्र	राजपूत	रक्षा	राखी
रात्रि	रात	राशि	रास
राज्ञी	रानी	—	—

(ल)

लज्जा	लाज	लवण	नोन
लोष्ट	लोढ़ा	लोमश	लोमड़ी
लौह	लोहा	—	—
लवंग	लौंग	—	—

(व)

वेदना	बेदना	विग्रह	बिगाड़
विवाह	बिआह	विष्टा	बीठ
व्यथा	विथा	वत्स	बच्चा, बेटा
विद्युत	बिजली	वंशी	बाँसुरी
वट	बड़/बरगद	वानर	बन्दर
वाष्प	भाप	वर्ष	बरस
वृद्ध	बुड्ढा	—	—

(स)

स्वर्ण	सोना	सूर्य	सूरज
सरोवर	सरबर	स्नेह	नेह
स्वजन	सजन	सप्तशती	सतसई
सूत्र	सूत	स्वप्न	सपना

Pariksha Manthan

स्वामी	साईं	सर्षप	सरसों			**(ह)**	
साक्षी	साखी	संध्या	शाम	हस्ति	हाथी	हस्त	हाथ
सपत्नी	सौत	—	—	हरिण	हिरन	हास्य	हँसी
सर्प	साँप	—	—	होलिका	होली	हत्याकार	हत्यारा
	(श)			हिण्डोला	हिडोरा	हस्तिनी	हथनी
शत	सौ	शय्या	सेज				
श्वसुर	ससुर	श्रावण	सावन			**(क्ष)**	
शिक्षा	सीख	शर्कर	शक्कर	क्षेत्र	खेत	क्षीण	छीन
शृंगार	सिंगार	शीतल	सीतल	क्षति	छति	क्षण	छिन
शाक	साग	श्यामल	साँवला	क्षीर	खीर	—	—
श्वास	साँस	श्वश्री	सास	क्षार	खार	—	—
शुष्क	सूखा	शाप	श्राप, सराप			**(ज्ञ)**	
शूकर	सूअर	शुण्ड	सूँड़	ज्ञान	ग्यान	ज्ञानी	ग्यानी

परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तत्सम-तद्भव

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
✸ अक्षोट	अखरोट	✸ स्कंध	कंधा
✸ अट्टालिका	अटारी	✸ काष्ठ	काठ
✸ अक्षत	अच्छत	✸ कर्ण	कान
✸ अकार्य	अकाज	✸ कृष्ण	कान्हा
✸ अंगरक्षक	अंगरखा	✸ कोष्ठ	कोठा
✸ आश्चर्य	अचरज	✸ कुक्षि	कोख
✸ अंगप्रौक्षा	अंगोछा	✸ केश	केस
✸ आकाश	आसमान	✸ खर्पर	खपड़ा
✸ अग्निष्ठिका	अंगीठी	✸ क्षीर	खीर
✸ अष्टादश	अठारह	✸ क्षेत्र	खेत
✸ अमृत	अमिय	✸ खण्डगृह	खंडहर
✸ अश्रु	आँसू	✸ ग्रंथि	गांठ
✸ अक्षर	आखर	✸ गृद्ध	गीध (गिद्ध)
✸ अर्चित	आंच	✸ गोस्वामी	गुसाईं
✸ अग्नि	आग	✸ गोधूम	गेहूं
✸ अक्षि	आंख	✸ गोमय	गोबर
✸ आम्र	आम	✸ कंदुक	गेंद
✸ अद्य	आज	✸ गो	गाय
✸ इक्षु	ईख	✸ गायक	गवैया
✸ उद्गत	उगना	✸ ग्रामीण	गंवार
✸ उच्च	ऊँचा	✸ दक्षिण	दाहिना
✸ ओष्ठ	ओंठ	✸ घृत	घी
✸ कुपुत्र	कपूत	✸ घोटक	घोड़ा
✸ कंकण	कंगन	✸ गृह	घर
✸ कटु	कडुवा	✸ घट	घड़ा
		✸ चतुर्थ	चौथा

Pariksha Manthan

चतुष्पद	चौपाया
षष्ठ	छठा
छिद्र	छेद
ज्येष्ठ	जेठ
जामातृ	जमाई
जिह्वा	जीभ
युक्ति	जुगति
यूथ	जत्था
यजमान	जिजमान/जजमान
जीर्ण	झीना
जुष्ठ	जूठा
टंकशाला	टकसाल
तपस्वी	तपसी
तुंद	तोंद
दर्शन	दरसन
द्विवर	देवर
दुग्ध	दूध
द्विपट	दुपट्टा
दिन	दिवस
दधि	दही
द्विप्रहरी	दुपहरी
धूम	धुआं
निम्ब	नेह
नासिका	नाक
पर्यंक	पलंग
पुस्तक	पोथी
प्रकट	परगट
पुत्रवधू	पतोहू
प्रस्तर	पत्थर
पत्र	पत्ता
पृष्ठ	पीठ
वर्द्धकि	बढ़ई
वानर	बन्दर
वत्स	बच्चा/बछड़ा
वधू	बहू
बधिर	बहरा
भ्रू	भौं
बुभुक्षित	भूखा
बुभुक्षा	भूख
विभूति	भभूत
भक्त	भगत
भ्रातृजा	भतीजी
भ्राता	भाई
मुक्ता/मौक्तिक	मोती
मातृ	माई
मयूर	मोर
मनुष्य	मानस
मृत्तिका	मिट्टी
मधूक	महुआ
मृत्यु	मौत
लिंगपट्ट	लंगोट
लवंग	लौंग
लौहकार	लुहार
श्वसुर	ससुर
सूचिका	सूई
सपत्नी	सौत
सर्सप	सरसों
स्वप्न	सपना
सौभाग्य	सुहाग
श्यामल	सांवला
सक्तु	सत्तू
शब्द	सबद
श्रेष्ठी	श्रेष्ठ
शृंगार	सिंगार
हस्ति	हाथी
हरिद्रा	हल्दी
शृंगाल	सियार
विस्मृत	बिसरना
क्षेत्र	खेत
नृत्य	नाच
मस्तक	माथा
गर्दभ	गधा
उत्साह	उछाह
यव	जौ
त्वरित	तुरंत
म्रक्षण	माखन
तीर्थ	तीरथ
सूर्य	सूरज
मुंह	मुख
भ्रमर	भंवरा
कोटि	करोड़
पिप्पल	पीपल

Pariksha Manthan

✸ तैल	तेल
✸ वचन	बैन
✸ पुराण/पुरातन	पुराना
✸ घट	घड़ा
✸ चूर्ण	चूरन
✸ रात्रि	रात
✸ तिक्त	तीखा
✸ अर्ध	आधा
✸ कुआं	कूप
✸ धृष्ट	ढीठ
✸ व्याघ्र	बाघ
✸ वेष	भेस
✸ पर्ण	पन्ना
✸ चन्द्र	चाँद
✸ गर्त	गड्ढा
✸ गुहा	गुफा
✸ कंटक	कांटा
✸ उज्ज्वल	उजला
✸ ग्रीवा	गर्दन
✸ गृहिणी	घरनी
✸ योगी	जोगी
✸ तृण	तिनका
✸ स्थान	थान
✸ द्विगुण	दूना
✸ दंष्ट्रिका	दाढ़ी
✸ स्नायु	नस
✸ स्नान	नहान
✸ प्रहरी	पहरुआ
✸ पाद	पांव
✸ वाष्प	भाप
✸ मण्डूक	मेंढक
✸ श्यालक	साला

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'परीक्षा' शब्द है—
   (क) तद्भव (ख) तत्सम
   (ग) देशज (घ) विदेशी
2. निम्नांकित में से कौन-सी भाषा तत्सम शब्दों की स्रोत है?
   (क) प्राकृत (ख) पालि
   (ग) हिन्दी (घ) संस्कृत
3. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है?
   (क) नक्षत्र (ख) अट्टालिका
   (ग) काठ (घ) अग्नि
4. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तद्भव है?
   (क) अश्रु (ख) सर्प
   (ग) सलाई (घ) गृह
5. 'अमावस' शब्द है—
   (क) तत्सम (ख) तद्भव
   (ग) अर्ध तत्सम (घ) देशज
6. 'विभावरी' शब्द किस प्रकार का है?
   (क) तद्भव (ख) देशज
   (ग) संकर (घ) तत्सम
7. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम है?
   (क) नाखून (ख) सुमन
   (ग) कौवा (घ) बहाव
8. निम्नांकित में तत्सम शब्द छांटिए?
   (क) वस्तु (ख) पुजारी
   (ग) रास्ता (घ) वापसी
9. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम है—
   (क) नौकर (ख) नेह
   (ग) निर्जीव (घ) निकास
10. तत्सम शब्द छांटिए—
    (क) फूल (ख) पुष्प
    (ग) गुलाब (घ) गेंदा
11. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम है?
    (क) रेडियो (ख) कान
    (ग) पगड़ी (घ) अश्रु
12. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम है?
    (क) ओज (ख) हंसी
    (ग) गेहूं (घ) आम
13. निम्नाकित में से तत्सम शब्द छांटिए?
    (क) काहिल (ख) कुपात्र
    (ग) किसान (घ) कोसा
14. कौन-सा शब्द तत्सम है?
    (क) आश्चर्य (ख) अचरज
    (ग) इज्जत (घ) घर
15. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम है?
    (क) विवाह (ख) सींग
    (ग) डंडा (घ) छेद
16. कौन-सा शब्द तत्सम है?
    (क) गली (ख) करुण
    (ग) आसरा (घ) खजूर
17. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तत्सम है?
    (क) निर्मम (ख) नैहर

Parikshā Manthan

(ग) कुछ (घ) खेत

18. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) आयु (ख) पीड़ा
(ग) पर्याप्त (घ) शिल्प

19. तद्भव शब्द को छांटिए—
(क) सरिता (ख) कंपनी
(ग) गलीचा (घ) आंसू

20. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) प्रमोद (ख) पंख
(ग) वत्स (घ) सर्व

21. कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) गोधन (ख) गांव
(ग) गौरव (घ) गोरस

22. दिए गए विकल्पों में तत्सम शब्द के लिए सही विकल्प कौन सा है?
(क) अंस (ख) अन्न
(ग) अनत (घ) कोई नहीं

23. 'निम्बूक' शब्द है—
(क) तत्सम (ख) तद्भव
(ग) अर्ध तत्सम (घ) देशज

24. कौन-सा शब्द तत्सम है?
(क) पुस्तिका (ख) पोथी
(ग) किताब (घ) नॉवेल

25. सही तत्सम शब्द को छांटिए—
(क) नयन (ख) नैना
(ग) नेना (घ) नैन

26. निम्नांकित में तत्सम का सही रूप कौन-सा है?
(क) लवंग (ख) लंवग
(ग) लौंग (घ) लवग

27. निम्नांकित में कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) नृत्य (ख) नाई
(ग) नप्पा (घ) अग्र

28. 'सुवरन' शब्द है—
(क) तद्भव (ख) तत्सम
(ग) विदेशी (घ) देशज

29. कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) हीरक (ख) हड्डी
(ग) अद्य (घ) अक्षत

30. कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) अंजलि (ख) सिंगार
(ग) श्रद्धा (घ) शोक

31. निम्नांकित में से तत्सम-तद्भव का कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(क) उलूक-उल्लू (ख) उच्च-ऊंचा
(ग) कर्ण-कान (घ) आदित्यवार-शनिवार

32. निम्नांकित में से तद्भव-तत्सम का कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(क) ऊंट-उष्ट्र (ख) कुम्हार-कुंभकार
(ग) कंचन-सोना (घ) असीस-आशीष

33. 'लज्जा' शब्द है—
(क) तत्सम (ख) तद्भव
(ग) देशज (घ) अर्ध तत्सम

34. 'सांस' का तत्सम होगा?
(क) सांसें (ख) श्वसन
(ग) श्वास (घ) प्राण वायु

35. 'हस्त' का तद्भव होगा?
(क) हाथ (ख) हथेली
(ग) हस्तिन (घ) कोई नहीं

36. बसंत का तत्सम होगा?
(क) बसन (ख) वसन
(ग) बसंती (घ) वसंत

37. तत्सम-तद्भव का कौन-सा जोड़ा सही है?
(क) सप्त-सात (ख) सर्प-नाग
(ग) सूर्य-आदित्य (घ) पक्षी-परिंदा

38. 'सांवला' का तत्सम होगा?
(क) काला (ख) सलोना
(ग) सुरमई (घ) श्यामल

39. 'स्वप्न' का तद्भव होगा—
(क) ख्वाब (ख) सोना
(ग) सपना (घ) सपन

40. 'दीया' शब्द है—
(क) तद्भव (ख) तत्सम
(ग) देशज (घ) विदेशी

41. 'सांप' कैसा शब्द है?
(क) तत्सम (ख) अर्ध तत्सम
(ग) तद्भव (घ) देशज

42. तत्सम और तद्भव के बीच के शब्द कहलाते हैं—
(क) द्विज (ख) ध्वन्यात्मक
(ग) देशज (घ) अर्ध तत्सम

43. निम्नलिखित तत्सम-तद्भव शब्दों के युग्म में से कौन युग्म त्रुटिपूर्ण है?
(क) घृत - घी (ख) उट्र - ऊँट
(ग) त्वरित - तुरत (घ) तिक्त - तीता
(नोट : सही तत्सम रूप 'उष्ट्र' है।)

44. निम्नलिखित तत्सम-तद्भव शब्दों के युग्म में से त्रुटिपूर्ण है—
(क) गोमय - गोबर (ख) क्षीर - खीर
(ग) पर्यंक - पटरी (घ) सपत्नी-सौत

45. 'पर्ण' का तद्भव शब्द है—

Pariksha Manthan

(क) पत्र (ख) पण
(ग) पन्ना (घ) पत्रा

46. 'अंगीठी' का तत्सम है—
(क) अग्निका (ख) अनिष्ठिका
(ग) अग्निनिष्ठिका (घ) अग्निष्ठिकी

47. निम्नलिखित में से कौन तद्भव शब्द है?
(क) दिनकर (ख) दिवाकर
(ग) प्रभाकर (घ) सूरज

48. इनमें से तद्भव है—
(क) वानर (ख) बन्दर
(ग) पवन (घ) पर्यंक

49. 'देवर' का तत्सम रूप है—
(क) द्विवर (ख) द्वितीयवर
(ग) दूभर (घ) दुर्बह

50. इनमें से कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है—
(क) अग्नि (ख) घोटक
(ग) घट (घ) मोती

51. 'पलँग' शब्द का तत्सम रूप है—
(क) पलँगा (ख) प्वलंग
(ग) पर्यंक (घ) पटल

52. इनमें से एक शब्द तद्भव है—
(क) दिन (ख) अंधकार
(ग) स्कन्ध (घ) कपास

53. 'अखरोट' शब्द का तत्सम रूप है—
(क) अक्षवाट (ख) अक्षोट
(ग) अक्षरोट (घ) अषरोट

54. 'अकार्य' शब्द का तद्भव रूप है—
(क) अकाम (ख) अकाज
(ग) अकारथ (घ) इनमें से कोई नहीं

55. 'टकसाल' का तत्सम रूप है—
(क) टंकशाला (ख) टंकशाल
(ग) टकशाल (घ) टकशाला

56. इनमें से तत्सम शब्द है—
(क) भैंस (ख) बारह
(ग) सच (घ) पद

57. 'गोबर' का तत्सम रूप है—
(क) गुर्बर (ख) गोमय
(ग) गह्वर (घ) गुब्बर

58. 'मां' का तत्सम रूप है—
(क) मातृ (ख) माता
(ग) माताश्री (घ) मातुश्री

59. निम्नलिखित में से तत्सम शब्द है—
(क) गरम (ख) नरक
(ग) नरम (घ) तीर्थ

60. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'तत्सम' नहीं है—
(क) आँख (ख) नयन
(ग) नेत्र (घ) दृग

61. निम्नलिखित में से कौन शब्द तद्भव है—
(क) मधुप (ख) मधुकर
(ग) भ्रमर (घ) भँवरा

62. 'सिंगार' शब्द का तत्सम है—
(क) श्रृंगार (ख) श्रंगार
(ग) शृंगार (घ) शिंगार

63. 'हल्दी' शब्द का तत्सम है—
(क) हरदी (ख) हरिद्रा
(ग) हल्दिका (घ) हरद्रिका

64. 'गेहूँ' शब्द का तत्सम है—
(क) गोधूम (ख) गोहूँ
(ग) गोहुम (घ) गोधुम

65. 'खँडहर' का तत्सम शब्द है—
(क) खण्डहर (ख) खंडघर
(ग) खण्डगृह (घ) खड़हर

66. 'चूरन' का तत्सम शब्द है—
(क) चौर (ख) चूर्ण
(ग) चर्म (घ) चक्षु

67. कौन-सा तत्सम शब्द नहीं है—
(क) इन्दु (ख) दिनेश
(ग) मनोज (घ) रात

68. 'तिक्त' शब्द का तद्भव है—
(क) तीता (ख) तीखा
(ग) तिक्ता (घ) तिखन

69. 'ससुर' का तत्सम शब्द है—
(क) सस्वर (ख) स्वसुर
(ग) श्वसुर (घ) श्वश्रु

70. 'तद्भव' शब्द निर्दिष्ट कीजिए—
(क) आधा (ख) कूप
(ग) विद्या (घ) व्योम

71. 'तत्सम' शब्द है—
(क) क्लिष्ठ (ख) कठोर
(ग) कठिन (घ) मजबूत

72. 'ढीठ' शब्द का तत्सम है—
(क) दृष्ट (ख) पुष्ट
(ग) दृश्य (घ) धृष्ट

73. 'तत्सम' शब्द का चयन कीजिए—
(क) शेर (ख) बबर शेर
(ग) व्याघ्र (घ) बाघ

74. 'तद्भव' शब्द है—
(क) मानव (ख) मनई
(ग) मनुष्य (घ) मानो

75. निम्नलिखित में से कौन-सा एक शब्द 'तद्भव' नहीं है?

Pariksha Manthan

(क) तस्कर (ख) पत्ता
(ग) हाथ (घ) अंधेरा

76. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'तत्सम' नहीं है?
(क) स्कन्ध (ख) कपोत
(ग) ईर्ष्या (घ) हल्दी

77. 'गधा' का तत्सम रूप है :
(क) गदहा (ख) गदर्भ
(ग) गद्रभ (घ) गर्दभ

78. 'प्रिय' का तद्भव शब्द है :
(क) पिया (ख) प्रेम
(ग) प्रिया (घ) प्यार

79. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा 'तत्सम' शब्द नहीं है?
(क) कुसुम (ख) भूषिका
(ग) वंश (घ) नेह

80. निम्नलिखित में से कौन-सा तद्भव शब्द है?
(क) पंख (ख) पृष्ठ
(ग) लज्जा (घ) शिला

81. तद्भव शब्द का चयन कीजिए :
(क) सुर (ख) निडर
(ग) गति (घ) कमल

82. 'पक्ष' का तद्भव रूप है :
(क) पंछी (ख) पखेरू
(ग) पंख (घ) इनमें से कोई नहीं

83. निम्नलिखित में कौन 'तत्सम' शब्दों की जोड़ी नहीं है?
(क) कर्म-विद्या (ख) दधि-भात
(ग) मत्स्य-मृग (घ) ज्ञान-क्षेत्र

84. 'कर्पट' का तद्भव रूप कौन-सा है?
(क) कपट (ख) कारपेट
(ग) कपूर (घ) कपड़ा

85. 'ढीठ' का तत्सम रूप है?
(क) धूर्त (ख) धृष्ट
(ग) उद्दंड (घ) घृणित

86. निम्न शब्दों में से कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है?
(क) मृत्तिका (ख) विकार
(ग) कपास (घ) कपूर

87. निम्न में से कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) कोयल (ख) आश्चर्य
(ग) उज्ज्वल (घ) कंटक

88. 'अट्टालिका' का तद्भव शब्द है—
(क) अटाला (ख) अटल
(ग) अटारा (घ) अटारी

89. निम्न में से कौन-सा शब्द तद्भव है?
(क) जल (ख) नग्न
(ग) तीन (घ) भ्रमर

90. 'कर्पर' का तद्भव रूप है—
(क) कपूर (ख) कपड़ा
(ग) कर्कट (घ) खप्पर

उत्तरमाला

1. (ख)	2. (घ)	3. (ग)	4. (ग)	5. (ग)
6. (घ)	7. (ख)	8. (क)	9. (ग)	10. (ख)
11. (घ)	12. (क)	13. (ख)	14. (क)	15. (क)
16. (ख)	17. (क)	18. (ख)	19. (घ)	20. (ख)
21. (ख)	22. (ख)	23. (क)	24. (क)	25. (क)
26. (क)	27. (ख)	28. (क)	29. (ख)	30. (ख)
31. (घ)	32. (ग)	33. (क)	34. (ग)	35. (क)
36. (घ)	37. (क)	38. (घ)	39. (ग)	40. (क)
41. (ग)	42. (घ)	43. (ख)	44. (ग)	45. (ग)
46. (ख)	47. (घ)	48. (ख)	49. (क)	50. (घ)
51. (ग)	52. (घ)	53. (ख)	54. (ख)	55. (क)
56. (घ)	57. (ख)	58. (ख)	59. (घ)	60. (क)
61. (घ)	62. (ग)	63. (ख)	64. (क)	65. (ग)
66. (ख)	67. (घ)	68. (क)	69. (ग)	70. (क)
71. (क)	72. (घ)	73. (ग)	74. (ख)	75. (क)
76. (घ) (शेष सभी तत्सम हैं)			77. (घ)	78. (क)
79. (घ)	80. (क)	81. (ख)	82. (ग)	83. (ख)
84. (घ)	85. (ख)	86. (घ)	87. (क)	88. (घ)
89. (ग)	90. (घ)			

◆◆◆

Pariksha Manthan

संधियां

जोड़ या मेल की प्रक्रिया संधि कहलाती है। भाषा व्यवहार में भी इसी प्रक्रिया से दो शब्दों के बीच संधि होती है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि निकटवर्ती वर्णों के आपसी मेल से पैदा होने वाला विकार या परिवर्तन संधि कहलाता है।

जैसे-धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

नदी + ईश = नदीश

यदि + अपि = यद्यपि

स्मरण रहे कि संधि ध्वनियों की होती है, न कि शब्दों की। जैसे-राम + आधार = रामाधार (अ + आ = आ)

यहां राम का अंतिम 'अ' तथा आधार का शुरुआती 'आ' मिलकर 'आ' हो गये हैं। दो ध्वनियों ने मिलकर जो नया स्वरूप धारण किया है, वह 'रामाधार' के रूप में सामने आया है।

संधि प्रक्रिया में वर्ण संयोग के साथ ध्वनियां भी परिवर्तित होती हैं। दोनों ध्वनियां भी परिवर्तित हो सकती हैं, पहली और दूसरी भी। यदि सिर्फ वर्ण संयोग हो और ध्वनियां न बदलें तो यह प्रक्रिया संधि की परिधि में नहीं आती है। यानी संधिस्थ शब्द के लिए ध्वनि-परिवर्तन आवश्यक होता है। संधि को खंडित करने की प्रक्रिया संधि-विच्छेद कहलाती है।

यथा-सुरेंद्र की संधि को खंडित करने पर बनेगा-सुर + इंद्र।

इसी को संधि-विच्छेद कहा जाता है।

संधियों के प्रकार

हिन्दी व्याकरण में संस्कृत भाषा की संधियों का ही प्रचलन है। ये मुख्यतया तीन प्रकार की हैं-(1) स्वर संधि, (2) व्यंजन संधि तथा (3) विसर्ग संधि।

(1) स्वर संधि : जब स्वर और स्वर के मिलन से विकार पैदा होता है, तो यह मेल स्वर संधि कहलाता है। स्वर संधि के निम्नलिखित पांच भेद हैं-(i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि, (iii) वृद्धि संधि, (iv) यण् संधि तथा (v) अयादि संधि।

(i) दीर्घ संधि :जैसा कि नाम से ही विदित होता है, इस प्रकार की संधि में दो सवर्ण स्वर मेल कर दीर्घ हो जाते हैं।

यथा-भोजन + आलय = भोजनालय (अ + आ = आ)

राम + अवतार = रामावतार (अ + अ = आ)

दीक्षा + अंत = दीक्षांत (आ + अ = आ)

कारा + आवास = कारावास (आ + आ = आ)

मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र (इ + इ = ई)

फणि + ईश्वर = फणीश्वर (इ + ई = ई)

सु + उक्ति = सूक्ति (उ + उ = ऊ)

परीक्षा की दृष्टि से दीर्घ संधि के कुछ अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण निम्नवत हैं-

स्व + अर्थ = स्वार्थ (अ + अ = आ)

सूर्य + अस्त = सूर्यास्त (अ + अ = आ)

दिन + अंकित = दिनांकित (अ + अ = आ)

मलय + अनिल = मलयानिल (अ + अ = आ)

हिम + अंशु = हिमांशु (अ + अ = आ)

रस + आयन = रसायन (अ + अ = आ)

शास्त्र + अर्थ = शास्त्रार्थ (अ + अ = आ)

धर्म + अंध = धर्मांध (अ + अ = आ)

चरण + अमृत = चरणामृत (अ + अ = आ)

नव + अंकुर = नवांकुर (अ + अ = आ)

मत + अधिकार = मताधिकार (अ + अ = आ)

परम + अणु = परमाणु (अ + अ = आ)

विरह + आकुल = विरहाकुल (अ + आ = आ)

प्राण + आयाम = प्राणायाम (अ + आ = आ)

शुभ + आरंभ = शुभारंभ (अ + आ = आ)

नव + आगत = नवागत (अ + आ = आ)

दिव्य + आकार = दिव्याकार (अ + आ = आ)

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह (अ + आ = आ)

मरण + आसन्न = मरणासन्न (अ + आ = आ)

न्याय + आलय = न्यायालय (अ + आ = आ)

रत्न + आकार = रत्नाकार (अ + आ = आ)

मदिरा + आलय = मदिरालय (आ + आ = आ)

चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय (आ + आ = आ)

प्रतीक्षा + आलय = प्रतीक्षालय (आ + आ = आ)

विद्या + आनंद = विद्यानंद (आ + आ = आ)

महा + आशय = महाशय (आ + आ = आ)

शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी (आ + अ = आ)

परीक्षा + अभ्यास = परीक्षाभ्यास (आ + अ = आ)

यथा + अर्थ = यथार्थ (आ + अ = आ)

सीमा + अंत = सीमांत (आ + अ = आ)

रेखा + अंश = रेखांश (आ + अ = आ)

अभि + इष्ट = अभीष्ट (इ + इ = ई)

अति + इव = अतीव (इ + इ = ई)

कवि + इच्छा = कवीच्छा (इ + इ = ई)

कपि + इंद्र = कपीन्द्र (इ + इ = ई)

रवि + इंद्र = रवीन्द्र (इ + इ = ई)

गिरि + ईश = गिरीश (इ + ई = ई)

मुनि + ईश = मुनीश (इ + ई = ई)

हरि + ईश = हरीश (इ + ई = ई)

सती + ईश = सतीश (ई + ई = ई)

नारी + ईश = नारीश (ई + ई = ई)

मही + ईश = महीश (ई + ई = ई)

रजनी + ईश = रजनीश (ई + ई = ई)

Parikshā Manthan

नदी + ईश = नदीश (ई + ई = ई)

शची + इंद्र = शचीन्द्र (ई + इ = ई)

यती + इंद्र = यतीन्द्र (ई + इ = ई)

गुरु + उपदेश = गुरुपदेश (उ + उ = ऊ)

अंबु + ऊर्मि = अंबूर्मि (उ + ऊ = ऊ)

वधू + उत्सव = वधूत्सव (ऊ + उ = ऊ)

(ii) गुण संधि : इस प्रकार की संधि में यदि 'अ', 'आ' के आगे 'इ' या 'ई' हो तो इनके मेल से 'ए' बनता है।

जैसे-नर + इंद्र = नरेन्द्र (अ + इ = ए)

परम + ईश्वर = परमेश्वर (अ + ई = ए)

महा + इंद्र = महेन्द्र (आ + इ = ए)

महा + ईश्वर = महेश्वर (आ + ई = ए)

इसी प्रकार यदि 'अ', 'आ' के आगे 'उ' या 'ऊ' हो तो इनके मेल से 'ओ' बनता है।

जैसे-पर + उपकार = परोपकार (अ + उ = ओ)

गंगा + उदक = गंगोदक (आ + उ = ओ)

महा + उत्सव = महोत्सव (आ + ऊ = ओ)

सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा (अ + ऊ = ओ)

इसी प्रकार यदि 'अ', 'आ' के आगे 'ऋ' हो तो इनके मेल से 'अर्' बनता है।

जैसे-राज + ऋषि = राजर्षि (अ + ऋ = अर्)

महा + ऋषि = महर्षि (आ + ऋ = अर्)

(iii) वृद्धि संधि : इसमें जब 'अ', 'आ' का मेल 'ए' या 'ऐ' से होता है, तो 'ऐ' हो जाता है तथा जब यह मेल 'ओ' या 'औ' से होता है तो 'औ' हो जाता है।

जैसे-वित्त + एषणा = वित्तैषणा (अ + ए = ऐ)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

मत + ऐक्य = मतैक्य (अ + ऐ = ऐ)

राजा + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)

वन + ओषधि = वनौषधि (अ + ओ = औ)

परम + औदार्य = परमौदार्य (अ + औ = औ)

महा + ओजस्वी = महौजस्वी (आ + ओ = औ)

महा + औत्सुक्तय = महौत्सुक्य (आ + औ = औ)

(iv) यण् संधि : इसमें 'इ', 'ई' का मेल विजातीय स्वर से होने पर 'य', 'उ', 'ऊ' का मेल किसी विजातीय स्वर से होने पर 'व' तथा 'ऋ' का मेल किसी विजातीय स्वर से होने की दशा में 'र' हो जाता है।

जैसे-परि + अंत = पर्यंत (इ + अ = य)

नदी + अर्पण = नद्यर्पण (ई + अ = य)

देवी + आगमन = देव्यागमन (ई + आ = या)

उपरि + उक्त = उपर्युक्त (इ + उ = यु)

प्रति + एक = प्रत्येक (इ + ए = ये)

सु + अल्प = स्वल्प (उ + अ = व)

सु + आगत = स्वागत (उ + आ = वा)

अनु + इति = अन्विति (उ + इ = वि)

अनु + एषण = अन्वेषण (उ + ए = वे)

पितृ + अनुमति = पित्रानुमति (ऋ + अ = र)

पितृ + आदेश = पित्रादेश (ऋ + आ = रा)

(v) अयादि संधि : इसमें 'ए', 'ऐ', 'ओ' तथा 'औ' का मेल जब किसी विजातीय स्वर से होता है, तो क्रमशः 'अय्', 'आय्', 'अव्' तथा 'आव्' बनता है।

(ए = अय्, ऐ = आय्, ओ = अव् तथा औ = आव्) अयादि संधि को निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं-

ने + अन = नयन (ए + अ = अय्)

गै + अक = गायक (ऐ + अ = आय्)

पो + अन = पवन (ओ + अ = अव्)

पौ + अन = पावन (औ + अ = आव्)

(2) व्यंजन संधि : व्यंजन का व्यंजन या स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन (विकार) होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे-जगत् + अम्बा = जगदम्बा

चित् + मय = चिन्मय

सत् + मार्ग = सन्मार्ग।

व्यंजन संधि के निम्नलिखित मुख्य नियम हैं-

(क) वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

यदि वर्ग के पहले वर्ण-(क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद किसी भी वर्ण का तीसरा, चौथा वर्ण (ग्, घ्, ज्, झ्, ड, ढ, द्, ध्, ब्, भ्) य्, र्, ल्, व्, ह् या कोई स्वर आ जाए तो पहला वर्ण उसी वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है। जैसे-क्, का ग्; च् का ज्; त् का द्; प् का ब्; ट् का ड् हो जाता है।

जैसे-दिक् + अंबर = दिगंबर

सत् + आचरण = सदाचरण

वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता

उत् + गम = उद्गम

सत् + गति = सद्गति

सत् + वाणी = सद्वाणी

भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति

जगत् + ईश = जगदीश

सत् + भावना = सद्भावना

उत् + घाटन = उद्घाटन

षट् + दर्शन = षड्दर्शन

दिक् + अंत = दिगंत

वाक् + जाल = वाग्जाल

जगत् + अंबा = जगदंबा

तत् + भव = तद्भव

तत् + अनुसार = तदनुसार

सत् + गुण = सद्गुण

अप + धि = अब्धि

षट् + आनन = षडानन

भगवत् + गीता = भगवद्गीता

सत् + धर्म = सद्धर्म

(ख) वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

यदि वर्ग के पहले वर्ण-(क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद 'न' या

Pariksha Manthan

'म' आए तो पहले वर्ण का रूपांतरण पाँचवें वर्ण में हो जाता है। जैसे-'क्' का 'ङ्' हो जाता है, 'च्' का 'ञ्', 'ट्' का 'ण्', 'त्' का 'न्', 'प्' का 'म्' हो जाता है। जैसे-उत् + मेष = उन्मेष

वाक् + मय = वाङ्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
सत् + मति = सन्मति
सत् + नारी = सन्नारी
सत् + मित्र = सन्मित्र
तत् + मय = तन्मय
चित् + मय = चिन्मय
उत् + नायक = उन्नायक
उत् + नयन = उन्नयन
उत् + मत्त = उन्मत्त
उत् + नति = उन्नति
सत् + मार्ग = सन्मार्ग

(ग) 'त्' संबंधी विशेष नियम

(i) 'त्' के पश्चात् 'ल' हो तो 'त्' का 'ल्' हो जाता है। जैसे—

उत् + लास = उल्लास
उत् + लेख = उल्लेख
तत् + लीन = तल्लीन
शरत् + लास = शरल्लास

(ii) 'त्' के पश्चात् ज/झ हो तो 'त्' का 'ज्' हो जाता है। जैसे—

विपत् + जाल = विपज्जाल
सत् + जन = सज्जन
जगत् + जननी = जगज्जननी
उत् + ज्वल = उज्ज्वल

(iii) 'त्' के पश्चात् ट/ड हो तो 'त्' ट्/ड् बन जाता है। जैसे—

तत् + टीका = तट्टीका
वृहत् + टीका = बृहट्टीका
उत् + डयन = उड्डयन

(iv) 'त्' के बाद 'श' हो तो 'त्' की जगह 'च्' तथा 'श्' की जगह 'छ्' हो जाता है। जैसे—

उत् + श्वास = उच्छवास
उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट
सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र
तत् + शिव = तच्छिव

(v) 'त्' के बाद च/छ हो तो 'त्' का 'च्'/'छ्' हो जाता है। जैसे—

उत् + चारण = उच्चारण
उत् + चरित = उच्चरित
शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र
उत् + छिन्न = उच्छिन्न
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
सत् + चित्त = सच्चित्त
जगत् + छाया = जगच्छाया

(vi) 'त्' के बाद 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'ध्' आ जाता है। जैसे—

पत् + हति = पद्धति
तत् + हित = तद्धित
उत् + हत = उद्धत
उत् + हार = उद्धार

(घ) छ संबंधी नियम

यदि किसी स्वर के बाद छ आ जाए तो 'छ' से पहले 'च्' का आगम हो जाता है। जैसे—

परि + छेद = परिच्छेद
अनु + छेद = अनुच्छेद
वि + छेद = विच्छेद
छत्र + छाया = छत्रच्छाया
स्व + छंद = स्वच्छंद
आ + छादन = आच्छादन

(ङ) 'म्' संबंधी नियम

यदि 'म्' के पश्चात् क् से म् तक कोई व्यंजन आए तो 'म्' उस व्यंजन के पंचम वर्ण में बदल जाता है, अर्थात् क् का ङ्; च का ञ्; ट् का ण्; त् का न्; फ् का म् हो जाता है। जैसे—

सम् + कल्प = संकल्प (सङ्कल्प)
अहम् + कार = अहंकार (अहङ्कार)
सम् + गम = संगम (सङ्गम)
सम् + चय = संचय (सञ्चय)
सम् + जीवन = संजीवन (सञ्जीवन)
सम् + ध्या = संध्या (सन्ध्या)
सम् + पात = संपात (सम्पात)
सम् + बंध = संबंध (सम्बंध, सम्बन्ध)
सम् + भाषण = संभाषण (सम्भाषण)
किम् + कर = किंकर (किङ्कर)
सम् + गति = संगति (सङ्गति)
सम् + घात = संघात (सङ्घात)
सम् + जय = संजय (सञ्जय)
सम् + तोष = संतोष (सन्तोष)
सम् + पूर्ण = संपूर्ण (सम्पूर्ण)
सम् + भव = संभव (सम्भव)
सम् + बोधन = संबोधन (सम्बोधन)

अन्य नियम-

(क) म् से आगे म् आने पर द्वित्व 'मम्' का प्रयोग होता है। वहाँ अनुस्वार नहीं आता। जैसे—

सम् + मान = सम्मान
सम् + मुख = सम्मुख
सम् + मोहन = सम्मोहन
सम् + मति = सम्मति

Pariksha Manthan

(ख) म् से आगे य, र, ल, व, ह, श, ष, स आने पर म् का रूपांतरण अनुस्वार में हो जाता है। जैसे—

सम् + यम = संयम
सम् + योग = संयोग
सम् + रक्षण = संरक्षण
सम् + लाप = संलाप
सम् + वाद = संवाद
सम् + सार = संसार
सम् + शय = संशय
सम् + हार = संहार
सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + लग्न = संलग्न
सम् + वहन = संवहन
सम् + स्मरण = संस्मरण
सम् + शोधन = संशोधन

न् का ण्

नियम-ऋ, र, ष से परे न् का ण् हो जाता है। परंतु यदि बाद में चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स आ जाए तो न् का ण् नहीं होता। जैसे—

परि + नाम = परिणाम
ऋ + न = ऋण
भूष + न = भूषण
भर + न = भरण
तर + न = तरण
शोष + न = शोषण
हर + न = हरण

(नोट-दुर्जन, पर्यटन, दर्शन, रसना, अर्जुन, अर्चना, रतन आदि शब्दों में क्रमशः ज, ट, श, स, ज, च, त के व्यवधान के कारण न को ण नहीं हुआ।)

स् का ष्

नियम-स् से पहले अ, आ से भिन्न स्वर हो तो स् का ष् हो जाता है। जैसे—

नि + सेध = निषेध
अभि + सेक = अभिषेक
सु + सुप्ति = सुषुप्ति
अभि + सिक्त = अभिषिक्त
वि + सम = विषम
नि + सिद्ध = निषिद्ध

(3) विसर्ग संधि : विसर्ग (:) के साथ व्यंजन या स्वर का मेल होने से होने वाला परिवर्तन (विकार) 'विसर्ग संधि' कहलाता है। जैसे—

निः + चल = निश्चल
मनः + ताप = मनस्ताप
नमः + ते = नमस्ते

विसर्ग संधि के निम्नलिखित मुख्य नियम हैं-

(क) विसर्ग का 'ओ'

विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में अ या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो विसर्ग (:) का रूपांतरण 'ओ' में हो जाता है। जैसे—

अधः + गति = अधोगति
मनः + बल = मनोबल
मनः + विकार = मनोविकार
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + अनुकूल = मनोनुकूल
मनः + विनोद = मनोविनोद
तेजः + मय = तेजोमय
रजः + गुण = रजोगुण
तपः + बल = तपोबल
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध
तपः + वन = तपोवन
मनः + हर = मनोहर
पयः + द = पयोद
तमः + गुण = तमोगुण
यशः + दा = यशोदा
पयः + धर = पयोधर
मनः + भाव = मनोभाव

(ख) विसर्ग का 'र्'

विसर्ग से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर, किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर या य, ल, व में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का र् हो जाता है। जैसे—

दुः + आशा = दुराशा
निः + अर्थक = निरर्थक
निः + धन = निर्धन
निः + मल = निर्मल
दुः + गुण = दुर्गुण
दुः + बल = दुर्बल
निः + आहार = निराहार
दुः + जन = दुर्जन
दुः + आचार = दुराचार
आशीः + वाद = आशीर्वाद
निः + आशा = निराशा
निः + उपम = निरुपम
दुः + बुद्धि = दुर्बुद्धि
बहिः + मुख = बहिर्मुख
निः + उत्साह = निरुत्साह
दुः + उपयोग = दुरुपयोग
निः + जन = निर्जन
पुनः + जन्म = पुनर्जन्म
निः + आहार = निराहार
निः + भय = निर्भय
निः + बल = निर्बल

Pariksha Manthan

निः + विघ्न = निर्विघ्न

निः + उत्तर = निरुत्तर

निः + विकार = निर्विकार

निः + आमिष = निरामिष

(ग) विसर्ग का 'श्'

विसर्ग से पहले यदि कोई स्वर हो और परे (बाद में) च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे—

निः + चल = निश्चल

निः + चय = निश्चय

निः + चिंत = निश्चिंत

निः + छल = निश्छल

हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र

दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

दुः + शासन = दुश्शासन

दुः + चक्र = दुश्चक्र

(घ) विसर्ग का 'स्'

विसर्ग के परे यदि त् या स् हो तो विसर्ग का स् हो जाता है। जैसे—

निः + तेज = निस्तेज

दुः + तर = दुस्तर

निः + तार = निस्तार

नमः + ते = नमस्ते

मनः + ताप = मनस्ताप

निः + संदेह = निस्संदेह, निःसंदेह

दुः + साहस = दुस्साहस

दुः + सह = दुस्सह

निः + संग = निस्संग

निः + संकोच = निस्संकोच

(ङ) विसर्ग का 'ष्'

यदि विसर्ग से पूर्व इ या उ हो और विसर्ग से परे क्, ख्, ट्, ठ्, प्, फ् में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का ष् हो जाता है। जैसे—

निः + काम = निष्काम

दुः + कर्म = दुष्कर्म

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + कपट = निष्कपट

निः + कलंक = निष्कलंक

दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति

निः + पक्ष = निष्पक्ष

चतुः + पाद = चतुष्पाद

दुः + परिणाम = दुष्परिणाम

निः + पाप = निष्पाप

निः + फल = निष्फल

दुः + कर = दुष्कर

निः + ठुर = निष्ठुर

(च) विसर्ग का लोप (छिप जाना) और पूर्व स्वर (पहले आने वाले स्वर) का दीर्घ हो जाना।

(i) विसर्ग का लोप-यदि विसर्ग से पहले अ या आ हो और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे-

अतः + एव = अतएव

(ii) पूर्व स्वर दीर्घ और विसर्ग का लोप-यदि विसर्ग के आगे **र्** हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उस विसर्ग का पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे-

निः + रज = नीरज

निः + रोग = नीरोग

निः + रस = नीरस

(छ) विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग से आगे क् या प् हो तो विसर्ग में परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-

प्रातः + काल = प्रातःकाल

अंतः + करण = अंतःकरण

अधः + पतन = अधःपतन

पयः + पान = पयःपान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मुख्य रूप से संधियां कितने प्रकार की होती हैं?
   (क) पांच (ख) छह
   (ग) तीन (घ) चार
2. संधि को खंडित करने की प्रक्रिया कहलाती है-
   (क) समास (ख) संधि विच्छेद
   (ग) विग्रह (घ) इनमें से कोई नहीं
3. संधिस्थ शब्द के निर्माण के लिए वर्ण संयोग के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि-
   (क) ध्वनियों में परिवर्तन हो।
   (ख) ध्वनियां अपरवर्तित रहें।
   (ग) सिर्फ एक ही ध्वनि बदले।
   (घ) इनमें से कोई नहीं।
4. स्वर संधि के कितने भेद होते हैं?
   (क) चार (ख) छह
   (ग) आठ (घ) पाँच
5. 'विद्यार्थी' में किस प्रकार की संधि है?
   (क) यण् संधि (ख) दीर्घ संधि
   (ग) वृद्धि संधि (घ) गुण संधि
6. 'चंद्रोदय' में कौन-सी संधि है?
   (क) गुण संधि (ख) वृद्धि संधि
   (ग) यण् संधि (घ) दीर्घ संधि
7. 'सुरेन्द्र' में प्रयुक्त संधि का नाम बताइये?
   (क) यण् संधि (ख) गुण संधि
   (ग) वृद्धि संधि (घ) दीर्घ संधि

Pariksha Manthan

8. 'यशोदा' में है-
(क) व्यंजन संधि (ख) स्वर संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

9. 'गायन' में कौन-सी संधि है?
(क) अयादि संधि (ख) दीर्घ संधि
(ग) गुण संधि (घ) वृद्धि संधि

10. निम्नलिखित में से संधि की दृष्टि से अशुद्ध शब्द का चयन कीजिए-
(क) तथापि (ख) तदोपरान्त
(ग) तदाकार (घ) तथैव

11. 'विपज्जाल' में किस प्रकार की संधि है?
(क) विसर्ग संधि (ख) स्वर संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

12. 'अभ्युदय' शब्द में कौन-सी संधि है?
(क) अयादि (ख) दीर्घ
(ग) गुण (घ) यण्

13. 'निष्कपट' में कौन-सी संधि है-
(क) व्यंजन संधि (ख) स्वर संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

14. निम्नलिखित में से किसमें स्वर संधि है?
(क) दुष्कर्म (ख) दिगंबर
(ग) वागीश (घ) रत्नाकर

15. 'संहार' में प्रयुक्त संधि का नाम है-
(क) व्यंजन संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

16. 'व्यर्थ' शब्द में किन वर्णों की संधि हुई है?
(क) इ + उ (ख) ई + अ
(ग) इ + अ (घ) इ + ए

17. निम्नलिखित में से कौन-सी संधि स्वर संधि का भेद नहीं है?
(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि
(ग) यण् संधि (घ) विसर्ग संधि

18. 'वीरांगना' में किस प्रकार की संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

19. 'घुड़दौड़' का सही संधि विच्छेद है-(उप-निरीक्षक परीक्षा-2002)
(क) घोड़ा + दौड़ (ख) घुड़ + दौड़
(ग) घोड़ + दौड़ (घ) इनमें से कोई नहीं

20. 'मनोभाव' में कौन-सी संधि है?
(क) विसर्ग संधि (ख) स्वर संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

21. 'आपत्काल' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) आप + काल (ख) आपद् + काल
(ग) अपदा + कल (घ) इनमें से कोई नहीं

22. 'विपत्ति' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) विपद् + इति (ख) विपदा + ति
(ग) विपद् + ति (घ) इनमें से कोई नहीं

23. 'व्याप्त' की संधि का सही विकल्प है-
(क) वि + आप्त (ख) वे + आप्त
(ग) वि + व्याप्त (घ) इनमें से कोई नहीं

24. 'महोदय' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) महा + ओदय (ख) महा + उदय
(ग) महान + उदय (घ) महोदय + दय

25. 'दिग्भ्रम' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) दिः + भ्रम (ख) दिक + भम
(ग) दिः + भ्रम (घ) दिक् + भ्रम

26. 'उद्धरण' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) उत् + हरण (ख) उद्ध + रण
(ग) उत् + धरण (घ) उत् + अण

27. 'तपोवन' में है-
(क) विसर्ग संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

28. एक ही जाति के लघु और दीर्घ स्वरों के मेल से दीर्घ होना किस संधि का लक्षण है?
(क) वृद्धि संधि (ख) गुण संधि
(ग) दीर्घ संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

29. 'सूर्योदय' में किस प्रकार की संधि है?
(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि
(ग) यण् संधि (घ) विसर्ग संधि

30. 'उल्लास' में प्रयुक्त संधि का नाम बताइये?
(क) विसर्ग संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

31. 'परोपकार' में है-
(क) गुण संधि (ख) यण् संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) वृद्धि संधि

32. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द दीर्घ संधि का उदाहरण नहीं है?
(क) कवीन्द्र (ख) सूक्ति
(ग) महोदय (घ) हिमालय

33. निम्नांकित शब्दों में से किसमें 'विसर्ग' संधि नहीं है?
(क) निष्ठुर (ख) निश्चित
(ग) नीरव (घ) उल्लेख

34. 'तेजोमय' का सही संधि-विच्छेद है?
(क) तेजः + मय (ख) तेजो + मय

Parikha Manthan

(ग) तेजः + अमय (घ) तेज + ओमय

35. 'भावुक' में प्रयुक्त संधि का नाम बताइये?
(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि
(ग) यण् संधि (घ) अयादि संधि

36. 'राकेश' का सही संधि विच्छेद है-
(क) राक + ईश (ख) राका + ईश
(ग) राका + इश (घ) राके + श

37. 'स्वागत' में किस प्रकार की संधि है?
(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि
(ग) यण् संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

38. निम्नांकित में से कौन-सा संधि-विच्छेद व्यंजन संधि के अन्तर्गत नहीं है?
(क) उत् + अय (ख) पौ + अन
(ग) जगत् + नाथ (घ) किम् + चित्

39. 'नीरोग' में प्रयुक्त संधि का नाम है-
(क) विसर्ग संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

40. 'निरर्थक' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) निर् + अर्थक (ख) निः + अर्थक
(ग) निः + सार्थक (घ) इनमें से कोई नहीं

41. 'निर्जन' में प्रयुक्त संधि है-
(क) व्यंजन संधि (ख) स्वर संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

42. 'गणेश' में कौन-सी संधि है?
(क) वृद्धि संधि (ख) दीर्घ संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) गुण संधि

43. 'वातानुकूल' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) वाता + अनुकूल (ख) वात + अनुकूल
(ग) वाता + कूल (घ) इनमें से कोई नहीं

44. निम्नांकित शब्दों में से किसमें स्वर संधि है?
(क) नमस्कार (ख) मनोहर
(ग) संयोग (घ) पवन

45. 'ब्रह्मास्त्र' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) ब्रह्मा + अस्त्र (ख) ब्रम्हः + अस्त्र
(ग) ब्रहम + अस्त्र (घ) इनमें से कोई नहीं

46. निम्नांकित शब्दों में से किसमें स्वर-संधि है?
(क) उद्विग्न (ख) तल्लीन
(ग) अधोगति (घ) मन्वन्तर

47. 'उच्छवास' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) उत् + श्वास (ख) उच्छ + वास
(ग) उद् + श्वास (घ) उच् + श्वास

48. निम्नांकित शब्दों में से किसमें वृद्धि संधि है?
(क) लोकैषणा (ख) प्रत्यंचा
(ग) नाविक (घ) दिगम्बर

49. 'धरेश' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) धरा + इश (ख) धर + ईश
(ग) धराः + अश (घ) धरा + ईश

50. 'प्रत्युत्तर' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) प्रति + उत्तर (ख) प्रत्यु + उत्तर
(ग) प्रति + युत्तर (घ) प्र + त्युत्तर

51. 'संतोष' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) सम + तोष (ख) सम् + तोष
(ग) सः + तोष (घ) सन् + तोष

52. उज्ज्वल का सही संधि-विच्छेद है-
(क) उत् + ज्वल (ख) उत + ज्वल
(ग) उत् + जबल (घ) उत + जल

53. 'सप्तर्षि' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) सप्तर + ऋषि (ख) सप्तः + ऋषि
(ग) सप्त + ऋषि (घ) इनमें से कोई नहीं

54. 'गिरीश' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) गिर् + ईश (ख) गिर् + इश
(ग) गिर + इश (घ) गिरि + ईश

55. 'विश्वामित्र' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) विश्व + मित्र (ख) विश्वा + मित्र
(ग) विश्व + अमित्र (घ) विश्वः + मित्र

56. 'यथैव' में कौन-सी संधि है?
(क) यण् संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) वृद्धि संधि (घ) दीर्घ संधि

57. 'सन्मति' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) सत् + मति (ख) सद् + मति
(ग) सन् + मति (घ) सम् + मति

58. 'संगम' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) सम + गम (ख) सन् + गम
(ग) सम् + गम (घ) इनमें से कोई नहीं

59. 'भानूदय' में कौन-सी संधि है?
(क) दीर्घ संधि (ख) वृद्धि संधि
(ग) गुण संधि (घ) व्यंजन संधि

60. 'उच्चारण' में किस प्रकार की संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

61. 'अत्याचार' का सही संधि विच्छेद है?
(क) अति + चार (ख) अति + आचार
(ग) अत्य + आचार (घ) अत्या + चार

62. निम्नांकित में से किसमें 'यण्' संधि है?

Parisha Manthan

(क) जगदीश (ख) नाविक
(ग) नायक (घ) गुर्वादेश

63. 'स्वाधीन' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) स्व + अधीन (ख) स्व + आधीन
(ग) स्वा + धीन (घ) इनमें से कोई नहीं

64. 'मानवोचित' में किस प्रकार की संधि है?
(क) अयादि संधि (ख) गुण संधि
(ग) दीर्घ संधि (घ) यण् संधि

65. निम्नांकित में से दीर्घ संधि का उदाहरण है-
(क) शरणार्थी (ख) देवेन्द्र
(ग) हवन (घ) दिगम्बर

66. 'दयानन्द' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) दया + नन्द (ख) दया + आनंद
(ग) दय + नन्न (घ) इनमें से कोई नहीं

67. 'महेति' में प्रयुक्त संधि का नाम बताइये?
(क) अयादि संधि (ख) यण् संधि
(ग) दीर्घ संधि (घ) गुण संधि

68. 'शशीन्द्र' में कौन-सी संधि है?
(क) गुण संधि (ख) अयादि संधि
(ग) दीर्घ संधि (घ) यण् संधि

69. 'महतीच्छा' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) महती + इच्छा (ख) मह + इच्छा
(ग) महती + ईच्छा (घ) इनमें से कोई नहीं

70. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द 'यण्' संधि का उदाहरण है-
(क) वागीश (ख) भावुक (ग) दिग्गज (घ) मध्वरि

71. 'पुनर्जन्म' में कौन-सी संधि है?
(क) यण् संधि (ख) दीर्घ संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) विसर्ग संधि

72. निम्नांकित शब्दों में से व्यंजन संधि का उदाहरण है-
(क) परिच्छेद (ख) हरिश्चन्द्र (ग) प्रत्यंचा (घ) मध्वालय

73. निम्नांकित में से किसमें विसर्ग संधि है?
(क) कृष्णम् + वन्दे (ख) कः + चित्
(ग) उद् + कीर्णः (घ) इनमें से कोई नहीं

74. 'पवित्रम्' का सही संधि-विच्छेद होगा-
(क) पो + इत्रम् (ख) पौ + इत्रम्
(ग) पो + एत्रम् (घ) पा + इत्रम्

75. 'संरक्षक' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) स + रक्षक (ख) सो + रक्षक
(ग) सम् + रक्षक (घ) इनमें से कोई नहीं

76. 'निस्तार' में प्रयुक्त संधि का नाम बताइये-
(क) विसर्ग संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

77. 'नीरव' में है-
(क) विसर्ग संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

78. 'धनुष्टंकार' में है-
(क) व्यंजन संधि (ख) स्वर संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

79. 'पयोधर' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) पयो + धर (ख) पयः + धर
(ग) पिया + अधर (घ) इनमें से कोई नहीं

80. 'अन्तर्गत' में कौन-सी संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

81. 'तमोगुण' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) तमो + गुण (ख) तमः + गुण
(ग) तम + अगुण (घ) इनमें से कोई नहीं

82. 'दुष्प्रकृति' में कौन-सी संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) विसर्ग संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

83. 'अध्येता' में कौन-सी संधि है?
(क) यण् संधि (ख) गुण संधि
(ग) दीर्घ संधि (घ) विसर्ग संधि

84. निम्नांकित शब्दों में से कौन 'यण्' संधि का उदाहरण है?
(क) जलौध (ख) अत्यधिक(ग) उद्घाटन (घ) वागीश

85. 'अन्वेषक' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) अनु + एषक (ख) अन + एषक
(ग) अनु + ऐषक (घ) इनमें से कोई नहीं

86. 'रामायण' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) रामा + नयन (ख) राम + अयन
(ग) रामा + यण (घ) इनमें से कोई नहीं

87. 'तरण' में कौन-सी संधि है?
(क) विसर्ग संधि (ख) स्वर संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

88. 'दुश्चरित्र' में कौन-सी संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

89. 'दुष्ट' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) दु + अष्ट (ख) दु + अष्टु
(ग) दुः + ट (घ) इनमें से कोई नहीं

90. 'सरोज' में प्रयुक्त संधि का नाम बताइये-
(क) विसर्ग संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

Pariksha Manthan

91. 'परिणाम' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) परि + आयाम (ख) परि + नाम
(ग) पा + णान (घ) इनमें से कोई नहीं

92. 'हस्तिदन्त' में कौन-सी संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

93. 'धनंजय' में कौन-सी संधि है?
(क) व्यंजन संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

94. 'निराशा' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) निर + आशा (ख) निर् + आशा
(ग) नी + आशा (घ) निः + आशा

95. 'निष्कलंक' में कौन-सी संधि है?
(क) स्वर संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) व्यंजन संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

96. 'राजाज्ञा' में कौन-सी संधि है?
(क) व्यंजन संधि (ख) विसर्ग संधि
(ग) स्वर संधि (घ) इनमें से कोई नहीं

97. 'अभ्यागत' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) अभि + आगत (ख) अभ्या + गत
(ग) आभा + गत (घ) इनमें से कोई नहीं

98. 'देवागमन' में कौन-सी संधि है?
(क) यण् संधि (ख) दीर्घ संधि
(ग) अयादि संधि (घ) गुण संधि

99. 'नर्मदेश्वर' का सही संधि-विच्छेद है-
(क) नर्म + ईश्वर (ख) नर्मदा + ईश
(ग) नर्मदा + ईश्वर (घ) नमो + ईश्वर

100. 'रूपेन्द्र' में कौन-सी संधि है?
(क) गुण संधि (ख) दीर्घ संधि
(ग) अयादि संधि (घ) यण् संधि

101. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'गुण' संधि है?
(क) हिमालय (ख) इत्यादि
(ग) तल्लीन (घ) देवेन्द्र

102. शब्द 'अन्वय' का संधि-विच्छेद है—
(क) अनु+अय (ख) अनू+आय
(ग) अनू+अय (घ) अनु+आय

103. 'वाग्जाल' का संधि-विच्छेद होगा—
(क) वाक्+जाल (ख) वाक+जाल
(ग) वाग्+जाल (घ) वाग+जाल

104. 'तल्लीन' शब्द का संधि-विच्छेद होगा—)
(क) तब+लीन (ख) तत् + लीन
(ग) ततः+तीन (घ) तत् + तीन

105. 'सदैव' शब्द में कौन-सी संधि है?
(क) यण् संधि (ख) व्यंजन संधि
(ग) वृद्धि संधि (घ) गुण संधि

106. 'रामावतार में किस प्रकार की संधि है?
(क) गुण संधि (ख) दीर्घ संधि
(ग) अयादि संधि (घ) यण् संधि

107. 'फणीश्वर' उदाहरण है—
(क) दीर्घ संधि का (ख) व्यंजन संधि का
(ग) यण् संधि का (घ) वृद्धि संधि का

108. 'राजर्षि' उदाहरण है—
(क) यण् संधि का (ख) अयादि संधि का
(ग) व्यंजन संधि का (घ) गुण संधि का

109. 'मतैक्य' उदाहरण है—
(क) वृद्धि संधि का (ख) व्यंजन संधि का
(ग) गुण संधि का (घ) यण् संधि का

110. 'देव्यागमन' उदाहरण है—
(क) दीर्घ संधि का (ख) यण् संधि का
(ग) अयादि संधि का (घ) गुण संधि का

111. 'गायक' का सही संधि विच्छेद है—
(क) गै+अक (ख) गा+यक
(ग) गो+अक (घ) गौ+यक

112. 'तपोबल' का सही संधि विच्छेद है—
(क) तपो+बल (ख) तपः+बल
(ग) तपे+बल (घ) तपो+कल

113. 'दुराशा' का सही संधि विच्छेद है—
(क) दुः+आशा (ख) दुर+आशा
(ग) दूरो+आशा (घ) दुरः+आशा

114. 'दुर्बुद्धि' का सही संधि विच्छेद है—
(क) दुर+बुद्धि (ख) दो+बुद्धि
(ग) द्वि+बुद्धि (घ) दुः+बुद्धि

115. 'प्रातःकाल' का सही संधि विच्छेद है—
(क) प्रः+काल (ख) प्रातः+काल
(ग) प्राते+काल (घ) प्रेतः+काल

116. 'विरहाकुल' किस संधि का उदाहरण है—
(क) दीर्घ संधि का (ख) गुण संधि का
(ग) यण् संधि का (घ) अयादि संधि का

117. 'स्वल्प' किस संधि का उदाहरण है—
(क) अयादि संधि का (ख) गुण संधि का
(ग) यण् संधि का (घ) दीर्घ संधि का

118. 'तद्नुसार' का सही संधि विच्छेद है—
(क) तत्+अनुसार (ख) तत्य+नुसार
(ग) तद्+अनुसार (घ) तै+अनुसार

Parikshā Manthan

119. जगत्+अम्बा = क्या होगा?

(क) जगतजननी (ख) जयंबा

(ग) जगदम्बा (घ) जगदंबे

120. सत्+नारी = होगा—

(क) नर-नारी (ख) सदानीरा

(ग) सद्नारी (घ) सन्नारी

उत्तरमाला

1. (ग)	2. (ख)	3. (क)	4. (घ)	5. (ख)
6. (क)	7. (ख)	8. (ग)	9. (क)	10. (ख)
11. (ग)	12. (घ)	13. (ग)	14. (घ)	15. (क)
16. (ग)	17. (घ)	18. (क)	19. (क)	20. (क)
21. (ख)	22. (ग)	23. (क)	24. (ख)	25. (घ)
26. (क)	27. (क)	28. (ग)	29. (ख)	30. (ख)
31. (क)	32. (ग)	33. (ग)	34. (क)	35. (घ)
36. (ख)	37. (ग)	38. (ख)	39. (ख)	40. (ख)
41. (ग)	42. (घ)	43. (ख)	44. (घ)	45. (क)
46. (घ)	47. (क)	48. (क)	49. (घ)	50. (क)
51. (ख)	52. (क)	53. (ग)	54. (घ)	55. (क)
56. (ग)	57. (क)	58. (ग)	59. (क)	60. (ग)
61. (ख)	62. (घ)	63. (क)	64. (ख)	65. (क)
66. (ख)	67. (घ)	68. (ग)	69. (क)	70. (घ)
71. (घ)	72. (क)	73. (ख)	74. (क)	75. (ग)
76. (क)	77. (ख)	78. (ग)	79. (ख)	80. (ग)
81. (ख)	82. (ग)	83. (क)	84. (ख)	85. (क)
86. (ख)	87. (ग)	88. (ख)	89. (ग)	90. (क)
91. (ख)	92. (ग)	93. (क)	94. (घ)	95. (ख)
96. (क)	97. (क)	98. (ख)	99. (ग)	100.(क)
101. (घ)	102. (क)	103. (क)	104. (ख)	105. (ग)
106. (ख)	107. (क)	108. (घ)	109. (क)	110. (ख)
111. (क)	112. (ख)	113. (क)	114. (घ)	115. (ख)
116. (क)	117. (ग)	118. (क)	119. (ग)	120.(घ)

◆◆◆

Pariksha Manthan

वाक्यांशों (अनेक शब्दों) के लिए एक शब्द

कम शब्दों में अधिक व्यक्त करना लेखन की कला है और इस कला को निखारने में उन शब्दों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, जो वाक्यांशों के स्थान पर प्रयुक्त होकर वही अर्थ-बोध करवाते हैं, जो वाक्यांश (अनेक शब्द) करवाते हैं। ऐसे शब्दों के प्रयोग से भाषा का लालित्य एवं सौंदर्य तो बढ़ता ही है, अभिव्यक्ति भी सशक्त होती है। विचारों-भावों तथा किसी विश्लेषण को यदि संक्षिप्त शब्दों में व्यक्त किया जाए, तो इससे भाषा का पैनापन तो बढ़ता ही है, भावों-विचारों के आदान-प्रदान में भी सहजता रहती है। संक्षिप्त अभिव्यक्ति भाषा की समृद्धता की भी सूचक होती है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा को हम काफी समृद्ध भाषा कह सकते हैं, क्योंकि इसमें उन शब्दों का अच्छा-खासा भंडार है, जो वाक्यांश की जगह प्रयुक्त होते हैं तथा विस्तृत अर्थ को व्यक्त करते हैं। अर्थ के विस्तार को समेटने वाले शब्दों के प्रयोग से भाषा में अनूठी कसावट आती है तथा भाषा की प्रभावोत्पदकता बढ़ती है। थोड़े में ही बहुत कुछ कह सकने के कारण अनावश्यक विस्तार से भी बचत होती है।

जैसे—'जो क्षमा करने योग्य न हो', उसके लिए हम 'अक्षम्य' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार एक शब्द में पूरी बात आ जाती है। भाव की सटीक अभिव्यक्ति भी हो जाती है। एक और उदाहरण देखें—'किए हुए उपकार को न मानने वाले' के लिए हम 'कृतघ्न' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार के अनेक शब्द हिन्दी भाषा में हैं, जो अनावश्यक विस्तार को कम कर, संक्षिप्त और सटीक अर्थ देते हैं। ये पूरे वाक्यांश के निहितार्थ को व्यक्त करते हैं। ऐसे शब्दों का प्रयोग भाषा की लय और रवानी को तो बढ़ाता ही है, उसमें जीवंतता भी लाता है। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा बोझिल नहीं होने पाती, क्योंकि ये अनावश्यक विस्तार को रोकते हैं।

परीक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर हम यहां कुछ ऐसे चुनिंदा शब्दों की सूची दे रहे हैं, जो प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

एक शब्द	वाक्यांश
अंशकालिक	जो कुछ समय के लिए नियुक्त किया गया हो
अंतेवासी	गुरु के समीप रहकर शिक्षा ग्रहण करने वाला
अंकशायिनी	गोद में सोने वाली स्त्री
अंतरिक्ष	पृथ्वी और सूर्य आदि लोकों के बीच का स्थान
अंतर्यामी	सबके हृदय की बात जानने वाला
अंडज	अंडे से जन्म लेने वाला
अंकेक्षण	हिसाब-किताब की जांच करना
अंत्याक्षरी	दूसरा पद्य या उक्ति या रीत्यानुसार किया गया एक पद्य पाठ
अंतःकथा	किसी कथा के अंतर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा
अंकस्थ	जिसे गोद में स्थान मिला हो
अंतःप्रेरणा	वह प्रेरणा जो मन में स्वतः उत्पन्न होती है।
अंतर्ज्ञान	मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान
अंतर्देशीय	देश के अंदर होने वाला या उससे संबंधित
अतिक्रांत	जिसको पार किया जा चुका है
अजेय	जिसको जीता नहीं जा सकता
असंभव प्रायः (असंभवप्राय)	जिसको करना प्रायः असंभव हो
अतृप्त	जो तृप्त नहीं हुआ हो
अध्यक्ष	जो किसी सभा या संस्था का प्रधान हो
अडिग	जो डिग नहीं सकता
अथाह	जिसकी थाह लगना कठिन है
अमूल्य	जिसका मूल्य नहीं दिया जा सकता
अन्त्यज	जिसका जन्म छोटी जाति में हुआ हो
अप्रत्याशित	जिसकी आशा न की गई हो
असूर्यम्पश्या	रनिवास में कड़े पर्दे में रहने वाली स्त्री
असाध्य	जिसका उपचार न हो सके
अक्षत	तिलक लगाने में प्रयुक्त होने वाला अन्न
अतुलनीय	जिसकी तुलना नहीं की जा सकती
असमंजस	'हां-ना' का निर्णय नहीं हो पाना
अनिर्णीत	जिसका निर्णय नहीं हुआ हो
अगीत	जो गाया नहीं गया हो
अकुलाहट	बेचैनी का भाव
अनचाहा	जो चाहा नहीं गया है
अनकही	जो बातें कही नहीं गयी हैं
असह्य	जो सहा नहीं जा सके
अगणित, अनगिनत	जो गिना नहीं जा सके
अपार	जिसका पार नहीं पाया जा सके
अस्थिशेष, कंकाल	जिसके शरीर पर मांस है ही नहीं, केवल हड्डी ही बच गयी है
अवैतनिक	बिना वेतन के कार्य करने वाला
अभियुक्त	जिस पर मुकदमा चल रहा हो
अर्धकालिक	जो आधी अवधि तक काम करता है
अनुलंघनीय	जिसका किसी भी तरह उल्लंघन न किया जा सके
अत्याज्य	जिसको छोड़ा नहीं जा सकता हो
अनुत्तरित	जिसका उत्तर नहीं दिया जा सका
अपूर्ण, अधूरा	जो पूरा नहीं हुआ है

Parikshā Manthan

अधिकारी	जिसके हाथ में अधिकार है, अधिकार संपन्न
अधिकृत	जिस पर अधिकार प्राप्त किया जा चुका है
अध्यवसायी	बहुत अधिक परिश्रमी और लगनशील व्यक्ति
अपमानित	जिसका अपमान हो चुका है
अनादृत	जिसका आदर नहीं हुआ
अप्रकाशित	जो प्रकाशित नहीं हुआ है
अवलम्बित	किसी आधार पर टिका हुआ
अधोमुख, अधोमुखी	नीचे की ओर जिसका मुँह है
अतिशय	बहुत अधिक
अभिभावक	लालन-पालन या देखभाल करने वाला
अश्रुत पूर्व	जो पहले कभी सुना नहीं गया
अजन्मा, अजात	जिसका जन्म नहीं हुआ
अखाद्य	जिसको नहीं खाना चाहिये
अजातशत्रु	जिसका शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ है
अप्रमेय	जिसे प्रमाण द्वारा सिद्ध न किया जा सके
अतिशयोक्ति	बढ़ा-चढ़ा कर कहना
अकिंचन	जिसके पास कुछ न हो
अनाहूत	जिसे बुलाया न गया हो
अग्रसर	आगे-आगे चलने वाला
अदूरदर्शी	बहुत दूर तक नहीं देखने वाला
दूरदर्शी	बहुत दूर तक देखने वाला
आंत्रिक	आंतों में होने वाला
आकस्मिक	अचानक घटित होने वाला
आजीवन	पूरे जीवन में
आदिवासी	किसी देश के वे निवासी जो बहुत पहले से वहां रहते आ रहे हैं।
आग्नेय	जिसका संबंध अग्नि से हो
आपादमस्तक	सिर से पैर तक
आस्तिक	जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखता है
आतिथ्य	अतिथि-सत्कार की भावना
आधृत	किसी आधार पर निर्मित
आध्यात्मिक	ईश्वर, धर्म, दर्शन, आत्मा में रुचि रखने की प्रवृत्ति
आंग्ल-प्रभाव	अंग्रेजी भाषा या अंग्रेजों की सभ्यता संस्कृति का प्रभाव
आलोच्य	जिसकी आलोचना की जाये
आलोचित	जिसकी आलोचना की जा चुकी है
आलोचक	आलोचना करने वाला
आश्वस्त	जिसको आश्वासन दिया जा चुका है
आर्थिक	रुपये-पैसे से संबंधित
आरोही	ऊपर चढ़ने वाला
इंद्रजित	इंद्र को जीतने वाला
इच्छित	जिसकी इच्छा की जाय
इतर	किसी वस्तु से परे
इतिहासज्ञ	इतिहास जानने वाला
इंद्रियजित	जिसने इंद्रियों को जीत लिया है
इन्द्रियातीत	इन्द्रियों से परे
इत्यलम्	इतना ही पर्याप्त है
ईर्षित	जिससे ईर्ष्या की गयी हो
ईर्ष्य	ईर्ष्या के योग्य
ईहार्थी	उद्देश्य पूर्ति के लिये प्रयत्नशील
उच्चाकांक्षा	बहुत आगे बढ़ने की आकांक्षा
उर्वरा	उपजाऊ भूमि
उदग	जो छाती के बल चलता हो
उद्भिज	जो धरती फोड़कर जन्मता हो
उऋण	जिसने ऋण चुका दिया हो
उदयाचल	सूर्य जिस स्थान से निकलता है
उषाकाल	सूर्योदय से पहले का समय
उपकृत	जिस पर उपकार किया गया हो
उत्तेजक	उत्तेजित कर देने वाला
उदारचरित	जिसका चरित्र उदार है
उपरिलिखित	ऊपर लिखा हुआ
उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ
उपहास	किसी की हंसी उड़ाना
उन्नत	जिसकी उन्नति हो चुकी हो
उत्तरोत्तर	क्रमशः अधिक होता हुआ
उपेक्षित, उपेक्षिता	जिसकी उपेक्षा की गयी हो वह पुरुष, स्त्री
उच्चकुलोद्भव	बड़े वंश में उत्पन्न
उल्लेख्य, उल्लेखनीय	उल्लेख योग्य
उपन्यासकार	उपन्यास लिखने वाला
उर्ध्वमुखी	ऊपर की ओर जाने वाला
ऊसर	जिस धरती में कुछ नहीं उपजे
एकाहारी	दिनभर में एक बार भोजन करने वाला
एतादृशी	इस प्रकार की
एकांगी	जिसमें किसी एक ही अंग पर जोर दिया गया हो
एकाग्र	जिसका ध्यान एक ही वस्तु में लगा हो
ऐश्वर्यशाली	भौतिक सुख-सुविधा, समृद्धि से युक्त
ऐय्याश, भोगी	भोग-विलास करने वाला
ऐक्य	एकता की भावना
ऐच्छिक	इच्छा पर निर्भर
ओढरदानी	बहुत अधिक दान देने वाला
औद्योगिक	उद्योग से संबंध रखने वाला
औपनिवेशिक	उपनिवेश से संबंध हो जिसका
कृपण	जो पैसा खर्च करने में कंजूसी करे
कृतघ्न	जो किए गए उपकारों को नहीं मानता है
किंकर्त्तव्यविमूढ़	अपने कर्त्तव्य का निर्णय न कर सकने वाला
कुलीन	जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है
कवयित्री	जो स्त्री कविता रचती है

Pariksha Manthan

कृतार्थ	अपना उद्देश्यपूर्ण होने पर संतुष्टि होनी
कर्त्तव्यरत	काम करने वाला
किंचित्	थोड़ा सा
कुशल, दक्ष	किसी कार्य में प्रवीण
कुतूहल, जिज्ञासा	किसी वस्तु को जानने की प्रबल इच्छा
कण्टकाकीर्ण	कण्टकों से घिरा हुआ
काँस्य	कांसे का बना हुआ बर्तन
काष्ठ-कला	लकड़ी की सुन्दर वस्तुऐं बनाने की कला
कापालिक	हाथ में मानव खोपड़ी वाला तांत्रिक
किवदन्ती	वह बात जो जनसाधारण में अरसे से प्रचलित हो
खर्चीला	अधिक खर्च करने वाला
खेचर	आकाश में उड़ने वाला
खड्गधारिणी	खड्ग धारण करने वाली स्त्री
खोजी	खोज करने वाला
खाद्य	खाने योग्य
दूरबीन	दूर देखने का यंत्र
खुदगर्ज, स्वार्थी	अपना ही स्वार्थ देखने वाला
खण्डित	जो खण्ड-खण्ड हो चुका हो
गोपनीय, गोप्य	जो गुप्त रखना चाहिये
गोपुच्छवत्	गाय की पूँछ की तरह
गुमराह	जो गलत रास्ते पर चल रहा हो
गंजेड़ी	गांजा पीने का अभ्यस्त
गिद्ध दृष्टि	जिसकी आँख बड़ी तेज हो, जो छोटी-छोटी वस्तुओं को भी शीघ्रता से देख लेता हो
गायक	गाने वाला
ग्रीष्मावकाश	गर्मी की छुट्टियाँ
गुंजायमान	किसी ध्वनि से गूँजा हुआ
गोताखोर	समुद्र में गोता लगाने वाला
गर्हित	जिसकी निन्दा की जाती हो
गार्हस्थ्य	घर बार की चिन्ता और परिवार के सदस्यों के प्रति उचित कर्त्तव्य का भाव
ग्रामीण	ग्राम संबंधी, ग्राम का
ग्राहक	खरीदने वाला
गोशाला	गायों की रहने की जगह
गलितांग	जिसका अंग-अंग गल चुका हो
गणितज्ञ	गणित का जानकार
गपोड़िया	गप्पें हांकने वाला
गरिष्ठ	ऐसा खाद्य पदार्थ जो देर से पचे
गांगेय	गंगा से उत्पन्न या उससे संबंधित
गोचर	जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके
गोधूलि	संध्या का वह काल जब गायें चर कर लौटती हैं
गगनचुंबी	आकाश को चूने वाला
घृण्य	घृणा करने योग्य
घटनावली	बहुत सी घटनाओं का सिलसिला
घरेलू	घर से संबंधित
घुमक्कड़	घूमने वाला व्यक्ति
घूर्णित	घूमती हुई वस्तु
घ्राण-शक्ति	सूंघने की विशेष शक्ति
घृणित	जिससे घृणा की जाये
घर्षण	एक वस्तु को दूसरी वस्तु से रगड़ना
घोषित	जिसकी घोषणा की जा चुकी हो
घोष	ग्वालों का निवास स्थान
चर्चित	जिसकी चर्चा हो
चलायमान	चलने वाली चीज
चित्रकर्त्री	चित्र बनाने वाली स्त्री
चित्रण	चित्र खींचना
चालू	चलता-पुर्जा आदमी
चकित	अचकचाया हुआ
चन्दा	किसी संस्था या सार्वजनिक आयोजन के लिये एकत्र की जाने वाली धन-राशि
चम्पू	गद्य-पद्य मिली हुई साहित्यिक रचना
चीत्कार	करुण स्वर में चिल्लाने की आवाज
चीवर	बौद्ध संन्यासियों द्वारा धारण किया जाने वाला वस्त्र
चिंतित	चिन्ता में डूबा हुआ
चीनांशुक	रेशमी वस्त्र
चक्रपाणि	जिसके हाथ में चक्र हो, विष्णु
चांचल्य	चंचल होने का भाव
चापल्य	चपलता का भाव
चारण	राजाओं और सामन्तों के पीछे-पीछे
चारित्र्य	चरित्र की उच्चता
चुम्बकत्व	किसी वस्तु को अपनी ओर खींचने का गुण
चाक्षुष	चक्षु से प्राप्त ज्ञान
चक्षुश्रवा	जो आंखों से सुनता हो
चन्द्रशेखर	जिसके सिर पर चन्द्र हो
चर्म-कला	चमड़े से वस्तुयें बनाने की कला
छिन्द्रान्वेषी	किसी वस्तु की छोटी से छोटी खराबी ढूँढनेवाला (या खोजने वाला)
छिन्न-भिन्न	बिल्कुल तितर-बितर हो जाना
छापामार	अचानक कहीं भी पहुंचकर छापा मारने वाला
छावनी	सेना के ठहरने की जगह
जन्मशती	जन्म से सौ वर्ष का समय
जन्मांध	जन्म से अंधा
जाज्वल्यमान	जलता हुआ
जिजीविषा	जीने की इच्छा
जघन्य	घृणा के योग्य
जंगम	चलने-फिरने वाला
जठराग्नि	पेट की अग्नि

Parikshā Manthan

जलचर	जल में चलने वाला
जुगुप्सा	वीभत्सता का भाव
जिगीषा	जीतने की इच्छा
जिज्ञासु	जानने की इच्छा रखने वाला
जितेन्द्रिय	जिसने इंद्रियों को जीत लिया है
जामाता	बेटी का पति
झगड़ालू	झगड़ा करने वाला
झमेलिया	झमेला करने वाला
टंकण	टाइप करने की क्रिया
टंकक	टाइप करने वाला
ठसक	चाल-ढाल का बनावटीपन जिससे रूप-धन आदि का गर्व सूचित हो
ठेकेदार	ठेके का काम करने वाला
डरावना	जिसको देखकर डर लगे
ढकोसला	व्यर्थ का प्रपंच
तत्पर	किसी कार्य को मुस्तैदी के साथ करने वाला
तेलहन	ऐसी फसल जिससे तेल निकाला जाता है
तैराक	तैरने की कला में निपुण
तितीर्षा	तैरने की इच्छा
तटवर्ती	किसी नदी या सागर के तट पर स्थित भूमि
तटस्थ	जो किसी का पक्ष न ले
तपस्वी	तप करने वाला
तर्कसंगत	जो तर्क के आधार पर ठीक सिद्ध हो
तर्कसम्मत	जो तर्क के द्वारा माना गया हो
त्यागी	जो सब कुछ छोड़ दे
त्याज्य	छोड़ देने योग्य
त्यक्त	जिसको छोड़ दिया गया है
तेजस्वी	तेज से युक्त
तुरपाई	हाथ की सिलाई
तीरंदाज	तीर चलाने में कुशल
तत्वज्ञ	तत्व जानने वाला
निस्सार	जिसमें कोई सार न हो
थैली	बड़े लोगों की दी जाने वाली धनराशि
दानी, दाता	जो दूसरों को रुपया-पैसा देता हो
दकियानूस	संकीर्ण विचारों का व्यक्ति
द्विपद	दो पैरों वाला जानवर
दशमुख	दस मुँह वाला, रावण
दुर्दश्य	जिसको दबाना कठिन हो
दुभाषिया	दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच मध्यस्थता करने वाला
दत्तक	गोद लिया हुआ
दिगंबर	दिशाएं ही जिनका वस्त्र है
दुर्ल्लंघ्य	जिसको लांघना कठिन हो
द्विज	जिसका दो बार जन्म हो
दमित	जिसका दमन किया गया हो
दलित	जिसको रौंदा गया हो
दुर्बोध	जिसको समझने में कठिनाई हो
दुष्कर	जिसको करने में कठिनाई हो
दैनन्दिन	रोज-रोज के जीवन से सम्बद्ध
दैनिक	प्रतिदिन प्रकाशित होन वाला समाचार पत्र
दैहिक	देह से सम्बद्ध
दैविक	देवताओं से सम्बद्ध
दृष्टिकोण	एक विशेष प्रकार से देखना
दृष्टि-दोष	आंख की बीमारी
दीप्त-दीपित	चमकता हुआ
दोष-दर्शन	दूसरों की गलतियां देखना
दोहित	जिसको दुहा जा चुका हो
दण्डित	जिसको दण्ड दिया जा चुका हो
दुःसाध्य	जिस कार्य में सफलता पाना कठिन हो
देय	जो देने योग्य हो
द्रुतगामी	जो जल्दी-जल्दी चलता हो
दुर्निवार	जिससे बचा नहीं जा सके
देशद्रोही	देश हित के विरुद्ध कार्य करने वाला
देशभक्त	देश के प्रति भक्ति रखने वाला
धार्मिक	धर्म-संबंधी
धर्मनिष्ठ	धर्म में जिसकी निष्ठा हो
धर्मा, धर्मी	धर्मवाला
धमाचौकड़ी	उछल-कूद और हल्ला-गुल्ला मचाना
धीर	जो धीरज रखता हो
धौत	धुला हुआ
ध्वस्त	जो बिल्कुल बर्बाद हो गया हो
धनदा, धनद	धन देने वाली, देने वाला
धनेश, कुबेर	धन का देवता, एक विशेष पक्षी
धुकधुकी	प्राण छूटने के पूर्व सांस का धीरे-धीरे चलना
धूमिल	धूयें के रंग का धुँधला
धूमाच्छादित	धूयें से भरा हुआ
धूसर	मटमैले रंग का
धूम्रपान	बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू आदि पीना
धारयित्री	धारण करने वाली
नकली	असली का उलटा
नकलची	जो नकल करता है
नागरिक	नगर में रहने वाला
नारकीय	नरक संबंधी
नेता	जो आगे-आगे ले चले
नश्वर	जो नष्ट हो जाता है
नेति-नेति	ऐसा नहीं है-वैसा नहीं है
नमस्य	नमस्कार के योग्य
नातिलघु	जो बहुत छोटा नहीं है
नातिदीर्घ	जो बहुत बड़ा नहीं है
नमनीय	जो आसानी से झुकाया जा सके

Pariksha Manthan

नाश्ता	सुबह-शाम किया जाने वाला हल्का भोजन
निर्भीक	जो किसी से डरता नहीं है
नास्तिक	जिसे ईश्वर पर विश्वास नहीं
नवागन्तुक	जो अभी-अभी आया है
नवजात	जो तुरंत उत्पन्न हुआ है
नवोदित	जिसका तुरंत उदय हुआ है
निशाचर	रात में चलने वाला, राक्षस
नभचर/खेचर	आकाश में चलने वाला
निर्देशक, निदेशक	जो निर्देश देता है
निर्मूल	जिसकी जड़ नहीं
निरूपम	जिसकी उपमा न हो
निर्मिमेष	बिना पलक गिराये, एकटक
निशीथ	आधी रात का समय
नेपथ्य	रंगमंच के पर्दे के पीछे का स्थान
निर्मम	जिसके हृदय में ममता नहीं है
नीतिज्ञ	जो नीति जानता है
नराधम	मनुष्यों में नीच
निर्माल्य	जो वस्तु देवता पर चढ़ चुकी है
नवोढ़ा	नवविवाहित स्त्री
पिपासु	जिसको पीने की इच्छा हो
पेय	जो पिया जा सके
पाचक	जो पचा दे
पाकशाला	जिस घर में भोजन बनता हो
पारदर्शी	जिसके आर-पार दिखाई दे
पारित, स्वीकृत	जो स्वीकृत किया जा चुका हो
पाठान्तर	जहां एक ही शब्द के अनेक रूप विभिन्न प्रतिलिपियों में पाये जांयें
प्रवक्ता	अधिकार प्राप्त वक्ता
पितृहन्ता	पिता की हत्या करने वाला
पंकज	कीचड़ से उत्पन्न, कमल
प्रियम्वदा	प्रिय बोलने वाली स्त्री
पृष्टव्य	पूछने योग्य
पाशविक	पशु संबंधी
प्रत्युत्पन्नमति	तुरंत उत्पन्न होने वाली सूझ-बूझ
प्रोषितपतिका	जिस स्त्री का पति विदेश में रहता हो
प्रतिवादी	जो अभियोग का विरोध करता हो
प्रत्युत्तर	उत्तर का उत्तर
पिण्डज	जिसका जन्म पिण्ड से हो
पार्थिव	पृथ्वी से संबंध रखने वाला
परीक्षित	जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो
पदच्युत	जो पद से हटा दिया गया हो
पदोन्नति	एक पद से दूसरे पर उन्नति
प्रागैतिहासिक	ऐतिहासिक युग के पूर्व का
प्रहसन	ऐसा दृश्य जिसे देखकर हँसा जाये
प्रपर्ण	गिरा हुआ पत्ता
प्रपाती	ऊंची-नीची चट्टानों में होने वाला जलप्रपात
प्रव्रजन	एक जगह से दूसरी जगह जाना
प्रहेलिका	जिसका हल जल्दी मालूम न हो
पुनरुक्ति	एक ही बात का बार-बार कहना
पुरस्कृत	जिसको पुरस्कार प्राप्त हुआ है
प्रयोक्ता	प्रयोग करने वाला
प्रतिपाद्य	जिसका प्रतिपादन किया जाये
प्रतिमान	जिसके आधार पर दूसरों को नापा जाये
परकीया	पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करने वाली
प्राप्तव्य	जिसे प्राप्त करना चाहिये
पाथेय	पथिक द्वारा मार्ग में व्यवहार के लिए ली जाने वाली सामग्री
प्रतिस्पर्द्धी	जो दूसरों से आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है
प्रदर्शनी	एक आयोजित बाजार जहां विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का प्रदर्शन और क्रय-विक्रय होता है
प्राचार्य	कालेज का प्रधान
प्रार्थी	प्रार्थना करने वाला
पराश्रित	जो दूसरों पर आश्रित हो
परान्नभोजी	जो दूसरों के अन्न पर पलता है
पतित	गिरा हुआ
परमार्थी	जो दूसरों की भलाई चाहता है
पारलौकिक	जो पार जा चुका है
प्रत्यक्ष	जो आँखों के सामने है
परोक्ष	जो आँखों से ओझल है
पितृव्य	पिता का भाई
प्राकृतिक	प्रकृति सम्बन्धी
पुंस्त्व	पुरुष का गुण
प्रोन्नति	विशेष रूप से उन्नत
प्रेप्सा	प्राप्त करने की इच्छा
प्रेक्षणीय	देखने योग्य
प्रीत्यर्थ	प्रसन्न करने के लिये
पदाधिकारी	जो उस पद पर होने के कारण किसी कार्य में रत हो
फिजूलखर्च	बेमतलब का खर्च करने वाला
फालतू	बेमतलब का, असंगत
फलित	फला हुआ
फेनिल	फेन से भरा हुआ
फाँसी	गर्दन में फंदा डालकर लटका कर दी जाने वाली सजा
फांकामस्ती	भूखे रहकर भी मस्त रहना
फलाहारी	केवल फल खाकर रहने वाला

Pariksha Manthan

फटेहाल, फटीचर	जिस आदमी के कपड़े-फटे-चिथड़े हों, दरिद्र
फलासक्त	परिणाम का मोह रखने वाला
बहुभाषाविद्	बहुत सी भाषायें जानने वाला
बड़वानल	समुद्र की आग
बहुपत्नीक समाज	जिस समाज में बहुत सी पत्नियाँ रखी जाती हैं
बाकायदा	कायदे के साथ
बहुधंधी	जो एक ही साथ बहुत काम करता हो
बहुश्रुत	जिसने बहुत सुन रखा हो
बहुमूल्य	बहुत अधिक मूल्य वाली वस्तु
बाधक	बाधा डालने वाला
बालोपयोगी	बच्चों के काम की वस्तु
बदहजमी	नहीं पचने की बीमारी
भाग्योदय	भाग्य का उदय
भंजक	तोड़ने वाला
भूतपूर्व	जो हो चुका हो
भूदान	जमीन वालों से दान के रूप में जमीन लेने का विनोबा जी द्वारा चलाया हुआ आंदोलन
भास्वर	जो प्रकाशयुक्त है
भारोपीय	भारत और यूरोप
भाराक्रान्त	भार से दबा हुआ
भित्ति-चित्र	दीवाल पर बनायी हुई तस्वीर
भाषा-विज्ञान	भाषा का अध्ययन करने वाला विज्ञान
भाषिक, भाषाई	भाषा संबंधी
भकोसना	बहुत अधिक और जल्दी-जल्दी खाना
भौगोलिक	भूगोल संबंधी
भाईचारा	भाई-भाई जैसा व्यवहार
भिन्नोदर	सौतेला भाई
भिक्षाटन	भीख माँगने के लिये घूमना
भास्कर्य	धातु पत्थर आदि की मूर्ति बनाने की कला
भंडारी, भांडागरिक	जो भंडार का रक्षक हो
मत्स्यजीवी	मछली मारकर बेचकर जीने वाला
महात्मा	महान आत्मा
मातृहन्ता	माता की हत्या करने वाला
मीमांसा	मनन करने की इच्छा
मतानुयायी	किसी मत को मानने वाला
मतगणना	निर्वाचन में की जाने वाली मतों की गणना
मांसाहारी	मांस खाने वाला
मर्मस्पर्शी, मार्मिक	मर्म (हृदय) को छूने वाला
मितभाषी	कम बोलने वाला
मितव्ययी	कर्म खर्च करने वाला
मंत्री	जो मंत्रणा देता है
मांसल	जिसमें अधिक मांस हो
मासिक	महीने में एक बार प्रकाशित होने वाली पत्रिका
मनुष्येतर	मनुष्य को छोड़कर

मुमुक्षु	मुक्ति की इच्छा रखने वाला
मद्यप	मदिरा पीने वाला
मर्मज्ञ	किसी बात का मर्म जानने वाला
म्रियमाण	मरा हुआ जैसा
मूर्तिपूजक	मूर्ति की पूजा करने वाला
मस्त	मस्ती से भरा हुआ
महीयसी	महान स्त्री
मातृकुल	माता का कुल
मनःस्थिति	मन की स्थिति
मनोदशा	मन की दशा
मृगनयनी	मृग की तरह आँखों वाली स्त्री
मीनाक्षी	मछली की तरह आँखों वाली स्त्री
मयूराक्षी	मयूर की तरह आँखों वाली स्त्री
मुष्टि-युद्ध	घूँसे द्वारा होने वाली लड़ाई
मौखिक	मुँह द्वारा कही गयी बात
मौलिक	बिल्कुल नयी या आधारभूत बात
मुँहदूबर	जो कोई बात जल्दी से न कह सके
मृगकानन	मुर्गों से भरा हुआ वन
मूर्तिभंजक	मूर्तियों को तोड़ने वाला
मोहताज	किसी बात के लिये दूसरे पर आश्रित
मुकुलित	वह फूल जो पूरी तरह न खिला हो
मध्याह्नोतर	दोपहर के बाद का समय
मदालसा	मद से अलसाई हुई स्त्री
मत्स्याशन	मछली का भोजन
युधिष्ठिर	जो युद्ध में स्थिर रहता है
यथाक्रम	क्रम के अनुसार
यावज्जीवन	जब तक जीवन है तब तक
युवकोपयोगी	युवकों के लिये उपयोगी
येन-केन प्रकारेण	चाहे जिस प्रकार से भी हो
युयुत्सा	युद्ध की इच्छा
यथेष्ट	जितना चाहिये या जितना इष्ट हो
युक्तिसंगत	उपर्युक्त, तर्कसंगत
युग प्रवर्तक	युग की धारा
यौतुक	विवाह में मिला हुआ धन (दहेज)
यशः शेष, कीर्ति शेष	ऐसा मृत व्यक्ति, जिसका यश रह गया हो
रहस्य	जो बात जल्दी समझ में ना आये
रसिक	जो रस का आनन्द लेता है
रम्य	वह सुंदर स्थान जहां घूमा जा सके
रक्तरंजित, रक्ताक्त	खून से रंगा हुआ
राजभक्ति	राजा के प्रति भक्ति
राजपुरुष	राज कार्य में भाग लेने वाला पुरुष
राजदण्ड	राजा द्वारा दिया गया दण्ड या राजाओं के हाथ में रहने वाला दण्ड

Pariksha Manthan

राजनीतिज्ञ	राजनीति जानने वाला
रूपसी	अत्यंत रूपवती स्त्री
रूपजीवा	रूप से पैसा कमाने वाली स्त्री
रचयिता	रचना करने वाला
रचयित्री	रचना करने वाली
रचनात्मक कार्यक्रम	निर्माण-प्रधान-कार्यक्रम
रजस्वला	जिस स्त्री को मासिक धर्म हो
रोमांचकारी	जिसको देखकर या सुनकर रोंगटे खडे हो जायें
रक्तिम	खून की तरह लाल
रिक्त	जो खाली हो चुका हो
रिक्थ	उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति
संस्कारित	संस्कार और परंपरा द्वारा प्राप्त
रक्षणीय	जिसकी रक्षा की जानी चाहिये
रूपासक्त	जो रूप के प्रति आसक्त हो
रंगरूट	जो नया-नया भर्ती हुआ हो
राष्ट्रीय	राष्ट्र संबंधी
राष्ट्रोन्नति	राष्ट्र की उन्नति
रेचन	किसी वस्तु को अपने भीतर से निकाल फेंकना
संभोगेच्छा, रिरंसा	संभोग की इच्छा
रंगोपजीवी	अभिनय द्वारा जीविका प्राप्त करने वाला
लेख्य	जो लिखना चाहिये
लौकिक	लोक से संबंधित
लौह-पुरुष	लोहे के समान कठोर और दृढ़ पुरुष
लावण्य	चेहरे की लुनाई
लम्बोदर	जिसका पेट लम्बा हो
लिप्सा	पाने की इच्छा
लोकगीत	ग्रामीण जनता के बीच गाया जाने वाला गीत
लुप्त	जो गायब हो चुका हो
लिपि-शास्त्री	विभिन्न प्रकार के अक्षरों का अध्ययन करने वाला
लेहथ	जो चाहा जाये
लह्वीकरण	बड़े को छोटा करना
लघुबुद्धि	जिसकी बुद्धि छोटी हो
लघुता	छोटेपन का भाव
लक्ष्मीपुत्र	जो बहुत धनी हो, जिस पर लक्ष्मी की कृपा हो
लघुकाय	छोटे शरीर वाला, दुबला-पतला बौना
लघुतम	सबसे छोटा
लोरी	बच्चों को सुलाने के लिये माताओं द्वारा गाया जाने वाला गीत
लोकलाज	दुनिया की लाज
लोकमान्य	संसार जिसे माने
लोकसम्मत	लोग जिससे सहमत हों
वरद	वर देने वाला
विमाता	सौतेली माँ
विश्वसनीय	जो विश्वास योग्य हो
विश्वस्त	जिस पर विश्वास किया जा चुका हो
विधुर	जिसकी पत्नी मर गयी हो
विधवा	जिसका पति मर गया हो
विपत्नीक	बिना पत्नी के साथ
विपत्तिजन्य	विपत्ति से उत्पन्न
वैज्ञानिक	विज्ञान जानने वाला
वैष्णव	विष्णु का उपासक
वैदेशिक	विदेश संबंधी
वनज	वन में उत्पन्न
वाचाल	बहुत बोलने वाला
वाचा-शक्ति	बोलने की शक्ति
वाहन	जिस पर सवारी की जाये
व्ययसाध्य	बहुत अधिक खर्च होने पर जो हो सके
वितंडावाद	व्यर्थ की बहस
विवादी	बहस करने वाला
वेदज्ञ	वेद जानने वाला
विदुषी	बहुत पढ़ी-लिखी स्त्री
विचलित	जो डिग चुका हो
विभ्रान्त	बिल्कुल भटका हुआ, पागल जैसा
विजातीय	दूसरी जाति का
वितृष्णा	बहुत अधिक घृणा
वितरित	जो बांट दिया जा चुका हो
विस्तृत	बहुत अधिक फैला हुआ
वज्रपाणि	जिसके हाथ में वज्र हो
वीणापाणि	जिसके हाथ में वीणा हो
विख्यात	जो बहुत अधिक प्रसिद्ध हो
विकलांग	जिसका कोई अंग टेढ़ा-मेढ़ा हो
वर्णनातीत	जो वर्णन नहीं किया जा सके
वैयाकरण	जो व्याकरण जानता हो
वक्रदृष्टि	जिसकी नजर सीधी न हो
व्याख्याता	व्याख्यान करने वाला, व्याख्यान देने वाला
व्यावसायिक	व्यवसाय से संबंधित
विशेषज्ञ	जो किसी विषय का विशेष ज्ञान रखता हो
वृषभस्कंध	जिसके कंधे बैल की तरह मजबूत हो
विद्याव्यसनी	विद्या ही जिसका व्यसन हो
वस्तुनिष्ठ	जिसमें वस्तु की ही प्रधानता हो
वयस्क	जो बालिग हो चुका हो
विज्ञापित	जिसका विज्ञापन प्रकाशित हो चुका हो
विशेषांक	किसी विशेष अवसर पर प्रकाशित किसी पत्रिका का अंक

Parikshā Manthan

विकेन्द्रीकरण	एक स्थान पर केन्द्रित शक्तियों और अधिकारों को क्रमशः बांट देना
विपर्यस्त	जो बिलकुल उलट दिया गया हो
वैकल्पिक	जिसको ग्रहण करना अपने मन पर हो
वैपरीत्य	बिल्कुल प्रतिकूल होने का भाव
विकीर्ण	जिसकी किरणें फैल चुकी हो
विदीर्ण	जो फट चुका हो
विवेचना	किसी विषय की पूरी छान-बीन करना
विरूप	जिसका आकार बिगड़ चुका हो
विफल	जो सफल नहीं हो सका हो
विश्लेषण	किसी विषय का खंड-खंड कर अध्ययन
विमुग्ध	जो बिल्कुल मुग्ध हो चुका हो
विश्रांत	विश्राम किया हुआ (जो बहुत अधिक थका हो)
विषयी	जो काम-वासना में लिप्त रहता हो
विस्थापित	जो अपने स्थान से हटा दिया गया हो
शयनागार	सोने का कमरा
शैक्षणिक	शिक्षा से संबंधित
शैशव	बचपन की अवस्था
शैल-सुता	पर्वत की बेटी
शैल-श्रेणी, शैलमाला	पर्वतों की कतार
शास्त्रीय	शास्त्र से संबंधित
शापग्रस्त	जिसको शाप दिया जा चुका हो
शरणागत	शरण में आया हुआ
शरणार्थी	जो शरण चाहता है
शिरोधार्य	जो सिर पर धारण करने योग्य हो
शाक्त	शान्ति का उपासक
शान्तिदूत	शान्ति का दूत
शत्रुघ्न	शत्रुओं का नाश करने वाला
शतदल	वह कमल जिसमें सौ दल हो
शिखर	पर्वत का शीर्ष भाग
शीलवान्	जिसका आचार-विचार शीलयुक्त हो
शिवेतर	जो कल्याणकारी नहीं है
शंकालु	जो दूसरों पर संदेह करता है
शक्य	जो हो सके
शक्तिपुंज	जिसके पास बहुत अधिक शक्ति हो
शासित	जिस पर शासन किया जा चुका हो
शास्त्रार्थ	दो विद्वानों के बीच गंभीर वार्ता
शास्त्र-सम्मत	शास्त्र जिसका समर्थन करे
शल्य-चिकित्सा	चीड़-फाड़ द्वारा की जाने वाली चिकित्सा
शीत-ताप-नियंत्रित	जहां न अधिक ठंड लगे, न अधिक गर्मी
शीतातप	जाड़े की धूप
शब्दवेधी	शब्द को लक्ष्य बनाकर बेधने वाला
शौचालय	मल-मूत्र त्यागने का स्थान
श्रद्धेय	श्रद्धा के योग्य
सदी	सौ वर्षों का समूह
समिधा	हवन में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी
सर्वज्ञ	जो सब कुछ जानता है
संकर	जिसके माँ-बाप विभिन्न जातियों को हों
सन्निकट	जो बिल्कुल निकट हो
सहनशील	जो सह सके
सह्य	सहन करने वाला
सतत	जिसका क्रम न टूटे
संधि-स्थल	जहां कई पदार्थों की संधि हो
संक्रान्ति	जहां विभिन्न ऋतुओं की संधि हो
संधिकाल	विभिन्न कालों की संधि
सपत्नीक	पत्नी के साथ
सापत्नय	स्त्री के मन में सौत के प्रति ईर्ष्या का भाव
सीमान्त	जहां सीमा का अन्त होता हो
ससीम	जिसकी सीमा ज्ञात हो
सान्त	जिसका अंत साथ हो
सपरिवार	परिवार के साथ
सहर्ष	प्रसन्नता के साथ
सखेद	दुख के साथ
सकरुण	करुणा के साथ
स्वाभिमान	अपना अभिमान
स्थानापन्न	जो किसी की एवजी में कार्य कर रहा हो
स्वयंपाकी, स्वपाकी	जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो
सुशिक्षित	अच्छी तरह शिक्षा प्राप्त
सुखद	सुख देने वाला
साहित्य-शास्त्र	साहित्य के गुण-दोषों का विवेचन करने वाला शास्त्र
सुपक्व	जो अच्छी तरह पका हो
सहोदर	एक मां के पेट से उत्पन्न संतान
सम्पादक	जो रचनाओं में संशोधन कर उसे प्रकाशन के योग्य बनाता है
स्वेदज	पसीने से उत्पन्न
स्वयंभू	जो स्वयं पैदा हुआ
सकाम	जिसमें कामना मौजूद है
सदोष	जिसमें दोष हो
सधवा	जिसका पति जीवित है
समीपवर्ती	जो पास ही स्थित है
साक्षर	जो पढ़ना-लिखना जानता है
स्वास्थ्यवर्धक	स्वास्थ्य बढ़ाने वाला
समवयस्क	एक ही उम्र का
स्वयंसेवक	अपने आप सेवा करने वाला
संन्यासी	जिसने संसार छोड़ दिया
समशीतोष्ण	जो बराबर ठंडा और गर्म हो
स्वानुकूल	अपने अनुकूल
सदाव्रत	जहां निःशुल्क भोजन मिलता हो

Parikshā Manthan

स्मरणीय	स्मरण करने योग्य
समदर्शी	सबको एक समान देखने वाला
समकालीन	एक ही समय में वर्तमान
स्वानुभूत	जिसका अनुभव स्वयं किया गया हो
संश्लेषण	विभिन्न वस्तुओं को एक साथ मिला देना
संगदिल	जिसका हृदय पत्थर के समान हो
सहअस्तित्व	साथ-साथ रहना
संदेशवाहक	संदेश वहन करने वाला
सुलोचना	अच्छी आँखों वाली स्त्री
साक्षात्	अपनी आँखों से देखा हुआ, प्रत्यक्ष
स्पृहणीय	जिसकी अभिलाषा की जा सके
सेनापति	सेना का संचालक
सैन्य शक्ति	सेना की शक्ति
सैंधव	सिन्धु प्रदेश का घोड़ा या नमक
स्वातन्त्र्योत्तर	स्वतन्त्रता के बाद वाला
स्वांत-सुखाय	अपने ही सुख के लिये
स्वनिर्मित	अपना ही बनाया हुआ
स्वागत-गान	किसी के स्वागत में गाया हुआ गीत
सेवितव्य, सेव्य	सेवन करने योग्य
सुषुप्सा	सोने की इच्छा
सुश्रुत	अच्छी तरह सुना हुआ
सुवक्ता	अच्छा बोलने वाला
सुपाठ्य	जो आसानी से पढ़ा जा सके
हस्तलाघव	हाथ का कौशल
हस्तांतरित	एक हाथ से जो दूसरे हाथ में चला गया हो
हृदय-विदारक	हृदय फाड़ देने वाला
हिंसक	हिंसा करने वाला
हृतन्त्री	हृदय की वीणा
हलफनामा	किसी व्यक्ति द्वारा हलफ (शपथ) के साथ न्यायालय में प्रस्तुत पत्र
हस्तलिखित	जो हाथ से लिखा हुआ हो
हृष्ट-पुष्ट	जो अधिक स्वस्थ हो
हृदयरंजक	हृदय को प्रसन्न करने वाला
हर्षोत्फुल्ल	हर्ष से फूला हुआ
हास्यजनक	हँसी उत्पन्न करने वाला
हथसार	हाथी बाँधने की जगह
हँसमुख	जिसके मुख पर सदा हँसी रहे
हृदयहारिणी	हृदय को हरने वाली
हव्य	यज्ञ में आहुति के रूप में छोड़े जाने योग्य
हारित	हरण कराया हुआ
हार्य	जो हरण किया जाने योग्य हो
हितेच्छु, हितैषी	भलाई चाहने वाला
हास्यास्पद	जिसे देखकर या सुनकर हँसी आये
क्षरित	घुला हुआ
क्षत्रिय	जो क्षति से रक्षा करता है
क्षत्रप	छोटा-मोटा राजा, सामंत
क्षीणकाय	बहुत दुबले शरीर का आदमी
क्षम्य	जो क्षमा के योग्य हो
क्षांति	क्षमा किया हुआ
क्षयिष्णु, क्षीयमाण	जिसका क्षय हो रहा हो, होने वाला हो
क्षमार्थी	क्षमा करने वाला
सक्षम	जो किसी कार्य को करने में समर्थ हो
क्षिप्रहस्त	जिसका हाथ तेजी से चले
त्रैमासिक	तीन माह में एक बार होने वाला
त्रयी	तीन व्यक्तियों का समूह
त्राता	रक्षा करने वाला, त्राण देने वाला
त्रिकालदर्शी	भूत, भविष्य और वर्तमान देखने वाला
त्रिताप	दैहिक, दैविक और भौतिक संताप
त्रिविध वायु	जो हवा शीत, मन्द और सुगन्धित हो
त्रिलोक	आकाश, धरती और पाताल
त्रुटिपूर्ण	गलतियों से भरा हुआ
त्रिमूर्ति	ब्रह्मा, विष्णु, महेश
त्रासदी	ऐसा नाटक जो दुखान्त हो
त्रिगुण	सतोगुण, तमोगुण और रजोगुण
त्रस्त	सताया हुआ
ज्ञानी	बहुत अधिक जानने वाला
ज्ञापित	जो बताया जा चुका हो

परीक्षा की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण वाक्यांश

- जिसके बराबर दूसरा न हो — अद्वितीय
- जो क्षमा न किया जा सके — अक्षम्य
- जिसको जीता न जा सके — अजेय
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो — अजातशत्रु
- धरती और आकाश के बीच का स्थान — अंतरिक्ष
- जिसकी गहराई नापी न जा सके — अथाह
- नष्ट न होने वाला — अनश्वर
- जो पहले जन्मा हो — अग्रज
- जिसकी आशा न की गई हो — अप्रत्याशित
- जिसके पास कुछ भी न हो — अकिंचन
- जिसे कहा न जा सके — अकथनीय
- जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो — अतिथि
- जिसका उत्तर न दिया गया हो — अनुत्तरित
- जिसे बुलाया न गया हो — अनाहूत
- जो अनुग्रह से युक्त हो — अनुगृहीत
- अन्य से संबंध न रखने वाला — अनन्य

Pariksha Manthan

- जिसका कोई घर (निकेत) न हो — अनिकेत
- जिसे किसी बात का पता न हो — अनभिज्ञ
- जो कुछ नहीं जानता हो — अज्ञानी/अज्ञ
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ है — अंत्यज
- वह विद्यार्थी जो आचार्य के पास ही निवास करता हो — अंतेवासी
- जिसे करना आवश्यक हो — अनिवार्य
- परम्परा से चली आई कथा — अनुश्रुति
- जिसका भाषा द्वारा वर्णन न किया जा सके — अवर्णनीय/अनिर्वचनीय
- जो सामने न हो — परोक्ष/अप्रत्यक्ष
- जिस पेड़ के पत्ते झड़ गए हों (नोट : अपर्णा 'पार्वती' को भी कहते हैं) — अपर्णा
- व्यर्थ खर्च कर डालने वाला — अपव्ययी
- जो किसी पर अभियोग लगाए — अभियोगी
- जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके — अप्रमेय
- जो व्यक्ति विदेश में रहता हो — प्रवासी
- जो मृत्यु के समीप हो — मरणासन्न/मरणोन्मुख
- सिर से पांव तक — आपादमस्तक
- जिस पर हमला किया गया हो (**नोट** : हमला करने वाले को आक्रांता कहते हैं) — आक्रांत
- जो शोक करने योग्य नहीं हो — अशोक्य
- वह कवि जो तत्काल कविता कर सके — आशुकवि
- जो विधि या कानून के विरुद्ध हो — अवैध
- जो भला-बुरा न समझता हो — अविवेकी
- जो बिना वेतन के कार्य करता हो — अवैतनिक
- जो कार्य अवश्य होने वाला हो — अवश्यंभावी
- जिसका विश्वास न किया जा सके — अविश्वसनीय
- जो धरती फोड़कर जन्मता हो — उद्भिज
- जो छाती के बल चलता हो — उरग
- नियम विरुद्ध कार्य करने वालों की सूची — कालीसूची
- अपने लिए किए हुए उपकार को याद रखने वाला — कृतज्ञ
- अपने लिए किए हुए उपकार को भुला देने वाला — कृतघ्न
- अपना उद्देश्यपूर्ण होने पर संतुष्ट होना — कृतार्थ
- जो स्त्री कविता रचती है — कवयित्री
- अपने काम के बारे में कुछ निश्चय न करने वाला — किंकर्त्तव्यविमूढ़
- जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो — कुलीन
- वह व्यक्ति जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो — कूपमंडूक
- जो नभ में चलता है — खेचर/नभचर
- जो भवन गिर गया हो — खण्डहर
- आकाश को स्पर्श करने वाला — गगनचुंबी
- हाथी की तरह चलने वाली स्त्री — गजगामिनी
- जिसके सिर पर बाल न हो — गंजा
- जिस पर चिह्न लगाया गया हो — चिह्नित
- जो आंखों से सुनता हो — चक्षुस्त्रवा
- जिसके सिर पर चंद्र-कला हो — चंद्रशेखर
- जो अवैध संतान हो — जारज
- पेट की अग्नि — जठराग्नि
- जानने की इच्छा — जिज्ञासा
- तैर कर पार जाने की इच्छा — तितीर्षा
- भूत, वर्तमान और भविष्य को देखने वाला — त्रिकालदर्शी
- जो दो भिन्न भाषियों के बीच अनुवाद करके बात करवाए — दुभाषिया
- जिसे कठिनता से साधा या सिद्ध किया जा सके — दुस्साध्य
- जो कठिनाई से समझ में आता है — दुर्बोध
- अनुचित बात के लिए आग्रह करना — दुराग्रह
- वह व्यक्ति जिसे गोद लिया जाय — दत्तक
- दो बार जन्म लेने वाला — द्विज
- जिसका कोई अर्थ न हो — निरर्थक
- जो नीतिवान हो — नीतिज्ञ
- जिसमें उत्साह न हो — निरुत्साही
- जहां आबादी न हो — निर्जन
- जिसे ईश्वर पर विश्वास न हो — नास्तिक
- रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान — नेपथ्य
- अर्धरात्रि का समय — निशीथ
- जो ममत्व से रहित हो — निर्मम
- जो किसी से डरे नहीं — निडर
- जो गणना के अयोग्य हो — नगण्य
- नीले रंग का कमल (नोट : नीले रंग के कमल को 'नील कमल' भी कहते हैं) — नीलोत्पल
- जो मांस न खाता हो (नोट : 'निरामिष' शब्द 'मांसरहित' के लिए भी प्रयुक्त होता है।) — निरामिष
- जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली हो — प्रतिष्ठित
- किसी बड़े आदमी के निधन की वार्षिक तिथि — पुण्यतिथि
- मार्ग में खाने के लिए भोजन — पाथेय
- संध्या और रात्रि के बीच का समय — प्रदोष
- पति द्वारा छोड़ दी गई पत्नी — परित्यक्ता
- जिसका संबंध पृथ्वी से हो — पार्थिव
- जिसमें दूसरे का उपकार करने की प्रवृत्ति हो — परोपकारी
- गिरा हुआ — पतित
- प्रिय वचन बोलने वाली स्त्री — प्रियंवदा

Pariksha Manthan

- हाथ से लिखी हुई पुस्तक — पांडुलिपि
- जिसमें से आर-पार देखा जा सकता हो — पारदर्शी
- किसी वाद का विरोध करने वाला — प्रतिवादी
- जो आंखों के आगे उपस्थित हो — प्रत्यक्ष
- अनेक भाषाओं को जानने वाला — बहुभाषाविद्
- किसी चीज के तत्व (मर्म) का ज्ञाता — मर्मज्ञ
- जो कम बोलता हो — मितभाषी
- मोक्ष की इच्छा रखने वाला — मुमुक्ष
- जो पृथ्वी के भीतर का ज्ञान रखता हो — भूगर्भवेत्ता
- जिसने मृत्यु को जीत लिया हो — मृत्युंजय
- मरने को इच्छुक — मुमूर्ष
- जो युद्ध में स्थिर रहता हो — युधिष्ठिर
- पुरानी पीढ़ी द्वारा नई पीढ़ी को मिलने वाली सम्पत्ति — रिक्थ
- बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाने वाला गीत — लोरी
- बाहर के तापमान का असर रोकने के लिए की जानी वाली व्यवस्था — वातानुकूल
- व्याकरण का ज्ञाता — वैयाकरण
- जो अधिक बोलता हो — वाचाल
- विष्णु का उपासक — वैष्णव
- जिस पुरुष की पत्नी साथ में नहीं — विपत्नीक
- जिस स्त्री का पति जीवित न हो — विधवा
- वह कन्या जिसका विवाह करने का वचन दे दिया गया हो — वाग्दत्ता
- जिसकी पत्नी मर गई हो — विधुर
- जिसकी ग्रीवा सुंदर हो — सुग्रीव
- जो पसीने से उत्पन्न हो — स्वेदज
- जो सव्य (बाएं) हाथ से भी काम करता हो — सव्यसाची
- जो आप से उत्पन्न हुआ हो — स्वयंभू
- वह स्त्री जिसका पति जीवित हो — सधवा
- न बहुत ठंडा, न बहुत गर्म — समशीतोष्ण
- जो आसानी से प्राप्त किया जा सके — सहज-सुलभ
- सबको समान भाव से देखने वाला — समदशा
- जिसे अक्षर ज्ञान हो, लिखना-पढ़ना जानता हो — साक्षर
- हवन में जलाने वाली लकड़ी — समिधा
- अच्छी आंखों वाली स्त्री — सुनैना
- वह जिसका शोषण किया जाए — शोषित
- हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला आसन — हौदा
- जो सदा दूसरों पर संदेह करता है — शंकालु
- जो भू को धारण करे — भूधर
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो — अगोचर/इंद्रियातीत
- ऐसी जीविका जो आकस्मिक हो — आकाशवृत्ति
  (नोट : 'अनिश्चित वृत्ति' के लिए 'आकाशवृत्ति' शब्द प्रयुक्त होता है।)
- दही, दूध, घृत, शर्करा एवं मधु मिश्रित वह पदार्थ, जो देवताओं और भगवान के स्नान हेतु बनाया जाता है — पंचामृत
- जो बहुत आगे तक की बात सोच कर काम करता है — अग्रसोची
- वनस्पति का आहार करने वाला — वनस्पत्याहारी
- संदेश ले जाने वाला — संदेशवाहक
- अपने मत को मानने वाला — स्वमतावलंबी
- घुटने तक बांह वाला — अजानबाहु
- जो स्त्री सूर्य भी न देख सके — असूर्यंपश्या
- जो कभी नहीं मरता — अमर्त्य
- जो केवल फल खाकर रहता हो — फलाहारी
- जहां पृथ्वी और आकाश मिले दिखाई पड़ें — क्षितिज
- ग्रंथ के वे बचे हुए अंश, जो प्रायः अंत में जोड़े जाते हैं — परिशिष्ट
- जो संसार का संहार करता हो — संहारक
- जहां तीन नदियों का मिलन हो — त्रिवेणी
  (नोट : दो नदियों के मिलन का स्थल 'संगम' कहलाता है)
- जिसको जाना नहीं जा सकता — अज्ञेय
- दिशाएं ही जिसका वस्त्र हैं — दिगंबर
- अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला — स्वयंसेवक
- बिना पलक गिराए हुए — निष्पलक
- एक मां के पेट से उत्पन्न — सहोदर
- जिसके चार पद हैं — चतुष्पद
- जिसकी चार भुजाएं हों — चतुर्भुज
- जो नीतिवान हो — नीतिज्ञ
- जिसका स्वर्गवास हो गया हो — स्वर्गवासी/दिवंगत
- जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो — परीक्षित

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यांश के लिए दिए गये विकल्पों में से सही शब्द का चयन करिये—

1. जिसके पार देखा जा सके—
   (क) पारंगत (ख) दर्शनीय
   (ग) द्रष्टय (घ) पारदर्शी
2. जिसे ईश्वर में विश्वास हो।
   (क) नास्तिक (ख) आस्तिक
   (ग) साधक (घ) सर्वव्यापी
3. जिसका कारण पृथ्वी है या जो पृथ्वी से संबद्ध है।
   (क) पार्थिव (ख) प्राकृतिक
   (ग) वसुंधरा (घ) लौकिक

Pariksha Manthan

4. अधिक या व्यर्थ बोलने वाला।
(क) बहुभाषी (ख) दुभाषी
(ग) वाचाल (घ) गवाक्ष

5. जो स्त्री के वशीभूत या उसके स्वभाव का है।
(क) किन्नर (ख) स्त्रैण
(ग) नारीत्व (घ) सधवा

6. जो आगे की बात सोचता है।
(क) अग्रदर्शी (ख) दूरदर्शी
(ग) अग्रशोची (घ) अग्रदूत

7. जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो।
(क) स्वयंभू (ख) स्वजन
(ग) स्वतःस्फूर्त (घ) स्वनामधन्य

8. जो क्षमा पाने योग्य है।
(क) अक्षम्य (ख) क्षम्य
(ग) पात्र (घ) मीनाक्षी

9. जिसका कोई नाथ न हो।
(क) अनाथ (ख) अनहद
(ग) अगाध (घ) अनश्वर

10. जो किए गए उपकारों को नहीं मानता है।
(क) कृतज्ञ (ख) कृतघ्न
(ग) कृपालु (घ) शालीन

11. जो दो बार जन्म लेता है।
(क) द्विज (ख) दिवंगत
(ग) दंभी (घ) सनातन

12. जिसकी उपमा न हो।
(क) अप्रतिम (ख) प्रातिमान
(ग) प्रख्यात (घ) अनुपम

13. जो सब कुछ जानता है।
(क) अल्पज्ञ (ख) सर्वज्ञ
(ग) सर्वत्र (घ) शंकालु

14. जो सबमें व्याप्त है
(क) विभु (ख) ईशान
(ग) ऋतुराज (घ) सार्वजनिक

15. जो प्रतिकूल पक्ष का हो।
(क) वादी (ख) प्रतिपक्षी
(ग) प्रतिकार (घ) प्रत्याशी

16. जिस पर अभियोग लगाया गया हो।
(क) अभियोजन (ख) अभियुक्त
(ग) आकांक्षी (घ) नागेश्वर

17. एक या अकेले आदमी का अधिकार।
(क) मतैक्य (ख) एकल
(ग) एकांकी (घ) एकाधिकार

18. वेतन न लेने या पाने वाला।
(क) पारिश्रमिक (ख) पारितोषिक
(ग) अवैतनिक (घ) धर्मार्थ

19. अनुचित यौन संबंध बनाने वाला।
(क) व्यभिचारी (ख) अपराधी
(ग) कुमार्गी (घ) हठधर्मी

20. जल-स्थल दोनों जगह रह सकने वाला।
(क) जलचर (ख) नभचर
(ग) जलज (घ) जलभूमिया

21. जिस व्यक्ति का कोई अंग टूटा या खराब हो।
(क) लंगड़ा (ख) लूला
(ग) विकलांग (घ) अवयस्क

22. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ।
(क) ऊर्ध्वोच्चारित (ख) कोलाहल
(ग) क्रंदन (घ) बड़बोला

23. जहां किसी बात का खतरा या डर न हो।
(क) अज्ञात (ख) निरापद
(ग) निर्विघ्न (घ) निरंकुश

24. हाथ की कारीगरी।
(क) जादू (ख) हस्तकौशल
(ग) हस्तांतरण (घ) हस्तनिर्मित

25. वह रोग जिसमें सूर्य की तेज किरणों के कारण दिन में बहुत कम दिखाई देता है।
(क) रतौंधी (ख) मधुमेय
(ग) रक्तचाप (घ) दिनौंधी

26. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो।
(क) दुर्दम्य (ख) दुर्दांत
(ग) दुष्कर (घ) दंडनीय

27. जिसे अपने कर्त्तव्य का कोई ज्ञान न हो।
(क) अज्ञान (ख) अल्पज्ञ
(ग) किंकर्तव्यविमूढ़ (घ) कदाचित

28. जो व्याकरण अच्छी तरह जानता हो।
(क) वैयाकरण (ख) व्यंजना
(ग) वितंडी (घ) पुरोधा

29. जिसके सिर पर चंद्रमा है।
(क) सुधांशु (ख) शिखा
(ग) चंद्रशेखर (घ) चांदनी

30. जो कुछ नहीं जानता है।
(क) अज्ञ (ख) विज्ञ
(ग) सुविज्ञ (घ) श्लेष

31. धरती और आकाश के बीच का स्थान।
(क) त्रिशंकु (ख) मेघ
(ग) अंतरिक्ष (घ) आंशिक

32. जिसे बुलाया न गया हो।

Pariksha Manthan

(क) आहूत (ख) अनाहूत
(ग) आत्मज (घ) अतिथि

33. जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा न हो।
(क) गोचर (ख) अगोचर
(ग) शैथिल्य (घ) अनुभूति

34. जिसने विवाह न किया हो।
(क) अविवाहित (ख) विधुर
(ग) सुदर्शन (घ) महिषी

35. जो मोक्ष पाना चाहता हो।
(क) मृगनयनी (ख) मुमुक्षु
(ग) मुक्तेश्वर (घ) मुक्तांगन

36. जिसके समान कोई दूसरा न हो।
(क) अतुलनीय (ख) अज्ञेय
(ग) अद्वितीय (घ) आगत

37. जो आदर करने योग्य हो।
(क) पूजनीय (ख) आदरणीय
(ग) श्रद्धेय (घ) मान्यवर

38. जो संसार का संहार करता हो।
(क) प्रलयंकर (ख) नश्वर
(ग) अनादि (घ) पराकाष्ठा

39. जो पहले कभी घटित न हुआ हो।
(क) अपूर्व (ख) अभूतपूर्व
(ग) अभिनव (घ) अघटित

40. जहां नदियों का मिलन हो।
(क) समागम (ख) समन्वय
(ग) संगम (घ) सेतु

41. जो दूसरों के अधीन हो।
(क) पराधीन (ख) स्वायत्त
(ग) सेवक (घ) मुकुल

42. जो अभी तक न आया हो।
(क) प्रतीक्षित (ख) अनागत
(ग) आगंतुक (घ) पाहुन

43. जिसे कठिनाई से प्राप्त किया जा सके।
(क) दुष्प्राप्य (ख) दुर्गम
(ग) दुरूह (घ) दुर्भक्ष

44. मूल्य घटाने का कार्य।
(क) संक्रमण (ख) अवमूल्यन
(ग) दुर्लभ (घ) कीमती

45. जो काल से परे हो।
(क) कालान्तर (ख) मध्यान्तर
(ग) अवान्तर (घ) कालातीत

46. जिसकी परिभाषा देना संभव न हो।
(क) अपरिभाष्य (ख) भाषिक
(ग) वाच्य (घ) परिभाषित

47. ग्रंथ के वे बचे हुए अंश जो प्रायः अंत में जोड़े जाते हैं।
(क) शेष (ख) अशेष
(ग) अविरल (घ) परिशिष्ट

48. जो पीछे चलता हो।
(क) अग्रज (ख) अग्रदूत
(ग) अनुचर (घ) अजेय

49. जो भयभीत न होता हो।
(क) भयंकर (ख) निर्भय
(ग) उदय (घ) आकुल

50. जिसकी पत्नी जीवित न हो।
(क) ब्रह्मचारी (ख) विधुर
(ग) विखंडित (घ) सधवा

51. जो बीत चुका हो।
(क) व्यतीत (ख) अतीत
(ग) प्रतीत (घ) अघटित

52. जो दिखाई न पड़े।
(क) दृश्य (ख) दर्शनीय
(ग) श्रव्य (घ) अदृश्य

53. जिसे भुलाया न जा सके।
(क) भुलक्कड़ (ख) अविस्मरणीय
(ग) विश्वसनीय (घ) जटिल

54. जहां पृथ्वी और आकाश मिले दिखाई दें।
(क) क्षितिज (ख) अंतरिक्ष
(ग) आकाशगंगा (घ) अभयारण्य

55. जिसमें ममता न हो।
(क) वत्सला (ख) रूखा
(ग) निर्मम (घ) निष्क्रिय

56. जो नीचे लिखा गया है।
(क) निम्नलिखित (ख) हस्तलिखित
(ग) अलिखित (घ) अपठित

57. जानने की इच्छा रखने वाला।
(क) जानकार (ख) जिज्ञासु
(ग) जिजीविषा (घ) प्रकान्तर

58. जिसका वर्णन न किया जा सके।
(क) वर्णनातीत (ख) अतीत
(ग) व्याख्यान (घ) अतुल

59. जो कभी नहीं मरता।
(क) अमर्त्य (ख) आग्रह
(ग) जीवनलीला (घ) जीवाश्म

60. जो ऊपर कहा गया है।
(क) अधोलिखित (ख) कथ्यरूप
(ग) उपर्युक्त (घ) उपयुक्त

61. जो केवल फल खाकर रहता हो।
(क) जलधारी (ख) निराहारी

Pariksha Manthan

(ग) भुक्खड़ (घ) फलाहारी

62. जिसकी सीमा न हो।
(क) असीम (ख) सीमांत
(ग) परिक्षेत्र (घ) परिधि

63. गोद में सोने वाली स्त्री।
(क) कुलटा (ख) कुलक्षिणी
(ग) व्यभिचारिणी (घ) अंकशायिनी

64. जो शत्रु की हत्या करता है।
(क) अजातशत्रु (ख) शत्रुघ्न
(ग) आत्महंता (घ) निर्दयी

65. हिसाब-किताब की जांच करना।
(क) पारदर्शिता (ख) निरीक्षण
(ग) अंकेक्षण (घ) टंकण

66. शरण पाने की इच्छा रखने वाला।
(क) शरणार्थी (ख) शरणागत
(ग) शरणदाता (घ) शरण स्थल

67. सबके हृदय की बात जानने वाला।
(क) सर्वज्ञाता (ख) सर्वज्ञ
(ग) अंतर्यामी (घ) आलोचक

68. जिसे कठिनाई से धारण किया जा सके।
(क) दुर्वह (ख) दुर्भार
(ग) दुर्भक्ष (घ) दुर्गम

69. पुरुष एवं स्त्री का जोड़ा
(क) युगल (ख) दम्पति
(ग) युग्म (घ) पति-पत्नी

70. अंडे से जन्म लेने वाला।
(क) वंशज (ख) पिंडज
(ग) अंडज (घ) खंदक

71. दूसरा पद्य या उक्ति या रीत्यानुसार किया गया पद्य पाठ।
(क) काव्यपाठ (ख) अंत्याक्षरी
(ग) गायन (घ) अपाल

72. आयु में बड़ा व्यक्ति।
(क) पूजनीय (ख) ज्येष्ठ
(ग) वरिष्ठ (घ) कनिष्ठ

73. किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा।
(क) गाथा (ख) महागाथा
(ग) लघुकथा (घ) अंतःकथा

74. हमेशा रहने वाला।
(क) पार्थिव (ख) शाश्वत
(ग) समसामयिक (घ) प्राणदा

75. जिसे गोद में स्थान मिला हो।
(क) नूतन (ख) अंकस्थ
(ग) अतिरेक (घ) आरूढ़

76. वह प्रेरणा जो मन में स्वतः उत्पन्न होती है।
(क) अंतःप्रेरणा (ख) प्रेरक
(ग) प्रायोज्य (घ) अनुभूति

77. जिसकी गर्दन सुन्दर है।
(क) सुग्रीव (ख) दुदर्शन
(ग) सुगत (घ) सुगर्दन

78. मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान।
(क) अंतर्ज्ञान (ख) आलोक
(ग) आंतरिक (घ) विज्ञान

79. पलकों को गिराए बगैर
(क) अपलक (ख) निर्निमेष
(ग) उन्मीलित (घ) निमीलित

80. देश के अंदर होने वाला या उससे संबंधित।
(क) देशकाल (ख) देशांतर
(ग) अंतर्देशीय (घ) अन्तर्राष्ट्रीय

81. पत्र अथवा प्रश्नादि के उत्तर की अपेक्षा रखने वाला।
(क) उत्तराधिकारी (ख) उत्तरापेक्षी
(ग) उत्तरीय (घ) उत्तरायणी

82. जो तृप्त नहीं हुआ हो।
(क) अतृप्त (ख) तृष्णा
(ग) चारण (घ) अतिक्रांत

83. विधान मंडल द्वारा पारित या स्वीकृत विधि।
(क) अध्यादेश (ख) विनिमय
(ग) नियम (घ) अधिनियम

84. जिसकी थाह लगाना कठिन है।
(क) अकूत (ख) अपार
(ग) अथाह (घ) यथोचित

85. हर काम को देर से करने वाला।
(क) विलम्बी (ख) अदूरदर्शी
(ग) दीर्घसूत्री (घ) दीर्घदर्शी

86. जिसकी तुलना नहीं की जा सकती।
(क) अमूल्य (ख) अतुलनीय
(ग) उत्तरोत्तर (घ) अपेक्षित

87. दो पर्वतों के बीच की भूमि।
(क) बेसिन (ख) उपत्यका
(ग) द्रोण (घ) घाटी

88. जिसका निर्णय न हुआ हो।
(क) अनिर्णीत (ख) अभिज्ञात
(ग) विचारणीय (घ) प्रकाशनाधीन

89. जो आँखों के सामने घटित न हो।
(क) प्रत्यक्ष (ख) परोक्ष
(ग) अपरोक्ष (घ) अज्ञात

90. जिसका पार न पाया जा सके।
(क) अपार (ख) अकिंचन

Pariksha Manthan

(ग) पारदर्शी (घ) प्रमाणिक

91. जिसकी आलोचना की जाए।
(क) आलोचक (ख) आलोचित
(ग) आलोच्य (घ) समालोचना

92. भावुक हृदय में सुख-दुख की महज कोमल अनुभूति।
(क) सूचना (ख) संवेदना
(ग) सांत्वना (घ) सहानुभूति

93. वह भूमि जो उपजाऊ हो।
(क) ऊसर (ख) बंजर
(ग) उर्वरा (घ) वनांचल

94. निश्चित समय में पत्र का उत्तर न प्राप्त होने की दशा में अनुबोधक के रूप में भेजा जाने वाला पत्र।
(क) अनुस्मारक (ख) परिपत्र
(ग) प्रतिवेदन (घ) ज्ञापन

95. जिसका संबंध अग्नि से हो।
(क) अग्निहोत्री (ख) अग्निहोत्र
(ग) अग्निपथ (घ) आग्नेय

96. जो किसी का हित चाहता हो।
(क) हितभाषी (ख) हितैषी
(ग) अहितकारी (घ) हितकारी

97. ऊपर चढ़ने वाला।
(क) आरोही (ख) धावक
(ग) उपर्युक्त (घ) उन्नत

98. ईर्ष्या के योग्य।
(क) ईर्ष्यालु (ख) कृपालु
(ग) ईर्ष्या (घ) ईर्षित

99. जिसने देश के साथ विश्वासघात किया हो।
(क) विद्रोही (ख) विश्वासघाती
(ग) देशद्रोही (घ) बागी

100. अचानक घटित होने वाला।
(क) आकस्मिक (ख) आस्तिक
(ग) आधृत (घ) अविकल

101. मनोविनोद के लिए सैर करने वाला।
(क) यायावर (ख) पर्यटक
(ग) यात्री (घ) परिव्राजक

102. जिसने ऋण चुका दिया हो।
(क) मुक्ताश (ख) मुक्ति
(ग) उऋण (घ) दिवालिया

103. जो सदा दूसरों पर संदेह करता है।
(क) ईर्ष्यालु (ख) शंकालु
(ग) दयालु (घ) झगड़ालू

104. सूर्य जिस स्थान से निकलता है।
(क) अस्ताचल (ख) क्षितिज
(ग) उदयाचल (घ) उल्कापात

105. किसी के प्रति उदारता एवं कृपापूर्वक किया जाने वाला व्यवहार।
(क) अनुग्रह (ख) विग्रह
(ग) निग्रह (घ) अवग्रह

106. गंगा से उत्पन्न या उससे संबंधित।
(क) गंगाधर (ख) भगीरथ
(ग) गांगेय (घ) गवाक्ष

107. चारों ओर से घेरने या आच्छादित करने वाला।
(क) परिभू (ख) परिधि
(ग) परिभव (घ) परिभूत

108. संध्या का वह काल जब गायें चर कर लौटती हैं।
(क) उषाकाल (ख) अरुणोदय
(ग) निशांत (घ) गोधूलि

109. रक्त से सना हुआ।
(क) रक्तस्राव (ख) रक्ताक्त
(ग) रक्ताभ (घ) रक्तिम

110. राजाओं और सामन्तों के पीछे-पीछे चलने वाला और उनका गुणगान करने वाला।
(क) विदूषक (ख) नट
(ग) सिपहसालार (घ) चारण

111. एक प्रकार का ज्वर, जिसमें वात, पित्त और कफ तीनों कुपित होते हैं।
(क) अनुपात (ख) सन्निपात
(ग) प्रपात (घ) निपांत

112. किसी संस्था या सार्वजनिक आयोजन के लिए एकत्र की जाने वाली धनराशि
(क) चंदा (ख) धंधा
(ग) वित्त पोषण (घ) कोश

113. अनुशासनात्मक कार्यवाही की प्रक्रिया के फलस्वरूप पद से नीचे उतारना।
(क) प्रोन्नति (ख) पदावनति
(ग) पदावधि (घ) पदोन्नति

114. किसी वस्तु की छोटी-से-छोटी खराबी खोजने वाला।
(क) निंदक (ख) समालोचक
(ग) छिद्रान्वेषी (घ) चीवर

115. किसी के पास रखी दूसरे की वस्तु।
(क) वर्तिका (ख) बपौती
(ग) थाथी (घ) परवर्ती

116. जीने की इच्छा।
(क) जिजीविषा (ख) जितेन्द्र
(ग) कायाकल्प (घ) ज्वलित

117. किसी साहित्यिक कृति की समालोचना करने वाला।
(क) परीक्षक (ख) समीक्षक

Pariksha Manthan

(ग) प्रेक्षक (घ) उपेक्षक

118. किसी नदी या सागर के तट पर स्थित भूमि।
(क) किनारा (ख) टापू
(ग) मरुस्थल (घ) तटवर्ती

119. शीघ्र प्रसन्न होने वाला।
(क) आशुतोष (ख) आनन्दी
(ग) संतोषी (घ) शीघ्र संतोषी

120. जो अधीर न हो।
(क) तटस्थ (ख) सुधीर
(ग) सुदामा (घ) सुशील

121. जिसका त्याग नहीं किया जाए।
(क) अत्याग (ख) अपरिहार्य
(ग) अनिर्वचनीय (घ) वीतरागी

122. जो तर्क के आधार पर ठीक सिद्ध हो।
(क) तार्किक (ख) अकाट्य
(ग) तर्कसंगत (घ) तत्वज्ञानी

123. दूर-दूर तक बिखरा-छितरा हुआ।
(क) विकीर्ण (ख) संकीर्ण
(ग) आकीर्ण (घ) उत्कीर्ण

124. तीर चलाने में कुशल।
(क) तूणीर (ख) रणबांकुर
(ग) जांबाज (घ) तीरंदाज

125. संकीर्ण विचारों का व्यक्ति।
(क) धूर्त (ख) दकियानूस
(ग) तेजस्वी (घ) तत्वज्ञ

126. धुएं के रंग का धुंधला।
(क) धूमिल (ख) धूल
(ग) वाष्पित (घ) धुंध

127. नमस्कार के योग्य
(क) प्रणाम (ख) निवेदित
(ग) नमस्य (घ) नास्तिक

128. जहां एक ही शब्द के अनेक रूप विभिन्न प्रतिलिपियों में पाये जाएं
(क) नामान्तर (ख) पाठान्तर
(ग) समानान्तर (घ) कालान्तर

129. प्रिय बोलने वाली स्त्री।
(क) सुशीला (ख) साध्वी
(ग) प्रियम्वदा (घ) पद्मा

130. जिसका जन्म पिण्ड से हो।
(क) अंडज (ख) पिंडज
(ग) पृष्टव्य (घ) सहोदर

131. ऐतिहासिक युग से पूर्व का
(क) समयातीत (ख) मध्यकालीन
(ग) अतीत (घ) प्रागैतिहासिक

132. जो आसानी से झुकाया जा सके।
(क) नमनीय (ख) विनम्र
(ग) विद्रूप (घ) नातिलघु

133. ऐसा दृश्य जिसे देखकर हंसा जाए।
(क) सरकस (ख) हृदय विदारक
(ग) प्रहसन (घ) धारावाहिक

134. समुद्र की आग
(क) अग्निदूत (ख) बड़वानल
(ग) कामाग्नि (घ) मंदाग्नि

135. जो एक साथ बहुत से काम करता हो
(क) नट (ख) नटवर
(ग) बहुधंधी (घ) बहुआयामी

136. मनन करने की इच्छा
(क) मीमांसा (ख) मनगढ़ंत
(ग) मनोदशा (घ) मौलिक

137. मछली की तरह आंखों वाली स्त्री।
(क) मत्स्यकन्या (ख) मीनाक्षी
(ग) मयूराक्षी (घ) मृगनयनी

138. तोड़ने वाला
(क) आक्रांता (ख) आततायी
(ग) भंजक (घ) खंजर

139. क्रम के अनुसार
(क) व्यतिक्रम (ख) कथाक्रम
(ग) कथ्य (घ) यथाक्रम

140. युद्ध की इच्छा
(क) युयुत्सा (ख) जुगुप्सा
(ग) प्रतिशोध (घ) प्रतिक्रिया

141. अत्यंत रूपवती स्त्री
(क) भार्या (ख) रूपसी
(ग) विदुषी (घ) कवयित्री

142. अभिनय द्वारा जीविका प्राप्त करनेवाला
(क) रंगोपजीवी (ख) श्रमजीवी
(ग) मसिजीवी (घ) लिप्सा

143. संसार जिसे माने
(क) सांसारिक (ख) लोकमान्य
(ग) लोकायत (घ) लोकमत

144. जिसकी रक्षा की जानी चाहिए
(क) रक्षणीय (ख) भक्षणीय
(ग) नारकीय (घ) असुरक्षित

145. सौतेली मां
(क) जननी (ख) विमाता
(ग) विसंगति (घ) विधवा

Pariksha Manthan

146. एक स्थान पर केन्द्रित शक्तियों और अधिकारों को क्रमशः बांट देना
(क) विच्छेदन (ख) विभक्ति
(ग) विकेन्द्रीकरण (घ) विस्थापन

147. वर देने वाला
(क) वरदान (ख) वरद
(ग) वारिधि (घ) वरुण

148. वन में उत्पन्न
(क) जंगली (ख) जंजाल
(ग) वनज (घ) वानिकी

149. हृदय को प्रसन्न करने वाला
(क) हृदयंगम (ख) हृदयरंजक
(ग) हृदयहारिणी (घ) हृदयविदारक

150. जो बताया जा चुका हो।
(क) ज्ञापित (ख) प्रायोजित
(ग) आयोजित (घ) ज्ञानी

नीचे दिये गये वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश के लिए शब्दों के चार विकल्प दिये गये हैं। आपको सही विकल्प चुनना है।

151. उनका बेचैनी का भाव देखकर मैंने उन्हें जाने दिया।
(क) अतृप्त (ख) अकुलाहट
(ग) पीड़ा (घ) प्रसन्नता

152. मानवजी के संस्मरण में जो बातें कही नहीं गई हैं, मुझे वे भी पता हैं।
(क) अनकही (ख) अलिखित
(ग) आकंठ (घ) प्रारब्ध

153. मधुकर का कहानी संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है।
(क) अनूदित (ख) अतिशय
(ग) अप्रकाशित (घ) प्रकाशनाधीन

154. विनोद को उस विद्यालय में इम्तहान लेने वाला बन कर जाना है।
(क) अध्यापक (ख) विशेषज्ञ
(ग) समन्वयक (घ) परीक्षक

155. ऐसे लोग कम ही होंगे जिनका शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ है।
(क) शत्रुघ्न (ख) शत्रुहंता
(ग) अजातशत्रु (घ) आदरणीय

156. मेरे छोटे भाई में अतिथि सत्कार की भावना है।
(क) दुर्भावना (ख) आतिथ्य
(ग) अगुवानी (घ) स्वागताकांक्षी

157. बहुत आगे बढ़ने की आकांक्षा हर प्रतिभाशाली व्यक्ति में पाई जाती है।
(क) उच्चाकांक्षा (ख) इच्छा
(ग) अभिलाषा (घ) आशा

158. ईश्वर का कोई आकार नहीं होता।
(क) साकार (ख) निर्विकार
(ग) निराकार (घ) सरोकार

159. तुम कौन-सा विषय लोगे, यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर करता है।
(क) ऐच्छिक (ख) ऐक्य
(ग) आत्मनिर्भर (घ) एकांगी

160. आंखों के सामने घटित घटना पर विश्वास तो करना ही पड़ेगा।
(क) परोक्ष (ख) प्रत्यक्ष
(ग) प्रत्येक (घ) प्रारूपतः

161. अधिक खर्च करने वाला अक्सर आर्थिक तंगी का शिकार रहता है।
(क) मितव्ययी (ख) कृपण
(ग) दानी (घ) खर्चीला

162. अपना ही स्वार्थ देखने वाला व्यक्ति कभी अच्छा दोस्त साबित नहीं होता है।
(क) कृतघ्न (ख) स्वार्थी
(ग) उपकृत (घ) कृतज्ञ

163. उस दृश्य का चित्र खींचना इतना आसान न था।
(क) चलचित्र (ख) अभिव्यक्त
(ग) चित्रण (घ) चितचोर

164. सेना के ठहरने की जगह अभी तय नहीं की गई है।
(क) सैन्य क्षेत्र (ख) सीमा
(ग) रणभूमि (घ) छावनी

165. वर्माजी का बड़ा बेटा जन्म से अंधा है।
(क) विकलांग (ख) जन्मांध
(ग) नेत्रहीन (घ) दृष्टिहीन

166. आप ही बताएं कि मेरे लिए छोड़ देने योग्य क्या है।
(क) त्यागी (ख) अयोग्य
(ग) त्याज्य (घ) शाश्वत

167. जिसकी धर्म में निष्ठा हो, वह नास्तिक कैसे हो सकता है।
(क) आस्तिक (ख) धर्मनिष्ठ
(ग) कर्त्तव्यनिष्ठ (घ) धर्मान्ध

168. जो नीति जानता है, वह जीवन में सफल रहता है।
(क) नीतिज्ञ (ख) राजनीतिक
(ग) दूरदर्शी (घ) युगदृष्टा

169. जिनको पुरस्कार प्राप्त हुआ है, वे मेरे आदरणीय गुरुजी हैं।
(क) तिरस्कृत (ख) पुरस्कृत
(ग) अलंकृत (घ) शोभित

170. गिरा हुआ इनसान संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।
(क) पतित (ख) पावन
(ग) धूर्त (घ) हठी

171. मेरे काम में बाधा डालने वाला कौन है?
(क) दुष्ट (ख) परोक्ष
(ग) बाधक (घ) भंजक

Pariksha Manthan

172. भाग्य का उदय जीवन में एक बार ही होता है।
(क) भाग्योदय (ख) अरुणोदय
(ग) उदय (घ) भाग्यविधाता

173. इस महान आत्मा के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
(क) महापुरुष (ख) महात्मा
(ग) संत (घ) मनस्वी

174. देश के कर्णधारों को वही कार्य करना चाहिए, लोग जिससे सहमत हों।
(क) लोकाचार (ख) लोकलाज
(ग) असहमत (घ) लोकसम्मत

175. हमें व्यर्थ की बहस सें बचना चाहिए।
(क) बहसतलब (ख) जिरह
(ग) वितंडावाद (घ) बकझक

नीचे दिए गए शब्दों के विकल्प के रूप में चार वाक्यांश दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन करिए।

176. अकथनीय
(क) जो कहा जा चुका है
(ख) जो भविष्य में कहा जाएगा
(ग) जो कहा न जा सके
(घ) कहने योग्य

177. अतिशयोक्ति
(क) ऐसी बात जो बढ़ा-चढ़ा कर कही गयी हो
(ख) सामान्य बातचीत
(ग) ज्यादा बोलना
(घ) बात को घुमा-फिरा कर कहना

178. अन्योन्याश्रित
(क) किसी पर आश्रित न होना
(ख) किसी पर आश्रित होना
(ग) एक-दूसरे पर आश्रित होना
(घ) किसी को आश्रित बना देना

179. अनावृष्टि
(क) बहुत पानी बरसना
(ख) वर्षा का अभाव
(ग) बाढ़ का प्रकोप
(घ) बाढ़ के पानी को बांध बनाकर रोकना

180. प्रत्युत्पन्नमति
(क) जो फिर से उत्पन्न हुआ हो
(ख) उत्तर न देने की क्षमता
(ग) जिसकी बुद्धि में नई-नई बात उत्पन्न होती हो
(घ) जो तत्काल उत्तर दे सके

181. अन्यमनस्क
(क) जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो
(ख) जो हमेशा उदास रहता हो
(ग) जो मनमानी करता हो
(घ) जो इशारों में बात करे

182. युयुत्सु
(क) सदा अमर रहने वाला
(ख) युद्ध करने का इच्छुक
(ग) दूसरों को हंसाने वाला
(घ) लड़ाई में शहीद होने वाला

183. अवश्यंभावी
(क) बहुत जरूरतमंद (ख) आवश्यकता से अधिक
(ग) जो व्यतीत हो चुका है (घ) जो अवश्य होने वाला हो

184. अन्तेवासी
(क) अंत तक रहने वाला
(ख) किसी विद्या को अंत तक पढ़ने वाला
(ग) गुरु के समीप रहने वाला शिष्य
(घ) अन्य स्थान पर रहने वाला

185. इंद्रियातीत
(क) जो इंद्रियों की पहुंच से बाहर हो
(ख) जो इंद्रियों को वश में रखता हो
(ग) जो अपनी इच्छा से सारे काम करे
(घ) जिसका अतीत अच्छा न हो

186. उल्लेखनीय
(क) जो लिखा गया हो
(ख) जो मौखिक कहा जाए
(ग) जिसे रेखांकित किया जाए
(घ) जिसका उल्लेख करना आवश्यक है

187. रसास्वादन
(क) किसी विषय में मस्त रहना
(ख) किसी रस का उपभोग करना
(ग) किसी रस से भरा होना
(घ) किसी बात में रुचि लेना

188. औरस
(क) दत्तक पुत्र
(ख) नाजायज औलाद
(ग) विवाहिता पत्नी से उत्पन्न पुत्र
(घ) रसहीन होना

189. अतिवृष्टि
(क) अत्यधिक वर्षा होना (ख) अत्यधिक विचार करना
(ग) सूखा पड़ना (घ) अत्यधिक संतुष्ट होना

190. कुलांगार
(क) जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो
(ख) अपने ही कुल का नाश करने वाला व्यक्ति
(ग) कुल में पैदा होने वाला यशस्वी व्यक्ति
(घ) पथभ्रष्ट व्यक्ति

Pariksha Manthan

191. यायावर
(क) एक स्थान पर टिक कर न रहने वाला
(ख) निरुद्देश्य घूमने वाला
(ग) किसी भी वस्तु को अकस्मात प्रस्तुत करने वाला
(घ) जिसके जीवन का कोई निश्चित उद्देश्य न हो

192. क्षणभंगुर
(क) क्षणभर में नष्ट होने वाला (ख) क्षणिक सुख
(ग) क्षमा करने योग्य (घ) क्षेत्रीयता का भाव

193. पार्थिव
(क) जिसका संबंध प्रथा से हो
(ख) जिसका संबंध पृथ्वी से हो
(ग) जिसका संबंध ईश्वर से हो
(घ) जिसका संबंध मनुष्यों से हो

194. उल्कापात
(क) गर्भ में पल रहे शिशु की मौत
(ख) घोर विपत्ति का आना
(ग) आचरण बदल जाना
(घ) आकाश से किसी जलते हुए पिण्ड का गिरना

195. प्रसूता
(क) वह स्त्री जिसने निकट भूत में बच्चे को जन्म दिया हो
(ख) वह स्त्री जो बच्चे को जन्म देने की इच्छा रखती हो
(ग) वह स्त्री जो गर्भ में शिशु को पाल रही हो
(घ) वह स्त्री जो बच्चे को जन्म देने वाली हो

196. लौकिक
(क) जो इस लोक की बात हो
(ख) एक समान दिखाई देने वाला
(ग) लौकी से बना
(घ) पकड़ लिया गया

197. पृष्टव्य
(क) बीता हुआ
(ख) पूछने योग्य
(ग) पीछे देने योग्य
(घ) जिससे प्रश्न पूछे जा सकें

198. जिजीविषु
(क) बहन का पति
(ख) जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
(ग) अधिक समय तक जीते रहने को इच्छुक
(घ) जो मृत्यु की कामना कर रहा हो

199. दुरभिसंधि
(क) दुष्ट उद्देश्य से की जाने वाली मंत्रणा या साजिश
(ख) दूर के लोगों से मेल-मिलाप बढ़ाने की प्रक्रिया
(ग) कई देशों के बीच हुआ समझौता
(घ) जिसे करना बहुत कठिन हो

200. मनोमालिन्य
(क) दो दिलों का मिलन
(ख) मन के मलिन होने की स्थिति या भाव
(ग) मन और उसकी अवस्थाओं तथा क्रियाओं का अध्ययन
(घ) मन के किसी ओर प्रवृत्त होने या उससे हटने की अवस्था

201. 'पेट की अग्नि' को कहते हैं—
(क) दावाग्नि (ख) बड़वाग्नि
(ग) जठराग्नि (घ) मन्दाग्नि

202. 'जो किए गए उपकारों को मानता है' के लिए शुद्ध शब्द है—
(क) कृतघ्न (ख) कृतज्ञ
(ग) कृतकार्य (घ) अज्ञ

203. 'हाथी की पीठ पर रखे जाने वाले आसन' के लिए शुद्ध शब्द है—
(क) जीन (ख) हौदा
(ग) काठी (घ) बख्तर

204. 'जिसे प्रमाण द्वारा सिद्ध न किया जा सके' उसके लिए सही शब्द है—
(क) अप्रमाणित (ख) अनुप्रमेय
(ग) अप्रमेय (घ) अप्रामाणिक

205. बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाने वाला गीत है—
(क) प्रभाती (ख) विहाग
(ग) लोरी (घ) सोहर

206. 'जो नभ में चलता है' के लिए शब्द है—
(क) खेचर (ख) खच्चर
(ग) नभोत्पन्न (घ) नभवाली

207. 'व्याकरण के ज्ञाता' के लिए शब्द है—
(क) व्याकरणी (ख) व्याकर्ता
(ग) वैयाकरण (घ) व्याकरणज्ञ

208. 'बढ़ा-चढ़ा कर कहना' के लिए एक शब्द है—
(क) अतिवादी (ख) अतिशय
(ग) अत्यन्त (घ) अतिशयोक्ति

209. 'उपनिवेश से संबंध हो जिसका' वाक्यांश के लिए एक शब्द है—
(क) उपनिवेशिक (ख) औपनिवेशिक
(ग) औपन्यासिक (घ) उपनिवेशवाद

210. इनमें से एक के लिए प्रायोज्य शब्द है—'असूर्यम्पश्या'
(क) वह स्थान जहां सूर्य दिखाई न दे
(ख) वह स्थान जहां सूर्य का प्रखर प्रकाश बड़ा कष्टकारी होता है
(ग) वे प्राणी जो सूर्य का दर्शन न कर पाएं
(घ) रनिवास में कड़े पर्दे में रहने वाली स्त्री

211. 'उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति' के लिए एक शब्द है—
(क) रिक्थ (ख) धरोहर
(ग) वसीयत (घ) संदाय

212. 'गिरा हुआ' के लिए एक शब्द है—

Pariksha Manthan

(क) पतित (ख) लुंठित
(ग) धराशायी (घ) पाल्की

213. निम्नलिखित वाक्य-खण्डों में से एक के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है—'स्वयंसेवक' :
(क) सबकी सेवा करने वाला
(ख) स्वयं की सेवा करने वाला
(ग) अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला
(घ) बिना वेतन के कार्य करने वाला सेवक

214. 'गुरु के समीप रह कर शिक्षा ग्रहण करने वाला' के लिए एक शब्द है—
(क) गुरुकुलवासी (ख) छात्रावासी
(ग) अन्तेवासी (घ) आश्रमवासी

215. 'अपना उद्देश्य पूर्ण होने पर संतुष्ट' ऐसे व्यक्ति के लिए एक शब्द है—
(क) चिरप्रसन्न (ख) कृतज्ञ
(ग) आभारी (घ) कृतार्थ

216. 'नियम विरुद्ध, असामाजिक कार्य करने वालों की सूची' के लिए एक शब्द है—
(क) अपराधसूची (ख) कालीसूची
(ग) अवैधसूची (घ) श्वेतसूची

217. 'जो युद्ध में स्थिर रहता है' उसे कहते हैं—
(क) युद्ध-स्थविर (ख) युद्ध-थिरक
(ग) युधिष्ठिर (घ) युद्धस्थायी

218. 'जो हमेशा रहने वाला है' उसको कहते हैं—
(क) शाश्वत (ख) अनवरत
(ग) अप्रतिहत (घ) आजीवक

219. 'जिस पुरुष की पत्नी साथ नहीं है' वाक्यांश के लिए एक शब्द है—
(क) अपत्नीक (ख) वियोगी
(ग) विधुर (घ) विपत्नीक

220. 'जिस पेड़ के पत्ते झड़ गए हों' के लिए एक शब्द है—
(क) प्रपर्ण (ख) अपर्णा
(ग) पत्रहीन (घ) अपत

221. 'तैरने की इच्छा' को कहते हैं—
(क) तरणेच्छा (ख) तितीर्षा
(ग) संतरणेच्छा (घ) जलावतरणेच्छा

222. खाद्य सामग्री जो यात्रा के समय रास्ते में उपभोग के लिए जाती है—
(क) स्वल्पाहार (ख) पथ्य
(ग) पाथेय (घ) उपाहार

223. आधी रात का समय—
(क) शर्वरी (ख) विभावरी
(ग) निशा (घ) निशीथ

224. 'जिसके पास कुछ न हो' उसके लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) अभावग्रस्त (ख) अकिंचन
(ग) दीनहीन (घ) महादीन

225. 'जिसे बुलाया न गया हो' के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है—
(क) अतिथि (ख) अभ्यागत
(ग) अनाहूत (घ) रिश्तेदार

226. 'मोक्ष की इच्छा रखने वाला' वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) योगी (ख) मुक्तिकामी
(ग) मुमुक्ष (घ) तपस्वी

227. 'रंगमंच के पर्दे के पीछे का स्थान' कहा जाता है—
(क) पृष्ठभूमि (ख) नेपथ्य
(ग) मंचपृष्ठ (घ) गुह्यमंच

228. 'हवन में जलाने वाली लकड़ी' के लिए शुद्ध शब्द है—
(क) हवन सामग्री (ख) वन-काष्ठ
(ग) शुष्क काष्ठ (घ) समिधा

229. 'दिशाएं ही जिनका वस्त्र हैं' उन्हें कहा जाता है—
(क) विश्वम्भर (ख) दिक्पाल
(ग) दिगम्बर (घ) पैगम्बर

230. जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो—
(क) कन्यापुत्र (ख) कानीन
(ग) अवैध पुत्र (घ) कुमारीसुत

231. 'जिसका इलाज न हो सके' उसके लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) असाध्य (ख) दुःसाध्य
(ग) साधनहीन (घ) श्रमसाध्य

232. 'जिसे जीता न जा सके' उसके लिए एक शब्द है—
(क) अजेय (ख) अज्ञेय
(ग) अपराजेय (घ) दुर्जेय

233. 'जिस स्त्री का पति जीवित है' उसके लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) पतिव्रता (ख) सधवा
(ग) विवाहिता (घ) अनुरक्ता

234. 'जो क्षीण (क्षय) न हो सके' उसके लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) अमिट (ख) अपार
(ग) अक्षय (घ) अनंत

235. 'जो सब कुछ जानता है' के लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) त्रिकालज्ञ (ख) बहुज्ञ
(ग) ज्ञानी (घ) सर्वज्ञ

236. 'जिसके सिर पर चन्द्र हो' के लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) चन्द्रशिखर (ख) चन्द्रशेखर
(ग) चक्रधर (घ) चन्द्रग्रहण

237. 'जिसके हृदय में ममता नहीं है' के लिए उपयुक्त शब्द है—
(क) मर्माहत (ख) क्रूर
(ग) निर्मम (घ) निर्दय

238. 'जिसका जन्म छोटी जाति (निचले वर्ण) में हुआ हो' के लिए उपयुक्त शब्द है—

Parisha Manthan

(क) अण्डज (ख) शूद्र
(ग) अन्त्यज (घ) अछूत

239. तिलक लगाने में किस अन्न का प्रयोग उपयुक्त होता है—
(क) गेहूं (ख) अक्षत
(ग) जौ (घ) उड़द

240. किसी ग्रंथ में अन्य व्यक्ति द्वारा जोड़ा गया भाग—
(क) स्वागत (ख) प्रकट
(ग) क्षेपक (घ) जनान्तिक

241. 'जो कठिनाई से समझने योग्य है' के लिए एक शब्द है—
(क) अगम (ख) क्लिष्ट
(ग) दुर्बोध (घ) दुर्गम

242. 'जो पृथ्वी से सम्बद्ध है' वाक्यांश के लिए एक शब्द है—
(क) पृथा (ख) लौकिक
(ग) भूगोलीय (घ) पार्थिव

243. 'जो पहले था, पर अब नहीं है' के लिए एक शब्द है—
(क) पूर्वज (ख) अंत्यज
(ग) भूतपूर्व (घ) अनागत

244. 'जो कठिनाई से मिलता है' के लिए एक शब्द है—
(क) दुर्लभ (ख) अलभ्य
(ग) अप्राप्य (घ) अनुपलब्ध

245. 'बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला' के लिए एक शब्द है—
(क) बहुभाषाविद् (ख) बहुभाषाभाषी
(ग) दुभाषिया (घ) बहुभाषिया

246. 'जिसे जानने की इच्छा है' के लिए एक शब्द है—
(क) ज्ञानार्थी (ख) जिज्ञासु
(ग) जिगीषु (घ) जिजीविषु

उत्तरमाला

1. (घ) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)
6. (ग) 7. (क) 8. (ख) 9. (क) 10. (ख)
11. (क) 12. (ख) 13. (ख) 14. (क) 15. (ख)
16. (ख) 17. (घ) 18. (ग) 19. (क) 20. (घ)
21. (ग) 22. (क) 23. (ख) 24. (ख) 25. (घ)
26. (क) 27. (ग) 28. (क) 29. (ग) 30. (क)
31. (ग) 32. (ख) 33. (ख) 34. (क) 35. (ख)
36. (ग) 37. (ख) 38. (क) 39. (घ) 40. (ग)
41. (क) 42. (ख) 43. (क) 44. (ख) 45. (घ)
46. (क) 47. (घ) 48. (ग) 49. (ख) 50. (ख)
51. (ख) 52. (घ) 53. (ख) 54. (क) 55. (ग)
56. (क) 57. (ख) 58. (क) 59. (क) 60. (ग)
61. (घ) 62. (क) 63. (घ) 64. (ख) 65. (ग)
66. (क) 67. (ग) 68. (क) 69. (ख) 70. (ग)
71. (ख) 72. (ख) 73. (घ) 74. (ख) 75. (ख)
76. (क) 77. (क) 78. (क) 79. (ख) 80. (ग)
81. (ख) 82. (क) 83. (घ) 84. (ग) 85. (ग)
86. (ख) 87. (ख) 88. (क) 89. (ख) 90. (क)
91. (ग) 92. (ख) 93. (ग) 94. (क) 95. (घ)
96. (ख) 97. (क) 98. (ग) 99. (ग) 100. (क)
101. (ख) 102. (ग) 103. (ख) 104. (ग) 105. (क)
106. (ग) 107. (क) 108. (घ) 109. (ख) 110. (घ)
111. (ख) 112. (क) 113. (ख) 114. (ग) 115. (ग)
116. (क) 117. (ख) 118. (घ) 119. (क) 120. (ख)
121. (ख) 122. (ग) 123. (क) 124. (घ) 125. (ख)
126. (क) 127. (ग) 128. (ख) 129. (ग) 130. (ख)
131. (घ) 132. (क) 133. (ग) 134. (ख) 135. (ग)
136. (क) 137. (ख) 138. (ग) 139. (घ) 140. (क)
141. (ख) 142. (क) 143. (ख) 144. (क) 145. (ख)
146. (ग) 147. (ख) 148. (ग) 149. (ख) 150. (क)
151. (ख) 152. (क) 153. (ग) 154. (घ) 155. (ग)
156. (ख) 157. (क) 158. (ग) 159. (क) 160. (ख)
161. (घ) 162. (ख) 163. (ग) 164. (घ) 165. (ख)
166. (ग) 167. (ख) 168. (क) 169. (ख) 170. (क)
171. (ग) 172. (क) 173. (ख) 174. (घ) 175. (ग)
176. (ग) 177. (क) 178. (ग) 179. (ख) 180. (घ)
181. (क) 182. (ख) 183. (घ) 184. (ग) 185. (क)
186. (घ) 187. (ख) 188. (ग) 189. (क) 190. (ख)
191. (क) 192. (क) 193. (ख) 194. (घ) 195. (क)
196. (क) 197. (ख) 198. (ग) 199. (क) 200. (ख)
201. (ग) 202. (ख) 203. (ख) 204. (ग) 205. (ग)
206. (क) 207. (ग) 208. (घ) 209. (ख) 210. (घ)
211. (क) 212. (क) 213. (ग) 214. (ग) 215. (घ)
216. (ख) 217. (ग) 218. (क) 219. (घ) 220. (क)
221. (ख) 222. (ग) 223. (घ) 224. (ख) 225. (ग)
226. (ग) 227. (ख) 228. (घ) 229. (ग) 230. (ख)
231. (क) 232. (क) 233. (ख) 234. (ग) 235. (घ)
236. (ख) 237. (ग) 238. (ग) 239. (ख) 240. (ग)
241. (ग) 242. (घ) 243. (ग) 244. (क) 245. (क)
246. (ख)

◆◆◆

Parikha Manthan

लोकोक्तियां एवं मुहावरे

लोकोक्तियां

जैसा कि नाम से ही विदित होता है, वे उक्तियाँ, जो अनुभव व व्यवहार के कारण लोक में प्रचलित हो जाती हैं, उन्हें लोकोक्तियां कहा जाता है। लोकोक्तियां साहित्य सृजन के बजाय वार्तालाप में अधिक प्रयुक्त होती हैं।

जैसे—अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। यानी पहले तो सतर्कता नहीं बरती और नुकसान हो जाने के बाद पछताना व्यर्थ है।

लोकोक्तियां संक्षिप्त होते हुए भी व्यापक अर्थ देती हैं तथा भाषा को अलंकरित करती हैं। सारगर्भित लोकोक्तियां कथन की पुष्टि में तो सहायक होती ही हैं, कटाक्ष करने में भी इनका प्रयोग किया जाता है। इनमें लक्ष्यार्थ की अधिकता होती है। यही कारण है कि ये ज्यादा प्रभावी होती हैं तथा भावनात्मक स्तर पर इनका असर प्रबल होता है। चूंकि लोकोक्तियां लोक जीवन से जुड़ी होती हैं, अतएव लोक मन को प्रभावित करने की इनमें विशेष क्षमता होती है। ये सीधे श्रोता के अंतरमन में उतर जाती हैं।

लोकोक्तियों और मुहावरों में थोड़ा अंतर भी होता है। प्रयोग की दृष्टि से यह अंतर महत्वपूर्ण है। लोकोक्तियां पूर्ण वाक्य होती हैं तथा स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होती हैं, जबकि मुहावरा वाक्यांश होता है तथा स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होकर वाक्य में समाया रहता है। लोकोक्तियां लोकजनित अनुभवों पर आधारित होती हैं, जबकि मुहावरे रूढ़ार्थी होते हैं। चूंकि लोकोक्तियां अपने में संपूर्ण वाक्य होती हैं, इसलिए इनमें छेड़छाड़ या किसी भी प्रकार के परिवर्तन की गुंजाइश नहीं रहती है, जबकि वाक्य के अनुरूप मुहावरों में थोड़े से बदलाव की गुंजाइश रहती है।

लोकोक्तियों के प्रयोग में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। असावधानी से किया गया प्रयोग बजाय भाषा को प्रभावी व जीवंत बनाने के उसे दूषित और भ्रष्ट कर देता है। यह नितांत आवश्यक है कि जिस लोकोक्ति या कहावत का आप प्रयोग कर रहे हों, उसके अर्थ से भली-भांति परिचित हों। साथ ही आपको इस बात का भी ज्ञान हो कि किस संदर्भ में इसका प्रयोग किए जाने से भाषा में प्रभावोत्पादकता आएगी। भाषा में लोकोक्तियों के प्रचुर प्रयोग से भी बचना चाहिए। इनका कम, मगर सटीक प्रयोग ही भाषा में निखार लाता है।

प्रतियोगी परीक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर हम यहां प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से कुछ चुनिंदा लोकोक्तियों को उनके अर्थ व प्रयोग सहित प्रस्तुत कर रहे हैं।

लोकोक्तियां

1. **अपना रख पराया चख** (अपनी वस्तु की सुरक्षा और दूसरे की वस्तु का उपयोग)

   अपना रख, पराया चख की प्रवृत्ति आजकल बहुतेरे लोगों में देखने को मिल रही है।

2. **अपना हाथ जगन्नाथ** (फल की दृष्टि से स्वयं कार्य करना)

   दूसरों पर निर्भर रहना छोड़ कर ऐसे कामों को तुम स्वयं निपटाया करो। अपना हाथ जगन्नाथ होता है।

3. **अधजल गगरी छलकत जाए** (तुच्छ व्यक्ति जरा सी उपलब्धि पर इतराने लगता है)

   नत्थू चार दिन से शहर में क्या रहने लगा है कि बड़ी-बड़ी बातें करना सीख गया है। इसी को कहते हैं अधजल गगरी छलकत जाए।

4. **अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत** (क्षति के बाद पछतावा करना व्यर्थ)

   पहले गंभीरता से प्रयास नहीं किए। अब नौकरी की उम्र निकल जाने पर भाग्य को दोष दे रहे हो। मेरे भाई, अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत।

5. **अपनी करनी पार उतरनी** (जैसा कर्म वैसा फल)

   शोभा ने अपनी सास को बहुत प्रताड़ित किया। अब उसकी बहू देवकी भी उसके साथ वैसा ही सुलूक कर रही है। इसी को तो कहते हैं अपनी करनी पार उतरनी।

6. **अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग** (मतैक्य का अभाव)

   यदि सभी राजनीतिक दल एकमत होकर पहल करें तो इस गंभीर समस्या का समाधान हो सकता है, पर दुख का विषय है कि समस्या के हल को लेकर स्थिति अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग जैसी है।

7. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** (एक व्यक्ति के प्रयास से कुछ नहीं होता)

   गांव में बिजली लाने के लिए सभी ग्रामीणों को रघुबीर का साथ देना चाहिए। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

8. **अंधा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपने देय** (पक्षपात करना)

   मंत्री जी अंधा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपने देय कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं। सारे महत्वपूर्ण पदों पर अपने करीबी अफसरों को ही नियुक्त कर रहे हैं।

9. **अंधों में काना राजा** (अयोग्यों-अशिक्षितों के बीच थोड़ा सा योग्य व शिक्षित व्यक्ति)

   पूरे गांव में कोई अंग्रेजी जानने वाला नहीं है। लल्ला को थोड़ी अंग्रेजी जरूर आती है। उसे अंधों में काना राजा समझिए।

10. **आंख के अंधे नाम नैनसुख** (नाम जो गुणों के विपरीत हो)

    उसका नाम तो दौलत चंद है, मगर घर में फूटी कौड़ी नहीं है। इसी को कहते हैं आंख के अंधे नाम नैनसुख।

11. **आप मियां जी मांगते द्वार खड़े दरवेश** (अति विपन्न के यहां मांगने वालों का आना)

Pariksha Manthan

कामेश्वर पहले से ही आर्थिक तंगी से जूझ रहा है, ऊपर से पड़ोसी उधार मांगने आ पहुंचे। यह तो वही हुआ कि आप मियां जी मांगते द्वार खड़े दरवेश।

12. **आम के आम गुठलियों के दाम** (दोहरा लाभ)

भालचंद गायों का दूध तो बेचता ही है, गोबर का प्रयोग गोबर गैस प्लांट में कर बिजली भी जलाता है। इसी को कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।

13. **आसमान से गिरा खजूर में अटका** (किसी काम के पूरा होते-होते बाधा पड़ जाना)

राजेन्द्र का रिजर्वेशन तो कंफर्म हो गया, मगर जाम में फंस जाने के कारण उसकी ट्रेन छूट गई। यह तो वही हुआ कि आसमान से गिरा खजूर में अटका।

14. **आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे** (जो मिल रहा हो उसी में संतोष करना चाहिए। लालच में पड़ने से मिलने वाला भी चला जाता है)

मैंने उसे समझाया था कि सेठ करमचंद जो दें उसे स्वीकार कर लेना, मगर जब उसने उन पर ज्यादा के लिए दबाव बनाया तो उन्होंने कुछ भी देने से मना कर दिया। इसी को कहते हैं आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावे।

15. **आप भला तो जग भला** (अच्छे को सभी अच्छे लगते हैं)

आप भले मेरे पड़ोसी की बुराई करें, मगर मैं तो आप भला तो जग भला में विश्वास करता हूं।

16. **आगे कुआं पीछे खाई** (हर तरफ विपत्ति का होना)

रानी को उस अंधेरी रात में कुछ सूझ नहीं रहा था। पीछे बदमाश पड़े थे और जिस पेड़ पर वह छिपना चाह रही थी, वहां एक काला नाग फन काढ़े बैठा था। उसके सामने आगे कुआं पीछे खाई जैसी स्थिति निर्मित हो चुकी थी।

17. **अंधा क्या चाहे दो आंखें** (अति आवश्यक वस्तु को पाने की चाहत)

सर्दी से ठिठुर रहे भिखारी को मैंने ज्योंही कंबल दिया, वह हाथ जोड़कर कहने लगा- अंधा क्या चाहे दो आंखें।

18. **ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया** (विचित्र या विरोधाभासी संयोग)

जिस दिन प्रकाश के घर में पुत्र ने जन्म लिया, उसी दिन उसके मित्र की मां का निधन हो गया। इसी को कहते हैं ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।

19. **उल्टा चोर कोतवाल को डांटे** (स्वयं दोषी होकर दूसरे पर दोष मढ़ना)

देर रात शालिनी के घर लौटने पर जब पति ने आपत्ति की, तो वह उसी पर बरस पड़ी। इसी को कहते हैं कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

20. **ऊंट दूल्हा पुरोहित गधा** (दो मूर्खों का परस्पर एक-दूसरे की प्रशंसा करना)

चौबे और पांडेय की जोड़ी ऊंट दूल्हा पुरोहित गधा जैसी है। मौका हाथ लगते ही एक-दूसरे की तारीफ करने से नहीं चूकते।

21. **ऊंची दुकान फीका पकवान** (सिर्फ बाहरी प्रदर्शन होना, अंदर से खोखला)

इतने बड़े शोरूम से यह जीन्स का पैंट खरीद कर लाया और हफ्ते भर में ही इसकी सिलन खुल गई। इसी को कहते हैं ऊंची दुकान फीका पकवान।

22. **उल्टे बांस बरेली जाना** (उल्टी बात का होना)

मैंने उससे शहद की शीशी लाने को कहा था, ले आया मिर्च की चटनी। इसी को कहते हैं, उल्टे बांस बरेली जाना।

23. **ऊंट किस करवट बैठे** (अनिश्चय की स्थिति)

इस बार के चुनाव में सत्तारूढ़ दल का ऊंट किस करवट बैठेगा, यह तो नतीजों के बाद ही पता चलेगा।

24. **ऊंट के गले में बिल्ली** (विपरीत वस्तुओं का मेल)

तुम जैसे विद्वान व्यक्ति की बदलू जैसे गंवार से दोस्ती ऊंट के गले में बिल्ली जैसी ही है।

25. **ऊधो की पगड़ी माधो के सिर** (एक का दोष दूसरे के सिर मढ़ना)

आप कभी इस समस्या की तह में नहीं जाते। बस ऊधो की पगड़ी माधो के सिर वाली कहावत को चरितार्थ किया करते हैं।

26. **ऊधो का लेना न माधो का देना** (किसी पचड़े में न पड़कर निश्चिंत भाव से रहना या अपने काम से काम रखना)

मित्तल जी पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। ऊधो का लेना न माधो का देना जैसा उनका स्वभाव है।

27. **एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा** (बुरे में और बुराई बढ़ जाना)

उन्हें उच्च रक्तचाप की बीमारी तो पहले से ही थी, जांच कराने पर मधुमेह भी निकल आया। इसी को कहते हैं एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।

28. **एक आवे के बर्तन** (सब एक जैसे)

पूरे गांव में एक भी व्यक्ति शांति प्रिय नहीं है। सब एक आवे के बर्तन हैं।

29. **एक आंख से रोवे, एक आंख से हंसे** (दिखावटी रोना)

सच्चे मित्र एक आंख से रोवे, एक आंख से हंसे कहावत के दायरे में नहीं आते हैं।

30. **एक हाथ से ताली नहीं बजती** (एक तरफ से झगड़ा नहीं होता है)

झगड़े के बाद प्रणीत सारा दोष गौरव के सिर मढ़ रहा था, जबकि ऐसा नहीं हो सकता। एक हाथ से ताली नहीं बजती।

31. **एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं** (एक स्थान पर दो सबल प्रतिद्वंद्वी या अधिकारी नहीं रह सकते)

दोनों अधिकारी समकक्ष हैं, इसीलिए काम के बजाय एक-दूसरे को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं। सच ही कहा गया है कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं।

32. **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है** (एक गंदा व्यक्ति सबके लिए कष्टप्रद बन जाता है)

Pariksha Manthan

सुनील की वजह से मोहल्ले में अराजक तत्वों का जमावड़ा बढ़ता जा रहा है। एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

33. **ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय** (अकर्मण्य व्यक्ति की सहायता कौन करे)

शशिकांत निहायत निकम्मा है। मैं चाहकर भी उसकी सहायता नहीं कर सकता क्योंकि ऐसे बूढ़े बैल को कौन भुस देय वाली कहावत तो आपने सुनी ही होगी।

34. **एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय** (एक समय में एक ही काम करना चाहिए)

बबलू कई काम एक साथ करता है, इसीलिए उसे सफलता नहीं मिलती। उसे एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय कहावत पर अमल करना चाहिए।

35. **ओछी पूंजी खसम को खाय** (कम पूंजी वाला व्यापारी थोड़े दिनों में ही नष्ट हो जाता है)

गणेश को मैंने समझाया था कि कम पूंजी में व्यापार न शुरू करें। नहीं माना और घाटा खा गया। इसी को कहते हैं ओछी पूंजी खसम को खाय।

36. **ओछे की प्रीति बालू की भीत** (तुच्छ व क्षुद्र प्रकृति के व्यक्तियों की मित्रता स्थाई नहीं होती)

गब्बर और कल्लू के संबंधों में दरार तो पड़नी ही थी। दोनों निहायत कपटी हैं। सही कहा गया है ओछे की प्रीति बालू की भीत।

37. **ओस चाटे प्यास नहीं बुझती** (बहुत थोड़ी मात्रा से आवश्यकता पूर्ण नहीं होती)

खाने की जगह आप उस भूखे भिखारी को एक बिस्कुट दे रहे हैं। ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।

38. **औसर चूकी डोमनी गावै ताल-बेताल** (अवसर गंवा देने से कोई लाभ नहीं)

पहले किताब पलट कर नहीं देखी, अब फेल होने पर उल्टा-सीधा बक रहे हैं। इसी को कहते हैं औसर चूकी डोमनी गावै ताल-बेताल।

39. **कमावै धोती वाला, उड़ावै टोपी वाला** (परिश्रमी लोग कमाते हैं, शौकीन उड़ाते हैं)

रघुनंदन रात-दिन मेहनत कर पैसे लाता है, मगर उसका बेटा उन पैसों से एय्याशी करता है। यह तो वही हुआ भाई कि कमावै धोती वाला, उड़ावै टोपी वाला।

40. **कंगाली में आटा गीला** (एक मुसीबत पर दूसरी मुसीबत आ जाना)

मंदी के दौर में नौकरी गंवा कर अमित कड़की में था, तभी उसकी पत्नी को हृदयाघात हो गया। इसी को कहते हैं कंगाली में आटा गीला।

41. **कपट की प्रीति मरन की रीति** (कपटी व्यक्ति का साथ घातक होता है)

देवेन्द्र ने पहले तो सुशील से मित्रता कर उसका विश्वास जीता, फिर उसकी पत्नी से न सिर्फ नजायज संबंध बनाए, बल्कि एक दिन मौका देखकर सुशील की हत्या भी कर दी। ठीक ही कहा गया है कि कपट की प्रीति मरन की रीति।

42. **कभी के दिन बड़े कभी की रात** (कभी किसी की चढ़ बनती है कभी किसी की)

छोटे भाई की मौत के बाद शंभु ने उसकी जमीन तो हथिया ही ली, उसके परिवार पर भी कम जुल्म नहीं ढाए। अब उसके बच्चे बड़े हो गए हैं और शंभु पर भारी पड़ रहे हैं। इसी को कहते हैं कभी के दिन बड़े कभी की रात।

43. **कबाड़ी की छान पर फूस नहीं** (जो जिस चीज का व्यापार करता है, उसे खुद प्रयोग नहीं करता)

बड़कू की इतनी बड़ी मिठाई की दूकान है, मगर मैंने आज तक उसे अपनी दुकान की मिठाई खाते नहीं देखा। शायद तभी कहा जाता है कि कबाड़ी की छान पर फूस नहीं।

44. **कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता** (सामान्य दशाओं में किया जाने वाला काम कहने पर नहीं करना)

नीरज वैसे तो दिनभर अलाप लगाया करता है, जब मैंने गाने को कहा तो अगर-मगर करने लगा। इसी को कहते हैं कि कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता।

45. **कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली** (बेमेल संबंध)

धर्मराज जैसे धन्ना सेठ से उस गरीब मैकू लाल की तुलना नहीं की जा सकती। कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली।

46. **कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा** (बेमेल चीजों से संबंध बनाना)

आप रहते रायपुर में हैं और बातें सेब की खेती करवाने की करते हैं। यहां के मौसम में यह संभव नहीं है। यह तो वही बात हुई कि कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।

47. **कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर** (जीवन में एक-दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है)

उस गरीब की उपेक्षा मत करो, कभी उससे भी काम पड़ सकता है। यह कहावत तो सुनी होगी - कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर।

48. **कोयले की दलाली में हाथ काले** (बुरी संगति से बुराई ही मिलती है)

मैं तुम्हें आज फिर समझा रहा हूं। मनोज मिलावट खोरी का काम करता है। किसी दिन उसके साथ तुम भी धरे जाओगे। कोयले की दलाली में हाथ काले होते हैं।

49. **काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती** (चालाकी से बार-बार काम नहीं निकलता)

प्रशांत ने एक बार बहाना बनाकर मुझसे रुपये ले लिए। आइंदा उसकी दाल नहीं गलेगी। काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

50. **काम का न काज का नौ मन अनाज का** (बैठ कर खाने वाला निठल्ला व्यक्ति)

त्रिपाठी जी के परिवार में पुरुषोत्तम तो एकदम निठल्ला है। काम का न काज का नौ मन अनाज का।

Pariksha Manthan

51. **काला अक्षर भैंस बराबर** (अनपढ़)

तुम्हें मैं नौकरी कैसे दूं, तुम तो काला अक्षर भैंस बराबर हो।

52. **कुएं की मिट्टी कुएं में ही लगती है** (जहां से लाभ होता है, वहीं खर्च होता है)

सेठ गोपालदास जो कमाते हैं, उसे व्यापार में ही लगा देते हैं। कुएं की मिट्टी कुएं में ही लगती है।

53. **कूद-कूद मछली बगुले को खाय** (जब समय उलटा आता है तो निर्बल भी बली हो जाते हैं)

वक्त खराब आया तो सेठजी के नौकर-चाकर तक उन्हें बुरा-भला कहने लगे। इसी को कहते हैं कूद-कूद मछली बगुले को खाय।

54. **कोयला होय न उजला सौ मन साबुन धोय** (दुष्ट व्यक्ति की प्रकृति सीख देने से नहीं बदलती)

बापू के प्रवचनों का इस लम्पट भोला सिंह पर कोई असर न होगा। कोयला होय न उजला सौ मन साबुन धोय।

55. **कोठी वाला रोवै छप्पर वाला सोवै** (अधिक धन चिंता का कारण होता है)

लालाराम जी अपनी आभूषणों की दुकान की सुरक्षा को लेकर सदैव चिंतित रहते हैं, जबकि उन्हीं के सामने चाय की गुमटी लगाने वाला मंगल चैन की नींद सोता है। ठीक ही कहा गया है कि कोठी वाला रोवै छप्पर वाला सोवै।

56. **कोई ओढ़े शाल-दुशाला कोई ओढ़े कंबल काला** (सभी का भाग्य एक सा नहीं होता)

कैसी विडंबना है, धर्मेंद का बड़ा भाई तो एक बड़ी कंपनी में महाप्रबंधक है और वह बेचारा सब्जी का ठेला लगाता है। ठीक ही कहा गया है कि कोई ओढ़े शाल-दुशाला कोई ओढ़े कंबल काला।

57. **कोठी में नाज घर में उपवास** (कृपण व्यक्ति सब कुछ होते हुए भी उसका उपभोग नहीं कर पाता)

रतिभान के पास अकूत दौलत है, पर बच्चों को अच्छे स्कूलों में नहीं पढ़ाना चाहता। इसी को कहते हैं कोठी में नाज घर में उपवास।

58. **कौड़ी नहीं पास मेला लगे उदास** (धनाभाव में अच्छी चीज भी खराब लगती है)

मेरी तो जेब खाली है और तुम हो कि मुझे उस बड़े शॉपिंग माल में खरीदारी करने को कह रहे हो। जानते नहीं, कौड़ी नहीं पास मेला लगे उदास।

59. **कौआ चला हंस की चाल** (दूसरों की नकल पर चलने से असलियत नहीं छिपती)

मधुर, यशराज की देखादेखी मंच पर काव्य पाठ करने पहुंच तो गया, मगर मुंह खोलते ही श्रोताओं ने उसे हूट कर दिया। इसे कहते हैं कौआ चला हंस की चाल।

60. **खग जाने खग ही की भाषा** (एक वर्ग के लोग आपस की बात समझते हैं)

दोनों वकील आपस में जो बातें कर रहे थे, मैं उन्हें समझ नहीं पा रहा था। समझता भी कैसे, खग जाने खग ही की भाषा।

61. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है** (लोगों के अधिकांश काम देखा-देखी होते हैं)

''पापा, जब से दिल्ली वाली चाची आई हैं, मम्मी भी खूब मेकअप करने लगी हैं।'' श्रद्धा की बात सुनकर पापा बोले, ''बेटी, खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।''

62. **खुदा गंजे को नाखून न दे** (अत्याचारी को ज्यादा अधिकार या शक्ति न मिले)

राजेश्वर जैसे निर्दयी को यदि पुलिस की नौकरी मिल जाती, तो वह दीन-दुखियों का जीना दुश्वार कर देता। इसीलिए तो कहा जाता है कि खुदा गंजे को नाखून न दे।

63. **खरी मजूरी चोखा काम** (अच्छे काम के लिए अच्छी मजदूरी देनी पड़ती है)

वह ठेकेदार खरी मजूरी चोखा काम में विश्वास करता है। अच्छे पैसे देकर अच्छा काम करवाता है।

64. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (अधिक श्रम करने पर कम लाभ होना)

शशांक यह सोचकर कि अच्छी पगार मिलेगी, उस नामी संस्थान में नौकरी मांगने गया था, मगर जब पगार के बारे में पूछा तो मात्र दो हजार देने की बात कही। यह तो वही हुआ कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

65. **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** (खिसियाहट में कोई अटपटा कार्य करना)

बॉस ने जब शशि शेखर को डांट पिलाई तो भीगी बिल्ली बना रहा, मगर चैम्बर से बाहर आते ही उसने फाइल अपने अधीनस्थ प्रताप के मुंह पर दे मारी। इसी को कहते हैं, खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

66. **खेत खाए गदहा, मार खाए जोरहा** (दोष किसी और का दंड किसी और को)

घड़ी सुबेश ने तोड़ी, मगर पिताजी सूर्य कुमार की पिटाई करने लगे। इन्हीं स्थितियों पर लागू होती है यह कहावत-खेत खाए गदहा, मार खाए जोरहा।

67. **गये रोजा छुड़ाने नमाज गले पड़ी** (विपरीत परिणाम मिलना)

कौशलेन्द्र अपने अफसर के पास घर जाने के लिए छुट्टी मांगने गया था। छुट्टी तो नहीं मिली काम पूरा न होने की वजह से डांट अलग सुननी पड़ी। इसी को कहते हैं, गये रोजा छुड़ाने नमाज गले पड़ी।

68. **गंजेड़ी यार किसके दम लगाए खिसके** (स्वार्थी व्यक्ति मतलब निकलते ही मुंह फेर लेते हैं)

साकेत का कोई भी दोस्त उसे बीमारी की हालत में देखने नहीं आया। ऐसे ही दोस्तों के लिए कहा जाता है-गंजेड़ी यार किसके दम लगाए खिसके।

69. **घर का भेदी लंका ढाए** (घर की फूट विनाश का कारण बनती है)

Pariksha Manthan

अपने बड़े भाई से सावधान रहो। वह तुम्हें गहरी चोट पहुंचा सकता है। यह तो जानते ही हो कि घर का भेदी लंका ढाए।

70. **घर की मुर्गी दाल बराबर** (घर की वस्तु का मोल न समझना)

घर में तुम्हारे पिताजी क्या कम विद्वान हैं जो बाहर अंग्रेजी पढ़ने जाते हो। घर की मुर्गी दाल बराबर कहावत को क्यों चरितार्थ कर रहे हो।

71. **घड़ी में तोला घड़ी में माशा** (अस्थिर होना)

इला, कल तो तुम अंजना को कलकुंही बता रही थीं, और आज उसे सती सावित्री बता रही हो। तुम्हारा भी वही हाल है, घड़ी में तोला घड़ी में माशा।

72. **घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या** (पेशेवर को अपने पेशे से मुरउव्वत नहीं करनी चाहिए)

डॉ. भल्ला फीस के मामले में किसी से भी मुरउव्वत नहीं करते, चाहे उनका करीबी ही क्यों न हो। उनका कहना है कि, घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या।

73. **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए** (कृपण कष्ट सहन कर लेता है)

बिमल कई दिन से बीमार है, मगर पैसों के लालच में डॉक्टर को दिखाने नहीं जा रहा है। वह चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

74. **चलत फिरत धन पाइये बैठे पावै कौन** (उद्यमी धनोपार्जन करता है और आलसी भूखा मरता है)

हिमांशु मेहनती है तो उसके पास सारी सुख-सुविधाएं हैं, जबकि उसी का बचपन का दोस्त राजीव निकम्मा है और दाने-दाने को मोहताज है। इसी को कहते हैं, कि चलत फिरत धन पाइये बैठे पावै कौन।

75. **चोर की दाढ़ी में तिनका** (अपराध के भय से अपराधी संशकित रहता है)

ज्योंही तलाशी शुरू हुई सुमेर वहां से चुपचाप खिसक लिया। उसे वहां न पाकर कुछ लोग कहने लगे कि लगता है, चोर की दाढ़ी में तिनका है।

76. **चोर चोरी से जाए पर हेरा-फेरी से न जाए** (किसी का स्वाभाविक गुण नहीं जाता)

बेईमानी तो उस अफसर के स्वभाव में है। आजकल घोटाले नहीं कर रहा तो क्या, ट्रांसफर-पोस्टिंग में तो रकम चीर रहा है। भाई ठीक ही कहा गया है कि चोर चोरी से जाए पर हेरा-फेरी से न जाए।

77. **चोर-चोर मौसेरे भाई** (एक पेशे वाले नाता जोड़ लेते हैं)

मोहन और राकेश में खूब छनती है। एक जेबें काटता है, तो दूसरा वाहन चोर है। दोस्ती हो भी क्यों न, चोर-चोर मौसेरे भाई।

78. **चोरी और सीनाजोरी** (गलती भी करना और घुड़की भी देना।)

राम अवतार ने बिना बात के मेरे बच्चों की पिटाई कर दी, जब शिकायत की तो मुझसे ही उलझ गया। इसी को कहते हैं, चोरी और सीनाजोरी।

79. **चौबे गये छब्बे बनने दूबे ही रह गए** (लाभ के बजाय हानि होना)

चंद्रा बाबू चले थे गुंडों को सबक सिखाने, उल्टे मार खा कर आ गए। इस पर लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि, चौबे गये छब्बे बनने दूबे ही रह गए।

80. **चार दिनों की चांदनी फिर अंधियारा पाख** (चंद दिनों की खुशी फिर दुख ही दुख)

पिता के मरने के बाद दीपू ने मकान बेचकर कुछ दिनों तक तो खूब गुलछर्रे उड़ाए, अब रहने का ठिकाना भी नहीं है। इसी को कहते हैं, चार दिनों की चांदनी फिर अंधियारा पाख।

81. **छछूंदर के सिर में चमेली का तेल** (किसी अपात्र को कोई अच्छी चीज मिलना)

रवि खुद तो है हाईस्कूल फेल और बीवी एमएससी पास पाया हैं इसी को कहते हैं कि, छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।

82. **जंगल में मोर नाचा किसने देखा** (योग्यता या वैभव का ऐसा प्रदर्शन जहां उसे देखने-समझने वाले न हों)

डायरेक्टर ने नीलिमा से कहा, ''आपने सारे स्टेज शो अफ्रीका में किए। यहां के लोग आपके बारे में क्या जानें। यह तो वही बात हुई कि, जंगल में मोर नाचा किसने देखा।''

83. **जब तक सांस तब तक आस** (अंतिम समय तक व्यक्ति अच्छे परिणाम की उम्मीद करता है)

कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद रवीन्द्र बाबू में जिजीविषा कम न हुई थी। इसी को कहते हैं, जब तक सांस तब तक आस।

84. **जहां न जाए रवि, वहां जाए कवि** (कवि की कल्पना वहां भी पहुंच जाती है जहां तक सूर्य की रश्मियां नहीं पहुंचती)

कवि जयशंकर प्रसाद की कृति कामायनी पढ़ने के बाद कहना पड़ेगा कि, जहां न जाए रवि, वहां जाए कवि।

85. **जाके पांय न पटी बिवाई, सो का जाने पीर पराई** (जिसने कभी कष्ट न भोगा हो वह दूसरों की पीड़ा क्या जाने)

उन दिनों मैं जिन कष्टों से गुजरा, तुम उन्हें चाहकर भी महसूस नहीं कर सकोगे। सच ही कहा गया है कि, जाके पांय न फटी बिवाई, सो का जाने पीर पराई।

86. **झूठ के पांव नहीं होते** (झूठ जल्द पकड़ में आ जाता है)

झूठा आरोप गढ़कर मेरे पड़ोसी ने मुझे कोर्ट में खड़ा तो करवा दिया, मगर वहां कोई प्रमाण न पेश कर पाने पर जज ने उन्हें फटकारते हुए कहा, ''झूठ के पांव नहीं होते।''

87. **जान बची लाखों पाए** (किसी झंझट से मुक्ति मिलना)

अपहर्ताओं के चंगुल से बच्चे के छूटने पर उसकी मां बार-बार कह रही थी कि जान बची लाखों पाए।

88. **झोपड़ी में रहे महलों के सपने देखें** (असंभव कल्पनाएं करना)

दीनानाथ चलाता तो रिक्शा है और उसकी चाहत है आलीशान कोठी बनवाने की। वही बात हुई न कि, झोपड़ी में रहे महलों के सपने देखें।

Pariksha Manthan

89. **टके की बुढ़िया नौ टका सिर मुड़ाई** (छोटे से काम के लिए ज्यादा मेहनताना मांगना)

जितने पैसे तुम इस टॉर्च की मरम्मत के मांग रहे हो, उतने में तो मैं नई खरीद सकता हूं। यह तो वही बात हुई कि, टके की बुढ़िया नौ टका सिर मुड़ाई।

90. **ढाक के तीन पात** (ऐसा कार्य जिसकी प्रगति न हो)

दस वर्ष पूर्व भी यह सड़क जर्जर थी, आज भी है। यानी कुल मिलाकर, ढाक के तीन पात वाली है।

91. **तलवार का घाव भरता है पर बात का नहीं** (कड़वी बात कभी नहीं भूलती)

दिनेश की अपमानजनक बातें मुझे जीवनभर नहीं भूलेंगी, क्योंकि, तलवार का घाव भरता है पर बात का नहीं।

92. **थोथा चना बाजे घना** (झूठा गर्व दिखाना)

चार श्लोक कंठस्थ कर तारकेश्वर खुद को महापंडित समझने लगा है। सचमुच आजकल उसकी दशा, थोथा चना बाजे घना जैसी ही है।

93. **दरिया में रहे मगर सो बैर** (जिसके अधीन हो उसी से शत्रुता ठीक नहीं)

तुम्हें इस लहजे में महाप्रबंधक जी से बात नहीं करनी थी। दरिया में रहे मगर से बैर नहीं करना चाहिए।

94. **दूसरे का सिंदूर देख, अपना माथा फोड़े** (दूसरों की उन्नति पर ईर्ष्या करना)

पड़ोसी का लड़का अफसर बन गया है तो तुम क्यों कुढ़े जा रहे हो। यह तो वही हुआ न कि, दूसरे का सिंदूर देख, अपना माथा फोड़े।

95. **नया नौ दिन पुराना सौ दिन** (पुरानी चीज ज्यादा भरोसेमंद रहती है)

मेरी यह पुरानी मशीन ज्यादा भली, नई के चक्कर में नहीं पड़ना। मैं तो नया नौ दिन पुराना सौ दिन वाली कहावत पर विश्वास करता हूं।

96. **भरी थाली में लात मारना** (लगे काम को छोड़ना)

नौकरी छोड़ते वक्त मैंने अखिलेश को समझाया था कि भरी थाली में लात मारना अच्छा नहीं, मगर तब उसने मेरी एक न सुनी।

97. **मन चंगा तो कठौती में गंगा** (आडंबर के बजाय सच्ची श्रद्धा अच्छी होती है)

राधेश्याम कभी मंदिर नहीं जाता। काम करते हुए ही ईश्वर का स्मरण कर लेता है। सच ही कहा गया है कि, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

98. **रस्सी जल गई पर बल न गए** (बिगड़ गए पर अकड़ न गई)

बीमारी ने रामकेश को ऐसा मारा कि अब वह बगैर सहारे के चल भी नहीं पाता। इसके बावजूद अभी भी लोगों से गाली-गलौज किया करता है। इसी को कहते हैं, रस्सी जल गई पर बल न गए।

99. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** (होनहार के लक्षण कम उम्र में ही दिखने लगते हैं)

एपीजे अब्दुल कलाम में यशस्वी बनने के लक्षण बालपन से दिखने लगे थे। ठीक ही कहा गया है- होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

100. **हीरे की परख जौहरी जाने** (गुणवान व्यक्ति ही गुणों की परख कर सकता है)

चन्द्रगुप्त मौर्य की योग्यता को चाणक्य ने पहचाना था। सच ही कहा गया है कि, हीरे की परख जौहरी जाने।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नीचे दी गई लोकोक्तियों के आगे उनके अर्थ के चार विकल्प दिए गए हैं। अर्थ की दृष्टि से जो विकल्प सही हो उसका चयन करिए।

1. अपना रख पराया-चख
   (क) भेदभाव करना
   (ख) दूसरे की वस्तु का उपभोग करना, जबकि अपनी की सुरक्षा करना
   (ग) चटोरा होना
   (घ) भोजन पका कर खाना
2. अधजल गगरी छलकत जाए
   (क) तुच्छ व्यक्ति अपनी जरा-सी उपलब्धि पर इतराने लगता है
   (ख) संभलकर न चलना
   (ग) अधिक बोलना
   (घ) अपनी छोटी सी बात की प्रशंसा करना
3. अपनी करनी पार उतरनी
   (क) बुरे कार्य करना
   (ख) साधुता दिखाना
   (ग) किसी के साथ अच्छा व्यवहार न करना
   (घ) जैसा कर्म वैसा फल
4. अपना हाथ जगन्नाथ।
   (क) फल की दृष्टि से स्वयं कार्य करना
   (ख) जगन्नाथ भगवान की पूजा करना
   (ग) लड़ने को उद्यत होना
   (घ) काम की बात करना
5. अब पछताए होते क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत।
   (क) समय पर काम करना
   (ख) चिड़ियों को दाना डालना
   (ग) क्षति के बाद पछतावा करना व्यर्थ
   (घ) खेत में सोना

Parikshā Manthan

6. अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग
(क) अपना दुखड़ा रोना (ख) मतैक्य का अभाव
(ग) संगठन का अभाव (घ) स्वतंत्र होना

7. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
(क) एक व्यक्ति के प्रयास से कुछ नहीं होता
(ख) चने भूनना
(ग) चने की खेती करना
(घ) आपस में वैर-भाव होना

8. अंधा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपने देय।
(क) आंख की रोशनी जाना (ख) रतौंधी आना
(ग) पक्षपात करना (घ) न्याय के आसन पर बैठना

9. अंधों में काना राजा।
(क) बहुत काइयां होना
(ख) कृतघ्न व्यक्ति
(ग) बहुत प्रभावशाली होना
(घ) अयोग्यों-अशिक्षितों के बीच थोड़ा सा योग्य व शिक्षित व्यक्ति

10. अंधा पावै आंखें तो पतियाय।
(क) अभीष्ट की प्राप्ति होने पर विश्वास का जमना
(ख) असंभव की चाह होना
(ग) असंभव को संभव कर दिखाना
(घ) कोई मूल्यवान वस्तु हाथ लगना

11. आंख के अंधे नाम नैनसुख।
(क) करिश्माई व्यक्ति
(ख) ऐसा नाम जो गुणों के विपरीत हो
(ग) नेत्रहीन होना
(घ) बहुत योग्य होना

12. आप मियांजी मांगते द्वार खड़े दरवेश।
(क) बहुत परोपकारी होना
(ख) दिल खोलकर धन खर्च करना
(ग) अति विपन्न के यहां मांगने वालो का आना
(घ) भिखारियों को दान

13. अंधे के हाथ बटेर लगना
(क) अंधेरे में कोई चीज मिल जाना
(ख) अपात्र को सफलता मिल जाना
(ग) अचानक कोई लाभ होना
(घ) भाग्य से कोई वस्तु मिल जाना

14. आम के आम गुठलियों के दाम।
(क) आम के बाग लगाना (ख) आम खाना
(ग) परिश्रम करना (घ) दोहरा लाभ

15. आसमान से गिरा खजूर में अटका।
(क) किसी काम के पूरा होते-होते बाधा पड़ जाना
(ख) विदेश से खजूर मंगवाना
(ग) काम में गति लाना
(घ) हवाई बातें करना

16. आप भला तो जग भला।
(क) भलाई की बातें करना
(ख) साथ बोलना
(ग) अच्छे को सभी अच्छे लगते हैं
(घ) नीतिवान होना

17. आगे कुआं पीछे खाईं।
(क) सैर-सपाटा करना (ख) हर तरफ विपत्ति का होना
(ग) कुआं खोदना (घ) खाईं पाटना

18. आप डूबे तो जग डूबा।
(क) सबको अपने समान समझना
(ख) मरने के बाद कौन देखने आता है कि क्या हुआ
(ग) स्वयं डूबे और यार को भी ले डूबे
(घ) बुरा आदमी सब को बुरा कहता है

19. अंधा क्या चाहे दो आंखें।
(क) नेत्रदान करना
(ख) अति आवश्यक वस्तु को पाने की चाहत
(ग) अपना माल लुटाना
(घ) कल्पनालोक में जीना

20. ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।
(क) विचित्र या विरोधाभासी संयोग
(ख) ईश्वर की महिमा का बखान करना
(ग) धूप में निकलना
(घ) न्याय करना

21. उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।
(क) कोतवाल के घर चोरी करना
(ख) थाने से भाग जाना
(ग) स्वयं दोषी होकर दूसरे पर दोष मढ़ना
(घ) डींगे मारना

22. ऊंट दूल्हा पुरोहित गधा।
(क) दो मूर्खों का परस्पर एक-दूसरे की प्रशंसा करना
(ख) उपहास करना
(ग) ऊंट और गधे की सवारी करना
(घ) झंझट से मुक्ति पाना

23. ऊंची दुकान फीका पकवान।
(क) अच्छे पकवान खाना
(ख) सिर्फ बाहरी प्रदर्शन, अंदर से खोखला

Pariksha Manthan

(ग) बड़ी दुकान से सामान खरीदना

(घ) मिलावट करना

24. आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।

(क) उद्देश्य की प्राप्ति में असफल होना

(ख) हरिभक्ति का मार्ग कठिन होता है

(ग) ईश्वर भक्ति छोड़कर व्यापार में लग जाना

(घ) किसी कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य काम में लग जाना

25. उल्टे बांस बरेली जाना।

(क) उल्टी बात का होना (ख) बांस का कारोबार करना

(ग) सही रास्ते पर चलना (घ) सुधार नहीं होना

26. आ बैल मुझे मार

(क) जानबूझकर मुसीबत में पड़ना

(ख) बलशाली के आगे वीरता दिखाना

(ग) छेड़छाड़ करना

(घ) कायर होकर भी बल का प्रदर्शन करना

27. ऊंट किस करवट बैठे।

(क) निश्चित परिणाम मिलना

(ख) अनिश्चय की स्थिति

(ग) रेगिस्तान से निकलना

(घ) बहुत पानी पीना

28. ऊंट के गले में बिल्ली।

(क) विपरीत वस्तुओं का मेल

(ख) बिल्ली पालना

(ग) ऊंट की तरह चलना

(घ) बड़बोलापन

29. ऊधो की पगड़ी माधो के सर।

(क) पगड़ियां बदलना

(ख) पगड़ी पहनकर घूमना

(ग) पक्षपातपूर्ण आचरण करना

(घ) एक का दोष दूसरे के सिर मढ़ना

30. ऊधो का लेना न माधो का देना

(क) भक्तिभाव से दूर रहना (ख) अपने काम से काम

(ग) सबसे अलग रहना (घ) हिसाब साफ रखना

31. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।

(क) कई गुणों का समावेश होना

(ख) स्वाद में कड़वा होना

(ग) बुरे में बुराई का और बढ़ जाना

(घ) कुरूप होना

32. एक आवे के बर्तन।

(क) सब एक जैसे

(ख) आपस में खट-पट होना

(ग) बर्तन बनाना

(घ) व्यवहार में कपट न होना

33. एक और एक ग्यारह होते हैं।

(क) भीड़ में बल है

(ख) संगठन में शक्ति है

(ग) संसार में सब संभव है

(घ) गणित विद्या में निपुणता प्राप्त करना

34. एक आंख से रोवे, एक आंख से हंसे।

(क) अस्थिर चित्त का व्यक्ति

(ख) बहुत अधिक विलास करना

(ग) दिखावटी रोना

(घ) अपराधों को छिपाना

35. एक हाथ से ताली नहीं बजती है।

(क) खुशियां मनाना

(ख) मूर्खता का काम करना

(ग) कोई असंभव कार्य करना

(घ) एक तरफ से झगड़ा नहीं होता है

36. एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं।

(क) एक स्थान पर दो सबल प्रतिद्वंद्वी या अधिकारी नहीं रह सकते

(ख) तलवार भांजना

(ग) महिलाओं का आपस में लड़ना-झगड़ना

(घ) ठूंस-ठूंस कर भरना

37. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

(क) मछली पालन करना

(ख) तालाब की सफाई करना

(ग) जल प्रदूषण को बढ़ाना

(घ) एक गंदा व्यक्ति सब के लिए कष्टप्रद बन जाता है

38. ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय।

(क) वृद्धों के लिए आश्रम खोलना

(ख) बूढ़े बैल से खेत जोतना

(ग) अकर्मण्य व्यक्ति की सहायता कौन करे

(घ) कोई अनहोनी होना

39. एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

Pariksha Manthan

(क) एक समय में एक ही काम करना चाहिए
(ख) एक साथ कई काम करने चाहिए
(ग) कामों को रुक-रुक कर करना चाहिए
(घ) मन लगाकर पढ़ाई करना

40. ओछी पूंजी खसम को खाय।
(क) दुश्चरित्र स्त्री
(ख) कम पूंजी वाला व्यापारी थोड़े दिनों में ही नष्ट हो जाता है
(ग) चोरी की कमाई
(घ) पति से विछोह होना

41. ओछे की प्रीति बालू की भीत।
(क) तुच्छ व क्षुद्र प्रकृति के व्यक्तियों की मित्रता स्थाई नहीं होती
(ख) सीमेंट में ज्यादा बालू मिलाना
(ग) बालू पर चलना
(घ) छिछोरी हरकत करना

42. ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।
(क) ओस से पानी बनाना
(ख) बहुत थोड़ी मात्रा से आवश्यकतापूर्ण नहीं होती
(ग) प्रकृति से चटोरा होना
(घ) बहुत अधिक पानी पीना

43. औसर चूकी डोमनी गावै ताल-बेताल
(क) अवसर गवां देने से कोई लाभ नहीं
(ख) टोना-टोटका करना
(ग) गायकी में महारत हासिल होना
(घ) नौटंकी करना

44. कहां राजा भोज कहां गंगू तेली
(क) राजा और सामान्य व्यक्ति की तुलना
(ख) बेमेल संबंध
(ग) ऊटपटांग बात करना
(घ) राजा और रंक की दोस्ती

45. काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।
(क) खाना पकाना
(ख) उधार न देना
(ग) लकड़ी का बर्तन अग्नि से जल सकता है
(घ) चालाकी से बार-बार काम नहीं निकलता

46. कमावै धोती वाला, उड़ावै टोपी वाला।
(क) धोती पहनने वाले ज्यादा कमाते हैं
(ख) टोपी पहनने वाले कम कमाते हैं
(ग) परिश्रमी लोग कमाते हैं, शौकीन उड़ाते हैं
(घ) चोरबाजारी करना

47. कंगाली में आटा गीला।
(क) आटे को असावधानीपूर्वक सानना
(ख) एक मुसीबत पर दूसरी मुसीबत आ जाना
(ग) अकाल पड़ना
(घ) काम बिगाड़ देना

48. कपट की प्रीति मरन की रीति।
(क) कपटी व्यक्ति का साथ घातक होता है
(ख) इश्क में जीना-मरना
(ग) आंसू बहाना
(घ) कपटपूर्ण व्यवहार करना

49. काला अक्षर भैंस बराबर
(क) अदूरदर्शी होना (ख) समदर्शी होना
(ग) छिद्रान्वेषी होना (घ) अनपढ़ होना

50. कभी के दिन बड़े कभी की रात।
(क) दिन बड़े होना रातें छोटी होना
(ख) रातें बड़ी होना दिन छोटे होना
(ग) कभी किसी की चढ़ बनती है, कभी किसी की
(घ) दिन-रात की परवाह न करना

51. कबाड़ी की छाज पर फूस नहीं।
(क) जो जिस चीज का व्यापार करता है, उसे खुद प्रयोग नहीं करता
(ख) कबाड़ का काम करना
(ग) गली-गली घूमना
(घ) दुकान सजाना

52. कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता।
(क) धोबी को धुलने के कपड़े देना
(ख) झगड़ा करना
(ग) सामान्य दशाओं में किया जाने वाला काम कहने पर नहीं करना
(घ) साफ कपड़े धोना

53. कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर।
(क) जीवन में एक-दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है
(ख) नौकायन करना
(ग) तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना
(घ) रामभरोसे रहना

54. कोयले की दलाली में हाथ काले।
(क) कोयले का व्यापार करना

Pariksha Manthan

(ख) बुरी संगति से बुराई ही मिलती है
(ग) मुश्किल में पड़ जाना
(घ) कोयला घर में रखना

55. काम का न काज का नौ मन अनाज का।
(क) बहुत खाने वाला
(ख) ज्यादा काम करने वाला
(ग) शरारती व्यक्ति
(घ) बैठ कर खाने वाला निठल्ला

56. कूद-कूद मछली बगुले को खाये।
(क) जब समय उल्टा आता है तो निर्बल भी बली हो जाते है
(ख) मछली पालन करना
(ग) निरंकुश होना
(घ) बहुत बड़ा काम करना

57. कोयला होय न उजला सौ मन साबुन धोय।
(क) काला-कलूटा होना
(ख) बार-बार स्नान करना
(ग) दुष्ट व्यक्ति की प्रकृति सीख देने से नहीं बदलती
(घ) कोई नहीं

58. कोठी वाला रोवै छप्पर वाला सोवै।
(क) धनी-निर्धन का झगड़ा
(ख) अधिक धन चिंता का कारण होता है
(ग) गरीबों को दान देना
(घ) गरीब को दौलत मिलना

59. कोई ओढ़े शाल-दुशाला कोई ओढ़े कंबल काला।
(क) सभी का भाग्य एक-सा नहीं होता
(ख) दिन में कई बार कपड़े बदलना
(ग) फकीर का रूप धरना
(घ) भक्ति रस में डूब जाना

60. गंगा गए गंगा दास, जमुना गए जमुना दास
(क) अपने-अपने घर जाना
(ख) जिसका कोई दृढ़ सिद्धांत नहीं होता
(ग) किसी की नहीं सुनना
(घ) अपना-अपना काम करना

61. गुरु गुड़, चेला चीनी
(क) गुरु के कथनानुसार करना
(ख) गुरु हमेशा सर्वोपरि होता है
(ग) चेले द्वारा महान कार्य करना
(घ) गुरु से चेले का आगे बढ जाना

62. घर आये नाग न पूजें, बामी पूजन जायें
(क) अवसर का लाभ न उठाना और बाद में उसके लिए परेशान रहना
(ख) कोरा दिखावा करना
(ग) वक्त पर काम न आना
(घ) बामी की पूजा करके सांप के पूजन के लाभ की आशा करना

63. चोर-चोर मौसेरे भाई।
(क) सब चोर समान होते हैं
(ख) चोरों की रिश्तेदारी का भरोसा
(ग) एक पेशे वाले आपस में नाता जोड़ लेते हैं
(घ) चोरों की माताओं के स्वभाव एक जैसे होते हैं

64. चोर की दाढ़ी में तिनका
(क) चोर साधारण जन से अधिक दान करता है
(ख) चोर आडम्बर दिखाता है
(ग) अपराधी सदा शंका से घिरा रहता है
(घ) इनमें से कोई नहीं

65. कोठी में अनाज घर में उपवास।
(क) कृपण व्यक्ति सब कुछ होते हुए भी उसका उपभोग नहीं कर पाता है
(ख) भूख से मरना
(ग) कोठी को अनाज से भरना
(घ) सेहत को ठीक रखने के लिए उपवास रखना

66. जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि।
(क) कवि की कल्पना वहां तक पहुंच जाती हैं, जहां तक सूर्य की रश्मियां नहीं पहुंचती
(ख) मंच पर काव्य पाठ करना
(ग) कवि भावप्रवण होता है
(घ) कवि निरंकुश होता है

67. नेकी और पूछ-पूछ।
(क) जिस पर कृपा करो उसका सदा ध्यान रखो
(ख) नेकी करने से पहले पूछने की जरूरत नहीं होती
(ग) सोच समझकर किसी के साथ नेकी करना
(घ) किसी पर उपकार कर उससे सम्मान पाने की इच्छा

68. नीम-हकीम खतरा-ए-जान
(क) अल्प विद्या घातक (ख) डींग हांकना
(ग) गलत इलाज करना (घ) खतरनाक चीजें

69. फिसल पड़े तो हर गंगा
(क) एक साथ दो काम करना
(ख) मजबूरी में काम करना
(ग) नुकसान उठाना
(घ) विपत्ति पड़ने पर ईश्वर का स्मरण करना

70. बिल्ली को पहले ही दिन मारना चाहिए।
(क) बुरा समय आते ही सचेत हो जाना चाहिए
(ख) रौब पहले दिन ही पड़ता है फिर नहीं
(ग) दुश्मन पर पहले ही वार कर देना चाहिए

Pariksha Manthan

(घ) भय का शमन शुरू में ही कर देना चाहिए

71. मांगे भीख पूछे गांव की जमा
(क) भीख मांगकर गुजारा करना
(ख) अपनी असलियत भूल कर बात करना
(ग) ग्राम समाज की भलाई करना
(घ) इनमें से कोई नहीं

72. राम नाम जपना, पराया माल अपना
(क) सर्वज्ञ होना
(ख) दान करना
(ग) धोखे से धन जमा करना
(घ) दूसरों से सहानुभूति रखना

73. सावन हरे न भादों सूखे।
(क) सुख-दुख से परे रहना
(ख) स्थिर चित्त रहना
(ग) मुंह पर मन के भाव न आने देना
(घ) सदैव एक-सा रहना

74. सब धान बाइस पसेरी।
(क) सभी वस्तुओं का एक ही मूल्य होना
(ख) अच्छा-बुरा सबको एक समान समझना
(ग) बहुत महंगा होना
(घ) बहुत सस्ता होना

75. हंसुए के ब्याह में खुरपी का गीत।
(क) जश्न मनाना (ख) शादी का गीत गाना
(ग) असंगत बातें करना (घ) निचले स्तर का कार्य करना

76. हाथ कंगन को आरसी क्या।
(क) प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं
(ख) बिल्कुल पढ़ा-लिखा न होना
(ग) सुंदर स्त्री के आभूषणों की आवश्यकता नहीं
(घ) विद्वान को धन की आवश्यकता नहीं

77. कौड़ी नहीं पास मेला लगे उदास।
(क) मेला देखने जाना
(ख) मेले में जुआ खेलना
(ग) धनाभाव में अच्छी चीज भी खराब लगती है
(घ) मेले में जाकर खरीददारी करना

78. कौआ चला हंस की चाल।
(क) दूसरों की नकल पर चलने में असलियत नहीं छिपती
(ख) हृदय परिवर्तन होना
(ग) तेज चाल से चलना
(घ) जोड़ा बनाकर रहना

79. खरी मजूरी चोखा काम।
(क) कामचोरी करना
(ख) अच्छे काम के लिए अच्छी मजदूरी देनी पड़ती है
(ग) मजदूरी ज्यादा मांगना
(घ) कम मजदूरी देना

80. खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
(क) चुहिया को तलाशना
(ख) खनन का काम करना
(ग) बड़ी-बड़ी डींगे मारना
(घ) अधिक श्रम करने पर कम लाभ होना

81. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।
(क) बिल्ली के दूध पीने पर खिसियाना
(ख) कुत्ते-बिल्ली की लड़ाई
(ग) खिसियाहट में कोई अटपटा कार्य करना
(घ) सिर धुनना

82. खेत खाए गदहा, मार खाए जो-रहा।
(क) दोष किसी और का दंड किसी और को
(ख) खेत चरने के लिए गदहों को छोड़ना
(ग) ज्यादती करना
(घ) गधे की सावरी करना

83. गुड़ न दें, पर गुड़ की सी बात तो करें।
(क) खाने को गुड़ देना
(ख) कुछ न दें पर मीठा बोल तो बोलें
(ग) मीठे पकवान बनाना
(घ) इनमें से कोई नहीं

84. घर खीर तो बाहर खीर।
(क) बहुत खीर खाना
(ख) घर में खीर बनाना
(ग) अपने पास कुछ हो तभी बाहर भी आदर होता है
(घ) इनमें से कोई नहीं

85. चांद को भी ग्रहण लगता है।
(क) नेकी करने पर भी बुरा बर्ताव करना
(ख) भले आदमी की बदनामी होना
(ग) दूसरों की भलाई न करना
(घ) इनमें से कोई नहीं

86. चुपड़ी और दो-दो।
(क) चुपड़ी रोटी खाना
(ख) दो रोटियां घी से चुपड़ कर खाना
(ग) अधिक मात्रा में उत्तम वस्तु की प्राप्ति
(घ) इनमें से कोई नहीं

87. चोरी का माल मोरी में।
(क) सामान चुराकर नाली में छिपाना
(ख) हराम की कमाई बेकार जाती है
(ग) चोरी का माल बहुत फलता है
(घ) इनमें से कोई नहीं

Parikshā Manthan

88. छोटे मियां तो छोटे मियां बड़े मियां सुबान अल्लाह।
(क) बाप-बेटे का महान होना
(ख) दो भाइयों द्वारा खूब तरक्की करना
(ग) दुर्गुणों के मामले में बड़ा, छोटे से ज्यादा भारी
(घ) इनमें से कोई नहीं

89. जड़ काटते जाएं पानी देते जाएं।
(क) पौध रोपण करना
(ख) जंगल की कटाई करना
(ग) शत्रुता के साथ मित्रता का दिखावा
(घ) इनमें से कोई नहीं

90. जस दूल्हा तस बनी बरात।
(क) भव्य बरात निकालना
(ख) जैसे खुद वैसे ही साथी-संगी
(ग) शादी-ब्याह में रौनक न होना
(घ) इनमें से कोई नहीं

91. डंडा सब का पीर।
(क) डंडे से रक्षा करनी चाहिए
(ख) डंडा गौरव का प्रतीक है
(ग) सख्ती बरतने से लोग काबू में आते हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं

92. ढोल के भीतर पोल।
(क) ढोल पीटना
(ख) दिखावटी शान
(ग) ढोल को पीट-पीट कर फाड़ना
(घ) इनमें से कोई नहीं

93. थका ऊंट सराय ताकता।
(क) थकने पर विश्राम की जरूरत
(ख) ऊंट को कम खाना देना
(ग) अधिक प्यास लगना
(घ) इनमें से कोई नहीं

94. दो लड़ें तीसरा ले उड़े।
(क) भीषण मार-काट मचाना
(ख) दो की लड़ाई में तीसरे की बन आती है
(ग) झगड़े में मध्यस्थता करना
(घ) इनमें से कोई नहीं

95. नंगा बड़ा परमेश्वर से।
(क) निर्लज्ज से सब डरते हैं
(ख) दुष्ट व्यक्ति भगवान की निंदा करते हैं
(ग) पूजा-पाठ से विलग रहना
(घ) इनमें से कोई नहीं

96. पिया गये परदेश अब डर काहे का।
(क) कमाने के लिए पति का बाहर जाना
(ख) बीवी का गुलाम होना
(ग) जब कोई निगरानी करने वाला न हो तो भयमुक्त होकर मनमानी करना
(घ) इनमें से कोई नहीं

97. बनी के सब यार हैं।
(क) दोस्ती-यारी में जान देना
(ख) मित्रता बढ़ाना
(ग) अच्छे दिनों में सभी दोस्त बनते हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं

98. भूख लगे तो घर की सूझी।
(क) जरूरत पड़ने पर अपनों की याद आती है
(ख) घर जाकर खाना पकाना
(ग) घर से भागना
(घ) इनमें से कोई नहीं

99. योगी था सो उठ गया आसन रही भभूत।
(क) भभूत बांटना
(ख) आसन लगाकर योगाभ्यास करवाना
(ग) पुराना गौरव समाप्त होना
(घ) इनमें से कोई नहीं

100. होठों निकली कोठों चढ़ी।
(क) वेश्यागामी होना
(ख) कान में कुछ कहना
(ग) मुंह से निकली बात सभी जगह फैल जाती है
(घ) इनमें से कोई नहीं

101. 'कै हंसा मोती चुगै, कै भूखा मर जाए' यह लोकोक्ति किस अर्थ को व्यक्त करती है?
(क) हंस उपवास करता है
(ख) व्यक्ति का स्वभाव कभी नहीं बदलता
(ग) दृढ़ एवं प्रणबद्ध व्यक्ति कभी समझौता नहीं करता
(घ) हंस उड़ता हुआ मोती चुगता है

102. 'जस दूल्हा, तस बनी बरात' लोकोक्ति से निहितार्थ है—
(क) ऐसी बरात, जिसमें सब दूल्हे-ही-दूल्हे हों
(ख) ऐसी बरात, जिसमें सब दूल्हे के दोस्त हों
(ग) ऐसी बरात जिसमें बैंड-बाजे न हों
(घ) प्रमुख व्यक्ति जिस स्तर का होता है, साथी भी उसी स्तर के एकत्र हो जाते हैं

103. 'जो बोले सो कुंडी खोले' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) बोल कर कर कुंडी खोलना
(ख) व्यक्ति जिस कार्य में रुचि दिखाता है, उसका भार उसी पर डाल दिया जाता है
(ग) चिल्ला-चिल्ला कर कुंडी खुलवाना
(घ) व्यक्ति को कुंडी खोलने का काम सौंपना

Pariksha Manthan

104. 'जो बिंध गया सो मोती' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) उच्च पदस्थ लोगों के बीच स्थान पाने वाले में गुण या चमक निकल ही आती है
(ख) मोती टांकने का काम करना
(ग) समुद्र की तह में मोती खोजना
(घ) श्रेष्ठ व्यक्ति को पुरस्कृत करना

105. 'पहले आत्मा, फिर महात्मा' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) आत्मा कभी नष्ट नहीं होती
(ख) आत्मा ही परमात्मा है
(ग) मानव अपना स्वार्थ पहले देखता है, परमार्थ के बारे में बाद में सोचता है
(घ) आत्मा, महात्मा से श्रेष्ठ है

106. 'लिखत सुधाकर, लिखगा राहू' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) स्वभावतः अच्छा करने पर भी भाग्यवश अथवा असावधानी के कारण विपरीत परिणाम प्राप्त होना
(ख) चन्द्रमा का चित्र बनाना
(ग) राशिफल लिखना
(घ) चाँद पर जाने का प्रयास करना

107. 'विधि का लिखा को मेटनहारा' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) भाग्य को कोसना
(ख) जो भाग्य में लिखा है, उसे कोई मिटा नहीं सकता
(ग) पुरुषार्थी भाग्य को भी बदल देते हैं
(घ) भाग्य सभी का एक जैसा नहीं होता

108. 'सहज पके सो मीठा होय' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) जो काम आसानी से बन जाते अथवा संपन्न हो जाते हैं, वे विशेष आनंद प्रदान करते हैं
(ख) बहुत प्रयत्न करने पर भी वस्तु का न मिलना
(ग) पाल में रखकर फलों को पकाना
(घ) मीठे फलों का व्यापार करना

109. 'हंसा थे सो उड़ि गए, काग भए दीवान' लोकोक्ति का अर्थ है—
(क) निराशाजनक प्रदर्शन करना
(ख) भले लोग वर्तमान समाज में उपेक्षित रहते हैं
(ग) हंस कौओं के पीछे-पीछे उड़ता है
(घ) किसी समाज में अच्छे व विवेकी व्यक्तियों के न रहने पर वहां बहुद्धिहीन एवं अयोग्य लोगों का बोलबाला बढ़ जाता है

110. 'हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा ही आवै' लोकोक्ति का सही अर्थ है—
(क) बगैर उद्यम एवं धन व्यय किए भी काम बना ले जाना
(ख) हलदी और फिटकरी को मिलाकर रंग बनाना
(ग) धोखे में रखकर व्यक्ति को ठग लेना
(घ) रंगरेज का काम करना

उत्तरमाला

1. (ख)	2. (क)	3. (घ)	4. (क)	5. (ग)
6. (ख)	7. (क)	8. (ग)	9. (घ)	10. (क)
11. (ख)	12. (ग)	13. (ख)	14. (घ)	15. (क)
16. (ग)	17. (ख)	18. (घ)	19. (ख)	20. (क)
21. (ग)	22. (क)	23. (ख)	24. (घ)	25. (क)
26. (ख)	27. (ख)	28. (क)	29. (घ)	30. (ख)
31. (ग)	32. (क)	33. (ख)	34. (ग)	35. (घ)
36. (क)	37. (घ)	38. (ग)	39. (क)	40. (ख)
41. (क)	42. (ख)	43. (क)	44. (ख)	45. (घ)
46. (ग)	47. (ख)	48. (क)	49. (घ)	50. (ग)
51. (क)	52. (ग)	53. (क)	54. (ख)	55. (घ)
56. (क)	57. (ग)	58. (ख)	59. (क)	60. (ख)
61. (घ)	62. (क)	63. (ग)	64. (ग)	65. (क)
66. (क)	67. (ख)	68. (क)	69. (ख)	70. (घ)
71. (ख)	72. (ग)	73. (घ)	74. (ख)	75. (ग)
76. (क)	77. (ग)	78. (क)	79. (ख)	80. (घ)
81. (ग)	82. (क)	83. (ख)	84. (ग)	85. (ख)
86. (ग)	87. (ख)	88. (ग)	89. (ग)	90. (ख)
91. (ग)	92. (ख)	93. (क)	94. (ख)	95. (क)
96. (ग)	97. (ग)	98. (क)	99. (ग)	100. (ग)
101. (ग)	102. (घ)	103. (ख)	104. (क)	105. (ग)
106. (क)	107. (ख)	108. (क)	109. (घ)	110. (क)

मुहावरे

मुहावरे : ये वे वह वाक्यांश होते हैं, जिसका शब्दार्थ न ग्रहण करके, विलक्षण अर्थ ग्रहण किया जाता है। यह विलक्षण अर्थ ही वाक्य में चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न करता है तथा भाषा की जीवंतता को बढ़ाता है। यह भी कह सकते हैं कि भाषा में परिलक्षित होकर चमत्कारिक प्रभाव पैदा करने वाली असाधारण शब्द योजना मुहावरा की श्रेणी में आती है।

जैसे—आँखों में धूल झोंकना।

अब अगर इस मुहावरे के साधारण अर्थ पर गौर करें तो आंखों में धूल डालना सामने आता है, मगर मुहावरे की भाषा में इसका विलक्षण अर्थ ध्वनित होता है। यह है धोखा देना। इस मुहावरे का वाक्य प्रयोग हम इस प्रकार कर सकते हैं—आजकल के नेता वादे कुछ करते हैं और करते कुछ और ही हैं। वे जनता की आंखों में धूल झोंक रहे हैं।

वाक्य प्रयोग में यह मुहावरा विलक्षण अर्थ दे रहा है तथा एक विशेष प्रभाव पैदा कर रहा है।

मुहावरा मूलतः अरबी भाषा का शब्द है, जो अब हिन्दी में

Pariksha Manthan

प्रचलन में है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है—'अभ्यास'। बोलचाल में अतिशय अभ्यास के जरिये जो वाक्यांश प्रचलन में आकर भाषा का अभिन्न अंग बन गये, वे मुहावरे कहलाए। भाषा में लालित्य और प्रवाह पैदा करने तथा इसकी रोचकता को बढ़ाने के लिए मुहावरों का सीमित और सही प्रयोग ही करना चाहिए तथा इसके लाक्षणिक अर्थ को समझने की कोशिश करनी चाहिए। मुहावरों की शब्दावली से छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से भाषा का सौंदर्य तो नष्ट होता ही है, अर्थ की विलक्षणता भी नष्ट होती है।

मुहावरों की विशिष्टता यह होती है कि ये वाक्यांश के रूप में प्रयुक्त होते हैं, न कि स्वतंत्र वाक्य के रूप में। इनका मूल रूप भी परिवर्तित नहीं होता। मसलन—'आंखों के आगे अंधेरा छा जाना' मुहावरे का प्रयोग यदि हम 'लोचनों के आगे अंधेरा छा जाना' करें, तो यह न तो सही ही है और न ही स्वीकार्य। ऐसे प्रयोग अर्थ का अनर्थ तो करते ही हैं, भाषा को भद्दा और दूषित भी करते हैं। अतः इस संदर्भ में सतर्कता बरतनी चाहिए। मुहावरों के वाक्य प्रयोग में भी सावधानी बरतनी चाहिए। वाक्य प्रयोग इतना सटीक और संतुलित हो कि मुहावरा वाक्य में इस तरह समाहित हो जाए, जैसे किसी सुंदर कृति में कोई मोती टंका हो।

मुहावरों का प्रयोग वाक्य के बीच इस प्रकार करना चाहिए कि विलक्षण अर्थ की सहज अभिव्यक्ति तो हो ही, भाषा की रवानी भी बनी रहे। यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मुहावरे का सही प्रयोग ही भाषा में जादुई असर दिखाता है और इसकी प्रभावोत्पादकता को बढ़ाता है।

प्रतियोगी छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखकर हम यहां कुछ ऐसे चुनिंदा मुहावरों की सूची दे रहे हैं, जो परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

मुहावरे (वाक्य प्रयोग सहित)

1. **अंग-अंग ढीला होना** (थक कर चूर होना)
   चौबीस घंटे की लंबी रेल यात्रा के बाद मेरा अंग-अंग ढीला हो रहा है।
2. **अंगारे उगलना** (क्रोध के आवेग में कठोर वचन कहना)
   बंटी ने मोहित बाबू के स्कूटर की हवा निकाल दी। उसे देखते ही वह अंगारे उगलने लगे।
3. **अंगूठा दिखाना** (देने से मना कर देना)
   कपिल बड़ी उम्मीद लेकर अपने पुराने मित्र प्रभात से मदद, मांगने गया था, मगर उसने अंगूठा दिखा दिया।
4. **अंगारों पर पैर रखना** (खतरा मोल लेना)
   दस्यु प्रभावित इलाकों में जाकर उसका पता लगाना अंगारों पर पैर रखना होगा।
5. **अंधे की लकड़ी** (एकमात्र सहारा)
   दुर्घटना में अखिलेश की मौत यकीनन दुखद है। अपनी बूढ़ी माँ के लिए तो वह अंधे की लकड़ी था।
6. **अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी मारना** (स्वयं अपना नुकसान करना)
   अपने बॉस की अवज्ञा कर तुम अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी मार रहे हो।
7. **अंधे के हाथ बटेर लगना** (अक्षम व्यक्ति के हाथ मूल्यवान वस्तु लगना)
   मुझे समझ में नहीं आता कि कैसे राहुल को उस प्रतिष्ठित संस्था का अध्यक्ष बना दिया गया। यह तो अंधे के हाथ बटेर लगना जैसा है।
8. **अपना उल्लू सीधा करना** (स्वार्थ साधना)
   रंजना अपना उल्लू सीधा करने के लिए तुमसे मीठी-मीठी बातें करती है। उसकी बातों में न आना।
9. **अक्ल का दुश्मन** (निहायत बेवकूफ)
   अर्जुन निरा अक्ल का दुश्मन ही है। कहा था दही लाने को, ले आया पनीर।
10. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** (दिमाग का काम न करना/कुछ समझ में न आना)
    मेरी ही अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे, जो इतनी बड़ी रकम मैंने उसे उधार दे दी।
11. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** (साथ मिलकर न रहना/अलग रहना)
    अब अपनी खिचड़ी अलग पकाना बंद करो। समझदारी इसी में है कि मेरी योजना में शामिल हो जाओ।
12. **अक्ल के घोड़े दौड़ाना** (सोच-विचार करना)
    उसने अक्ल के घोड़े तो खूब दौड़ाए, मगर उस समस्या से उबर नहीं पाया।
13. **अड़ियल टट्टू** (हठी)
    तुम निरे अड़ियल टट्टू ही हो क्या। अपनी बात पर ही अड़े हो। अरे मेरा मंतव्य तो समझने की कोशिश करो।
14. **अगर-मगर करना** (टाल-मटोल करना)
    मैं तुम्हें महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपना चाहता हूं और तुम हो कि अगर-मगर किए जा रहे हो।
15. **अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना** (खुद अपनी तारीफ करना)
    तुम अपने मुंह मियां मिट्ठू बना करो, दुनिया तो तुम्हारी असलियत जानती है।
16. **अपना सा मुंह लेकर रह जाना** (शर्मिंदा होना)
    राकेश अपनी गलती मानने को तैयार नहीं था, किंतु लिखित साक्ष्य दिखाए जाने के बाद वह अपना सा मुंह लेकर रह गया।
17. **अपना ही राग अलापना** (अपनी ही बात कहे जाना)
    चुनाव के समय सभी राजनीतिक पार्टियां अपना ही राग अलापती हैं।
18. **आंख दिखाना** (कुपित होकर देखना)
    गलती तुम्हारी है और आंखें मुझे दिखा रहे हो।
19. **आंखे चार होना** (प्यार होना)
    अलका से आंखें चार होने के बाद विजय की दीवानगी दिनोंदिन बढ़ने लगी।
20. **आंखें खुलना** (होश आना)
    सुरेश की करतूतों का पता चलने के बाद उसके पिता की आंखें खुल गईं।

Pariksha Manthan

21. **आंखों का कांटा** (अप्रिय व्यक्ति)
चूंकि मैं सच बोलता हूं, इसलिए आपकी आंखों का कांटा बन गया हूं।

22. **आंखें चुराना** (अनदेखा करना)
सच से जो आंख चुराते हैं, उन्हें एक दिन पछताना पड़ता है।

23. **आंखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)
शातिर लुटेरे पुलिस की आंख में धूल झोंक कर निकल भागे।

24. **आंखें पथरा जाना** (देखते-देखते अत्यंत थक जाना)
पति की प्रतीक्षा करते-करते पुष्पा के दस साल गुजर गए। अब तो उसकी आंखें पथराने लगी हैं।

25. **आंखें फेर लेना** (विमुख होना)
मुसीबत के समय अपने भी आंखें फेर लेते हैं।

26. **आंखों पर परदा पड़ना** (सच्चाई का एहसास नहीं होना)
अभी आप की आंखों पर परदा पड़ा है, जो आप मुझ पर अविश्वास कर रहे हैं। असलियत सामने आने पर आपको पछतावा होगा।

27. **आंच न आने देना** (चोट या हानि से बचाना)
चौकन्ने सुरक्षा कर्मियों ने स्टेशन पर रखे बम को निष्क्रिय कर दिया और मुसाफिरों की सुरक्षा पर आंच न आने दी।

28. **आंख लगना** (नींद आना)
अभी शैलजा की आंख लगी ही थी कि कुत्ते ने फिर से भौंकना शुरू कर दिया।

29. **अग्नि परीक्षा देना** (कठिन स्थितियों से गुजरना)
कुंभ मेला सकुशल सम्पन्न करवाने के लिए प्रशासन को अग्नि परीक्षा देनी पड़ेगी।

30. **आटे-दाल का भाव मालूम होना** (दुनिया की हकीकतों का पता चलना)
गृहस्थी का बोझ उठाने के बाद मुझे आटे-दाल का भाव पता चला।

31. **आकाश के तारे तोड़ना** (असंभव काम करना)
प्रेम दीवाने अक्सर प्रेयसी के लिए आकाश से तारे तोड़ कर लाने की बात करते हैं।

32. **आकाश-पाताल एक करना** (बहुत परिश्रम करना)
ढाई करोड़ की डकैती का पर्दाफाश करने के लिए पुलिस ने आकाश-पाताल एक कर दिया।

33. **आसमान से बातें करना** (बहुत ऊंचा होना)
महानगरों की बहुमंजली इमारतें आसमान से बातें करती नजर आती हैं।

34. **आग बबूला होना** (गुस्से से भर उठना)
अपने छोटे बेटे के देर रात घर लौटने पर सुकेश जी आग बबूला हो गए।

35. **आग में घी डालना** (भड़काना, और बिगाड़ना)
शहर का माहौल पहले से ही खराब था, ऊपर से नेताजी के भाषण ने आग में घी डाल दिया और देखते-ही-देखते दंगा शुरू हो गया।

36. **आड़े हाथों लेना** (फटकारना या कड़ाई से पेश आना)
शिकायत सही पाई जाने पर जिलाधिकारी ने अपने मातहत को आड़े हाथों लिया।

37. **आस्तीन का सांप** (धोखेबाज साथी)
जांच के बाद पता चला कि मुकेश के बेटे के अपहरण में राजेन्द्र का हाथ था। लोग कह रहे थे कि ऐसे दोस्त आस्तीन का सांप होते हैं।

38. **आपे से बाहर होना** (अत्यंत क्रोधित होना)
मैंने उन्हें समझाया, आपे से बाहर न होइये। यह समय धीरज रखने का है।

39. **आसमान सिर पर उठाना** (अधिक शोर मचाना)
नौकर से कांच का गिलास क्या टूट गया, दुकान के मालिक ने आसमान सिर पर उठा लिया।

40. **ईद का चांद होना** (बहुत कम, कभी-कभी ही दिखना)
इसी शहर में रहते हो और इतने दिन बाद मिले हो। सचमुच तुम तो ईद के चांद हो गए हो।

41. **इशारे पर नाचना** (वश में होना)
कैसा जमाना आ गया है, पुलिस अपराधियों के इशारों पर नाच रही है।

42. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (आक्रमण का उत्तर, ज्यादा उग्र आक्रमण से देना)
नक्सलियों को जब तक हम ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देंगे, तब तक निर्दोष यूं ही मारे जाते रहेंगे।

43. **ईंट से ईंट बजाना** (नष्ट-भ्रष्ट कर देना)
भारतीय सेना ने दुश्मनों की ईंट से ईंट बजा दी।

44. **उलटी गंगा बहाना** (नियम के विपरीत काम करना)
पेशी पर आए कैदियों को सैर-सपाटा कराकर पुलिस वाले उलटी गंगा ही तो बहा रहे हैं।

45. **उंगली पर नचाना** (वश में करना)
सोनम का पति सुमंत उसकी उंगली पर नाचता है।

46. **उधेड़बुन में पड़ना** (दुविधा में पड़ना)
वह अपना कैरियर चिकित्सा के क्षेत्र में संवारे या सिविल सेवाओं के, इसे लेकर उधेड़बुन में पड़ा था।

47. **उन्नीस-बीस का अंतर** (बहुत थोड़ा फर्क)
उनकी दोनों बेटियों की सुन्दरता में उन्नीस-बीस का अंतर है।

48. **उलटी-सीधी सुनाना** (बुरा-भला कहना)
मुझे उलटी-सीधी क्यों सुना रही हैं, गलती तो आपकी सहेली की है।

49. **उंगली उठाना** (लांछन लगाना)
मुझ पर उंगली उठाने से पहले अपने गिरेबान में तो झांक लो।

50. **उल्लू बनाना** (मूर्ख बनाना)
तुमने मुझे खूब उल्लू बनाया। दिन भर इंतजार करवाया और आए भी नहीं।

51. **एड़ी-चोटी का जोर लगाना** (पूरा प्रयास करना/पूरी शक्ति लगा देना)
फाइनल मुकाबले में पाकिस्तान को हराने के लिए भारतीय क्रिकेट टीम ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया।

Pariksha Manthan

52. **एक और एक ग्यारह होना** (संगठन में शक्ति होना)
तुम मेरा साथ दो तो सफलता अवश्य मिलेगी। आखिर एक और एक ग्यारह होते हैं।

53. **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना** (एक जैसा होना)
तुम्हें इतना समझाया था कि सुरेश और मयंक पर विश्वास मत करना, दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

54. **एक ही लकड़ी से हांकना** (अच्छे-बुरे की पहचान न करना)
आप सभी को एक ही लकड़ी से हांकते हैं। यह एक अच्छे प्रशासक की पहचान नहीं है।

55. **कमर कसना** (तैयार होना)
ईद का त्योहार सकुशल सम्पन्न करवाने के लिए प्रशासन ने कमर कस ली है।

56. **कलई खुलना** (रहस्य उजागर होना)
सरकार बदलते ही पुरानी सरकार के कई मंत्रियों की कलई खुलनी शुरू हो गई।

57. **कलम तोड़ना** (बेजोड़ लिखना)
पूरा आलेख पढ़ने के बाद संपादकजी ने कहा- ''वाह, लेखक ने सचमुच कलम तोड़ दी।''

58. **कच्ची गोलियां खेलना** (अनुभव की कमी होना)
तुम क्या समझते हो, मैंने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। उसे ऐसा सबक सिखाऊंगा कि जीवन भर याद रखेगा।

59. **कड़वे घूंट पीना** (कष्टप्रद बात सहन करना)
वह आदमी नहीं, हैवान है। उसके साथ काम कर मैं कब तक कड़वे घूट पीता रहूंगा।

60. **कन्नी काटना** (बचना)
जब से मैंने राघव को उधार पैसे दिए हैं, वह मुझसे कन्नी काटने लगा है।

61. **कलेजा मुंह को आना** (दुख से आकुल हो उठना)
वह हृदयविदारक दृश्य देखकर मेरा कलेजा मुंह को आ गया।

62. **कलेजा छलनी होना** (अत्यंत दुखी होना)
ऐसी अपमानजनक बातें सुनकर किसका कलेजा छलनी नहीं होगा।

63. **कलेजे पर हाथ रखना** (दिल का गवाह बनना)
अपने कलेजे पर हाथ रखकर सोचो कि जो कुछ तुमने किया, क्या वह उचित है।

64. **कलेजे पर पत्थर रखना** (धीरज बनाए रखना)
अपने साझीदार द्वारा विश्वासघात किए जाने पर सेठ करमचंद ने उफ न की। उन्होंने कलेजे पर पत्थर रख लिया।

65. **कान कतरना** (बहुत चालाक होना)
आजकल के लड़कों को कम न समझो, वे बड़े-बड़ों के कान कतर रहे हैं।

66. **कान का कच्चा होना** (झूठी बातों पर ध्यान देने वाला)
चुगलखोर कर्मचारी कान के कच्चे अधिकारी के इर्द-गिर्द मंडराते रहते हैं।

67. **कान पर जूं न रेंगना** (जरा भी असर न होना)
आए दिन ट्रैफिक जाम की खबरें अखबारों में छप रही हैं, किंतु यातायात पुलिस के कान पर जूं नहीं रेंग रही है।

68. **कान भरना** (चुगली करना)
अरे, तुम कैसी बहू हो, दिनभर सास के खिलाफ पति के कान भरा करती हो।

69. **कानोंकान खबर न होना** (किसी को बिल्कुल पता न चलना)
किसी को कानोंकान खबर न हुई और सरकार ने इतना बड़ा निर्णय ले लिया।

70. **काम तमाम करना** (मार देना)
लुटेरों ने गृहस्वामी का काम तमाम करने के बाद जमकर लूटपाट की।

71. **कागज काला करना** (व्यर्थ ही लिखना)
कागज काला करने से कोई फायदा नहीं, पहले निबंध लिखने की शैली सीखो।

72. **किस्मत फूटना** (भाग्य का साथ न देना)
महेश जिस काम में हाथ लगाता है, असफल रहता है। शायद उसकी किस्मत ही फूट गई है।

73. **किस्मत को रोना** (भाग्य को कोसना)
अब किस्मत पर रोने से कोई फायदा नहीं। पहले यदि सतर्कता बरती होती तो यह दिन न देखना पड़ता।

74. **किताबी कीड़ा** (हर समय पढ़ने वाला)
श्रीवास्तवजी का लड़का निरा किताबी कीड़ा है। आप उससे व्यावहारिक ज्ञान की उम्मीद कैसे कर सकते हैं।

75. **कुत्ते की मौत मरना** (बुरी मौत मरना)
अपराध की दुनिया में कदम रखने वाले कुत्ते की मौत मारे जाते हैं।

76. **कोल्हू का बैल** (लगातार काम में लगे रहना)
कोल्हू के बैल की तरह मेहनत कर पिताजी जो पैसे कमाते हैं, उन्हें तुम इस तरह बर्बाद मत करो।

77. **खरी-खोटी सुनाना** (बुरा-भला कहना)
निर्लज्ज लोगों को कितनी भी खरी-खोटी सुनाओ, उनकी सेहत पर फर्क नहीं पड़ता।

78. **खटाई में पड़ना** (काम अवरोधित होना)
मेहता जी का स्थानान्तरण हो जाने के कारण आदित्य की नियुक्ति का मामला खटाई में पड़ गया।

79. **खाई पाटना** (भेदभाव कम करना)
दोनों गुटों के बीच खाई पाटने की कई बार कोशिशें हुईं, मगर बात नहीं बनी।

80. **खाक छानना** (कष्ट उठाना)
इस मुकाम तक पहुंचने के लिए संतोष ने कम खाक नहीं छानी।

81. **खाक में मिलाना** (पूरी तरह नष्ट करना)
मेरी मोहब्बत को खाक में मिलाकर तुम्हें क्या मिलेगा।

82. **खाने को दौड़ना** (बुरी तरह पेश आना)
भोला बाबू जब देखो खाने को दौड़ पड़ते हैं। मैंने उनका ऐसा क्या बिगाड़ा है।

83. **खून का घूंट पीना** (क्रोध को पी जाना)
गुंडों की हरकत पर आज तो कैलाश बाबू खून का घूंट पीकर रह गये, मगर कल क्या होगा, कहा नहीं जा सकता।

Pariksha Manthan

84. **खून खौलना** (आवेश में आना)
शोहदे राह चलती लड़कियों पर फब्तियां कस रहे थे। यह देखकर विक्रांत का खून खौल उठा।

85. **खून सूखना** (डर जाना)
सांप को खिड़की से अंदर आता देखकर मेरा तो खून ही सूख गया।

86. **खून का प्यासा** (जानी दुश्मन)
मैंने अतुल की काली करतूतें क्या उजागर की, वह मेरे खून का प्यासा हो गया।

87. **खून-पसीना एक करना** (खूब मेहनत करना)
अमरकांत ने डॉक्टर बनने के लिए खून-पसीना एक कर दिया।

88. **खेल बिगाड़ना** (काम खराब कर देना)
तुम्हारी अगंभीरता ने तुम्हारा सारा खेल बिगाड़ दिया, वरना जहां आज वह है, वहां तुम होते।

89. **ख्याली पुलाव पकाना** (कल्पनाओं में डूबे रहना)
नितिन कुछ करता-धरता नहीं है, बस दिनभर ख्याली पुलाव पकाया करता है।

90. **गले मढ़ना** (जबरदस्ती कोई काम सौंपना)
अधिकारी महोदय हर टेढ़ा काम दिलीप के ही गले मढ़ देते हैं।

91. **गले पड़ना** (मुसीबत पीछे पड़ना)
मैंने जोखिम उठाकर उमाशंकर का एक काम क्या कर दिया, अब तो वह मेरे गले ही पड़ गया है।

92. **गज भर की छाती होना** (गर्व से भर उठना)
मेजर कुलदीप को वीरता पदक मिलने पर उनके पिता की छाती गज भर हो गई।

93. **गड़े मुर्दे उखाड़ना** (बीती बातों को उठाना)
गड़े मुर्दे मत उखाड़िए आलोक बाबू, मुझे अब आप से कोई गिला-शिकवा नहीं है।

94. **गर्दन पर सवार होना** (पीछे पड़ जाना)
मेरी गर्दन पर सवार होने से कोई फायदा नहीं। आपका काम अगले हफ्ते ही पूरा हो पायेगा।

95. **गर्दन उठाना** (विरोध करना)
नक्सलियों के आतंक के खिलाफ कौन गर्दन उठाए। अपनी जान तो सभी को प्यारी है।

96. **गिरगिट की तरह रंग बदलना** (बात पर कायम न रहना)
आजकल के नेताओं का कोई चरित्र नहीं, वे तो गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं।

97. **गुड़ गोबर कर देना** (बात बिगाड़ देना/बने हुए काम को बिगाड़ देना)
मैंने इतनी मेहनत से ड्रामे की स्क्रिप्ट तैयार की थी। तुमने उस पर दूध फैलाकर सब गुड़ गोबर कर दिया।

98. **गुदड़ी के लाल** (साधनहीन व निर्धन परिवार में जन्मा गुणी व्यक्ति)
पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का जीवन सफर बताता है कि वह गुदड़ी के लाल थे।

99. **गुल खिलाना** (कोई निकृष्ट कार्य करना)
पीयूष हॉस्टल में रहकर जब नित नये गुल खिलाने लगा तो उसके पिता ने उसे वापस घर बुला लिया।

100. **गुलछर्रे उड़ाना** (मौज-मस्ती करना)
तुम्हें शर्म करनी चाहिए। तुम यहां गुलछर्रे उड़ा रहे हो और वहां तुम्हारे बाप अस्पताल में अंतिम सांसें ले रहे हैं।

101. **गोबर गणेश** (निहायत मूर्ख)
आशु को गनपत जैसे गोबर गणेश की सलाह नहीं माननी चाहिए थी।

102. **घड़ों पानी पड़ना** (अत्यंत लज्जित होना)
चोरी करते रंगे हाथ पकड़े जाने पर श्याम शरण पर घड़ों पानी पड़ गया।

103. **घाट-घाट का पानी पीना** (बहुत अनुभव सम्पन्न होना)
घाट-घाट का पानी पीने के बाद दिनेश इतने महत्त्वपूर्ण पद तक पहुंच पाया है।

104. **घाव पर नमक छिड़कना** (परेशान को और परेशान करना)
मैंने तो समझा था कि तुम यहां मुझे सांत्वना देने आए हो, मगर तुमने तो मेरे घावों पर नमक छिड़कना शुरू कर मुझे आहत कर दिया।

105. **घी के दिए जलाना** (खुशियां मनाना)
संत कुमार का लड़का आईएएस बन गया। आज तो उनके घर में घी के दिए जलेंगे।

106. **घुटने टेकना** (हार मानना)
घुटने टेकने के बजाय मैं रणभूमि में शहीद हो जाना पसंद करुंगा।

107. **घोड़े बेचकर सोना** (निश्चिंत होना)
यह समय घोड़े बेचकर सोने का नहीं है, परीक्षाएं सिर पर हैं।

108. **घोड़े पर सवार होना** (शीघ्रता में होना)
मैं तो आप से कुछ देर बैठकर बातें करने को तरस गया हूं। आप हमेशा घोड़े पर सवार होकर आते हैं।

109. **चंगुल में फंसना** (मीठी बातों के भ्रमजाल में फंसना)
मेनका के चंगुल में फंस कर मैं अपनी यह गत करवा बैठा।

110. **चादर तान कर सोना** (बेफिक्र होना)
बेटी की शादी में लिया गया उधार चुकाने के बाद बादल चादर तान कर सोया।

111. **चार चांद लगाना** (शोभा बढ़ाना)
सम्मान समारोह में पधार कर मंत्रीजी ने चार चांद लगा दिए।

112. **चारपाई पकड़ना** (सख्त बीमार होना)
यश की मां अपने पति की मौत का सदमा न बर्दाश्त कर सकीं और चारपाई पकड़ ली।

113. **चिकना घड़ा होना** (जिस पर कोई असर न हो)
सूरज तो पूरा चिकना घड़ा हो गया है। कहे-सुने का उस पर कोई असर ही नहीं होता।

114. **चूड़ियां पहनना** (स्त्रियों के समान घर में बैठना)
चूड़ियां पहनकर बैठने से काम नहीं चलेगा। हमें मिलकर इन बदमाशों से निपटना होगा।

Pariksha Manthan

115. **चेहरे पर हवाइयां उड़ना** (घबरा जाना)
सीबीआई का छापा पड़ने पर सेठजी के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

116. **चिकनी-चुपड़ी बातें करना** (खुशामद करना)
अमरेश चिकनी-चुपड़ी बातें कर अपना काम निकालने में माहिर है।

117. **चींटी के पर निकलना** (छोटे व्यक्ति का घमंड करना)
आजकल कल्लू की चाल-ढाल बदली हुई है। लगता है चींटी के पर निकल आए हैं।

118. **चोली-दामन का साथ होना** (अटूट रिश्ता होना)
लेखक और कलम के बीच चोली-दामन का साथ होता है।

119. **चैन की बंशी बजाना** (चिंतामुक्त रहकर आनंद मनाना)
आयुष चारों तरफ से समस्याओं से घिरा है। इन स्थितियों में वह भला चैन की बंशी कैसे बजा सकता है।

120. **छक्के छुड़ाना** (बुरी तरह हराना)
कारगिल के युद्ध में भारतीय सैनिकों ने पाक सेना के छक्के छुड़ा दिये।

121. **छठी का दूध याद आना** (भय मिश्रित कष्ट होना)
गिरफ्त में आए लुटेरे की जब पुलिस ने जमकर धुनाई की तो उसे छठी का दूध याद आ गया।

122. **छप्पर फाड़कर देना** (अचानक खूब धन मिलना)
देने वाला जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।

123. **छाती पर मूंग दलना** (सामने ही आपत्तिजनक व्यवहार करना)
तुम्हारी आंख में अब जरा भी पानी न रहा। घर में ही अपराधियों को बैठा कर मेरी छाती पर मूंग दल रहे हो।

124. **छाती पर सांप लोटना** (ईर्ष्या करना)
कल रात पार्टी में सुनीता को हीरों का हार पहने हुए देखकर मोहिनी की छाती पर सांप लोट गया।

125. **छू मंतर होना** (गायब होना)
पलक झपकते ही वह प्लेटफार्म से मेरी अटैची लेकर छूमंतर हो गया।

126. **जमीन पर पैर न पड़ना** (घमंड होना)
आयुषी को क्लास का मॉनीटर क्या बना दिया गया, उसके पैर अब जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं।

127. **जले पर नमक छिड़कना** (व्यथित व्यक्ति को और व्यथित करना)
मंदी के दौर में नौकरी गंवाने के बाद सुकेश के बड़े भाई ने बजाय अपने छोटे भाई को सांत्वना देने के, उसके जले पर नमक छिड़कना शुरू कर दिया।

128. **जान के लाले पड़ना** (भयंकर विपदा में फंसना)
बाढ़ में फंसे होने के कारण चिलबिला के ग्रामीणों को जान के लाले पड़े हैं और प्रशासन हाथ-पर-हाथ धरे बैठा है।

129. **जान पर खेलना** (जान को जोखिम में डालकर काम करना)
उस बहादुर लड़के ने अपनी जान पर खेल कर डूबती बच्ची को बचा लिया।

130. **जूतियां चाटना** (खुशामद करना)
मनचाहे तबादले के लिए संजय अपने अफसर की जूतियां चाटा करता है।

131. **झंडे गाड़ना** (धाक जमाना)
आजकल करीना कपूर अभिनय के क्षेत्र में खूब झंडे गाड़ रही हैं।

132. **टका सा जवाब देना** (साफ मना कर देना)
मैंने एक दिन के लिए विनय से उसकी कार मांगी थी, मगर उसने टका सा जवाब दे दिया।

133. **टांग अड़ाना** (बेमतलब दखल देना)
तुम हर बात में टांग अड़ाने की आदत से बाज नहीं आओगे।

134. **टांगें पसार कर सोना** (निश्चिंत होकर सोना)
याद रखो, टांगें पसार कर सोने वाले कभी भी बुलंदियों को नहीं छू पाते।

135. **टोपी उछालना** (अपमान करना)
दूसरों की टोपियां उछालना कुछ लोगों की आदत होती है।

136. **टेढ़ी खीर होना** (ऐसा काम जो आसान न हो),
ऊंचे पर्वतों पर रेल लाइन बिछाना निःसंदेह टेढ़ी खीर है।

137. **तारे गिनना** (बेचैनी से प्रतीक्षा करना)
पत्नी के इंतजार में नीरज ने पूरी रात तारे गिनकर गुजारी।

138. **तितर-बितर होना** (बिखर कर भाग जाना)
ज्योंही पुलिस ने लाठियां भांजनी शुरू की, प्रदर्शनकारी तितर-बितर हो गए।

139. **तिल का ताड़ बनाना** (छोटी सी बात को बड़ा बनाना)
कुछ खबरनवीसों ने इस घटना को तिल का ताड़ बना दिया।

140. **तिल रखने की जगह न होना** (अधिक भीड़-भाड़ होना)
दीपावली के दिन बाजार में तिल रखने की भी जगह न थी।

141. **तूती बोलना** (बहुत प्रभाव होना)
एक जमाने में उत्तर प्रदेश की राजनीति में हेमवती नंदन बहुगुणा की तूती बोला करती थी।

142. **थाली का बैगन** (सिद्धांतहीन व्यक्ति)
मार्कण्डेय तो थाली का बैगन है, मैं उस पर कैसे यकीन करूं कि संस्था के चुनाव में वह मेरे गुट का साथ देगा।

143. **दांत खट्टे करना** (हराना)
सीआरपीएफ के जवानों ने जबरदस्त मोर्चाबंदी कर घुसपैठियों के दांत खट्टे कर दिये।

144. **दांतों तले उंगली दबाना** (चकित रह जाना)
मंच पर उस छोटे से बालक का प्रदर्शन देखकर हर किसी ने दांतों तले उंगली दबा ली।

145. **दाने-दाने को तरसना** (अत्यंत अभाव में जीना)
दुर्घटना में अपाहिज होने के बाद ओम बाबू दाने-दाने को तरसने लगे।

146. **दाल में काला होना** (संदेहजनक बात होना)
उसकी बातें सुनने के बाद मुझे भी ऐसा लगा कि दाल में कुछ काला जरूर है।

Parikshā Manthan

147. **दूध का दूध पानी का पानी** (उचित न्याय करना)
घोटाले की जांच सीबीआई को सौंपने के बाद जनता को यह भरोसा हो गया कि अब दूध का दूध पानी का पानी करने में सीबीआई के अफसर कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे।

148. **धज्जियां उड़ाना** (खंड-खंड कर देना)
प्रतिवादी के अधिवक्ता ने न्यायालय में वादी के अधिवक्ता के तर्कों की धज्जियां उड़ा दीं।

149. **नजरों में गिरना** (विश्वास खत्म होना/अप्रिय होना)
जिस दिन से मैंने नीलू को उन लफंगों के साथ देखा, वह मेरी नजरों से गिर गया।

150. **नमक-मिर्च लगाना** (बढ़ा-चढ़ा कर बताना)
श्रीमान आपके सामने सारी बात नमक-मिर्च लगाकर पेश की गई है। इसमें सत्यता के अंश कम हैं।

151. **नाक-भौं चढ़ाना** (चिढ़ व्यक्त करना)
घर में जब भी तरोई की सब्जी बनती है, श्रद्धा नाक-भौं चढ़ा लेती है।

152. **नाक में दम करना** (तंग करना)
मेरी नाक में दम न करो। इस माह की पगार मिलते ही तुम्हें साइकिल खरीद दूंगा।

153. **नाकों चने चबवाना** (खूब छकाना)
उस शातिर ठग ने पुलिस को नाकों चने चबवा दिए।

154. **नानी याद आना** (अपराध बोध के कारण घबरा जाना)
प्रियंका क्लास रूम में ब्लैकबोर्ड पर कार्टून बना रही थी कि तभी क्लास टीचर को अंदर आता देख उसे नानी याद आ गई।

155. **नौ-दो ग्यारह होना** (भाग जाना)
पुलिस को देखते ही जुआरी नौ-दो ग्यारह हो गये।

156. **पगड़ी उछालना** (अपमानित करना)
दूसरों की पगड़ी उछालना अच्छी बात नहीं है।

157. **पत्थर की लकीर** (पक्की बात)
महेश्वरी बाबू आदर्श पुरुष हैं, उनकी हर बात पत्थर की लकीर होती है।

158. **पलकें बिछाना** (प्रेमपूर्वक स्वागत करना)
हमने तो पलकें बिछाकर स्वागत किया, फिर भी उनका मुंह फूला रहा।

159. **पांव उखड़ना** (हताश होना)
महेन्द्र सिंह धौनी के आउट होते ही भारतीय क्रिकेट टीम के पांव उखड़ गये।

160. **पांचों उंगली घी में होना** (लाभ ही लाभ होना)
लालाजी के सारे बच्चों ने अपने-अपने धंधे जमा लिये हैं। अब तो उनकी पांचों उंगलियां घी में हैं।

161. **पानी-पानी होना** (लज्जित होना)
मेरे सामने पड़ते ही कपिल पानी-पानी हो गया और अपनी गलती स्वीकार कर ली।

162. **पाला पड़ना** (वास्ता पड़ना)
बच्चू, अब तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा किससे पाला पड़ा है।

163. **पेट काटना** (जरूरत के खर्चों में कटौती करना)
सुंदर को उसके पिता ने पेट काटकर पढ़ाया, मगर वह आवारा निकल गया।

164. **पेट में चूहे कूदना** (तेज भूख लगना)
मां, मुझे जल्द खाना दो, पेट में चूहे कूद रहे हैं।

165. **पेट में दाढ़ी होना** (छोटी उम्र में ज्यादा चतुर होना)
कवीन्द्र इस उम्र में ऐसी बातें करता है। सचमुच उसके पेट में दाढ़ी है।

166. **पैरों तले से जमीन खिसकना** (सन्न रह जाना)
वर्मा जी जब सपरिवार दिल्ली से लौटे तो घर का ताला टूटा हुआ था। चोरों ने झाड़ू फेर दी थी। यह देखकर उनके पैरों तले से जमीन खिसक गई।

167. **प्राणों की बाजी लगाना** (किसी काम के लिए प्राण दे देना)
मन में अगर प्राणों की बाजी लगाने का जज्बा हो, तभी सेना में नौकरी करनी चाहिए।

168. **फूंक-फूंक कर कदम रखना** (सावधानी बरतना)
धीरज बाबू ने फूंक-फूंक कर कदम रखे, फिर भी अनहोनी को टाला न जा सका।

169. **फुलझड़ी छोड़ना** (मजाक करना)
फुलझड़ियां छोड़ना तो रमाकांत की आदत में शुमार है।

170. **फूटी आंख न सुहाना** (बिल्कुल अच्छा न लगना)
तुम जैसे मक्कार व्यक्ति मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाते।

171. **फूला न समाना** (बहुत प्रसन्न होना)
वर्ल्ड कप जीत कर भारतीय क्रिकेट टीम फूली नहीं समा रही थी।

172. **बंदर घुड़की** (धमकी)
मैं सुजीत की इन बंदर घुड़कियों से डरने वाला नहीं हूं।

173. **बहती गंगा में हाथ धोना** (अवसर का लाभ उठाना)
ज्यादा सच्चिदानंद बन कर कुछ हासिल नहीं होने वाला। बहती गंगा में हाथ धोकर मौज क्यों नहीं करते।

174. **बगुला भगत** (धूर्त मनुष्य)
इस युग में घर-घर में बगुला भगत मिल जाएंगे।

175. **बात का बतंगड़ बनाना** (बात को बढ़ाना)
भाई साहब, यह बच्चों का झगड़ा है। समझा-बुझा कर शांत करवा दीजिए, आखिर बात का बतंगड़ बनाने से क्या फायदा।

176. **बाट जोहना** (इंतजार करना)
सभागार में उपस्थित लोग मुख्य अतिथि की बाट जोह रहे थे।

177. **बाल भी बांका न होना** (कुछ न बिगड़ना)
जो व्यक्ति सच का साथ देता है, उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

178. **बाल-बाल बचना** (कठिनता से बचना)
ट्रेन दुर्घटना में ड्राइवर बाल-बाल बच निकला।

179. **बाएं हाथ का खेल** (आसान काम)
आतंकवाद जैसी जटिल समस्या को सुलझाना सरकार के लिए बाएं हाथ का खेल नहीं है।

Pariksha Manthan

180. **मुंह में खून लगना** (दूसरों के शोषण की गंदी आदत)
पैसे देकर तुम लोगों ने इस भ्रष्ट क्लर्क की आदत बिगाड़ दी है। अब इसके मुंह में खून लग चुका है। बगैर पैसे लिए काम कैसे करे।

181. **मुट्ठी गरम करना** (रिश्वत देना)
ट्रैफिक सिपाहियों की मुट्ठी गरम कर ट्रक वाले नो एंट्री में घुस आते हैं।

182. **रंगा सियार होना** (धूर्त, ढोंगी व्यक्ति)
मैं तो विवेक को अच्छी नीयत का नेक आदमी समझता था, मगर वह तो रंगा सियार निकला। इतना बड़ा फ्रॉड कर चलता बना।

183. **रंग में भंग पड़ना** (खुशी में बाधा पड़ना)
शराब के नशे में अनुभव ने जो गंदी हरकत की, उससे पार्टी में रंग में भंग पड़ गया।

184. **रफूचक्कर होना** (गायब होना)
उस दिन तो तुम रफूचक्कर हो गये थे, पर आज बच कर कहां जाओगे।

185. **लोहा मानना** (दूसरे का प्रभाव स्वीकारना)
फिराक साहब की शायरी का लोहा उनके विरोधी भी मानते हैं।

186. **लोहे के चने चबाना** (कठिनाइयों से गुजरना)
इस ऊंचे ओहदे तक वह आसानी से नहीं पहुंचा, लोहे के चने चबाने पड़े।

187. **सब्ज बाग दिखाना** (ललचाने वाली बातें करना)
उन धूर्तों के चक्कर में मत पड़ना, वे नौकरी के नाम पर बेरोजगारों को खूब सब्जबाग दिखाते हैं।

188. **सिर आंखों पर बैठाना** (बहुत सम्मान देना)
जनता ईमानदार नेता को सिर आंखों पर बैठा लेती है।

189. **सिर धुनना** (बहुत पछताना)
पहले तो बेटे को लाड़-प्यार में बिगाड़ दिया। अब जब वह चोरी के इल्जाम में पकड़ा गया तो सिर धुन रहे हो।

190. **सिर पर कफ़न बांधना** (प्राणों की परवाह न करना)
क्रांतिकारियों ने सिर पर कफन बांध कर आजादी का बिगुल फूंका।

191. **सिर पर खून सवार होना** (क्रोध में आपा खो देना)
राम सागर को समझाओ, उसके सिर पर खून सवार है। कोई भी अनहोनी हो सकती है।

192. **सिर पर चढ़ाना** (ज्यादा छूट देना)
समझदार अभिभावक बच्चों को सिर पर नहीं चढ़ाते।

193. **सुध-बुध खोना** (किसी बात में ऐसा डूबना कि होश न रहे)
पं. हरिप्रसाद चौरसिया ने ज्योंही बांसुरी वादन शुरू किया, हरीश सुध-बुध खो बैठा।

194. **सूरज को दीपक दिखाना** (बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति की थोड़ी प्रशंसा करना)
महाकवि निराला के बारे में कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाना होगा।

195. **हाथ धोकर पीछे पड़ना** (किसी काम के लिए पूरे तौर पर जुट जाना)
खोजी पत्रकार बीरेन्द्र उस भ्रष्ट अधिकारी के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है।

196. **हाथ मलते रह जाना** (पछताना)
अभी समय है परीक्षा की अच्छी तैयारी कर लो, नहीं तो बाद में हाथ मलते रह जाओगे।

197. **हाथों-हाथ** (बहुत जल्दी)
उस नये अखबार की सारी प्रतियां हाथों-हाथ बिक गईं।

198. **हाथ पर हाथ धर कर बैठना** (निठल्ले बैठना)
हाथ पर हाथ धर कर बैठने से कन्हैया की विपन्नता तो दूर हो नहीं सकती। उसे कुछ उद्यम तो करना ही पड़ेगा।

199. **हाथ साफ करना** (चुरा लेना)
दिल्ली में बस से उतरते समय किसी ने शंकर की जेब पर हाथ साफ कर दिया।

200. **हुक्का भरना** (सेवा करना)
प्रताप ने नेताजी का हुक्का भर कर उनसे राजनीति के गुर सीखे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नीचे लिखे प्रश्नों में प्रत्येक मुहावरे के चार अर्थ दिए गए हैं। सही अर्थ को चुनिए—

1. अंग-अंग ढीला होना—
   (क) बीमार पड़ना (ख) तंगी झेलना
   (ग) दुखी होना (घ) बहुत थकना

2. अंगारे उगलना—
   (क) क्रोध की अवस्था में कटु वचन बोलना
   (ख) आग लगाना
   (ग) दुख देना
   (घ) धीरज से काम लेना

3. अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना—
   (क) आत्महत्या करना
   (ख) उपकार न मानना
   (ग) स्वयं अपने को हानि पहुंचाना
   (घ) अनाड़ीपन करना

4. अक्ल का दुश्मन—
   (क) मित्र (ख) महापंडित
   (ग) शत्रु (घ) महामूर्ख

5. अगर-मगर करना—
   (क) टाल-मटोल करना (ख) परेशान करना

Pariksha Manthan

(ग) बात न मानना (घ) छल करना

6. अंगूठा दिखाना
(क) उपहास करना (ख) देने से मना कर देना
(ग) कंजूसी करना (घ) छेड़-छाड़ करना

7. अक्ल का पुतला—
(क) बहुत चतुर (ख) बहुत बुद्धिमान
(ग) अत्यंत मूर्ख (घ) अत्यंत धूर्त

8. अंगारों पर लोटना
(क) दुख सहना (ख) ईर्ष्या करना
(ग) खतरनाक कार्य करना (घ) दुखी करना

9. अंगारों पर पैर रखना—
(क) क्रोध करना (ख) सुधर जाना
(ग) परिश्रम करना (घ) खतरा मोल लेना

10. अंधेर नगरी
(क) जहां छोटे-बड़े का ख्याल न रखा जाता हो
(ख) अन्याय की जगह
(ग) जहां अंधेरा हो (घ) राज्यविहीन जगह

11. अंगूठा चूमना
(क) खुशामद करना (ख) तिरस्कार करना
(ग) प्रशंसा करना (घ) इन्कार करना

12. अपना उल्लू सीधा करना—
(क) स्वार्थ साधना (ख) उल्लू बनाना
(ग) धोखा देना (घ) प्रेम करना

13. अंधे की लकड़ी
(क) अनपढ़ व्यक्ति (ख) बिल्कुल असमर्थ होना
(ग) एकमात्र सहारा (घ) गंवार व्यक्ति

14. अक्ल के घोड़े दौड़ाना—
(क) घोड़े पर सवार होकर घूमना
(ख) बहुत सोच-विचार करना
(ग) फालतू घूमना
(घ) उड़ान भरना

15. आड़े समय पर काम आना
(क) सिफारिश करना (ख) इन्कार करना
(ग) मुसीबत में सहायक होना (घ) हत्या करना

16. आधा तीतर आधा बटेर—
(क) बेमेल होना (ख) रंग-बिरंगा होना
(ग) छोटा-बड़ा होना (घ) कुरूप होना

17. अपनी खिचड़ी अलग पकाना—
(क) खाना बनाना (ख) चूल्हा जलाना
(ग) साथ मिलकर न रहना (घ) बुरे समय पर साथ देना

18. ईद का चांद होना—
(क) त्योहार मनाना (ख) बहुत दिनों बाद दिखाई देना
(ग) प्रसन्नता की घड़ी (घ) अक्सर मिलना-जुलना

19. अड़ियल टट्टू—
(क) हठी (ख) बेवकूफ
(ग) तेज दौड़ने वाला (घ) गुस्सैल जानवर

20. उलट-फेर होना
(क) करवट लेना (ख) परिवर्तन होना
(ग) हिंसक होना (घ) अपेक्षित परिणाम

21. अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना।
(क) खुद अपनी तारीफ करना
(ख) दूसरों से अपनी तारीफ करवाना
(ग) तोता पालना
(घ) तोते की बोली बोलना

22. अक्ल की रोटी खाना।
(क) श्रम से जीविका चलाना
(ख) बुद्धिमानी से जीविका चलाना
(ग) मूर्खता के कारण पछताना
(घ) बहुत होशियार बनना

23. अक्ल चकराना
(क) कुछ समझ में न आना
(ख) सब कुछ जानना
(ग) बुद्धि का प्रयोग न करना
(घ) स्तब्ध रह जाना

24. उंगली पर नचाना।
(क) नृत्य निर्देशन करना (ख) बढ़िया नृत्य करना
(ग) वश में करना (घ) सेवा करना

25. आठ-आठ आंसू रोना।
(क) ढोंग करना
(ख) जोर-जोर से रोना
(ग) बुरी तरह पछतावा करना
(घ) शोक मनाना

26. आंख में चर्बी छाना।
(क) क्रूरता करना (ख) मद से अंधा होना
(ग) आंख से न दिखना (घ) बहकावे में आना

27. आंखों का कांटा
(क) प्रिय व्यक्ति (ख) रुकावट
(ग) अप्रिय व्यक्ति (घ) बदशक्ल

28. उल्टे पांव लौटना
(क) तेजी से चलना (ख) रुक-रुक कर चलना
(ग) जल्दबाजी दिखाना (घ) पास न आना

29. कलेजा मुंह को आना।

Parikshā Manthan

(क) दुख से आकुल हो उठना
(ख) सीने में दर्द होना
(ग) बेहोश होना
(घ) नींद न आना

30. गड़े मुर्दे उखाड़ना
(क) जमीन खोदना
(ख) पुरानी विवादास्पद बातों को ताजा करना
(ग) सौतेला व्यवहार करना
(घ) लड़ना-झगड़ना

31. छठी का दूध याद आना।
(क) भयमिश्रित परेशानी या कष्ट होना
(ख) बचपन के दिनों को याद करना
(ग) दूध पीना (घ) निराश होना

32. केर-बेर का संग होना
(क) असंभव होना
(ख) विपरीत स्वभाव वालों का एक साथ मिलना
(ग) समन्वय होना
(घ) गलत काम होना

33. कांटा बोना
(क) हानि पहुंचाना (ख) संदेह करना
(ग) प्यार करना (घ) भेद प्रकट करना

34. गागर में सागर भरना
(क) मूर्खतापूर्ण कार्य करना
(ख) थोड़े शब्दों में अधिक कहना
(ग) सरस दोहों की रचना करना
(घ) असंभव काम करना

35. गूलर का फूल होना
(क) स्पष्ट दिखाई देना (ख) व्यर्थ की बात करना
(ग) कभी-कभी दिखाई देना (घ) कभी भी दिखाई न देना

36. घर बसाना
(क) विवाह करना (ख) घर बनवाना
(ग) घर में रहना (घ) मदद करना

37. चोर-चोर मौसेरे भाई।
(क) सब चोर समान होते हैं
(ख) एक पेशे वाले आपस में नाता जोड़ लेते हैं
(ग) चोरों की माओं के स्वभाव एक जैसे होते हैं
(घ) चोरों की रिश्तेदारी का भरोसा है

38. छाती पर मूंग दलना।
(क) सामने ही आपत्तिजनक व्यवहार करना
(ख) छाती चौड़ी करना
(ग) बुरा-भला कहना
(घ) होशियारी दिखाना

39. लाले पड़ना।
(क) चेहरा लाल पड़ना (ख) अत्यंत अभावग्रस्त होना
(ग) पास आना (घ) धोखा देना

40. बाग-बाग होना।
(क) बगीचे में घूमना (ख) पौधे लगाना
(ग) नाराज हेना (घ) बहुत खुश होना

41. लट्टू होना।
(क) रीझना (ख) खीझना
(ग) चिढ़ना (घ) नाचना

42. मुंह में दांत न होना।
(क) दंतविहीन (ख) ज्यादा बोलना
(ग) सामर्थ्यहीन होना (घ) बूढ़ा व्यक्ति

43. फूल सूंघ कर रहना।
(क) कम खाना (ख) ज्यादा खाना
(ग) फूल सूंघना (घ) गुलदस्ता बनाना

44. अंधे के हाथ बटेर लगना।
(क) शिकार खेलना
(ख) अयोग्य या अक्षम व्यक्ति को मूल्यवान वस्तु मिलना
(ग) अचानक दौलत मिलना
(घ) आंख की रोशनी जाना

45. भानुमती का पिटारा।
(क) एक तरह का जादू
(ख) वह पात्र जिसमें तरह-तरह की चीजें हों
(ग) सुंदर औरत
(घ) रहस्यमय पात्र

46. गुड़ गोबर कर देना।
(क) बने हुए काम को बिगाड़ देना
(ख) गोबर में पैर रखना
(ग) गोबर फेंकना
(घ) अड़ंगा डालना

47. चोर की दाढ़ी में तिनका।
(क) चोरी करना
(ख) चोरों की सहायता करना
(ग) अपराधी का स्वयं सशंकित होना
(घ) आत्मसमर्पण करना

48. चुल्लू भर पानी में डूबना
(क) डूब कर जान देना (ख) बेहद शर्मिंदा होना
(ग) अचरज करना (घ) कम पानी में तैरना

49. घुटने टेक देना।
(क) हार मान लेना (ख) थक कर चूर होना

Parikshā Manthan

(ग) घुटनों में दर्द होना (घ) प्रार्थना करना

50. दाल में काला होना।
(क) दाल पकाना (ख) पूरा पका हुआ न होना
(ग) अनुभवहीन होना (घ) संदेहजनक बात होना

51. पानी में आग लगाना।
(क) शांति भंग करना
(ख) बदला लेना
(ग) असंभव को संभव करना
(घ) बड़ी-बड़ी बातें करना

52. छक्के छुड़ाना
(क) परेशान करना
(ख) क्रिकेट के खेल का एक नियम
(ग) हराना
(घ) घायल करना

53. जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना
(क) धूर्त बनना (ख) कृतघ्न होना
(ग) षडयंत्र रचना (घ) कृतकृत्य होना

54. जुबान पर लगाम न होना
(क) सदैव कठोर वचन कहना
(ख) अनावश्यक रूप से स्पष्टवादी होना
(ग) स्पष्टवादी होना
(घ) सर्वत्र अपनी वाग्मिता दिखाना

55. टांग अड़ाना
(क) अवरोध पैदा करना (ख) बिना कारण लड़ना
(ग) बदनाम करना (घ) गलत काम करना

56. आंखें चार होना।
(क) आंख की रोशनी बढ़ना
(ख) प्यार होना
(ग) क्रोध करना
(घ) आंख का इलाज करवाना

57. ढपोर शंख
(क) विख्यात होना (ख) बेवकूफ
(ग) सब संबंध छोड़ देना (घ) कांपने लगना

58. तालु में जीभ न लगना
(क) स्वाद न मिलना (ख) प्यास से परेशान होना
(ग) भूख से तड़पना (घ) चुप न रहना

59. तीर मारना
(क) बड़ा काम करना (ख) शिकार करना
(ग) धन कमाना (घ) युद्ध कला में निपुण होना

60. तोते की तरह आंखें फेरना
(क) किसी रोग से बुरी तरह ग्रस्त होना
(ख) पुराने संबंधों को एकदम भुला देना
(ग) दोस्त के साथ विश्वासघात करना
(घ) बिना सोचे-समझे निर्णय लेना

61. आकाश-पाताल एक करना।
(क) कुआं खोदना (ख) इधर-उधर दौड़ना
(ग) बहुत परिश्रम करना (घ) यश फैलाना

62. द्रौपदी का चीर
(क) नारी का अपमान करना (ख) कभी समाप्त न होना
(ग) शर्मनाक कार्य (घ) इनमें से कोई नहीं

63. आग बबूला होना।
(क) गुस्से से भर उठना (ख) आग लगाना
(ग) आग बुझाना (घ) भयभीत होना

64. दिल पक जाना
(क) प्रेम न होना (ख) कष्ट पहुंचाना
(ग) घृणा होना (घ) अत्यंत पीड़ित होना

65. दिन को दिन और रात को रात न समझना
(क) कोई बड़ा काम करते समय अपने सुख और आराम का कुछ भी ध्यान न देना
(ख) सूर्योदय से रात्रि पर्यंत अथक कार्य करना
(ग) यथार्थ से अवगत होना
(घ) वास्तविकता को समझने की कोशिश करना

66. न तीन में न तेरह में
(क) बुद्धिहीन होना (ख) किसी काम का न होना
(ग) नष्ट कर देना (घ) बहुत उपयोगी होना

67. पौ बारह होना
(क) कार्य सिद्ध होना (ख) दांव हारना
(ग) लाभ ही लाभ होना (घ) सुबह हो जाना

68. बांसों उछलना
(क) प्रसन्न होना (ख) पागल होना
(ग) अहंकार होना (घ) अभद्र व्यवहार करना

69. भागीरथ प्रयत्न
(क) लगातार प्रयत्न करते रहना
(ख) कठिन तपस्या करना
(ग) साधारण प्रयत्न
(घ) असाधारण प्रयत्न

70. मूंछ मुड़ाना
(क) हार मानना (ख) अहंकारी होना
(ग) बनावटी बातें करना (घ) बुरा-भला सुनना

71. मखमली जूते मारना
(क) व्यंग्य करना (ख) मीठी बातों से लज्जित करना
(ग) दुर्दशाग्रस्त होना (घ) कमजोर होना

Pariksha Manthan

72. सुबह-शाम करना
(क) समय व्यतीत करना (ख) टाल-मटोल करना
(ग) आवारागर्दी करना (घ) दिनरात काम करना

73. कमर कसना
(क) तैयार होना (ख) कमर टेढ़ी करना
(ग) उकसाना (घ) आक्रमण करना

74. कन्नी काटना
(क) सताना (ख) बचना
(ग) विलाप करना (घ) यात्रा करना

75. कान कतरना
(क) बहुत चालाक होना (ख) बेवकूफी करना
(ग) ध्यान से सुनना (घ) कान खुजलाना

76. कानों कान खबर न होना
(क) रहस्यमय होना
(ख) सभी को पता चलना
(ग) किसी को बिल्कुल पता न चलना
(घ) प्रचारित करना

77. काम तमाम करना
(क) काम शुरू करना (ख) काम खत्म करना
(ग) काम रोकना (घ) मार देना

78. कुत्ते की मौत मरना
(क) शान से मरना (ख) नींद में मरना
(ग) बुरी मौत मरना (घ) कुत्ते के काटने से मरना

79. कोल्हू का बैल
(क) लगातार काम में लगे रहना
(ख) काम से जी चुराना
(ग) खेत जोतना (घ) बैल हांकना

80. खून खौलना
(क) आवेश में आना (ख) खून दान करना
(ग) शांत रहना (घ) धीरज रखना

<u>रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु उचित मुहावरे का चयन करिए—</u>

81. जहरीले नाग को सामने देख कर रश्मि का.....
(क) खून खौल उठा (ख) खून सूख गया
(ग) खेल बिगड़ गया (घ) कोई नहीं

82. उसे हजार बार समझाया कि उसके काम में समय लगेगा, फिर भी वह.....
(क) गर्दन पर सवार रहता है
(ख) गले पड़ता है
(ग) खाने दौड़ता है
(घ) गिरगिट की तरह रंग बदलता है

83. स्व. प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री सचमुच.....थे।
(क) अंधे की लकड़ी (ख) गुदड़ी के लाल
(ग) अक्ल का दुश्मन (घ) गोबर गणेश

84. दुखी सुदामा को द्वारिका में आया देख श्रीकृष्ण ने उन्हें.....
(क) तारे तोड़कर ला दिए (ख) सिर आंखों पर बैठाया
(ग) छाती से लगाकर रखा (घ) ईद का चांद बनाया

85. परीक्षाएं समाप्त होने के बाद सतीश.....।
(क) घोड़े पर सवार होकर सोया
(ख) आंख मूद कर सोया
(ग) घोड़े बेच कर सोया
(घ) चारपाई पकड़ कर सोया

86. आग से घिरी इमारत में फंसे लोगों को.....।
(क) टांगें पसार कर सोना (ख) जान के लाले पड़े हैं
(ग) तारे गिनना है (घ) आकाश-पाताल एक करना है

87. इसी वर्ष बैल भी मर गया और गाय भी चोरी हो गई, इसी को कहते हैं.....।
(क) एक पंथ दो काज (ख) काला अक्षर भैंस बराबर
(ग) कंगाली में आटा गीला (घ) दाल में कुछ काला है

88. बच्चों की जरा-सी शरारत पर विवेक ने.....।
(क) पीठ दिखा दी (ख) हवाई किले बना लिए
(ग) नाकों चने चबवा दिए (घ) घर सिर पर उठा लिया

89. आज के जमाने में स्वार्थपरता बढ़ जाने के कारण कुछ लोग .....।
(क) थाली का बैगन बन जाते हैं
(ख) दूर की कौड़ी लाने की कोशिश करते हैं
(ग) जोड़-तोड़ मिलाते रहते हैं
(घ) विरोधियों के दांत खट्टे करते हैं

90. पुत्र की हरकतों से तंग आकर पिता ने उसे.....।
(क) तिलांजलि दे दी (ख) ठिकाने लगा दिया
(ग) कहीं का नहीं रखा (घ) धता बताया

91. बेटे की प्रतीक्षा करते-करते मां की.....।
(क) दशा बिगड़ गई (ख) आंखें पथरा गईं
(ग) आंखों का पानी मर गया (घ) आंख लग गई

92. जीवन में कई मौके ऐसे आते हैं, जब हमें.....।
(क) अंधे की लकड़ी बनना पड़ता है
(ख) आकाश के तारे तोड़ना पड़ता है
(ग) अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है
(घ) आस्तीन का सांप बनना पड़ता है

93. इस भ्रष्ट व्यवस्था में हर कोई.....।
(क) उलटी गंगा बहा रहा है
(ख) चादर तान कर सो रहा है
(ग) उंगली पर नचा रहा है
(घ) ईंट से ईंट बजा रहा है

Pariksha Manthan

94. मुंशी प्रेमचंद जब लिखते थे तो.....।
(क) कलई खोल देते थे
(ख) कलम तोड़ देते थे
(ग) एक ही लकड़ी से हांकते थे
(घ) आसमान से बातें करते थे

95. डॉक्टरों ने नेताजी की जान बचाने के लिए.....।
(क) अंगारों पर पैर रख दिए
(ख) आंखें फेर ली
(ग) आग में घी डाल दिया
(घ) एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया

96. सचिन के आउट होते ही भारतीय क्रिकेट टीम के.....।
(क) पांव उखड़ गए (ख) सिर पर ओले पड़ने लगे
(ग) दिन बहुर गए (घ) दिन लद गए

97. उनके आते ही महफिल में.....।
(क) रंग में भंग पड़ गया (ख) तोते उड़ गये
(ग) गुड़ गोबर हो गया (घ) चार चांद लग गए

98. भगवान जब देता है तो.....।
(क) जान पर खेल कर देता है
(ख) होश गवां कर देता है
(ग) छप्पर फाड़ कर देता है
(घ) टोपी उछाल कर देता है

99. पुलिस ने ज्योंही आंसू गैस के गोले छोड़े, भीड़.....।
(क) थाली का बैगन हो गई
(ख) ईद का चांद हो गई
(ग) तितर-बितर हो गई
(घ) तारे गिनने लगी

100. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बारे में कुछ कहना.....।
(क) आग में घी डालना होगा
(ख) पानी में आग लगाना होगा
(ग) फुलझड़ी छोड़ना होगा
(घ) सूरज को दीपक दिखाना होगा

नीचे दिए गए वाक्यों में एक-एक मुहावरा दिया गया है। साथ ही उसके चार विकल्प दिए गए हैं। आपको सही अर्थ वाले विकल्प को चुनना है।

101. कोई अक्ल का अंधा ही ऐसी हरकत कर सकता है।
(क) उद्दंड (ख) मूर्ख
(ग) आलसी (घ) निकम्मा

102. पुलिस वालों ने तो अंधेरे में तीर चलाया था, मगर बदमाश पकड़ में आ गए।
(क) दिशाहीन प्रयास (ख) भरपूर प्रयास
(ग) पीछे पड़ना (घ) पीछा करना

103. आंसू पोंछने से उसकी पीड़ा कम नहीं हो जाएगी।
(क) बहकाना (ख) सौतेला व्यवहार करना
(ग) ढांढस बंधाना (घ) मार-पीट करना

104. बरसात में मच्छर नाक में दम कर देते हैं।
(क) सोने न देना (ख) बहुत परेशान करना
(ग) प्रदूषण फैलाना (घ) सांस न लेने देना

105. कृष्णानंद ने जान पर खेल कर डूबते बालक की प्राण रक्षा की।
(क) जोखिम उठाकर (ख) आराम से
(ग) अधूरे मन से (घ) कोई नहीं

106. कुछ प्रबुद्ध नागरिकों ने आग पर पानी डाल दिया, वरना शहर का माहौल बिगड़ जाता।
(क) उत्तेजना फैलाना (ख) अफवाह फैलाना
(ग) झगड़ा दबाना (घ) दया करना

107. गुंडों को देखकर प्रियम् की आधी जान सूख गई।
(क) जान की बाजी लगाना
(ख) जान फूंकना
(ग) अत्यंत भयभीत होना
(घ) क्रुद्ध होना

108. इस तरह आपे से बाहर होना आपको शोभा नहीं देता।
(क) इधर-उधर घूमना (ख) नसीहत देना
(ग) अत्यंत क्रोधित होना (घ) दिमाग से काम लेना

109. जिसके पास खुद कफन की कौड़ी न हो, वह तुम्हारी क्या मदद करेगा।
(क) कफनचोर (ख) कफन बेचना
(ग) विपन्न होना (घ) निर्दयी होना

110. व्यापार में घाटा खाने से पिताजी की कमर टूट गई।
(क) कमर टेढ़ी होना (ख) हिम्मत जबाब देना
(ग) हौसला रखना (घ) इच्छा बढ़ना

111. आजकल रमेश ने काम इतना फैला रखा है कि उसे कमर सीधी करने का मौका नहीं मिलता है।
(क) बातें करना (ख) मजाक करना
(ग) आराम करना (घ) भागना-दौड़ना

112. राहुल ने आग में घी डालने का काम किया।
(क) खुशी मनाना (ख) उत्तेजित करना
(ग) यज्ञ करना (घ) रोशनी करना

113. अवसरवादी व्यक्ति हमेशा अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास करता है।
(क) बात बदलना
(ख) लोक व्यवहार के विरुद्ध कार्य
(ग) स्वार्थपूर्ति
(घ) विश्वासघात

Pariksha Manthan

114. वीरू और जय में चोली दामन का साथ है।
(क) एक-दूसरे पर निर्भरता (ख) एक दूसरे से स्पर्धा
(ग) एक-दूसरे से मित्रता (घ) एक-दूसरे से शत्रुता

115. सविता के हाथ पीले करने का समय आ गया है।
(क) प्यार करने का (ख) सजाने का
(ग) विवाह करने का (घ) पिटाई करने का

116. आप लाख कागजी घोड़े दौड़ाते रहें, कुछ होना नहीं है।
(क) लिखा-पढ़ी करना (ख) घोड़े पालना
(ग) शिकायत करना (घ) परेशान करना

117. काम चोर कर्मचारी दिन भर अफसर के कान भरा करते हैं।
(क) खुशामद करना (ख) चुगली करना
(ग) निंदा करना (घ) दंड देना

118. अपनी दोनों बेटियों का विवाह कर राधे बाबू ने गंगा नहा ली।
(क) बड़ा काम पूरा कर लेना (ख) तीर्थ यात्रा करना
(ग) माया मोह में पड़ना (घ) नौकायन करना

119. नक्सली हमेशा घात लगाकर हमला करते हैं।
(क) चिल्लाकर (ख) मौका ताक कर
(ग) गुस्सा होकर (घ) चिढ़कर

120. पुलिस को देखते ही उपद्रवी छात्रों की चौकड़ी भूल गई।
(क) घबरा जाना (ख) भाग जाना
(ग) तलाश करना (घ) रोना-धोना

121. सुनीता तो जहर की पुड़िया है। पूरे परिवार की शांति भंग कर रखी है।
(क) सुन्दर स्त्री (ख) जादूगरनी
(ग) मुसीबत की जड़ (घ) चरित्रवान स्त्री

122. भारत को मलिन बस्तियों से मुक्त करना सरकार के लिए टेढ़ी खीर है।
(क) आसान काम (ख) कठिन काम
(ग) प्रशंसनीय कार्य (घ) बुरा काम

123. ऐसी कौन सी चिंता है, जो तुम सूख कर कांटा हो गये हो।
(क) कांटों पर चलना (ख) कांटे बोना
(ग) विचार करना (घ) अति दुर्बल होना

124. सही समय पर आपने मेरी आर्थिक मदद कर मेरी नाक रख ली।
(क) नाक काटना (ख) अपमानित करना
(ग) इज्जत रखना (घ) खामोश रहना

125. जरा-सी बात पर गाल फुलाकर बैठना भाभीजी की आदत बन गई है।
(क) रूठना (ख) मनाना
(ग) आपा खोना (घ) त्रिया चरित्र दिखाना

126. मेरी तो जेब कट गई और तुम्हें अठखेलियां सूझ रही हैं।
(क) पीड़ा होना (ख) हंसी-दिल्लगी करना
(ग) अपमान करना (घ) उपहास करना

127. नौकरी छोड़ने की वजह से मेरा इंदौर से अन्न जल उठ गया।
(क) किसी जगह से चले जाना
(ख) मेहमान बन कर रहना
(ग) कमजोर पड़ना
(घ) बीमार पड़ना

128. तुम्हारी यह अबे-तबे करने की आदत अच्छी नहीं है।
(क) प्रेम से बोलना (ख) तिरस्कार करना
(ग) आदर से न बोलना (घ) टाल-मटोल करना

129. शायद ग्रह-नक्षत्र मेरा साथ नहीं दे रहे हैं, जब भी कोई काम शुरू करता हूं तो आगे का पैर पीछे पड़ता है।
(क) लज्जित होना (ख) लंगड़ा होना
(ग) पैर टूटना (घ) किस्मत उलटी होना

130. दूसरों को सताने वालों पर जब आसमान फट पड़ता है, तब उन्हें समझ में आता है।
(क) अचानक आफत आ पड़ना
(ख) वैर करना
(ग) भलाई करना
(घ) मूसलाधार बारिश होना

131. उन दोनों बहनों की सुंदरता में उन्नीस-बीस का फर्क है।
(क) छोटा-बड़ा होना (ख) बहुत थोड़ा अंतर होना
(ग) करीबी होना (घ) रिश्तेदारी होना

132. शीतल हमेशा अपने पड़ोसी के लिए उलटी माला फेरा करता है।
(क) राम-नाम जपना (ख) पैसा कमाना
(ग) प्रेम करना (घ) अहित सोचना

133. मास्टरजी सभी बच्चों को एक आंख से देखते हैं।
(क) भेदभाव करना (ख) सबको बराबर समझना
(ग) चुगली करना (घ) बहुत चाहना

134. पत्रकारों ने कल के अखबारों में कुछ पब्लिक स्कूलों का कच्चा चिट्ठा खोला है।
(क) तंग करना (ख) फाटक खोलना
(ग) सब भेद खोल देना (घ) तहकीकात करना

135. कमलेश्वर कलम के धनी थे।
(क) कई कलम रखना (ख) कलम की दुकान चलाना
(ग) गप्पें मारना (घ) अच्छा लेखक

136. उनके आने से मेरे दिल की कली खिल गई।
(क) खुश होना (ख) कष्ट होना
(ग) आराम मिलना (घ) फूल खिलना

137. मैंने अभिषेक को अपने कलेजे का टुकड़ा समझ कर पाला-पोसा, मगर बुढ़ापे में उसने भी सहारा न दिया।
(क) सौतेला लड़का (ख) बहुत प्यारा
(ग) दिल टूटना (घ) सीने में पीड़ा होना

Pariksha Manthan

138. आजकल की राजनीति तो काजल की कोठरी जैसी है।
(क) बहुत अच्छी जगह (ख) कलंक लगने का स्थान
(ग) काली कोठरी (घ) बिना खिड़की का कमरा

139. दवा खाने के बाद आनंद के पेट का दर्द काफूर हो गया।
(क) बढ़ जाना (ख) ध्यान देना
(ग) आराम करना (घ) गायब हो जाना

140. तुम जैसे काले नाग से दोस्ती करना मुझे भारी पड़ सकता है।
(क) काला आदमी (ख) बेईमान व्यक्ति
(ग) घातक व्यक्ति (घ) पुराना दुश्मन

141. उस संस्थान का भगवान ही मालिक है, जहां पूरे कुएं में भांग पड़ी हो।
(क) सबकी बुद्धि मारी जाना
(ख) नशेड़ियों की संख्या अधिक होना
(ग) भांग की खेती करना
(घ) भांग पीना

142. तुम तो कूप मंडूक हो, मुझे अमेरिका की राजनीति के बारे में क्या बताओगे।
(क) सीमित ज्ञान या अनुभव वाला
(ख) बहुत बड़ा ज्ञानी-ध्यानी
(ग) कुएं में रहने वाला
(घ) गंभीर रहने वाला

143. पप्पू तो कौड़ी-कौड़ी पर जान देता है, तुम्हारी पढ़ाई का खर्च क्या उठाएगा।
(क) कौड़ियां खेलना (ख) जुआं खेलना
(ग) निर्दयी होना (घ) कंजूस होना

144. विश्वविद्यालय में मेरे खिलाफ खिचड़ी पकाने वाला एक गुट सक्रिय है।
(क) अंदर-अंदर साजिश रचना
(ख) दिल से मदद करने वाला
(ग) परोपकारी
(घ) दूसरों को खुश करने वाला

145. कपिल जी ने विशाल भंडारे के लिए खुले हाथ से दान दिया।
(क) कंजूसी से (ख) उदारता से
(ग) उद्दंडता से (घ) बेमन से

146. चुनाव ड्यूटी कर वह गले पड़ा ढोल ही तो बजा रहा है।
(क) खुशी-खुशी कोई काम करना
(ख) अपने काम का प्रचार करना
(ग) मिली हुई जिम्मेदारी को मजबूरन पूरा करना
(घ) पाठ पढ़ाना

147. जिन्हें आप गाजर-मूली समझते हैं, वे आप से कहीं ज्यादा ताकतवर हैं।
(क) महत्वपूर्ण समझना (ख) महाबली समझना
(ग) पारदर्शी समझना (घ) तुच्छ समझना

148. जहां वे अराजक तत्व बैठकर चाय पीते हैं, उस टी स्टॉल पर मत बैठा करो। वे लोग पुलिस की नजर में हैं। अक्सर गेहूं के साथ घुन भी पिस जाता है।
(क) दोषी के साथ निर्दोष को भी दंड मिलना
(ख) चक्की में आटा पिसवाना
(ग) कोई कुकृत्य करना
(घ) शेखी बघारना

149. इलाहाबाद छोड़कर वह मुंबई गया, मगर वहां भी उसे नौकरी नहीं मिली। वह न घर का रहा न घाट का।
(क) कहीं का नहीं रहना (ख) आत्मघाती कार्य
(ग) बुद्धि भ्रष्ट होना (घ) दुर्लभ वस्तु मिलना

150. दुख भरे दिनों का जिक्र छेड़ कर तुमने मेरे घाव हरे कर दिये।
(क) घाव कर देना
(ख) घाव भर देना
(ग) विस्मृत कष्ट याद दिलाना
(घ) सहायता करना

151. आजकल रतन भी उस चंडाल चौकड़ी का सदस्य बन गया है।
(क) भले लोग
(ख) मक्कार और बदमाश लोग
(ग) कमजोर लोग
(घ) जागरूक लोग

152. बार्डर सिक्योरिटी फोर्स के जवानों ने चप्पा-चप्पा छान मारा, किन्तु तस्करों का कोई पता नहीं चला।
(क) हर जगह खोजना (ख) जंगल में भटकना
(ग) सड़कों पर मार्च करना (घ) बैठ कर सुस्ताना

153. पार्टी में पहली बार दमयंती को देखा। सचमुच, वह चौदहवीं का चाँद लग रही थी।
(क) बहुत उदास (ख) बहुत चंचल
(ग) बहुत परेशान (घ) बहुत सुंदर

154. मैं तुम्हें इस संस्थान में लाया और तुमने मेरी ही जड़े खोदनी शुरू कर दी।
(क) नष्ट करना (ख) भ्रष्ट करना
(ग) नकारना (घ) पास आना

155. अपने पुत्र की गंदी हरकतों के बारे में सुनकर जितेन्द्र बाबू जमीन में गड़े जा रहे थे।
(क) परेशान होना (ख) जमीन धंसकना
(ग) शर्म से सिर झुकाना (घ) गर्व करना

156. तुम्हारी रोज-रोज की फरमाइशें मेरे लिए जी का जंजाल बन गई हैं।

Pariksha Manthan

(क) आसान होना (ख) व्यर्थ का झंझट
(ग) बधाई के पात्र (घ) गुस्से का सबब

157. इस मामले में वह सारा ठीकरा निर्मल जी के सिर पर फोड़ने की कोशिश करेगा।
(क) मटकी फोड़ना (ख) मटकी बनाना
(ग) दोष मढ़ना (घ) दोषमुक्त करना

158. पड़ोसी द्वारा घर के सामने कूड़ा फेंके जाने पर प्रकाश बाबू दांत पीस कर रह गये।
(क) क्रोध रोक लेना (ख) आपा खोना
(ग) चिढ़ाना (घ) मजाक करना

159. दिनों का फेर देखिए, कल तक अमर बाबू महंगी कार से चलते थे, आज पैदल घूम रहे हैं।
(क) भ्रमण करना (ख) भाग्य का खेल
(ग) दिन बड़ा होना (घ) भाग-दौड़ करना

160. बनते तो बड़े दूध के धुले थे, फिर छापे में इतनी अवैध सम्पत्ति कैसे बरामद हुई।
(क) दूध से नहाना
(ख) दूध बेचना
(ग) निर्दोष या निष्कलंक होना
(घ) चालाक बनना

161. शायद दीप चंद ने उस अधिकारी की नब्ज पहचान ली है। अपना हर काम निकाल लेता है।
(क) स्वभाव जानना (ख) नब्ज की जानकारी होना
(ग) चिकित्सक बनना (घ) गहराई का पता लगाना

162. जरूर तुम्हें किसी ने पट्टी पढ़ाई है।, जो तुम मुझ पर अविश्वास करने लगे हो।
(क) नेक सलाह देना (ख) बुरी सलाह देना
(ग) आपत्ति करना (घ) घर से निकालना

163. पेट पर पट्टी बांधकर उसने वह रात काटी।
(क) उदास रह कर (ख) दर्द से तड़प कर
(ग) जाग कर (घ) भूखा रह कर

164. पुलिस की मिली भगत से चोरबाजारी का बाजार गर्म है।
(क) धंधा तेज होना (ख) भीड़ लगना
(ग) घाटा होना (घ) बाजार बंद होना

165. उसकी अपनी कोई दृष्टि नहीं है। वह तो बेपेंदी का लोटा है।
(क) सजग (ख) प्रज्ञावान
(ग) यशस्वी (घ) ढुलमुल

166. मुक्तेश्वर बाबू जैसे कलावंत के घर में रह कर भी कुछ भी न सीख पाए। क्या वहां रहकर भाड़ झोकते रहे।
(क) आग लगाना (ख) समय व्यर्थ गंवाना
(ग) भाड़ में काम करना (घ) वश में करना

167. बादल को इतनी रात गये छोटू के घर से निकलता देख कर मेरा माथा ठनका।
(क) सिर में दर्द होना (ख) डर लगना
(ग) संशय होना (घ) विश्वास होना

168. खिलौना न दिलाने पर पंकज का मुंह उतर गया।
(क) उदास हो जाना (ख) खुश हो जाना
(ग) उत्तेजित हो जाना (घ) मुस्कराना

169. बिगड़ैल बेटे को रास्ते पर लाना इतना आसान नहीं था।
(क) नौकरी देना (ख) सुधारना
(ग) संत बनाना (घ) सड़क बनाना

170. नालायक औलादें सोने का घर मिट्टी का कर देती हैं।
(क) सम्पत्ति नष्ट कर देना
(ख) सोना बेच कर मिट्टी खरीदना
(ग) मकान बनवाना
(घ) उधार लेना

नीचे दिये प्रत्येक वाक्यांश के सामने विकल्पों के रूप में चार मुहावरे दिए गए हैं। सही मुहावरे का चयन करिए—

171. खतरा मोल लेना
(क) अंगारे उगलना (ख) अंगारों पर पैर रखना
(ग) अंगूठा दिखाना (घ) आग उगलना

172. अकेला सहारा
(क) अंधे की लकड़ी
(ख) अंधे के हाथ बटेर लगना
(ग) अपने पैरों पर खड़ा होना
(घ) चोली-दामन का साथ

173. हठी व्यक्ति
(क) मिटटी का माधव (ख) गोबर गणेश
(ग) अड़ियल टट्टू (घ) दूध का धोया

174. टाल-मटोल करना
(क) सीधे मुंह बात न करना
(ख) टका-सा जवाब देना
(ग) उलटी पट्टी पढ़ाना
(घ) अगर-मगर करना

175. विमुख होना
(क) आंखें दिखाना (ख) आंखें फेर लेना
(ग) आंख लगना (घ) होश उड़ाना

176. बहुत ऊंचा होना
(क) आसमान से बातें करना
(ख) आकाश-पाताल एक कर देना
(ग) हवा से बातें करना
(घ) आकाश के तारे तोड़ना

177. भयभीत होना
(क) कलेजे पर पत्थर पड़ना
(ख) कलेजे पर सांप लोटना

Parikshā Manthan

(ग) कलेजा मुंह को आना
(घ) कलेजा धक-धक करना

178. खो देना
(क) हाथ धोना (ख) हाथ मलना
(ग) हाथ साफ करना (घ) हाथ काटना

179. कपटी मित्र
(क) दांत काटी रोटी (ख) अक्ल की दुम
(ग) आस्तीन का सांप (घ) आबनूस का कुंदा

180. अधिक शोर मचाना
(क) पहाड़ टूटना
(ख) ईंट का जवाब पत्थर से देना
(ग) आसमान सिर पर उठाना
(घ) उंगली पर नचाना

181. किसी वस्तु का आवश्यकता से बहुत कम होना
(क) एक अनार सौ बीमार
(ख) ऊंट के मुंह में जीरा
(ग) उंगली चाटना
(घ) ओस के चाटे प्यास का न बुझना

182. नाश कर देना
(क) पानी फेर देना (ख) पानी में आग लगाना
(ग) पानी भरना (घ) पानी-पानी होना

183. लांछन लगाना
(क) तलवे सहलाना
(ख) उंगली उठाना
(ग) अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना
(घ) हाथ मलना

184. विरोध करना
(क) सिर उठाना (ख) सिर चढ़ाना
(ग) सिर झुकाना (घ) सिर कटाना

185. संगठन में शक्ति होना
(क) नौ दो ग्यारह होना (ख) छक्के छुड़ाना
(ग) घुटने टेकना (घ) एक और एक ग्यारह होना

186. अच्छे बुरे की पहचान न करना
(क) नौ की लकड़ी नब्बे खर्च
(ख) ठनठन गोपाल
(ग) एक ही लकड़ी से हांकना
(घ) कन्नी काटना

187. जरा भी असर न होना
(क) कान पर जूं न रेंगना (ख) लकीर का फकीर होना
(ग) कानोंकान खबर न होना (घ) कान का कच्चा होना

188. व्यर्थ ही लिखना
(क) कलम तोड़ना (ख) कागज काला करना
(ग) किताबी कीड़ा (घ) खाई पाटना

189. बुरी तरह पेश आना
(क) खून का घूंट पीना (ख) खून-पसीना एक करना
(ग) गले मढ़ना (घ) खाने को दौड़ना

190. चोट या हानि से बचाना
(क) आंच न आने देना (ख) अग्नि परीक्षा देना
(ग) लोहे के चने चबाना (घ) आंखें दिखाना

191. खूब मेहनत करना
(क) खून सूखना (ख) खून-पसीना एक करना
(ग) ख्याली पुलाव पकाना (घ) अक्ल के घोड़े दौड़ाना

192. बात पर कायम न रहना
(क) गिरगिट की तरह रंग बदलना
(ख) बेपेंदी का लोटा
(ग) गुल खिलाना
(घ) घड़ों पानी पड़ना

193. खुशियां मनाना
(क) नौ दो ग्यारह होना (ख) एक और एक ग्यारह होना
(ग) घी के दीये जलाना (घ) गुलछर्रे उड़ाना

194. स्त्रियों के समान घर में बैठना
(क) चैन की बंशी बजाना
(ख) चोली-दामन का साथ होना
(ग) चिकनी चुपड़ी बातें करना
(घ) चूड़ियां पहनना

195. घमंड होना
(क) पैरों तले से जमीन खिसकना
(ख) जमीन पर पैर न पड़ना
(ग) चांदी काटना
(घ) छक्के छुड़ाना

196. खुशामद करना
(क) जूतियां चाटना (ख) झंडे गाड़ना
(ग) टोपी उछालना (घ) तारे गिनना

197. छोटी उम्र में ज्यादा चतुर होना
(क) पेट काटना (ख) फुलझड़ी छोड़ना
(ग) पाला पड़ना (घ) पेट में दाढ़ी होना

198. बिल्कुल अच्छा न लगना
(क) फूटी आंख न सुहाना (ख) नजरों से गिरना
(ग) बाट जोहना (घ) थाली का बैगन होना

199. रिश्वत देना
(क) रंगा सियार होना (ख) बाएं हाथ का खेल
(ग) मुट्ठी गर्म करना (घ) सब्जबाग दिखाना

200. पछताना
(क) हाथ-पर-हाथ धर कर बैठना
(ख) हाथ धोकर पीछे पड़ना
(ग) सिर पर चढ़ाना
(घ) हाथ मलते रह जाना

201. 'आंखों में गड़ना' मुहावरे का अर्थ है—
(क) गौर से देखना
(ख) मन में खटकना
(ग) सहन न कर पाना
(घ) वस्तु को पाने की उत्कट लालसा रखना

Pariksha Manthan

202. 'सिर से पानी गुजर जाना' मुहावरे का उपयुक्त अर्थ क्या है?
(क) गहरे पानी में स्नान करना
(ख) सहनशीलता की सीमा टूट जाना
(ग) अच्छी प्रकार से सिर धोना
(घ) डूबने से बच जाना

203. 'कलेजे पर साँप लोटना' मुहावरे का अर्थ है—
(क) दुःखी होना
(ख) ईर्ष्या से जल उठना
(ग) दुश्मनी निकालना
(घ) दीनता प्रकट करना

204. 'साँप सूंघ जाना' मुहावरे का सही अर्थ है—
(क) खतरनाक आदमी से मित्रता करना
(ख) निर्जीव होना
(ग) विश्वासघात करना
(घ) पीछा करना

205. 'लुटिया डुबोना' मुहावरे का क्या अर्थ है—
(क) लुटिया डुबोकर पानी निकालना
(ख) सारे मार्ग अवरुद्ध कर देना
(ग) लोटा लेकर घूमना
(घ) लुटिया को नदी में फेंकना

206. 'सिर पर सवार रहना' मुहावरे का अर्थ है—
(क) दुःख प्रकट करना
(ख) प्रेतादि का प्रभाव रहना
(ग) दीनता प्रकट करना
(घ) धृष्ट भाव से दबाव बनाना

207. 'हवा हो जाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?
(क) हवा करना
(ख) हवा के रुख को पहचानना
(ग) गायब हो जाना
(घ) हवा की तरह चलना

208. 'चींटी के पर निकलना' मुहावरे का सही अर्थ है—
(क) छोटे व्यक्ति का घमंड करना
(ख) चींटी का उड़ना
(ग) इधर-उधर घूमना-फिरना
(घ) धीरे-धीरे चलना

209. 'गले का हार होना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है—
(क) अत्यंत प्रिय
(ख) गले में लटकना
(ग) गला काट लेना
(घ) गले में फंसना

210. 'घूंघट का पट खोलना' मुहावरे का सही अर्थ है—
(क) हमला करना
(ख) आनंद लेना
(ग) नारी की अस्मिता से खिलवाड़ करना
(घ) रहस्योद्घाटन करना

उत्तरमाला

1. (घ) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क)
6. (ख) 7. (ख) 8. (क) 9. (घ) 10. (ख)
11. (क) 12. (क) 13. (ग) 14. (ख) 15. (ग)
16. (क) 17. (ग) 18. (ख) 19. (क) 20. (ख)
21. (क) 22. (ख) 23. (क) 24. (ग) 25. (ग)
26. (ख) 27. (ग) 28. (क) 29. (क) 30. (ख)
31. (क) 32. (ख) 33. (क) 34. (ख) 35. (घ)
36. (क) 37. (ख) 38. (क) 39. (ख) 40. (घ)
41. (क) 42. (ग) 43. (क) 44. (ख) 45. (ख)
46. (क) 47. (ग) 48. (ख) 49. (क) 50. (घ)
51. (क) 52. (ग) 53. (ख) 54. (ख) 55. (क)
56. (ख) 57. (ख) 58. (घ) 59. (क) 60. (ख)
61. (ग) 62. (ख) 63. (क) 64. (घ) 65. (क)
66. (ख) 67. (ग) 68. (क) 69. (घ) 70. (क)
71. (क) 72. (ख) 73. (क) 74. (ख) 75. (क)
76. (ग) 77. (घ) 78. (ग) 79. (क) 80. (क)
81. (ख) 82. (क) 83. (ख) 84. (ख) 85. (ग)
86. (ख) 87. (ग) 88. (घ) 89. (क) 90. (क)
91. (ख) 92. (ग) 93. (क) 94. (ख) 95. (घ)
96. (क) 97. (घ) 98. (ग) 99. (ग) 100. (घ)
101. (ख) 102. (क) 103. (ग) 104. (ख) 105. (क)
106. (ग) 107. (ग) 108. (ग) 109. (ग) 110. (ख)
111. (ग) 112. (ख) 113. (ग) 114. (क) 115. (ग)
116. (क) 117. (ख) 118. (क) 119. (ख) 120. (क)
121. (ग) 122. (ख) 123. (घ) 124. (ग) 125. (क)
126. (ख) 127. (क) 128. (ग) 129. (घ) 130. (क)
131. (ख) 132. (घ) 133. (ख) 134. (ग) 135. (घ)
136. (क) 137. (ख) 138. (ख) 139. (घ) 140. (ग)
141. (ग) 142. (क) 143. (घ) 144. (क) 145. (ख)
146. (ग) 147. (घ) 148. (क) 149. (क) 150. (ग)
151. (ख) 152. (क) 153. (घ) 154. (क) 155. (ग)
156. (ख) 157. (ग) 158. (क) 159. (ख) 160. (ग)
161. (क) 162. (ख) 163. (घ) 164. (क) 165. (घ)
166. (ख) 167. (ग) 168. (क) 169. (ख) 170. (क)
171. (ख) 172. (क) 173. (ग) 174. (घ) 175. (ख)
176. (क) 177. (घ) 178. (क) 179. (ग) 180. (ग)
181. (ख) 182. (क) 183. (ख) 184. (क) 185. (घ)
186. (ग) 187. (क) 188. (ख) 189. (घ) 190. (क)
191. (ख) 192. (क) 193. (ग) 194. (घ) 195. (ख)
196. (क) 197. (घ) 198. (क) 199. (ग) 200. (घ)
201. (ख) **नोट** : वस्तु को पाने की उत्कट लालसा के लिए भी इस मुहावरे का प्रयोग होता है।)
202. (ख) 203. (ख) 204. (ख) 205. (ख) 206. (घ)
207. (ग) 208. (क) 209. (क) 210. (घ)

◆◆◆

Pariksha Manthan

वाक्य अशुद्धि और संशोधन

निर्दोष, प्रभावशाली तथा शुद्ध भाषा के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य शुद्ध हों। इन्हें न सिर्फ शुद्ध-शुद्ध लिखा जाए, बल्कि बोला भी शुद्ध जाए। भाषा और वाक्य का परस्पर महत्वपूर्ण संबंध होता है, क्योंकि वाक्य को भाषा की मुख्य एवं सार्थक इकाई माना जाता है। इसलिए जब वाक्य निर्दोष होगा, तभी भाषा भी शुद्ध और दोष रहित रह पाएगी।

अक्सर हम वाक्य को लिखते या बोलते समय जो त्रुटियां करते हैं, उनमें विभक्ति, लिंग, वचन, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण एवं मुहावरों आदि से जुड़ी त्रुटियां होती हैं। परीक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर हम यहां इन सामान्य त्रुटियों के बारे में उदाहरण सहित बता रहे हैं, ताकि उन्हें वाक्यों को संशोधित करने के अभ्यास में सहूलियत रहे।

लिंग से जुड़ी अशुद्धियां

अक्सर हम लिंग संबंधी अशुद्धियों के कारण वाक्य रचना को दोषपूर्ण बना देते हैं। यह त्रुटि मुख्यतः संज्ञा से जुड़ी होती है। संज्ञा के अनुरूप विशेषण और क्रिया का रूप बदलता है। लिंग संबंधी अशुद्धियों को निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
1. दीये के लौ जगमगा उठी।	1. दीये की लौ जगमगा उठी।
2. उसने मेरा जिज्ञसा शांत किया।	2. उसने मेरी जिज्ञासा शांत की।

वचन से जुड़ी अशुद्धियां

वाक्यों को लिखने या बोलने में वचन संबंधी गड़बड़ियां हम अक्सर कर बैठते हैं, जिससे पूरी वाक्य रचना ही दोषपूर्ण हो जाती है। इस प्रकार की अशुद्धियों को हम निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
1. सभागार में सभी श्रेणी के लोग थे।	1. सभागार में सभी श्रेणियों के लोग थे।
2. दंगे में सौ गिरफ्तारी हुई।	2. दंगे में सौ गिरफ्तारियां हुईं।

विभक्ति से जुड़ी अशुद्धियां

विभक्ति संबंधी अशुद्धियां प्रायः 'ने', 'को' 'से' 'का' 'के' 'की', 'में', 'पर', 'के अंदर' तथा 'के बीच' के प्रयोग में होती हैं। इन्हें हम उदाहरणों के माध्यम से यहां सिलसिलेवार स्पष्ट कर रहे हैं। यह भी स्मरणीय रहे कि सर्वनाम का प्रयोग विभक्ति के साथ ही करना चाहिए।

जैसे—'उस' सर्वनाम है। इसका प्रयोग 'ने' लगाकर करेंगे।

जैसे—उसने अपना नाम तो बताया ही नहीं।

'ने' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. बहुत से लोग खाना नहीं खाया।	1. बहुत से लोगों ने खाना नहीं खाया।
2. हम आज गोपाल को बुलवाया।	2. हमने आज गोपाल को बुलवाया है।

'को' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. अपने पुत्र चरित्रवान बनाओ।	1. अपने पुत्र को चरित्रवान बनाओ।
2. मैं उपन्यास को पढ़ता हूं।	2. मैं उपन्यास पढ़ता हूं।
3. आज हम इस समस्या को विचार करेंगे।	3. आज हम इस समस्या पर विचार करेंगे।

'से' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. कुल्हाड़ी लकड़ी काट लाओ।	1. कुल्हाड़ी से लकड़ी काट लाओ।
2. तुम पार्टी में अवश्य से आना।	2. तुम पार्टी में अवश्य आना।
3. मेरा सब से प्रणाम कहना।	3. मेरा सबको प्रणाम कहना

'क' 'के', 'की' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. समीर ने एक कहानी उर्दू में अनुवाद किया।	1. समीर ने एक कहानी का उर्दू में अनुवाद किया।
2. बस्ती में पानी के भर जाने से संक्रामक बीमारियों का खतरा पैदा हो गया है।	2. बस्ती में पानी भर जाने से संक्रामक बीमारियों का खतरा पैदा हो गया है।
3. बड़ों का बात हमेशा सही नहीं होती।	3. बड़ों की बात हमेशा सही नहीं होती।

'के द्वारा' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैंने यह बात महाराजजी के द्वारा सुनी।	1. मैंने यह बात महाराजजी से सुनी।
2. बावरिया गैंग के द्वारा दहशत फैलाई जा रही थी।	2. बावरिया गैंग द्वारा दहशत फैलाई जा रही थी।

Parikshā Manthan

'में' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. रोहित कॉफी हाउस बैठा मेरा इंतजार कर रहा होगा।	1. रोहित कॉफी हाउस में बैठा मेरा इंतजार कर रहा होगा।
2. उन दिनों में वह आर्थिक तंगी से जूझा करता था।	2. उन दिनों वह आर्थिक तंगी से जूझा करता था।
3. कोयल पेड़ की शाखा में बैठी है।	30 कोयल पेड़ की शाखा पर बैठी है।

'पर' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैं घर मिलूंगा।	1. मैं घर पर मिलूंगा।
2. आप इधर पर बैठें।	2. आप इधर बैठें।
3. अब मैच समाप्त होने पर है।	3. अब मैच समाप्त होने को है।

'संज्ञा' से जुड़ी अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
1. श्वेता प्रातःकाल के समय नित्य प्रार्थना करती है।	1. श्वेता प्रातःकाल में नित्य प्रार्थना करती है।
2. हाथों में गुलामी की बेड़ियां पड़ गईं।	2. पैरों में गुलामी की बेड़ियां पड़ गईं।

सर्वनाम से जुड़ी अशुद्धियां

अक्सर हम असावधानीवश सर्वनाम से जुड़ी बारीक त्रुटियां कर बैठते हैं और जहां 'हम', 'अपने' आदि का प्रयोग करना चाहिए, वहां 'हमारा', 'हमारे' आदि का प्रयोग कर बैठते हैं। सर्वनाम से जुड़ी अशुद्धियों को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. वह पत्र जो तुमने मुझे लिखा था, वह अब मेरे पास नहीं है।	1. वह पत्र जो तुमने मुझे लिखा था, अब मेरे पास नहीं है।
2. राहुल आया और कहा।	2. राहुल आया और उसने कहा।
3. उसके सब कुछ लुट गया।	3. उसका सब कुछ लुट गया।
4. यह प्रयागराज एक्सप्रेस है, यह दिल्ली जाती है।	3. यह प्रयागराज एक्सप्रेस है, जो दिल्ली जाती है।

विशेषण से जुड़ी अशुद्धियां

वाक्य रचना करते समय हम कभी विशेषणों का अनावश्यक प्रयोग करते हैं, तो कभी इसमें अनियमितता बरतते हैं। कभी-कभी उचित विशेषण का प्रयोग नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप वाक्य संबंधी अशुद्धियां भाषा को दोषपूर्ण बनाती हैं और इसकी कसावट जाती रहती है। यहां प्रस्तुत उदाहरणों से इन त्रुटियों को समझा जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. उसने मुझसे आग्रह किया कि इसे गुप्त रहस्य ही रहने दीजिए।	1. उसने मुझसे आग्रह किया कि इसे रहस्य ही रहने दीजिए।
2. समाचार सुनकर उन्हें भारी दुख हुआ।	2. समाचार सुनकर उन्हें बहुत दुख हुआ।
3. अधिकारी के आते ही सब लोग अपना काम करने लगे।	3. अधिकारी के आते ही सब लोग अपना-अपना काम करने लगे।
4. धीरे-2 चलो।	4. धीरे-धीरे चलो।

क्रिया से जुड़ी अशुद्धियां

वाक्य में यदि क्रिया का सही प्रयोग न हो तो उसकी संरचना बिगड़ जाती है और भाषा का लालित्य प्रभावित होता है। क्रिया संबंधी अशुद्धियों को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है।

1. तुम अपने बेटे को कैसे संस्कार दोगे, यह तुम पर निर्भर करता है।	1. तुम अपने बेटे को कैसे संस्कार दोगे, यह तुम पर निर्भर है।
2. मैंने उसकी आवाज और अभिनय देखा।	2. मैंने उसकी आवाज सुनी और अभिनय देखा।
3. प्रधानमंत्री ने प्रभावशाली भाषण किया था।	3. प्रधानमंत्री ने प्रभावशाली भाषण दिया था।
4. मैंने अपनी पुस्तक महात्मा जी को समर्पण की है।	4. मैंने अपनी पुस्तक महात्मा जी को समर्पित की है।
5. अचानक वह हंस डाला।	5. अचानक वह हंस पड़ा।
6. सुनिए, पैसे न मांगें।	6. सुनिए, पैसे न मांगिए।
7. यह जानते हो कि वे क्या काम करता है।	7. यह जानते हो कि वे क्या काम करते हैं।
8. अनुभव चाहता है कि तुम दो दिन की छुट्टी ले लेते।	8. अनुभव चाहता है कि तुम दो दिन की छुट्टी ले लो।
9. अपना खेत बेकार पड़े न रहने दीजिए।	9. अपना खेत बेकार पड़ा न रहने दीजिए।
10.कुछ समय बाद सब चिंता दूर होकर मन शांत हो गया।	10.कुछ समय बाद सब चिंताएं दूर होने से मन शांत हो गया।
11.वह दौड़ता-दौड़ता नाचने लगा।	11.वह दौड़ते-दौड़ते नाचने लगा।
12.यह निश्चित किया गया कि हम कल सुबह प्रस्थान करेंगे।	12.यह निश्चित हुआ कि हम कल सुबह प्रस्थान करेंगे।

क्रिया विशेषण से जुड़ी अशुद्धियां

क्रिया विशेषण से जुड़ी अशुद्धियां वाक्य को भ्रष्ट करती हैं, जिससे भाषा की कसावट जाती रहती है। इससे संबंधित अशुद्धियों को निम्नांकित उदाहरणों से समझा जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. सारा दिनभर वह व्यर्थ भाग-दौड़ करता रहा।	1. दिनभर वह व्यर्थ भाग-दौड़ करता रहा।
2. तुम स्वयं ही देख लेना।	2. तुम स्वयं देख लेना।

Pariksha Manthan

3. इन देश में सर्वस्व सम्पन्नता है।	3. इस देश में सर्वत्र सम्पन्नता है।
4. देखते ही देखते वह बड़ा आगे बढ़ गया।	4. देखते ही देखते वह बहुत आगे बढ़ गया।
5. जो काम पराशर को सौंपा गया, उसने आसानीपूर्वक कर गया।	5. जो काम पराशर को सौंपा गया, उसने आसानी से कर डाला।

मुहावरों से जुड़ी अशुद्धियाँ

मुहावरों के गलत प्रयोग से वाक्य दोष तो उत्पन्न होता ही है, अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। अतः इनके प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। निम्नलिखित उदाहरणों से मुहावरों से जुड़ी त्रुटियों को समझा जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. अपनी गंदी हरकतों के कारण वह सबकी नजरों पर बैठ गया।	1. अपनी गंदी हरकतों के कारण वह सबकी नजरों में चढ़ गया।
2. आस्तीन में सांप मत रखो।	2. आस्तीन में सांप मत पालो।
3. सुधांशु की अक्ल चक्कर खा गई।	3. सुधांशु की अक्ल चकरा गई।
4. तुम फूल कर कुप्पी क्यों हो रही हो।	4. तुम फूल कर कुप्पा क्यों हो रही हो।
5. पाकिस्तानी सैनिकों ने हथियार रख दिए।	5. पाकिस्तानी सैनिकों ने हथियार डाल दिए।
6. घर आते ही पिताजी मुझ पर बरस गए।	6. घर आते ही पिताजी मुझ पर बरस पड़े।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नीचे दिये गये वाक्यों में उस भाग को चिह्नित करिये, जो अशुद्ध हैं।

1. (क) मात्र दस (ख) वर्ष की आयु
   (ग) में वह (घ) मुंबई आया था
2. (क) प्रतिदिन
   (ख) नृत्य की कसरत
   (ग) करने के बावजूद
   (घ) अभी वह इस कला में पारंगत नहीं हुआ है
3. (क) कृपया एक गीतों
   (ख) की पुस्तक
   (ग) ला दीजिए,
   (घ) ताकि मैं उन्हें याद कर सकूं
4. (क) लंदन में (ख) अनेक
   (ग) दर्शनीय (घ) स्थल हैं
5. (क) रेल दुर्घटना में (ख) दो सौ
   (ग) लोगों के (घ) मारे जाने की आशा है
6. (क) मेरे मित्र ने (ख) एक सुंदर पेंटिंग
   (ग) नौ सौ रुपयों (घ) में खरीदी है
7. (क) विद्या समाप्त (ख) करने के बाद
   (ग) उसने अपना (घ) व्यवसाय शुरू कर दिया
8. (क) क्या आप (ख) बता सकते हैं
   (ग) कि बल्ब का (घ) निर्माण किसने किया
9. (क) मंगलवार को (ख) आयोजित समारोह में
   (ग) शहर के (घ) अनेकों लोग उपस्थित थे
10. (क) स्टेशन पर ट्रेन
    (ख) के रुकते ही
    (ग) यात्री पानी की
    (घ) चाह में इधर-उधर घूमने लगे
11. (क) सैनिकों का
    (ख) लक्ष्य
    (ग) दुश्मनों पर विजय प्राप्ति होनी चाहिए
    (घ) सभी सही हैं
12. (क) इधर आजकल (ख) मौसम की वर्षा
    (ग) हो रही है (घ) सभी सही हैं
13. (क) अच्छा लिखने के लिए (ख) हमें भाषा का
    (ग) गहरा बोध (घ) होना चाहिए
14. (क) आलोक के काम करने (ख) का ढंग
    (ग) मेरे को पसंद नहीं है (घ) सभी सही हैं
15. (क) इतनी अधीर मत हो, (ख) उन्नति के मार्ग में
    (ग) बहुत संकट आते हैं (घ) सभी सही हैं
16. (क) गांधीजी (ख) पक्के ईश्वर के
    (ग) भक्त (घ) थे।
17. (क) इस गीत
    (ख) की रचयिता
    (ग) श्रीमती अनामिका व्यास हैं
    (घ) सभी सही हैं
18. (क) उस महिला कवि (ख) के गीत को
    (ग) सभी ने पसंद किया (घ) सभी सही हैं
19. (क) मेघनाथ (ख) युद्ध में
    (ग) हार गया। (घ) सभी सही हैं
20. (क) काव्य की शोभा (ख) अथवा चमत्कार
    (ग) कभी शब्दों में होता है (घ) और कभी अर्थों में
21. (क) उनके (ख) विद्वतापूर्वक उद्‌बोधन
    (ग) को सुनकर (घ) मैं प्रभावित्त हुआ
22. (क) उसका सारा जीवन (ख) द्वंद्वों में
    (ग) ही बीत गया (घ) सभी सही हैं

Pariksha Manthan

23. (क) मैंने इतिहास (ख) की पुस्तक
(ग) तेरे को (घ) दी थी

24. (क) शीर्षक को चयन
(ख) करते समय अनुच्छेद में निहित
(ग) भावों और विचारों की
(घ) परख कर लेनी चाहिए

25. (क) लड़का ने (ख) अजमेर से
(ग) उपहार भेजा (घ) सभी सही हैं

26. (क) सुबह होते ही (ख) चिड़ियों ने
(ग) गाना (घ) शुरू कर दिया

27. (क) छत में (ख) पार्टी
(ग) चल रही थी (घ) सभी सही हैं

28. (क) आपके इन्हीं गुणों के कारण ही तो लोग
(ख) तुम्हारी यशोगाथा का वर्णन करते
(ग) अघाते नहीं (घ) सभी सही हैं

29. (क) आजकल के नेता
(ख) अपने दोहरे चरित्र के कारण
(ग) जनसंख्या के
(घ) दिल से उतर गये हैं

30. (क) तुमने कोट तो (ख) सिल दिया
(ग) किन्तु कमीज नहीं सिला (घ) सभी सही हैं

31. (क) खिलौने न (ख) लाने की वजह से
(ग) मेरी बेटी (घ) मेरे से रूठ गई

32. (क) स्वतंत्रता संग्राम में प्राण गंवाने वाले
(ख) वीरों को सम्मान में सरकार ने
(ग) एक दिन के
(घ) सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की है

33. (क) यह भी तो संभव हो सकता है कि
(ख) आपकी अवज्ञा करते हुए
(ग) कमल घर न जाकर
(घ) अस्पताल चला गया हो

34. (क) मैं तुम्हें अपना समझता हूं
(ख) इसलिए कह रहा हूं कि
(ग) यह बात
(घ) कोई को मत बताना

35. (क) ठहरो, (ख) मेरे को भी
(ग) तुम्हारे साथ (घ) चलना है

36. (क) केवल यहां (ख) तीन
(ग) डिब्बे हैं (घ) सभी सही हैं

37. (क) कृपया आप ही (ख) यह बताने की कृपा करें
(ग) कि दिल्ली (घ) कब चलना है

38. (क) प्रतिभाशाली
(ख) महिलाएं
(ग) सिविल सेवाओं में
(घ) सफलता प्राप्त कर रही हैं

39. (क) वह लड़के को (ख) बुलाओ
(ग) तभी यह काम (घ) हो सकेगा

40. (क) रात में
(ख) वह डरावना दृश्य
(ग) देखकर
(घ) मेरा तो प्राण सूख गया

41. (क) दीपावली पर
(ख) कुछ लोग
(ग) चमचमाती चांदी के बर्तन
(घ) खरीदने का लोभ संवरण न कर सके

42. (क) दो वर्ष पूर्व (ख) मैं उन्हों के
(ग) पिताजी से (घ) मिला था

43. (क) ऊंची-कोटि के
(ख) विद्वानों का
(ग) इस संस्थान को
(घ) आगे बढ़ाने में बहुत योगदान रहा

44. (क) भ्रष्टाचार जैसी (ख) गहरी समस्या
(ग) पर सभी ने (घ) चिंता व्यक्त की

45. (क) छायावाद के युग में (ख) राष्ट्रवादी विचारधारा के
(ग) उन्नत स्वर (घ) सुनने को मिलता है

46. (क) महाराज शांतनु (ख) सत्यवती की सौंदर्यता पर
(ग) मुग्ध हो गये थे (घ) सभी सही हैं

47. (क) अग्रिम बुधवार को (ख) मेरे पिताजी
(ग) जोधपुर से (घ) लौटेंगे

48. (क) मेरे लिए तो (ख) सभी गुरुजन
(ग) पूज्यनीय हैं (घ) सभी सही हैं

49. (क) विद्वानों (ख) का कहना है कि
(ग) आरोग्यता जीवन का (घ) सबसे बड़ा सुख है

50. (क) पतिव्रता नारी ने (ख) इस रहस्य को
(ग) अपने हृदय के भीतर ही (घ) अन्तर्निहित रखा

51. (क) वेदमंत्रों का (ख) उच्चारण बोलना
(ग) आसान नहीं है (घ) सभी सही हैं

52. (क) पत्र के नीचे (ख) अपना हस्ताक्षर
(ग) कर दीजिए (घ) सभी सही हैं

53. (क) वितमंत्री ने (ख) बहुत अच्छा
(ग) भाषण (घ) बोला

54. (क) जो मनुष्य
(ख) राष्ट्रप्रेमी होता है

Pariksha Manthan

(ग) उसको देश की एक न एक वस्तु से
(घ) प्रेम हो जाता है

55. (क) रेखा ने अमित को आवाज लगाकर कहा
(ख) कि राहुल का दूध
(ग) रसोई में
(घ) गैस के ऊपर रखा है

56. (क) अध्यापक ने
(ख) कहा,
(ग) ''राहुल तुम फीस कब जमा करोगे?''
(घ) सभी सही हैं

57. (क) आनंद धर्म (ख) और ईश्वर में
(ग) आस्था करता है (घ) सभी सही हैं

58. (क) योगाभ्यास (ख) लेकर
(ग) स्वस्थ और (घ) प्रसन्नचित्त रहा जा सकता है

59. (क) स्वास्थ्य रहने (ख) के लिए
(ग) संयमित जीवनचर्या (घ) आवश्यक है

60. (क) कृपया मुझे (ख) एक फूलों
(ग) की माला (घ) दे दीजिए

61. (क) आपको इस समय (ख) मुझसे बेफिजूल
(ग) बातें नहीं करनी चाहिए (घ) सभी सही हैं

62. (क) पप्पू माला (ख) गूंध रहा था
(ग) कि तभी (घ) आंधी आ गई

63. (क) अपने बड़े भाई (ख) की गिरफ्तारी की
(ग) खबर सुनकर (घ) उसका चेहरा गिर गया

64. (क) व्यक्ति के हर प्रकार के कष्टों को
(ख) वह
(ग) पल भर में
(घ) दूर करती है

65. (क) तूफान ने (ख) जमकर
(ग) तबाही मचाया (घ) सभी सही हैं

66. (क) शाम होते ही (ख) मजदूर
(ग) घरों को (घ) लौट गई

67. (क) पक्षियों के (ख) बैठने से
(ग) पेड़ की शाखा (घ) झुक गई

68. (क) जब पृथ्वी पर
(ख) पाप और अत्याचार बढ़ते हैं
(ग) तब ईश्वर किसी-न-किसी महापुरुषों के रूप में
(घ) पृथ्वी पर अवतार लेता है

69. (क) तुष्टिकरण करने की
(ख) नीति अपनाकर
(ग) न व्यक्ति आगे बढ़ सकता है
(घ) और न राष्ट्र

70. (क) उन्होंने दूरभाष पर (ख) बताया कि वे
(ग) रविवार के दिन (घ) आएंगे

71. (क) कल के समारोह में (ख) मुझे सादरपूर्वक
(ग) आमंत्रित (घ) किया गया है

72. (क) बड़ों की बातों को (ख) आदर से
(ग) सुनना चाहिए (घ) सभी सही हैं

73. (क) शाम तक (ख) आयुषी या
(ग) अनुज (घ) हमारे घर आएगी

74. (क) प्रयाग में (ख) जो तीन नदी
(ग) मिलती हैं, (घ) उनके नाम बताइये

75. (क) माधुरी की रुचिएं (ख) टीवी देखना
(ग) और कविता पढ़ना है (घ) सभी सही हैं

76. (क) खाने के लिए (ख) पूड़ी तो मिल गई
(ग) लेकिन सब्जी नहीं मिला (घ) सभी सही हैं

77. (क) संसार के (ख) प्रत्येक कोने-कोने में
(ग) अनगिनत भाषाएं (घ) बोली जाती हैं

78. (क) यद्यपि वह (ख) अकेला था
(ग) परंतु उसने (घ) हिम्मत नहीं हारी

79. (क) बड़े भाई की (ख) आज्ञा के अनुकूल
(ग) उसने सारा काम (घ) निपटा दिया

80. (क) तुम कक्षा में आते हो (ख) तो तुम्हारी पुस्तक
(ग) साथ क्यों नहीं लाते (घ) सभी सही हैं

81. (क) जब भी (ख) आपकी इच्छा हो,
(ग) यहां आ जाना (घ) सभी सही हैं

82. (क) पकड़े गये लुटेरों में से (ख) दो इलाहाबाद के भी
(ग) हैं (घ) सभी सही हैं

83. (क) बुरा से बुरा आदमी (ख) भी सम्मान
(ग) चाहता है (घ) सभी सही हैं

84. (क) गुरुजी ने हमें (ख) खाने के लिए
(ग) रबड़ी दिया (घ) सभी सही हैं

85. (क) विनोद के सकुशल (ख) लौटने पर
(ग) उसकी मां ने (घ) संतोष का सांस ली

86. (क) सेठजी (ख) बड़े
(ग) सज्जन पुरुष हैं (घ) सभी सही हैं

87. (क) हमने तो
(ख) तुम्हें मना करा था
(ग) कि उसकी दोस्ती अच्छी नहीं
(घ) सभी सही हैं

88. (क) सभी जानते हैं कि (ख) बेटी
(ग) पराया धन (घ) होता है

89. (क) शीर्षक को छोटा (ख) आकर्षक और
(ग) विषय से संबद्ध (घ) रखना चाहिए

Pariksha Manthan

90. (क) पीएफ के पैसों से (ख) राजेन्द्र ने
(ग) घर को बनवाया (घ) सभी सही हैं

91. (क) क्या इतनी रात गये (ख) तुम अपनी
(ग) प्रेमिका को (घ) मिलने गये थे

92. (क) फूल में सुगंध
(ख) होती है और
(ग) तितली के पास सुन्दर पंख
(घ) सभी सही हैं

93. (क) नौजवान युवकों ने (ख) विरोध प्रदर्शन के लिए
(ग) यह तरीका (घ) अपनाया

94. (क) वह जब बोलती है (ख) तो लगता है
(ग) मानो मुख से फूल गिर (घ) रहे हों

95. (क) अध्यापक ने (ख) आज हमारे को
(ग) नया पाठ पढ़ाया (घ) सभी सही हैं

96. (क) उनके विख्यात होने की (ख) दो कहानी
(ग) प्रचलित हैं (घ) सभी सही हैं

97. (क) धनवान को व्यर्थ (ख) बेकार में
(ग) सहायता देकर (घ) कोई लाभ न होगा

98. (क) व्यर्थ में लड़ाई
(ख) खरीदने से
(ग) तुम भी परेशानी में पड़ सकते हो
(घ) सभी सही हैं

99. (क) उनकी चौखट पर (ख) नाक घिसने से
(ग) कोई फायदा नहीं (घ) सभी सही हैं

100. (क) विश्वामित्र के तप को (ख) मेनका ने
(ग) भंग की (घ) सभी सही हैं

<u>नीचे वाक्यों के चार विकल्प दिये गये हैं। आपको इनमें से शुद्ध वाक्य चुनना है</u>।

101. (क) यह मिठाई पांच आदमी के लिए है।
(ख) यह मिठाई पांच आदमियों के लिए है।
(ग) पांच आदमी के लिए यह मिठाई है।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

102. (क) कल पाठ पढ़कर आइये।
(ख) पाठ पढ़कर आइये कल।
(ग) कल आइये पाठ पढ़कर।
(घ) पाठ पढ़कर कल आइये।

103. (क) वह लौट आए। (ख) लौट आये वह।
(ग) वे लौट आए। (घ) इनमें से कोई नहीं।

104. (क) उनको एक पुत्र है। (ख) उनके एक पुत्र है।
(ग) उन्हें एक पुत्र है। (घ) उनका एक पुत्र है।

105. (क) गांधीजी का राष्ट्र आभारी है।
(ख) गांधीजी को राष्ट्र अभारी है।
(ग) आभारी है राष्ट्र गांधीजी का।
(घ) राष्ट्र गांधीजी का आभारी है।

106. (क) गुरुजी आ रहा है। (ख) आ रहा है गुरुजी।
(ग) गुरुजी आ रहे हैं। (घ) इनमें से कोई नहीं।

107. (क) भारत में अनेक जातियां हैं।
(ख) भारत में अनेक जाति हैं।
(ग) भारत में अनेकों जातियां हैं।
(घ) भारत में अनेकों जाति हैं।

108. (क) छात्राएं कक्षा में बैठा था।
(ख) छात्राएं कक्षा में बैठी थीं।
(ग) छात्राएं कक्षा में बैठी थी।
(घ) बैठी थीं छात्राएं कक्षा में।

109. (क) जयनंदन ने एक अच्छी कहानी को लिखा।
(ख) जयनंदन ने अच्छी एक कहानी को लिखा।
(ग) जयनंदन ने एक अच्छी कहानी लिखी।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

110. (क) आइये, बैठिये। (ख) आइये बैठो।
(ग) आओ, बैठिये। (घ) इनमें से कोई नहीं।

111. (क) सीता की चरित्र अच्छी है।
(ख) सीता का चरित्र अच्छी है।
(ग) सीता की चरित्र अच्छा है।
(घ) सीता का चरित्र अच्छा है।

112. (क) मैंने अभी कार्यालय जाना है।
(ख) मुझे अभी कार्यालय जाना है।
(ग) मेरे को अभी कार्यालय जाना है।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

113. (क) मैं इतनी कड़वी सब्जी नहीं खा सकता।
(ख) इतना कड़वा सब्जी मैं नहीं खा सकता।
(ग) मैं नहीं खा सकता इतना कड़वा सब्जी।
(घ) इतनी कड़वा सब्जी मैं नहीं खा सकता।

114. (क) शरीर पर कई अंग होते हैं।
(ख) शरीर के कई अंग होते हैं।
(ग) होते हैं कई अंग शरीर पर।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

115. (क) उसे अनुत्तीर्ण होने की आशंका है।
(ख) उसे अनुत्तीर्ण होने की आशा है।
(ग) उसे अनुत्तीर्ण होने का शक है।
(घ) उसे अनुत्तीर्ण होने का संशय है।

116. (क) वे अभी-अभी खाना खाए हैं।
(ख) उन्होंने अभी-अभी खाना खाया है।
(ग) उन्होंने अभी-अभी खाना खाए हैं।
(घ) उन्होंने अभी-अभी खाना खाई है।

Parikshā Manthan

117.(क) बहुत सी पत्र व पत्रिकाओं का प्रकाशन बन्द हो गया है।
(ख) बहुत से पत्र अथवा पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो गया है।
(ग) बहुत से पत्रों और पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो गया है।
(घ) बहुत से पत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो गया है।

118.(क) बिंदिया हंस डाली। (ख) बिंदिया हंस उठी।
(ग) बिंदिया हंस पड़ी। (घ) हंस उठी बिंदिया।

119.(क) विभाजी जानी-मानी कवि हैं।
(ख) विभाजी जानी-मानी कवियित्री हैं।
(ग) विभाजी जानी-मानी कवयित्री हैं।
(घ) विभाजी जाने-माने कवियित्री हैं।

120.(क) बलात्कारी को मृत्युदंड की सजा अवश्य मिलनी चाहिए।
(ख) बलात्कारी को मृत्युदंड की सजा आवश्यक मिलनी चाहिए।
(ग) बलात्कारी को मृत्युदंड अवश्य मिलना चाहिए।
(घ) अवश्य मिलना चाहिए मृत्युदंड बलात्कारी को।

121.(क) सबों को पांच-पांच अमरूद दीजिए।
(ख) सभी को पांच-पांच अमरूद दीजिए।
(ग) सभी को दीजिए पांच अमरूद।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

122.(क) तुलसी और सूर क्रमशः अवधी और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि हैं।
(ख) तुलसी और सूर अवधी और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि हैं।
(ग) तुलसी अवधी के श्रेष्ठ कवि हैं और ब्रजभाषा के सूर हैं।
(घ) तुलसी अवधी के श्रेष्ठ कवि हैं और सूर ब्रजभाषा के हैं।

123.(क) अच्छा यही रहेगा कि तुम आगे की बातों को भुला दो।
(ख) अच्छा यही रहेगा कि तुम पिछली बातों को भुला दो।
(ग) अच्छा यही रहेगा कि तुम आगामी बातों को भुला दो।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

124.(क) मुन्नी अच्छी अभिनेता है।
(ख) मुन्नी अच्छा अभिनेता है।
(ग) मुन्नी अभिनेता है अच्छा।
(घ) मुन्नी अच्छी अभिनेत्री है।

125.(क) ग्यारहवें कक्षा में यह पाठ पढ़ाया जाता है।
(ख) ग्यारहवीं कक्षा में यह पाठ पढ़ाया जाता है।
(ग) ग्यारहवें में यह पाठ पढ़ाया जाता है।
(घ) पढ़ाया जाता है यह पाठ ग्यारहवीं में।

126.'पति-पत्नी के झगड़े का हेतु क्या हो सकता है?' वाक्य का शुद्ध रूप है?
(क) पति-पत्नी के झगड़े का क्या हेतु हो सकता है?
(ख) पति-पत्नी के झगड़े का हेतु क्या है?
(ग) पति-पत्नी के झगड़े का कारण क्या हो सकता है?
(घ) पति और पत्नी के झगड़े का हेतु क्या हो सकता है?

127.नीचे दिए वाक्यों में कौन-सा वाक्य त्रुटिहीन है?
(क) मेरे घर के पास एक पान की दूकान है।
(ख) मेरे घर के पास एक पान की दूकान स्थित है।
(ग) मेरे घर के पास एक पानों की दूकान है।
(घ) मेरे घर के पास पान की एक दूकान है।

128. 'बाघ और बकरी एक घाट पानी पीती है? वाक्य का शुद्ध रूप है—
(क) बाघ-बकरी एक घाट पर पानी पीती है।
(ख) बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं।
(ग) बाघ और बकरी एक ही घाट पर पानी पीती हैं।
(घ) बाघ और बकरी पानी पीती हैं।

129.निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है—
(क) यह रूमाल अच्छी है।
(ख) उसकी दही खट्टी है।
(ग) कई हाथियां जा रही हैं।
(घ) उसका मकान बहुत अच्छा है।

130. इनमें से शुद्ध वाक्य है—
(क) डॉ. गुप्ता हमारे पृभारी हैं।
(ख) आज मैं इकतिस वर्ष का हो गया हूं।
(ग) इस वर्ष पहाड़ों पर जमकर तुषारपात हुआ है।
(घ) हमें कभी हतोत्साहित नहीं होना चाहिए।

131. इनमें से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) मेरा गुप्त रहस्य कोई नहीं जानता।
(ख) श्याम सज्जन आदमी है।
(ग) उत्तर का अधिकांश भाग पहाड़ी है।
(घ) इनमें से एक भी वाक्य शुद्ध नहीं है।

132. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) यह आपकी अनाधिकार चेष्टा है।
(ख) यह आपकी अनिधकार चेष्टा है।
(ग) यह आपकी चेष्टा अनाधिकार है।
(घ) यह चेष्ट आपका अनाधिकार है।

133. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) उसने अपनी कमाई का अधिकांश भाग गंवा दिया।
(ख) वह अपनी कमाई का अधिकांश भाग गंवा बैठा है।
(ग) उसने कमाई का अधिकांश भाग गंवा डाला।
(घ) उसने अपनी कमाई का अधिकांश गंवा दिया।

134. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य सही है?
(क) श्रीराम चौदह वर्ष के बाद वन से वापस लौटे।
(ख) श्रीराम चौदह वर्ष के बाद वनवास से वापस लौटे।

Pariksha Manthan

(ग) श्रीराम चौदह वर्ष बाद वन से वापस लौटे।
(घ) श्रीराम चौदह वर्ष के बाद वन से लौटे।

135. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) आपका शासन संबंधी कार्य अधिक विख्यातपूर्ण है।
(ख) आपको भूमि-भवन वाहन के अभिनव सुख की प्राप्ति होगी।
(ग) यह समाचार पूरे देशभर में तुरंत फैल गया।
(घ) तुम्हें कल कुछ हो जाए तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा।

136. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) रोगी अपनी कमजोरियों के कारण उठ तक नहीं पा रहा था।
(ख) राजपथ की सड़क से झांकियां वापस लौट गईं।
(ग) शिकारी उस पर गोली चलाई पर वह शेर बच गया।
(घ) उस समय चरखा चलाना भी एक अनुशासन था।

137. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) यह आँखों से देखी घटना है।
(ख) यह आँखों देखी घटना है।
(ग) यह आँखों द्वारा देखी गई घटना है।
(घ) यह आँखों द्वारा देखी-सुनी घटना है।

138. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) आइन्स्टीन के पास विलक्षण बुद्धि थी।
(ख) आइन्स्टीन के पास विचित्र बुद्धि थी।
(ग) आइन्स्टीन के पास अलौकिक बुद्धि थी।
(घ) आइन्स्टीन के पास दैवीय बुद्धि थी।

139. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) शरत्कालीन दिनों में चन्द्रमा की शोभा देखने योग्य होती है।
(ख) शरद काल के दिनों में चन्द्रमा की शोभा देखने योग्य होती है।
(ग) शरत् काल में चन्द्रमा की शोभा देखने योग्य होती है।
(घ) शरत् काल के दिनों में चन्द्रमा की शोभा देखने योग्य होती है।

140. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) दही खट्टी है।
(ख) दही खट्टा है।
(ग) दही खटास है।
(घ) दही खटाई है।

141. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) सुरेश को एक पाती लिखना है।
(ख) सुरेश ने एक पाती लिखनी है।
(ग) सुरेश के लिए एक पत्र लिखनी है।
(घ) सुरेश के लिए पत्र लिखना है।

142. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) यह व्यर्थ बात करने से कोई लाभ नहीं है।
(ख) संपूर्ण देश भर में निराशा छा गई।
(ग) भाई ने भाई के साथ सलाह की।
(घ) कृपया पत्रोत्तर शीघ्र दें।

143. निम्नलिखित वाक्यों में एक वाक्य अशुद्ध है—
(क) काशी सदैव से भारतीय संस्कृति का केन्द्र रहा है।
(ख) गांधीजी का चरखा चलाना 'स्वदेशी' का प्रतीक था।
(ग) वन-जीवन के कष्टों का भय भी सीता को राम के अनुगमन से रोक नहीं सका।
(घ) अपनी कुशल रणनीति से शिवाजी ने विपक्षियों के छक्के छुड़ा दिए थे।

144. निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य है—
(क) वे सब प्रकार के दोषों से विहीन हैं।
(ख) वे सब दोषों से हीन हैं।
(ग) वे सब प्रकार के दोषों से मुक्त हैं।
(घ) वे सभी ही दोषों से मुक्त हैं।

145. निम्नलिखित वाक्यों में से एक वाक्य शुद्ध है?
(क) पृथ्वीराज चौहान ने यदि राजनीतिक चातुर्य का परिचय दिया होता तो आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता।
(ख) गिलास ऊपर तक दूध से ठसाठस भरा हुआ था।
(ग) प्रबुद्ध विद्यार्थियों को शिक्षक का केवल संकेत मात्र ही पर्याप्त होता है।
(घ) शिक्षक ने विद्यार्थियों को आतंकवाद के ऊपर निबंध लिखने का आदेश दिया।

146. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है?
(क) वह दण्ड देने के योग्य है।
(ख) चार विद्यार्थी नकल करते हुए पकड़े गए।
(ग) मैंने यह पुस्तक पढ़ी है।
(घ) उन्होंने अभी-अभी खाना खाया है।

147. निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है?
(क) मैं सारी रात भर जागता रहा।
(ख) मैं पूरी रात भर जागता रहा।
(ग) मैं सारी रात जागता रहा।
(घ) मैं पूरी रात में जागता रहा।

Pariksha Manthan

उत्तरमाला

1. (ख) (वर्ष की अवस्था)
2. (ख) (नृत्य का अभ्यास)
3. (क) (गीतों की एक)
4. (घ) (स्थल हैं)
5. (घ) (आशंका है)
6. (ग) (नौ सौ रुपये)
7. (क) (शिक्षा समाप्त)
8. (घ) (आविष्कार)
9. (घ) (अनेक लोग)
10. (घ) (तलाश में)
11. (ग) (होना चाहिए)
12. (क) (इधर का प्रयोग नहीं होगा)
13. (ग) (ज्ञान)
14. (ग) (मुझे)
15. (ग) (बहुत बाधाएं आती हैं)
16. (ख) (ईश्वर के पक्के)
17. (ख) (रचयित्री)
18. (क) (उस कवयित्री)
19. (क) (मेघनाद)
20. (घ) (अर्थ में)
21. (ख) (विद्वतापूर्ण)
22. (ख) (संघर्षों में)
23. (ग) (तुमको)
24. (क) (शीर्षक का)
25. (क) (लड़के ने)
26. (ग) (चहकना)
27. (क) (छत पर)
28. (ख) (आपकी)
29. (ग) (जनता के)
30. (ग) (सिली)
31. (घ) (मुझसे)
32. (ख) (वीरों के)
33. (क) (यह भी तो संभव है कि)
34. (घ) (किसी को)
35. (ख) (मुझे भी)
36. (क) (यहां केवल)
37. (ख) (बताएं)
38. (क) (प्रतिभाशालिनी)
39. (क) (उस)
40. (घ) (मेरे तो प्राण सूख गये)
41. (ग) (चांदी के चमचमाते बर्तन)
42. (ख) (उनके)
43. (क) (उच्चकोटि)
44. (ख) (गंभीर समस्या)
45. (घ) (सुनने को मिलते हैं)
46. (ख) (सत्यवती के सौन्दर्य पर)
47. (क) (आगामी)
48. (ग) (पूज्य हैं)
49. (ग) (आरोग्य)
50. (घ) (निहित रखा)
51. (ख) (उच्चारण करना)
52. (ख) (अपने हस्ताक्षर)
53. (घ) (दिया)
54. (ग) (उसको देश की एक-एक वस्तु से)
55. (ख) (राहुल के लिए दूध)
56. (ख) (पूछा)
57. (ग) (आस्था रखता है)
58. (ख) (करके)
59. (क) (स्वस्थ रहने)
60. (ख) (फूलों की एक)
61. (ख) (फिजूल)
62. (ख) (गूंथ रहा था)
63. (घ) (उतर गया)
64. (क) (कष्ट को)
65. (ग) (तबाही मचाई)
66. (घ) (लौट गए)
67. (घ) (लचक गई)
68. (ग) (महापुरुष)
69. (क) (तुष्टीकरण की)
70. (ग) (रविवार को आएंगे)
71. (ख) (मुझे सादर)
72. (ख) (आदरपूर्वक)
73. (घ) (हमारे घर आएंगे)
74. (ख) (जो तीन नदियां)
75. (क) (रुचि)
76. (ग) (मिली)
77. (ख) (प्रत्येक कोने में)
78. (ग) (तथापि उसने)
79. (ख) (आज्ञा के अनुसार)
80. (ख) (अपनी पुस्तक)

Pariksha Manthan

81. (क) (जब कभी)
82. (ख) (इलाहाबाद के भी दो)
83. (क) (बुरे से बुरा आदमी)
84. (ग) (रबड़ी दी)
85. (घ) (संतोष की सांस ली)
86. (ख) (बहुत)
87. (ख) (किया था)
88. (घ) (होती है)
89. (घ) (होना चाहिए)
90. (ग) (घर बनवाया)
91. (ग) (प्रेमिका से)
92. (ग) (तितली के सुंदर पंख)
93. (क) (नौजवान का प्रयोग नहीं होगा)
94. (ग) (झड़)
95. (ख) (आज हमें)
96. (ख) (दो कहानियां)
97. (ख) (बेकार का प्रयोग नहीं होगा)
98. (ख) (मोल लेने से)
99. (ख) (नाक रगड़ने से)
100. (ग) (भंग किया)
101. (ख) 102. (क) 103. (ग) 104. (ख) 105. (घ)
106. (ग) 107. (क) 108. (ख) 109. (ग) 110. (क)
111. (घ) 112. (ख) 113. (क) 114. (ख)115. (क)
116. (ख) 117. (घ)118. (ग)119. (ग)120. (ग)
121. (ख)122. (क)123. (ख)124. (घ)125. (ख)
126. (ख) ('हेतु' का शाब्दिक अर्थ 'कारण' होता है। अतः वाक्य विन्यास की दृष्टि से विकल्प 'ख' सही है)
127. (घ) ('एक पान' एवं 'एक पानों' का प्रयोग गलत है। अतः विकल्प 'घ' सही है।)
128. (ख) (शेष विकल्पों में 'पानी पीती हैं' का प्रयोग गलत है।)
129. (घ) (शेष विकल्पों में लिंग संबंधी अशुद्धियां हैं।)
130. (घ) (शेष विकल्पों में शाब्दिक त्रुटियां हैं।)
131. (ग) (शेष विकल्पों में शब्द संयोजन ठीक नहीं है।)
132. (ख) (सही शब्द 'अनिधकार' होता है। अतः विकल्प 'ख' ठीक है।)
133. (क) (शेष विकल्पों का वाक्य विन्यास ठीक नहीं है।)
134. (घ) ('वापस' और 'लौटे' का एक साथ प्रयोग नहीं होता है। अतः विकल्प 'घ' सही है।)
135. (ख) ('शेष विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं।)
136. (घ) ('विकल्प 'क' में 'कमजोरियों' एवं विकल्प 'ख' में 'राजपथ' के साथ 'सड़क' का प्रयोग ठीक नहीं है, जबकि विकल्प 'ग' का वाक्य विन्यास ठीक नहीं है। अतः सही विकल्प 'घ' है।)
137. (ख) ('आँखों देखी' के साथ 'कारक विभिक्ति' का प्रयोग गलत है। अतः विकल्प 'ख' सही है।)
138. (क) ('बुद्धि' के साथ 'विलक्षण' का प्रयोग होगा, 'विचित्र', 'अलौकिक' एवं 'दैवीय' का नहीं। अतः विकल्प 'क' सही है।)
139. (ग) ('काल' के साथ 'दिनों' का प्रयोग सही नहीं है। अतः विकल्प 'ग' सही है।)
140. (ख) ('दही' पुल्लिंग है। अतः विकल्प 'ख' सही है।)
141. (घ) ('शेष विकल्पों का वाक्य विन्यास ठीक नहीं है।)
142. (घ) (वाक्य विन्यास की दृष्टि से विकल्प 'घ' सही है। शेष विकल्पों में दोष है।)
143. (क) ('काशी' स्त्रीलिंग है तथा 'सदैव' क्रिया विशेषण है, जिसके साथ 'से' का प्रयोग ठीक नहीं है। अतः विकल्प 'क' अशुद्ध है।)
144. (ग) (शेष विकल्पों का वाक्य विन्यास ठीक नहीं है।)
145. (क) (विकल्प 'क' सही है। शेष विकल्पों में दोष हैं।)
146. (क) ('दण्ड' के साथ 'योग्य' का प्रयोग ठीक नहीं है। सही शब्द 'पात्र' है।)
147. (ग) (शेष विकल्प व्याकरण की दृष्टि से दोषपूर्ण हैं।)

◆◆◆

Pariksha Manthan

अध्याय-11

अनेकार्थी शब्द

हिन्दी भाषा में बहुत से शब्द ऐसे हैं, जो एक से अधिक अर्थ का बोध कराते हैं। अर्थात एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। ऐसे शब्दों को अनेकार्थी शब्द या अनेकार्थक शब्द कहा जाता है। जैसे— 'अंक' एक अनेकार्थी शब्द है। इसके अलग-अलग अर्थ देखिए। अंक-गोद, संख्या चिह्न (1, 2, 3 आदि), नाटक का एक खंड या सर्ग पत्र-पत्रिकाओं के समयानुसार होने वाले प्रकाशन की संख्या। शब्द एक ही है, किंतु अलग-अलग प्रसंगों और संदर्भों के अर्थ में भिन्नता दिखेगी। इसे निम्न उदाहरणों से समझा जा सकता है—

(1) मां ने बेटी को अंक में बैठा लिया।

(2) परीक्षा में उसे कम अंक मिले।

(3) एक अंक के नाटक को 'एकांकी' कहते हैं।

(4) पत्रिका का नया अंक शीघ्र प्रकाश्य है।

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रसंग और संदर्भ के अनुसार एक ही शब्द 'अंक' के अलग-अलग अर्थ ग्रहण किए जाएंगे। प्रत्येक उदाहरण में इसका अलग अर्थ ध्वनित हो रहा। अनेकार्थी शब्दों की दृष्टि से हिन्दी भाषा अत्यंत समृद्ध है। प्रतियोगी परीक्षाओं में अनेकार्थी शब्दों पर केंद्रित प्रश्न पूछे जाते हैं। यहां हम परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अनेकार्थी शब्दों को संजोकर प्रस्तुत कर रहे हैं।

शब्द	अनेकार्थ
• अंत	समाप्ति, नाश, मृत्यु, परिणाम, सीमा, छोर, प्रलय
• अंश	भाग, कोण नापने की इकाई, भिन्नात्मक अंक
• अंशु	सूर्य, वस्त्र, किरण
• अंबु	जल, चार की संख्या, जन्मकुण्डली में चौथा स्थान
• अंबर	आकाश, वस्त्र, परिधि, एक सुगंधित खनिज
• अंत्य	नीचे का, शब्द का अंतिम वर्ण, अंतिम नक्षत्र
• अंकुर	अंखुआ, कली, नुकीला भाग, प्रारंभिक स्वरूप
• अंकुश	रोक, बंधन, हाथी पर नियंत्रण के लिए लोहे का हुक
• अंचल	साड़ी का छोर (पल्लू), देश या प्रांत का एक भाग (क्षेत्र), नदी का किनारा
• अक्ष	आंख, सर्प, ज्ञान, मण्डल, रथ, चौसर का पासा, धुरी, पहिया
• अपवाद	कलंक, वह प्रचलित प्रसंग, जो नियम के विरुद्ध हो
• अतिथि	मेहमान, साधु, यात्री, अपरिचित व्यक्ति
• अरुण	लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी
• अक्षत	चावल का पूरा दाना, संपूर्ण, अखण्ड
• अनल	पित्त, आग, परमेश्वर, जीव, विष्णु
• अमृत	अमर, घी, सूर्य, न मरा हुआ, विष, जल
• अनन्त	समुद्र, आकाश, सर्पों का राजा, ब्रह्म, अन्तहीन
• अर्थ	प्रयोजन, मतलब, धन, तात्पर्य
• अर्क	रस, आक, सूर्य
• अज	बकरा, ब्रह्म, दशरथ के पिता का नाम, ब्रह्मा
• अलिंद	भौंरा, द्वार कोष्ठ, छज्जा, एक प्राचीन जनपद
• अली	सहेली, कतार
• अशोक	शोकरहित, एक पेड़, एक यशस्वी सम्राट, राजा दशरथ के एक मंत्री
• आंकड़ा	अंक, तथ्यों की गणना, पशुओं का एक रोग, हुक
• आजीवक	जैन साधु, भिखमंगा
• आज्य	घी, तेल, प्रातःकालीन यज्ञ का एक स्तोत्र, यज्ञ में दी जाने वाली आहुति
• आदर्श	प्रतिमान, श्रेष्ठतम अवस्था, दर्पण, असल, अनुकरणीय वस्तु
• आदि	आरंभ, पहला, मूल कारण, परमात्मा
• इंदु	कपूर, चंद्रमा, एक की संख्या
• ईश	ईश्वर, स्वामी, राजा
• ईहा	इच्छा, लोभ, चेष्टा
• उत्तर	जवाब, बाद का, एक दिशा, अगला
• उक्थ	एक यज्ञ, कथन, सूक्ति, स्तोत्र-पाठ
• कनक	सोना, गेहूं, धतूरा
• कर	हाथ, टैक्स, किरण
• कमल	एक पुष्प, निर्लिप्त, पंकज, पानी, आंख की पुतली, पीलिया रोग
• करण	करना, काम, कारण, साधन, दस्तावेज
• कपि	चंचल, बंदर, हाथी, ईश्वर

Pariksha Manthan

- करनी — कर्म (कार्य), अंत्येष्टि क्रिया, कन्नी (राजगीरों का एक उपकरण)
- कंचन — लाल कचनार, सोना, धन-सम्पत्ति, धतूरा, निर्मल
- कल — आराम, आनेवाला कल, बीता हुआ कल, कोमल, सुहावना, अस्पष्ट किंतु मधुर
- कला — चित्र, नाट्य, हुनर
- कर्ण — कुन्ती का पुत्र, कान, समकोण, त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा
- कल्य — शुभ, गूंगा और बहरा, स्वस्थ, चतुर, कुशल
- खंड — खंडित, आंशिक, छोटा
- खल — दुष्ट, धोखेबाज, चुगलखोर, खरल
- खेल — क्रीड़ा, करतब, तमाशा, लीला, अभिनय
- गुण — रस्सी, स्वभाव, धनुष की डोर, ओज, माधुर्य, साहित्य में प्रसाद
- गंड — बहुत बड़ा, गाल, कनपटी, गांठ
- गौ — वाणी, बैल, गाय, पृथ्वी, इन्द्रिय, दिशा
- गति — दशा, गमन, रफ्तार, हरकत
- गुरु — दीर्घ स्वर, शिक्षक, दीक्षा देने वाला, भारी
- गम्य — संभोग करने योग्य, जाने योग्य, प्रवेश होने योग्य, जो साध्य हो
- घन — लोहे का बड़ा हथौड़ा, ठोस, बादल, घना
- घट — कलश, देह, अंतःकरण
- जनक — राजा जनक, पिता, उत्पन्न करने वाला
- जंत्र — ताला, ताबीज, यंत्र
- जड़ — निर्जीव, वृक्ष की मूल (जड़), मूल कारण, मूर्ख, अचेतन
- जठर — पेट, कठोर, पुराना, वृद्ध, बंधा हुआ
- तात — भाई, पिता, गुरु, पूज्य व्यक्ति हेतु संबोधन, मित्र
- तत्व — जगत का मूल कारण, सार, वास्तविकता, घटक, ईश्वर
- तारा — नक्षत्र, आंख की पुतली
- तनु — सुकुमार, विरल, अच्छा, कृश, छिछला, थोड़ा, तुच्छ
- तप्त — तपाया हुआ, गर्म, जिसने तपस्या की हो, अत्यंत दुखी, विकल
- तम — अंधकार, कालिमा, अज्ञान, माया, क्रोध
- तान — तानने की क्रिया, संगीत में स्वर का विस्तार, समुद्र की तरंग
- तीर — किनारा, वरण, सीमा
- ताली — करतल ध्वनि, कुंजी, ताड़ी, छोटा तालाब
- तनया — पुत्री, गिरि, कलिंग
- तीर्थ — पुण्य और पवित्र स्थल, घाट, क्षेत्र
- दण्ड — एक व्यायाम, सजा, डण्डा, सीमा
- दिन — समय, तिथि, काल विशेष, सूर्योदय से सूर्यास्त तक के मध्य का समय
- द्विज — पक्षी, वैश्य, दांत, ब्राह्मण, क्षत्रिय
- द्रव्य — सामान, पदार्थ, रुपया-पैसा, उपादान
- दल — मांसल भाग, समूह
- द्वैत — जोड़ा, दो होने का भाव, पराया समझने का भाव, असमंजस, अज्ञान
- नकुल — चौथा पाण्डव, नेवला
- नव — नवीन, आठ से एक अधिक
- नाग — एक देश, एक जाति, हाथी, पर्वत, साँप
- नाना — मां का पिता, अनेक प्रकार के, नवाना, अंदर रखना
- नग — वृक्ष, पर्वत, नगीना, अदद
- नल — राम की सेना का एक बंदर, नरकट, कमल, दमयंती का पति, टोटी, पानी का पाइप
- नाक — आकाश मण्डल, स्वर्ग, नासिका, मगर, नाक से निकलने वाला श्वेत तरल पदार्थ
- नागेंद्र — वासुकि, बहुत बड़ा सांप, बहुत बड़ा हाथी, ऐरावत
- नागर — नगरवासी, नम, नामहीन, चतुर
- नाल — कमल, कुमुद आदि की लंबी डंडी, बंदूक की नली, पौधों का डंठल, नाभि एवं गर्भाशय से जुड़ी रहने वाली नली
- पति — दूल्हा, स्वामी
- पद — पैर, कदम, प्रदेश, स्थान, काव्य आदि का पद्यांश, ओहदा, आधार
- प्रकाश — स्पष्ट, खुला, धूप, प्रसिद्ध, दीप्ति
- परमार्थ — परोपकार, ब्रह्म, यथार्थ तत्व, मोक्ष, सत्य
- पतंग — पक्षी, नौका, एक खिलौना, सूर्य, विष्णु, दीपक की लौ पर उड़ने वाला कीट
- परिमल — संभाग, सुगंध, रगड़ना
- पान — पीना, एक प्रसिद्ध लता का पत्ता, बीड़ा
- पत्र — पंख, पत्ता, चिट्ठी, पुस्तक का पृष्ठ

Parikshā Manthan

- पयोधर — बादल, समुद्र
- पय — शुक्र, वीर्य, अन्न, दूध, जल, ओज, शक्ति, आहार
- फल — परिणाम, पेड़-पौधों का गूदेदार बीजकोश, गणित क्रिया से प्राप्त अंक, तलवार आदि की धार, तीर-बर्छी आदि का अगला भाग
- फूल — पुष्प, एक आभूषण, श्वेत कुष्ठ का दाग, फुलावट
- बल — ताकत, सेना, भरोसा, पहलू, ऐंठन, शिकन, टेढ़ापन
- बाल — बालक, अनाज की बाली, रोम, दूध।
- बलि — देवता पर चढ़ाई गई वस्तु, नैवेद्य, कृष्ण द्वारा छला गया पाताल लोक का राजा
- बादल — मेघ, अभ्र, दूधिया रंग का एक पत्थर
- बाट — रास्ता, बटखरा, बट्टा, बल
- बाण — तीर, गांसी, लक्ष्य
- बिजली — तड़ित, रगड़, एक गहना, विद्युत, आम की गुठली के भीतर का गूदा
- बात — कथन, प्रसंग, मामला, घटना, संयोग, तात्पर्य, संदेशा
- भुजंग — जार, पति, विदूषक, सांप, सीसा
- माधव — शहद से बना, वासंती, कृष्ण, मक्खन
- मित्र — सूर्य, बारह आदित्यों में से एक, दोस्त
- मधु — शराब, शहद, बसंत ऋतु, चैत्र मास, पराग, मीठा
- मंगल — वीर, शुभ, सौभाग्य, एक दिन, एक ग्रह
- मत — नहीं, बुद्धि, सम्मत, माना हुआ
- रस — आनंद, स्वाद, साहित्य का रस, गन्ने या फलों का रस, जल, अमृत, सार
- रूप — शक्ल, प्रकृति, भेद, नमूना, सौंदर्य
- रज — धूल, भस्म, सार, तरल पदार्थ
- राग — गाने की लय, प्रेम, आसक्ति, रागिनी
- राजा — शासक, धनी, प्रिय, स्वामी, एक उपाधि
- लक्ष्य — निशाना, बहाना, उद्देश्य, अभीष्ट वस्तु
- लगन — चाह, मुहूर्त, लगाव, संलग्न
- लाग — लगाव, लगन, होड़, दुश्मनी
- वन — जंगल, समूह, बाग, घर, जल, फूलों का गुच्छा
- विधि — प्रणाली, व्यवस्था, भांति, कानून, ब्रह्मा
- वर्ण — अक्षर, रंग, जाति, रूप, वंश, प्रशंसा, समाज के चार वर्ण
- वर — दूल्हा, श्रेष्ठ, वरदान, आशीर्वचन
- वार — दिन, प्रहार, अवसर, बारी
- विलास — प्रणय क्रीड़ा, हावभाव, सौंदर्य, सुखोपभोग
- वृत्त — वृत्तांत, समाचार, जीविका, गोल, सुकर्म
- वृत्ति — व्यापार, प्रकार, आचार शास्त्र, नियमित रूप से दी जाने वाली मदद
- शशांक — चंद्रमा, मोर, एक राजा
- शस्य — प्रशंसनीय, बढ़िया, नई घास
- श्रुति — वेद, संज्ञा, कान, ज्ञान, सुनना, कथन, उक्ति
- शिखा — चोटी, किरण, ज्वाला
- संज्ञा — चेतना, नाम, सूर्य की पत्नी, जानकारी, समझ
- सम — अभिन्न, सदृश, चौरस, निष्पक्ष, साधारण
- साधना — आराधना, उपासना, कार्यसिद्धि, अभ्यास करना
- सारंग — मोर, साँप, कोयल, स्त्री, रात्रि, बादल, एक राम, कमला
- सूर्य — सूरज, मदार का पौधा, उच्च पद, मित्र
- सुरभि — सुगंध, वसंत, कामधेनु
- स्रोत — सोता, धारा, ज्ञानेंद्रिय, जरिया
- स्नेह — तेल, प्रेम, चिकनाई
- स्व — अपना, आप से आप होने वाला, आत्मीय
- सोम — सोम रस, कुबेर, सोमवार, चंद्र, स्वर्ण
- सिद्ध — लब्ध, पूरा किया हुआ, प्रमाणित, दृढ़, निर्णीत, सत्य माना हुआ
- हय — घोड़ा, इंद्र, एक छंद का नाम
- हंस — पक्षी, आत्मा, सूर्य
- हरि — ईश्वर, पीला, हरा
- हर — शंकर, हरण, आग
- हलधर — किसान, बैल, बलराम
- हार — पराजय, गले का आभूषण, पुष्प माला
- हाल — दशा, समाचार, वर्तमान से कुछ पहले का समय, तुरंत
- हेम — सोना, हिम, पाला
- हिम — शीतल, बर्फ, जाड़े की ऋतु

Parikshā Manthan

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्द का दूसरा अर्थ बताइए।
''अज - अजन्मा''
(a) आजन्म (b) निर्भीक
(c) आजीवन (d) ईश्वर

2. 'कनक' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ धतूरा है। इसका एक अन्य सही अर्थ दिए गए विकल्पों में से कौन होगा?
(a) सोना (b) कसौटी
(c) आभूषण (d) प्रसाद

3. 'प्रमत्त' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'स्वेच्छाचारी' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?
(a) प्रपीड़ित (b) उत्कृष्ट
(c) परितप्त (d) उन्मत्त

4. 'अंक' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—
(a) संख्या (b) गोद
(c) पृथ्वी (d) नाटक का एक भाग

5. 'पंच' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—
(a) पांच (b) ग्राम सरपंच
(c) निर्णय करने वाला (d) पंचानन

6. 'अंबर' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—
(a) आकाश (b) भोजन
(c) वस्त्र (d) परिधि

7. ''मैं उसका अर्थ समझ गया था। उसे धन की आवश्यकता थी। वह अत्यधिक परेशान दिख रहा था।'' इस वाक्य में 'अर्थ' एक अनेकार्थी शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ 'प्रयोजन' है। वाक्य में ही इसका दूसरा अर्थ भी है। विकल्पों में उसे छांटिए—
(a) समझ (b) अत्यधिक
(c) धन (d) परेशान

8. 'अलिंद' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—
(a) भौंरा (b) छज्जा
(c) एक प्राचीन जनपद (d) अनेक

9. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्द का दूसरा अर्थ बताइये।
''इंदु''
(a) कपूर (b) अंतरिक्ष
(c) बकरा (d) गाय

10. 'कर्ण' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा' है। इसका दूसरा सही अर्थ दिए गए विकल्पों में से कौन होगा?
(a) लाचार (b) नाट्य
(c) कान (d) कबूतर

11. 'मां के पिता' के लिए 'नाना' शब्द प्रयुक्त होता है। 'नाना' का दूसरा अर्थ होगा—
(a) मां का भाई (b) अनेक प्रकार के
(c) भालू (d) देश

12. 'पद' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'ओहदा' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?
(a) नगरवासी (b) पदार्थ
(c) सूर्योदय (d) पैर

13. 'परिमल' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'संभोग' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?
(a) पल (b) कमल
(c) सुगंध (d) परमार्थ

14. 'पत्र' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'चिट्ठी' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?
(a) पत्ता (b) खिलौना
(c) सिंदूर (d) पर्वत

15. 'बल' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—
(a) पहलू (b) ताकत
(c) शिकन (d) सरौता

16. 'अंबु' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—
(a) जल
(b) जन्मकुंडली में चौथा स्थान
(c) चार की संख्या
(d) विदेश

17. 'अक्षत' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'चावल का पूरा दाना' है। दिए गए विकल्पों में से इसका सही अर्थ कौन-सा है?
(a) सर्प (b) पहिया
(c) अपूर्व (d) अखंड

18. 'खेल' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका अर्थ 'क्रीड़ा' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?

Parikshā Manthan

(a) अभिनय (b) अगला

(c) शुभ (d) किरण

19. 'तनु' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—

(a) कृश (b) तुच्छ

(c) सुकुमार (d) आलेख

20. 'ताली' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—

(a) करतल ध्वनि (b) कुंजी

(c) छोटा तालाब (d) तान

21. 'वृत्त' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—

(a) वरदान (b) वृत्तांत

(c) गोल (d) जीविका

22. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्द का दूसरा अर्थ बताइये।

''सारंग''

(a) मोर (b) प्रमाणित

(c) हिम (d) अंचल

23. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्द का दूसरा अर्थ बताइये।

''सिद्ध''

(a) साधना (b) स्रोत

(c) सुगंध (d) प्रमाणित

24. 'हार' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'पराजय' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?

(a) कामधेनु (b) हय

(c) गले का आभूषण (d) हाल

25. 'अक्ष' एक अनेकार्थी शब्द है, जिसका एक अर्थ 'धुरी' है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?

(a) सर्प (b) अंकुर

(c) अरुण (d) जलयान

26. 'शब्द का अंतिम वर्ण', 'अंत्य' कहलाता है। 'अंत्य' एक अनेकार्थी शब्द है। नीचे दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?

(a) तोता (b) नीचे का

(c) आकाश (d) अंतरिक्ष

27. 'आज्य' एक अनेकार्थी शब्द है, जो कि 'यज्ञ में दी जाने वाली आहुति' के लिए प्रयुक्त होता है। दिए गए विकल्पों में से इसका दूसरा सही अर्थ कौन-सा है?

(a) घी (b) बकरी

(c) अनुकरणीय (d) भिखमंगा

28. 'अशोक' प्राचीन भारत के 'एक यशस्वी सम्राट' थे। अशोक का दूसरा अर्थ क्या होगा?

(a) शोकाकुल (b) सेनापति

(c) दर्पण (d) शोकरहित

29. 'लोहे का बड़ा हथौड़ा', 'घन' कहलाता है। 'घन' एक अनेकार्थी शब्द है। दिए गए विकल्पों में से 'घन' के दूसरे अर्थ को अलग करिए।

(a) प्रयोजन (b) बादल

(c) माधुर्य (d) वाणी

30. 'वर' शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है—

(a) वीर (b) वरदान

(c) विवाह योग्य पुरुष (d) श्रेष्ठ

उत्तरमाला

1. (d)	2. (a)	3. (d)	4. (c)	5. (d)
6. (b)	7. (c)	8. (d)	9. (a)	10. (c)
11. (b)	12. (d)	13. (c)	14. (a)	15. (d)
16. (d)	17. (d)	18. (a)	19. (d)	20. (d)
21. (a)	22. (a)	23. (d)	24. (c)	25. (a)
26. (b)	27. (a)	28. (d)	29. (b)	30. (a)

◆◆◆

Pariksha Manthan

छन्द

हिन्दी कविता में छन्द का विशेष महत्व होता है। यही कारण है कि इसे कविता की आत्मा कहा गया है। छन्दशास्त्र से अनुशासित कविता हृदय पर स्थायी प्रभाव डालती है तथा एक विशेष प्रकार का उल्लास और आनंद प्रदान करती है। यति, गति, लय, तुक तथा वर्णों और मात्राओं से संबंधित नियमों की परिधि में रची जाने वाली कविता छन्दबद्ध कहलाती है। छन्द को वृत्त अथवा पिंगल आदि नामों से भी जाना जाता है। काव्य में छन्द की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। इसकी प्राचीनता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि ऋग्वेद में इसका उल्लेख मिलता है। छन्द अपनी लयात्मकता के कारण विशेष प्रभाव डालते हैं। ये पद्य को मांसलता के साथ-साथ अनूठा प्रवाह प्रदान करते हैं, जो कि मन को तरंगित कर देता है।

छन्द के मुख्यतः आठ अंग माने गये हैं। ये हैं-(1) पाद या चरण, (2) मात्रा और वर्ण, (3) संख्या और क्रम, (4) लघु और गुरु, (5) गण, (6) यति, (7) गति और (8) तुक।

वर्ण और मात्रा विचार के आधार पर छन्द के चार भेद बताए गये हैं। ये हैं-(1) वार्णिक छन्द, (2) वार्णिक वृत्त, (3) मात्रिक छन्द तथा (4) मुक्त छन्द।

(1) वार्णिक छन्द : ऐसा छन्द वर्ण गणना को आधार बनाकर रचा जाता है। इसके दो प्रकार होते हैं-(क) साधारण, (ख) दण्डक। साधारण के अन्तर्गत वे वार्णिक छन्द आते हैं, जिनमें 1 से 26 वर्ण तक के चरण या पाद होते हैं, इससे अधिक वाले दण्डक के अन्तर्गत आते हैं। घनाक्षरी, देवघनाक्षरी तथा रूप घनाक्षरी आदि दण्डक के अन्तर्गत आते हैं।

(2) वार्णिक वृत्त : यह सम छन्द होता है। इसमें चारों चरणों में मात्राओं या वर्णों की संख्या समान होती है। हर एक चरण में वर्णों का लघु-गुरु क्रम निश्चित रहता है।

(3) मात्रिक छन्द : इसमें मात्रा का साम्य होता है, वर्णों का नहीं। इनकी रचना का आधार मात्रा को बनाया जाता है। दोहा और चौपाई की गणना इसी के अन्तर्गत होती है।

(4) मुक्त छन्द : जैसा नाम से ही विदित होता है, ये मुक्त होते हैं, अर्थात इनका कोई निश्चित नियम नहीं होता है। इसमें पद्य की लय और प्रवाह का विशेष महत्व होता है। इनमें जहां भावानुकूल यतिविधान होता है, वहीं चरणों की अनियमित असमान स्वच्छन्द गति होती है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने इनका प्रयोग किया। नई कविता में ये विशेष रूप से प्रचलित हैं।

वार्णिक और मात्रिक छन्दों को समझने के लिए इसके तीन भेदों पर चर्चा आवश्यक है। ये हैं-(1) सम, (2) अर्ध सम तथा (3) विषम।

(1) सम : इसमें चारों चरणों में मात्राओं या वर्णों की संख्या समान होती है।

(2) अर्ध सम : इसमें प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरणों में समान मात्राओं और वर्णों का विधान होता है।

(3) विषम : इसमें चारों चरणों में मात्राओं और वर्णों की संख्या असमान होती है।

पद्य में प्रचलित कुछ प्रमुख छन्द

(1) चौपाई : इसे सम मात्रिक छन्द की श्रेणी में रखा जाता है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं तथा प्रथम और द्वितीय व तृतीय और चौथे चरण का तुक मिलता है।

यथा-सत संगति मुद मंगल भूला
सोई फल सिधि सब साधन फूला।
खल सुधरहिं सत संगति पाई
पारस परस कुधातु सुहाई।।

(2) रोला : यह मात्रिक सम छन्द होता है तथा इसमें हर चरण में 24 मात्राएं आती हैं। 11 और 13 मात्राओं पर विराम के साथ यति होती है। इसे 'काव्य छन्द' के नाम से भी जाना जाता है।

यथा-प्रस्तुत हैं ये प्राण, किंतु वह सह न सकेगा।
इसको लेकर प्रिये, शांति से रह न सकेगा।।

(3) दोहा : यह अर्धसम मात्रिक छन्द की श्रेणी में आता है। इसके प्रथम व तृतीय चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएं होती हैं। इसमें अंत में लघु गुरु होता है।

यथा-जड़ चेतन गुन दोषमय, विस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पथ, परिहरि बारि बिकार।।

(4) उल्लास : यह 28 मात्राओं का मात्रिक अर्धसम छन्द होता है। प्रथम और तृतीय चरण में 15-15 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएं होती हैं।

यथा-उस मातृ भूमि की गोद में
जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव बन्धन मुक्त हम
आत्मरूप बन जायेंगे।।

(5) सोरठा : यह अर्धसम मात्रिक छन्द होता है तथा दोहे का उल्टा होता है। विषम चरणों में 11 तथा सम चरणों में 13 मात्राएं होती हैं।

यथा-सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुणानैन, चितह जानकी लखन तन।।

(6) कुण्डलियाँ : इस प्रकार का छन्द दोहा और रोला छन्द का मिश्रण होता है। यह मात्रिक विषम छन्द होता है। इसके प्रत्येक

Pariksha Manthan

चरण में 24 मात्राएं आती हैं। पहले दो चरण दोहे के तथा अंतिम चार चरण रोला के होते हैं। इस छन्द में छह चरण होते हैं।

यथा-कृतघन कबहुँ न मानही, कोटि करौ जो कोय।
सरबस आगे राखिए, तऊ न अपनी होय।।
तऊ न अपनी होय, भले की भली न मानै।
काम काढ़ि चुप रहे, फेरि तिहि नहिं पहिचाने।।
कह गिरधर कवि राय, रहत नित ही निर्भन मन।
मित्र शत्रु न एक, दाम के लालच कृतघन।।

(7) हरिगीतिका : यह मात्रिक सम छन्द होता है। इसमें अट्ठाइस मात्राएं होती हैं।

यथा-मनु जाहिं राचेउ मिलिहिं, सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजानु सीलु, सनेहु जानत रावरो।।
एहि भांति गौरि असीस सुनि, सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि, मुदित मन मंदिर चली।।

(8) बरवै : यह अर्धसम मात्रिक छन्द होता है। इसके विषम चरणों यानी पहले और तीसरे चरण में 12 तथा सम चरणों यानी दूसरे और चौथे चरण में 7 मात्राएं होती हैं। प्रत्येक चरण के अंत में यति होती है।

यथा-वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।
सरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार।।

(9) छप्पय : यह रोला और उल्लास छन्दों का मिश्रण होता है। यह छह चरणों से युक्त होता है। प्रथम चार चरण रोला तथा बाद के दो चरण उल्लास छन्द के होते हैं। यह विषम मात्रिक छन्द होता है।

यथा-नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।।
नदियाँ होम प्रवाह, फूल तारे मण्डन हैं।
बन्दीजन खगवृन्द, शेषफन सिंहासन है।।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की।
हे मातृ भूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।।

(10) घनाक्षरी : इसे 'मनहरण' नाम से भी जाना जाता है। यह वार्णिक छन्द के अन्तर्गत आता है। इसमें 31 वर्ण होते हैं। 16-15 वर्णों पर प्रधान यति तथा 8, 8, 8, 7 वर्णों पर साधारण यति होती है।

यथा-मैं निज अलिन्द में खड़ी थी सखि एक रात
रिमझिम बूँदें पड़ती थीं, घटा छाई थी।
गमक रहा था केतकी का गन्ध चारों ओर
झिल्ली-झनकर यही मेरे मन भाई थी।
करने लगी मैं अनुकरण स्वभूपुरों से
चंचला थी, चमकी, धनाली, घराई थी।
चौंक देखा मैंने, चुप कोने में खड़े थे प्रिय,
माई! मुख लज्जा उसी छाती में छिपाई थी।

(11) सवैया : यह वार्णिक समवृत्त छन्द होता है। इसे मत्तगयछन्द व मालती सवैये के नाम से भी जाना जाता है। चार चरणों वाले ये छन्द 22 से 26 वर्णों तक होते हैं।

यथा-केशव ये मिथिलाधिप हैं जग में जिन कीरति बेलि बई हैं
दान कृपान विधानन सों सिगरी बसुधा जिन हाथ लई है।
अंग छः सातक आठक सों भव तीनहुँ लोक में सिद्धि भई है
वेदमयी अरु राजसिरि परिपूरनता सुभ जोग भई है।

(12) वंशस्थ : यह वार्णिक छन्द के अन्तर्गत आता है। इसके सभी चरणों में 12 वर्ण होते हैं।

यथा-दिनान्त था, थे दिननाथ डूबते
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।
दिगंत में गो रज थी समुत्थिता
विषाण नाना बजते सवेणु थे।

(13) मालिनी : यह वार्णिक समवृत्त छन्द होता है। हर एक चरण में 15 वर्ण होते हैं, जो कि नगण नगण भगण यगण यगण के क्रम में होते हैं। यति सातवें-आठवें वर्ण पर होती है।

यथा-पल-पल जिसके मैं पन्थ को देखती थी
निशिदिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती।

(14) मन्दाक्रान्ता : वार्णिक समवृत्त छन्द के अन्तर्गत आने वाले इस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। यति दसवें-सातवें वर्णों पर होती है।

यथा-मैं हूं तेरे कमल चरणों की सदा धूलि दासी।
प्यासी तेरे विधु वदन की दर्शनार्थी चकोरी।

(15) द्रुतविलम्बित : इसमें नगण, भगण मगण रगण के क्रम में हर चरण में 12 वर्ण होते हैं।

यथा-दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरुशिखा पर थी अब राजती
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा।

(16) तोटक : यह सम छन्द होता है तथा इसमें सगण, सगण, सगण, सगण के क्रम में 12 वर्ण होते हैं।

यथा-निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
सब जाय अभी पर मान रहे
मरणोत्तर गुंजित ज्ञान रहे।

(17) वसंततिलका : यह सम छन्द होता है तथा इसमें तगण, भगण, जगण, जगण व दो गुरु वर्ण के क्रम से 14 वर्ण होते हैं।

यथा-पाते सदा सफल जीवन जो सुभाषी
छोड़ो प्रपंच बनिए मृदु सत्यभाषी।

(18) भुजंगप्रयात : यह सम छन्द होता है। इसमें यगण, यगण, यगण, यगण (चार यगण) के क्रम से 12 वर्ण होते हैं।

यथा-कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी।
सदा सच्चिदानन्द दातापुरारी।

Parisha Manthan

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छन्द को एक अन्य नाम से भी जाना जाता है। वह है-
(क) पिंगल (ख) रस
(ग) चरण (घ) वाचक

2. छन्द के प्रमुख अंग कितने हैं?
(क) तीन (ख) चार
(ग) पाँच (घ) आठ

3. वर्ण और मात्रा के आधार पर छन्द के कितने प्रकार बताये गये हैं?
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) दस

4. सर्वप्रथम छन्द का उल्लेख कहाँ मिलता है?
(क) रामायण (ख) ऋग्वेद
(ग) अथर्ववेद (घ) नाट्यशास्त्र

5. छन्द को कहा जाता है-
(क) काव्य की आत्मा (ख) काव्य की देह
(ग) काव्य का आधार (घ) इनमें से कोई नहीं

6. चारों चरणों में समान मात्राओं वाले छन्द को क्या कहते हैं?
(क) अर्धसम मात्रिक छन्द (ख) सम मात्रिक छन्द
(ग) विषम मात्रिक छन्द (घ) ये सभी

7. किस छन्द का प्रथम और अंतिम अक्षर एक-सा होता है?
(क) कुण्डलियाँ (ख) सोरठा
(ग) मालिनी (घ) चौपाई

8. निम्नलिखित में से सम मात्रिक छन्द का कौन-सा उदाहरण है?
(क) सोरठा (ख) दोहा
(ग) चौपाई (घ) ये सभी

9. नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यही काल।
अली कली ही सौं बिंध्यो, आगे कौन हवाल।।
इन पंक्तियों में प्रयुक्त छन्द का नाम बताइये?
(क) सोरठा (ख) छप्पय
(ग) बरवै (घ) दोहा

10. चौपाई के हर एक चरण में कितनी मात्राएं होती हैं?
(क) 18 (ख) 16
(ग) 12 (घ) 14

11. छन्दशास्त्र के अनुसार दोहे से उल्टे छन्द को क्या कहते हैं?
(क) सोरठा (ख) बरवै
(ग) रोला (घ) चौपाई

12. सुन सिय सत्य असीस हमारी।
पूजहि मन कामना तुम्हारी।।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(क) दोहा (ख) चौपाई
(ग) सोरठा (घ) बरवै

13. छन्दशास्त्र का प्रारंभिक प्रणेता किसे माना जाता है?
(क) पतंजलि (ख) मनु
(ग) डिंगल (घ) पिंगल

14. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय कौ शूल।।
इन पंक्तियों में प्रयुक्त छन्द का नाम बताइये?
(क) दोहा (ख) हरिगीतिका
(ग) सोरठा (घ) रोला

15. जिस छन्द के पहले तथा तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएं होती हैं, उसे कहते हैं-
(क) चौपाई (ख) दोहा
(ग) कुण्डलियाँ (घ) रोला

16. 'हरिगीतिका' के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएं होती हैं?
(क) 26 (ख) 24
(ग) 28 (घ) 22

17. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुस, चून।।
इन पंक्तियों में प्रयुक्त छन्द का नाम बताइये?
(क) मंजरी (ख) दोहा
(ग) चौपाई (घ) काकली

18. निम्नलिखित में से कौन वार्णिक छन्द है?
(क) सवैया (ख) रोला
(ग) चौपाई (घ) दोहा

19. किसको पुकारे यहां रोकर अरण्य बीच।
चाहे जो करो शरण्य शरण तिहारे हैं।।
यहां कौन-सा छन्द प्रयुक्त हुआ है?
(क) घनाक्षरी (ख) छप्पय
(ग) रोला (घ) उल्लास

20. मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द प्रयुक्त हुआ है?
(क) सवैया (ख) सोरठा
(ग) दोहा (घ) चौपाई

21. निम्नलिखित में से अर्धसम मात्रिक जाति का छन्द कौन-सा है?
(क) कुण्डलियाँ (ख) दोहा
(ग) चौपाई (घ) रोला

22. हिन्दी के उद्धार हित, कष्ट अनकेन जिन सहे।
भारतेन्दु हरिचन्द की, उज्ज्वल कीर्ति सदा रहे।।
इन पंक्तियों में प्रयुक्त छन्द का नाम बताइये?
(क) घनाक्षरी (ख) रोला
(ग) उल्लास (घ) छप्पय

23. काव्य में छन्द के कितने प्रकार निर्धारित किये गये हैं?
(क) 2 (ख) 3
(ग) 5 (घ) 4

24. धाए धाम काम सब त्यागी।
यहां कौन-सा छन्द प्रयुक्त हुआ है?
(क) दोहा (ख) चौपाई
(ग) सोरठा (घ) बरवै

25. दोहे और रोले को क्रम से मिलाने पर कौन-सा छन्द बनता है?
(क) कुण्डलियाँ (ख) हरिगीतिका
(ग) बरवै (घ) सवैया

26. मूक होई वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सु दयाल, द्रवहु सकल कलिमलदहन।।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(क) कवित्त (ख) बरवै
(ग) चौपाई (घ) सोरठा

Pariksha Manthan

27. किस छन्द में दूसरे और चौथे चरण के अन्त में तुक नहीं होता?
(क) रोला (ख) सोरठा
(ग) दोहा (घ) चौपाई

28. अवधि शिला का उर पर था गुरु भार।
तिल-तिल काट रही थी दृग जल धार।।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(क) बरवै (ख) सोरठा
(ग) रोला (घ) दोहा

29. घनाक्षरी कैसा छन्द है?
(क) वार्णिक (ख) मात्रिक
(ग) मिश्र (घ) इनमें से कोई नहीं

30. 'आल्हा' में प्रयुक्त छन्द है-
(क) मात्रिक (ख) मुक्त
(ग) वार्णिक (घ) इनमें से कोई नहीं

31. वर्ण, मात्रा, गति, यति आदि से नियंत्रित रचना कहलाती है-
(क) वाच्य (ख) रस
(ग) समास (घ) छन्द

32. जिस छन्द में वार्णिक या मात्रिक प्रतिबंध नहीं होता है, वह कहलाता है-
(क) मुक्त छन्द (ख) मात्रिक छन्द
(ग) वार्णिक छन्द (घ) इनमें से कोई नहीं

33. छन्द में प्रयुक्त पंक्तियों को क्या कहते हैं?
(क) यति (ख) लय
(ग) धुन (घ) चरण

34. महाकवि निराला की कविता 'जूही की कली' में कौन-सा छन्द प्रयुक्त हुआ है?
(क) मात्रिक छन्द (ख) वार्णिक छन्द
(ग) मुक्त छन्द (घ) इनमें से कोई नहीं

35. छन्द की रचना होती है-
(क) ध्वनियों के समायोजन से (ख) गणों के समायोजन से
(ग) स्वर के समायोजन से (घ) इनमें से कोई नहीं

36. हिन्दी कविता में मुक्त छन्द में किसने सृजन की शुरुआत की?
(क) मैथिलीशरण गुप्त
(ख) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(ग) हरिवंश राय बच्चन
(घ) पं0 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

37. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(क) चौपाई (ख) सवैया
(ग) सोरठा (घ) दोहा

38. झिल्ली झनकोरे पिक
चातक पुकारैं बन
मोरिन गुहारैं उठैं
जुगनू चमकि चमकि।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(क) देवघनाक्षरी (ख) हरिगीतिका
(ग) दोहा (घ) सोरठा

39. एक से 26 वर्ण वाले छन्द कहलाते हैं-
(क) साधारण (ख) दण्डक
(ग) मात्रिक (घ) इनमें से कोई नहीं

40. बिकटी भृकुटी बड़री अँखियाँ अनमोल कपोलनि की छवि है।
यहां कौन-सा छन्द है?
(क) सोरठा (ख) मालिनी
(ग) मन्दाक्रान्ता (घ) सवैया

41. मनिमय महल सिवराज के, इमि रायगढ़ में राजही।
इस पंक्ति में कौन-सा छन्द है?
(क) रोला (ख) घनाक्षरी
(ग) हरिगीतिका (घ) सोरठा

42. रहे बैठि कारी घटा देखि न्यारी
बिहारी बिहारी बिहारी रटै जू।
इस पंक्ति में कौन-सा छन्द है?
(क) सवैया (ख) सोरठा
(ग) वंशस्थ (घ) शिखरिणी

43. नई कविता में प्रचलित हैं-
(क) वार्णिक छन्द (ख) मात्रिक छन्द
(ग) मुक्त छन्द (घ) इनमें से कोई नहीं

44. 'काव्य छन्द' के नाम से जाना जाता है-
(क) रोला (ख) चौपाई
(ग) दोहा (घ) तोटक

45. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को ताजि डारौं
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख नन्द की गाय चराय बिसारौं
रसखानि कबौं इन आँखिन तें ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं
कोटिन वे कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर बारौं।
इन पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(क) वंशस्थ (ख) सवैया
(ग) रोला (घ) हरिगीतिका

उत्तरमाला

1. (क)	2. (घ)	3. (ग)	4. (ख)	5. (क)
6. (ख)	7. (क)	8. (ग)	9. (घ)	10. (ख)
11. (क)	12. (ख)	13. (घ)	14. (क)	15. (ख)
16. (ग)	17. (ख)	18. (क)	19. (क)	20. (घ)
21. (ख)	22. (ग)	23. (ख)	24. (ख)	25. (क)
26. (घ)	27. (ख)	28. (क)	29. (क)	30. (क)
31. (घ)	32. (क)	33. (घ)	34. (ग)	35. (ख)
36. (घ)	37. (घ)	38. (क)	39. (क)	40. (घ)
41. (ग)	42. (क)	43. (ग)	44. (क)	45. (ख)

◆◆◆

Pariksha Manthan

भाषा एवं बोलियां : एक परिचय

विचार एवं भावों को भली-भांति व्यक्त करने का माध्यम भाषा होती है। इसके जरिए जहां सामाजिक प्राणी अपने विचारों व भावों को साफ-साफ व्यक्त कर सकता है, वहीं दूसरे के भावों और विचारों को समझता और ग्रहण करता है। किसी भी समाज में भाषा का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि यदि भाषा न हो तो सामाजिक व्यवहार व क्रियाकलाप संभव न हों। मौन का सन्नाटा पसर जाए और अव्यक्त का माहौल निर्मित हो जाए। माध्यम चाहे बोल-चाल का हो या लिखा-पढ़ी का, व्यवहार को गति भाषा से ही मिलती है। यही कारण है कि भाषा को जगत के व्यवहार का मूल माना गया है।

भाषा शब्द हमें संस्कृत की ''भाष्' धातु से प्राप्त हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ है वाणी को व्यक्त करना। विचारों के विनिमय का सशक्त माध्यम भाषा होती है। भाषा की विशेषता यह भी है कि यह परिवर्तनशील होती है। यानी इसमें स्थिरता नहीं है। समयानुसार इसमें धीरे-धीरे परिवर्तन होते रहते हैं, कुछ नये शब्द जुड़ते रहते हैं, तो कुछ व्यवहार से विलुप्त हो जाते हैं। इस प्रकार भाषा परिष्कृत भी हुआ करती है और परिवर्तित भी। समय के साथ-साथ भाषा समृद्ध भी होती रहती है। भाषा पर भौगोलिक स्थितियों और स्थानीय जलवायु भी प्रभाव डालती है। स्थान विशेष की सभ्यता और संस्कृति का भी इस पर प्रभाव पड़ता है। भारत में ही देखिए, राजस्थान और बिहार की बोली-भाषा में आपको व्यापक अंतर दिखेगा। स्थानीयता का प्रभाव भी आप साफ महसूस करेंगे।

भाषा शब्दों से बनती है। यदि शब्द न हों, तो भाषा की कल्पना ही नहीं की जा सकती। मूल ध्वनियां मिलकर जब सार्थक ध्वनि बनाती हैं, तो उसे शब्द कहते हैं। कई शब्दों से मिलकर वाक्य बनता है। भाषा की शुचिता और सार्थकता के लिए शब्दों का सही चयन आवश्यक होता है। विचारों के संग्रह या उन्हें दूर तक पहुंचाने के लिए हम लिखित भाषा का प्रयोग करते हैं, जबकि वाणी के माध्यम से अभिव्यक्ति के लिए मौखिक भाषा प्रयुक्त होती है। मुख्य रूप से भाषा के यही दो रूप होते हैं। लिखित भाषा के लिए वर्ण का प्रयोग होता है। मूल ध्वनि के आधार पर पहचान के लिए बनाए गए चिह्न वर्ण कहलाते हैं। भाषा को पांच भागों में बांटा गया है, जो इसके अंग होते हैं। ये इस प्रकार हैं—(1) ध्वनि (2) वर्ण (3) शब्द (4) वाक्य (5) लिपि। इनका अंतःसंबंध होता है।

वर्णों के समूह को व्यवस्थित कर वर्णमाला बनाई जाती है। हिन्दी वर्णमाला स्वर और व्यंजन से मिलकर बनी है।

स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन : क, ख, ग, घ, ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण (ड़ ढ़)
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व
श ष स ह

हिन्दी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन की संख्या क्रमशः 11 और 33 है। संस्कृत भाषा के व्याकरण में स्वरों को 'अच्' तथा व्यंजनों को 'हल्' नाम से जाना जाता है।

स्वर वे वर्ण होते हैं जो स्वतंत्र रूप से बोले जाते हैं। ये वर्ण व्यंजनों के उच्चारण में सहायता प्रदान करते हैं।

व्यंजन वे वर्ण होते हैं, जिनके उच्चारण के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है।

स्वरों के प्रकार

स्वर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं—

(1) मूल स्वर : इसमें वे स्वर वर्ण आते हैं, जिनके उच्चारण में समय कम लगता है। जैसे—अ, इ, उ, ऋ आदि।

(2) संधि स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वरों की तुलना में लगभग दोगुना समय लगता है उन्हें संधि स्वर कहते हैं। जैसे—आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ। मूल स्वरों की अपेक्षा ज्यादा समय लगने के कारण इन्हें दीर्घ स्वर भी कहा जाता है।

(3) प्लुत स्वर : इस श्रेणी में वे स्वर आते हैं, जिनके उच्चारण में मूल स्वरों की तुलना में तीन गुना समय लगता है। **जैसे**—रा ऽ ऽ ऽ म् , ओ ऽ ऽ ऽ म् आदि।

व्यंजनों के प्रकार

व्यंजन भी मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं—

(1) स्पर्श व्यंजन : ये वे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण करते समय जीभ का स्पर्श मुख के किसी भी स्थान से होता है। 'क' से 'म' तक आने वाले पच्चीस व्यंजन इसी श्रेणी में आते हैं।

(2) अन्तःस्थ व्यंजन : इस श्रेणी में वे व्यंजन आते हैं, जिनका उच्चारण करते समय जीभ मुख का स्पर्श तो करती है, मगर यह स्पर्श पूरा नहीं होता है। जैसे—य, र, ल, व आदि।

(3) ऊष्म व्यंजन : जैसा नाम से ही विदित होता है, इस श्रेणी में आने वाले व्यंजनों का उच्चारण करते समय ऊष्मा पैदा होती है। ऐसा सांस की मुख से रगड़ के कारण होता है। सांस रगड़ खाकर निकलती है। ऊष्म व्यंजनों में श, ष, स, ह आदि आते हैं।

लिपि

वर्णों को व्यवस्थित ढंग से जिस रूप में लिखा जाता है, उसे लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा के लिए देवनागरी लिपि प्रयुक्त होती है। हिन्दी भाषा में अधिकांश शब्द संस्कृत से लिए गए हैं। संस्कृत के लिए भी देवनागरी लिपि ही प्रयुक्त होती है। चूंकि संस्कृत को देव भाषा का दर्जा प्राप्त है, इसीलिए यह लिपि देवनागरी कहलाई। भारत में मराठी भाषा की लिपि भी देवनागरी है।

Pariksha Manthan

देवनागरी लिपि एक व्यवस्थित लिपि है। इसकी विशिष्टता यह है कि इसमें छपाई और लिखाई का अंतर नहीं है। यह लिपि बाएं से दाएं ओर लिखी जाती है। इस लिपि में ध्वनि का विशेष ध्यान रखा गया है। जहां ध्वनियों का क्रम पूर्णतः वैज्ञानिक है, वहीं अलग-अलग लिपि चिह्न, अलग-अलग ध्वनि के लिए प्रयुक्त होते हैं। इससे ध्वनि और लिपि का समन्वय उत्कृष्ट रहता है। इसमें नये व्यंजन गढ़ने की गुंजाइश भी रहती है। यथा—ड़ और ढ़ जैसे व्यंजन इसी श्रेणी में आते हैं।

भारत के संविधान में देवनागरी लिपि को मान्यता दी गई है। संविधान के तहत (अनुचछेद 343) राजभाषा के रूप में हिन्दी तथा लिपि के रूप में देवनागरी स्वीकृत है। 14 सितंबर, 1949 को भारत के संविधान में राजभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता प्रदान की गई थी। इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितंबर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश तथा अंडमान निकोबार में यह राजभाषा के रूप में मान्य है, वहीं महाराष्ट्र, गुजरात और पंजाब की यह द्वितीय भाषा है।

हिन्दी भाषा का नाम 'हिन्दी' होने के पीछे विदेशियों का योगदान रहा। नामकरण का इतिहास सिन्धु नदी से जुड़ा है। ईरानी लोग 'स' का उच्चारण 'ह' जैसा करते हैं। ईरानियों से भारत के पुराने संबंध रहे हैं। वे सिन्धु को 'हिन्दु' उच्चारित करते थे। इस नदी के किनारे रहने वालों को भी 'हिन्दु' कहते थे। यहां की भाषा को भी वे 'हिन्दु' नाम से ही पुकारते। 'अवेस्ता' नामक ईरानियों के धर्म-ग्रंथ में 'हिन्दु' 'हिन्दी' जैसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

ईरान में मध्यकाल में ईक प्रत्यय हिन्दु में जुड़ा तो शब्द निकला हिन्दीक्, जिसे हिन्दीग् भी बोला जाने लगा। बाद में क् और ग् का लोपन हो गया और हिन्दी शब्द अस्तित्व में आया। बाद में यही हिन्दी भाषा के लिए प्रयोग किया जाने लगा। मध्यकालीन ऐतिहासिक दस्तावेजों में भी 'जबान-ए-हिन्दी' का जिक्र मिलता है। मध्यकालीन जनभाषा के लिए भी 'हिन्दवी' शब्द का उल्लेख अरबी-फारसी के विद्वानों ने किया है। विकास के कई पायदानों पर चढ़कर हिन्दी परिष्कृत और समृद्ध हुई और आज मानक हिन्दी के रूप में हमारे सामने है।

उत्तर प्रदेश की बोलियां

उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से जिन बोलियों का प्रचलन है, वे हैं—(1) खड़ी बोली (2) ब्रजभाषा (3) बुंदेली (4) कन्नौजी (5) अवधी (6) भोजपुरी एवं (7) बघेली। यहां क्रमशः हम इन पर प्रकाश डाल रहे हैं।

1. खड़ी बोली : इसे 'कौरवी' भी कहते हैं। इसका उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ। यह भाषा मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, बिजनौर, रामपुर, मेरठ व मुरादाबाद जनपदों व आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है। मानक हिन्दी के रूप में हिन्दी भाषा के जिस रूप को स्वीकार किया गया है, वह खड़ी बोली ही है।

2. ब्रजभाषा : शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से विकसित हुई ब्रजभाषा मुख्य रूप से ब्रज क्षेत्र की भाषा है। यह मुख्य रूप से आगरा, मथुरा, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी, एटा, इटावा, बदायूं, बरेली तथा आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है। साहित्य और लोक साहित्य दोनों दृष्टियों से ब्रजभाषा अत्यंत संपन्न है। हिन्दी प्रदेश के बाहर भी भारत के अनेक क्षेत्रों में ब्रजभाषा साहित्य की रचना होती रही है। सूरदास, नन्ददास, रहीम, रसखान, बिहारी, देव और रत्नाकर आदि इसके प्रमुख कवि हैं।

3. बुंदेली : इसे बुंदेलखंडी भी कहते हैं। शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित बुंदेली भाषा मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के झांसी, जालौन, हमीरपुर, ललितपुर तथा महोबा आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। बुंदेली में लोक साहित्य का सृजन खूब हुआ। इस भाषा में सृजित 'ईसुरी के फाग' अत्यंत प्रसिद्ध हैं। हिन्दी प्रदेश की प्रसिद्ध लोकगाथा 'आल्हा', जिसे हिन्दी साहित्य में भी स्थान मिला हुआ है, मूलतः बुंदेली की ही एक उपबोली बनाफर में लिखा गया है।

4. कन्नौजी : कन्नौज, जिसे कान्यकुब्ज भी कहते हैं, इस बोली का केंद्र है, अतः इसका नाम कन्नौजी पड़ा। यह भाषा शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। यह ब्रजभाषा से इतनी अधिक समान है कि कुछ लोग इसे ब्रजभाषा की ही एक उपबोली मानते हैं। कन्नौजी भाषा में पर्याप्त लोक साहित्य मिलता है। यह भाषा उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर, कानपुर, हरदोई एवं पीलीभीत आदि में बोली जाती है।

अवधी : इस बोली का केंद्र अयोध्या है। अयोध्या का ही विकसित रूप अवध है। इसी से अवधी शब्द बना है। अधिकांश विद्वान इस भाषा का संबंध अर्धमागधी अपभ्रंश से मानते हैं, किंतु कुछ लोग इसे 'पालि' की समानता के आधार पर इस मत को नहीं मानते हैं। अवधी में साहित्य एवं लोक साहित्य दोनों पर्याप्त मात्रा में हैं। इसके प्रसिद्ध कवि मुल्ला, दाऊद, कुतुवन, जायसी, तुलसीदास, उस्मान एवं सबल सिंह आदि अवधी भाषा के रत्न माने जाते हैं। यह भाषा मुख्य रूप से लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मीरजापुर (अंशतः), उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, बस्ती, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ एवं बाराबंकी आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

6. भोजपुरी : वैसे तो बिहार प्रांत के भोजपुर गांव से उद्गमित मानी जाने के कारण भोजपुर के नाम के आधार पर इस बोली का नाम भोजपुरी पड़ा, किंतु यह उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में प्रचलित है। यह बोली मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से विकसित हुई। हिन्दी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी बोलने वाले सबसे अधिक हैं। इस भाषा में शिष्ट साहित्य कम, लोक साहित्य अधिक मिलता है। यह भाषा उत्तर प्रदेश के बनारस, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, मीरजापुर, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती आदि जनपदों व आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

7. बघेली : वैसे तो यह मुख्य रूप से बघेलखण्ड में बोली जाने वाली बोली है, किंतु इसका प्रचलन उत्तर प्रदेश के बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, ललितपुर, महोबा व झांसी जैसे उन क्षेत्रों में है, जो बघेलखण्ड के निकटवर्ती हैं।

(**नोट** : उत्तर प्रदेश की उक्त समस्त बोलियों की लिपि देवनागरी है।)

Pariksha Manthan

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विचारों और भावों की अभिव्यक्ति के लिए किसका प्रयोग किया जाता है?
   (क) लिपि (ख) वर्ण
   (ग) स्वर (घ) भाषा
2. कोई भाषा समृद्ध होती है—
   (क) दूसरी भाषा से ध्वनि लेकर
   (ख) दूसरी भाषा से शब्द लेकर
   (ग) दूसरी भाषा से अक्षर लेकर
   (घ) दूसरी भाषा का उच्चारण लेकर
3. भाषा का प्राचीन स्वरूप क्या है?
   (क) लिखित (ख) मौखिक
   (ग) सांकेतिक (घ) कोई नहीं
4. देव भाषा किसे कहते हैं?
   (क) हिन्दी (ख) मराठी
   (ग) संस्कृत (घ) पंजाबी
5. निम्नलिखित में कौन-सी प्राचीन भारतीय भाषा के रूप में जानी जाती है?
   (क) संस्कृत (ख) अरबी
   (ग) फारसी (घ) पाली
6. जो भाषा एक क्षेत्र विशेष में बोली जाती है उसे क्या कहते हैं?
   (क) राजभाषा (ख) बोली
   (ग) राष्ट्रभाषा (घ) कोई नहीं
7. मानक हिन्दी (Standard Hindi) से क्या आशय है?
   (क) साधारण बोलचाल की भाषा
   (ख) वह स्तरीय भाषा, जो साहित्यिक पुस्तकों में प्रयुक्त होती है
   (ग) सुसभ्य लोगों की भाषा
   (घ) लिखाई-पढ़ाई में प्रयुक्त भाषा
8. किस वेद में संस्कृत भाषा का प्राचीनतम रूप दिखता है?
   (क) सामवेद (ख) अथर्ववेद
   (ग) ऋग्वेद (घ) यजुर्वेद
9. संविधान के किस अनुच्छेद के तहत हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है—
   (क) अनुच्छेद-343 (ख) अनुच्छेद-21
   (ग) अनुच्छेद-344 (घ) अनुच्छेद-32
10. भारत में सबसे ज्यादा प्रचलित भाषा कौन सी है?
    (क) संस्कृत (ख) उर्दू
    (ग) हिन्दी (घ) गुजराती
11. हिन्दी भाषा को जन्म देने वाली प्राचीन भाषा कौन सी है?
    (क) संस्कृत (ख) अरबी
    (ग) फारसी (घ) खस अपभ्रंश
12. निम्नांकित में से किस भाषा को संस्कृत का अपभ्रंश माना जाता है?
    (क) पाली (ख) फारसी
    (ग) उर्दू (घ) अवधी
13. सबसे पहले हिन्दी का उल्लेख निम्न में से किसमें हुआ?
    (क) श्रीरामचरितमानस (ख) ऋग्वेद
    (ग) महाभारत (घ) गीता
14. "एक मनई के दुई बेटवे रहिन। ओह मा लहुरा अपने बाप से कहिस - दादा....धन मा जवन हमार हींसा लागत होय तवन हमका दै-द।"
    उक्त अवतरण में कौन सी बोली प्रयुक्त हुई है?
    (क) कन्नौजी (ख) अवधी
    (ग) राजस्थानी (घ) भोजपुरी
15. ढूँढाणी किस क्षेत्र विशेष की बोली है?
    (क) पूर्वी राजस्थान की (ख) पश्चिमी राजस्थान की
    (ग) दक्षिणी राजस्थान की (घ) उत्तरी राजस्थान की
16. खड़ी बोली का प्रचलित दूसरा नाम क्या है?
    (क) कौरवी (ख) कन्नौजी
    (ग) अवधी (घ) ब्रजभाषा
17. निम्नांकित में किस बोली में पश्चिमी हिन्दी का पुट नहीं है?
    (क) बुंदेली (ख) कन्नौजी
    (ग) मगही (घ) कौरवी
18. ब्रजभाषा की ख्याति किस रूप में सबसे अधिक है?
    (क) राष्ट्रभाषा (ख) काव्य भाषा
    (ग) राजभाषा (घ) तकनीकी भाषा
19. किस क्षेत्रीय अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा अस्तित्व में आई?
    (क) मागधी अपभ्रंश (ख) शौरसेनी अपभ्रंश
    (ग) महाराष्ट्री अपभ्रंश (घ) ब्राचड अपभ्रंश
20. किस उप भाषा की बोली अवधी है?
    (क) ब्रजभाषा (ख) बिहारी भाषा
    (ग) खड़ी बोली (घ) भोजपुरी
21. निम्नांकित में से कौन सी बोली-भाषा हिन्दी से संबंधित नहीं है?
    (क) खड़ी बोली (ख) कन्नौजी
    (ग) अवधी (घ) तेलुगू
22. वर्णों का अर्थपूर्ण समूह क्या कहलाता है?
    (क) शब्द (ख) वक्तव्य
    (ग) वर्ण समूह (घ) वाक्य
23. निम्नांकित में से कौन वर्ण कहलाता है?
    (क) ध्वनि (ख) अखंडित ध्वनि

Pariksha Manthan

(ग) शब्द समूह (घ) शब्द

24. वर्णों की संख्या कितनी है?
(क) 52 (ख) 51
(ग) 54 (घ) 42

25. 'स्वर' के लिए एक अन्य नाम भी प्रयुक्त होता है, वह कौन है?
(क) अच् (ख) हल्
(ग) प्लुत् (घ) मूर्धन्य

26. मानक वर्ण कौन सा है?
(क) ध (ख) भ
(ग) ख (घ) झ

27. किन वर्णों के सहयोग से 'ज्ञ' वर्ण बना है?
(क) ज+न्य (ख) ज+ञ
(ग) ज+य (घ) कोई नहीं

28. जो बिन्दु स्वरों के सिरे पर लगते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
(क) चन्द्र बिन्दु (ख) अनुनासिक
(ग) अनुस्वार (घ) अर्धचन्द्र बिन्दु

29. 'क्ष' वर्ण का योग क्या है?
(क) क्+छ् (ख) क्+श
(ग) क्+च् (घ) क्+ष्

30. हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
(क) रोमन (ख) गुरुमुखी
(ग) ब्राह्मी (घ) देवनागरी

31. निम्नांकित में से कौन सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है?
(क) सिंधी (ख) मराठी
(ग) गुजराती (घ) पंजाबी

32. ब्रजभाषा को लिखने के लिए किस लिपि का प्रयोग होता है?
(क) देवनागरी (ख) रोमन
(ग) फारसी (घ) ब्राह्मी

33. अधिकांश भारतीय भाषाओं का विकास किस लिपि में हुआ?
(क) कुटिल लिपि (ख) ब्राह्मी लिपि
(ग) खरोष्ठी लिपि (घ) शारदा लिपि

34. लिखने और बोलने में किस देश में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है?
(क) पाकिस्तान (ख) मारीशस
(ग) आस्ट्रेलिया (घ) दक्षिण अफ्रीका

35. हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 14 दिसंबर (ख) 14 नवंबर
(ग) 14 अगस्त (घ) 14 सितंबर

36. किस धातु से 'भाषा' शब्द की उत्पत्ति हुई है?
(क) भाष् (ख) भाषा
(ग) भाष्य (घ) भाष्

37. भाषा की मूल इकाई क्या है?
(क) ध्वनि (ख) वाक्य
(ग) भाव (घ) शब्द

38. मानक हिन्दी के रूप में हिन्दी भाषा का कौन सा रूप स्वीकार किया गया है?
(क) पूर्वी हिन्दी (ख) खड़ी बोली
(ग) पश्चिमी हिन्दी (घ) पहाड़ी हिन्दी

39. आजकल संचार माध्यमों में हिन्दी के किस रूप का प्रयोग हो रहा है?
(क) पश्चिमी (ख) टकसाली
(ग) मानक (घ) कोई नहीं

40. निम्नांकित में से किससे संबंधित है छत्तीसगढ़ी बोली?
(क) पूर्वी हिन्दी (ख) पहाड़ी हिन्दी
(ग) पश्चिमी हिन्दी (घ) बिहारी हिन्दी

41. निम्नलिखित में से कौन सी भाषा राष्ट्रभाषा की श्रेणी में आती है?
(क) साहित्य सृजन की भाषा
(ख) सरकारी कामकाज की भाषा
(ग) संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा
(घ) वह भाषा, जिसका प्रयोग बहुसंख्यक देशवासियों द्वारा किया जाता है

42. किसी सरकारी पत्र के लेखन में कौन-सी भाषा प्रयुक्त होती है?
(क) मुहावरेदार (ख) साहित्यिक
(ग) औपचारिक (घ) साधारण बोलचाल की भाषा

43. निम्नांकित में संयुक्त व्यंजन कौन-सा है?
(क) ज्ञ (ख) ढ़
(ग) ड़ (घ) ङ

44. नीचे दिए गए प्रदेशों में से किस प्रदेश की राजभाषा हिन्दी नहीं है?
(क) बिहार (ख) मध्य प्रदेश
(ग) पंजाब (घ) हरियाणा

45. देवनागरी किस प्रकार की लिपि है?
(क) चित्रात्मक (ख) अक्षरात्मक
(ग) संकेतात्मक (घ) ध्वन्यात्मक

46. दक्षिण-भारत में देवनागरी किस रूप में जानी जाती है?
(क) नन्दनागरी (ख) देवनागरी
(ग) ब्रह्मनागरी (घ) उत्तरनागरी

47. 'य, र, ल, व' किस प्रकार के व्यंजन हैं?
(क) अन्तःस्थ (ख) ऊष्म
(ग) स्पर्श (घ) कोई नहीं

Parikshā Manthan

48. निम्नलिखित में से कौन मानक भाषा नहीं है?
(क) हिन्दी (ख) उर्दू
(ग) अवधी (घ) अंग्रेजी

49. संधि स्वरों की क्या विशेषता है?
(क) इनके उच्चारण में मूल स्वरों से कम समय लगता है
(ख) उच्चारण में मूल स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है
(ग) उच्चारण में मूल स्वरों की तुलना में तिगुना समय लगता है
(घ) इनमें से कोई नहीं

50. निम्नलिखित में से कौन दीर्घ स्वर के नाम से भी जाना जाता है?
(क) मूल स्वर (ख) प्लुत स्वर
(ग) संधि स्वर (घ) कोई नहीं

51. अ, इ, उ, ऋ कहलाते हैं—
(क) संधि स्वर (ख) प्लुत स्वर
(ग) मूल स्वर (घ) कोई नहीं

52. 'क' से 'म' तक आने वाले 25 व्यंजन किस प्रकार के व्यंजन होते हैं?
(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अन्तःस्थ व्यंजन
(ग) ऊष्म व्यंजन (घ) कोई नहीं

53. श, ष, स, ह किस प्रकार के व्यंजन हैं?
(क) ऊष्म व्यंजन (ख) अन्तःस्थ व्यंजन
(ग) स्पर्श व्यंजन (घ) कोई नहीं

54. देवनागरी लिपि किस ओर से लिखी जाती है?
(क) दाएं से बाएं (ख) बाएं से दाएं
(ग) नीचे से ऊपर (घ) कोई नहीं

55. हिन्दी भाषा का नामकरण किस नदी से जुड़ा है?
(क) गंगा (ख) यमुना
(ग) सरस्वती (घ) सिन्धु

56. 'भाष्' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(क) वाणी को व्यक्त करना
(ख) विचारों को लिपिबद्ध करना
(ग) भाषा को गढ़ना
(घ) लिखा-पढ़ी करना

57. क्या भाषा पर स्थानीय जलवायु और भौगोलिक स्थितियों का प्रभाव पड़ता है?
(क) हां
(ख) नहीं
(ग) कुछ नहीं कहा जा सकता
(घ) कोई नहीं

58. मूल ध्वनियां मिलकर जब सार्थक ध्वनि बनाती हैं, तो इसे कहते हैं?
(क) वाक्य (ख) वक्तव्य
(ग) अनुच्छेद (घ) शब्द

59. उच्चारण की दृष्टि से 'रा ऽ ऽ ऽ म्' स्वरों की किस श्रेणी में आएगा?
(क) दीर्घ स्वर (ख) संधि स्वर
(ग) प्लुत स्वर (घ) कोई नहीं

60. 'जबान-ए-हिन्दी' का उल्लेख किस काल के दस्तावेजों में मिलता है?
(क) प्राचीनकालीन (ख) मध्यकालीन
(ग) आधुनिककालीन (घ) कोई नहीं

61. निम्नलिखित में से किस एक नाम से 'कौरवी' जानी जाती है?
(क) भैरवी (ख) खड़ी बोली
(ग) मैनपुरी (घ) ब्रज

62. 'मानक हिन्दी' से तात्पर्य है—
(क) भोजपुरी से (ख) बघेली से
(ग) कन्नौजी से (घ) खड़ी बोली से

63. आगरा, मथुरा एवं अलीगढ़ के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा कौन-सी है?
(क) भोजपुरी (ख) बघेली
(ग) बुन्देली (घ) ब्रजभाषा

64. शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से विकसित हुई भाषा है—
(क) ब्रजभाषा (ख) खड़ी बोली
(ग) अवधी (घ) भोजपुरी

65. सूरदास ने किस भाषा में रचनाओं का सृजन किया?
(क) खड़ी बोली (ख) अवधी
(ग) ब्रजभाषा (घ) बुन्देली

66. उत्तर प्रदेश के झांसी, जालौन, हमीरपुर, ललितपुर एवं महोबा में किन बोलियों का प्रचलन है?
(क) बुन्देली और बघेली (ख) कन्नौजी और ब्रजभाषा
(ग) खड़ी बोली और भोजपुरी (घ) इनमें से कोई नहीं

67. 'बनाफर' है—
(क) बुन्देली की उपबोली (ख) अवधी की उपबोली
(ग) ब्रजभाषा की उपबोली (घ) भोजपुरी की उपबोली

68. 'ईसुरी के फाग' का संबंध निम्नलिखित में से किस भाषा से है?
(क) कन्नौजी (ख) अवधी
(ग) खड़ी बोली (घ) बुन्देली

69. उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद एवं शाहजहांपुर में प्रचलित बोली है—

Pariksha Manthan

(क) कन्नौजी (ख) अवधी
(ग) भोजपुरी (घ) बघेली

70. 'ब्रजभाषा' से मिलती-जुलती बोली है—
(क) कन्नौजी (ख) भोजपुरी
(ग) अवधी (घ) खड़ी बोली

71. अयोध्या किस बोली का केंद्र है?
(क) भोजपुरी (ख) बघेली
(ग) कन्नौजी (घ) अवधी

72. निम्नलिखित में से अवधी भाषा का कवि कौन है?
(क) रसखान (ख) सूरदास
(ग) तुलसीदास (घ) रहीम

73. निम्नलिखित में से किस भाषा से कवि कुतुवन का संबंध था?
(क) अवधी (ख) ब्रजभाषा
(ग) बुन्देली (घ) बघेली

74. भोजपुरी भाषा का उद्‌गम स्थल माना जाता है—
(क) बिहार का भोजपुर गांव
(ख) उत्तर प्रदेश का शिवली गांव
(ग) मध्य प्रदेश का बड़ा गांव
(घ) उत्तर प्रदेश का नंद गांव

75. भोजपुरी भाषा का विकास हुआ—
(क) मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से
(ख) शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से
(ग) शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से
(घ) इनमें से कोई नहीं

76. हिन्दी प्रदेश की बोलियों में सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली है—
(क) ब्रजभाषा (ख) कन्नौजी
(ग) बुन्देली (घ) भोजपुरी

77. उत्तर प्रदेश के बलिया और आजमगढ़ जनपदों में प्रचलित बोली है—
(क) बघेली (ख) खड़ी बोली
(ग) भोजपुरी (घ) कन्नौजी

78. बघेलखण्ड के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाने वाली बोली है—
(क) ब्रजभाषा (ख) बघेली
(ग) अवधी (घ) कन्नौजी

79. भोजपुरी भाषा की लिपि है—
(क) गुरुमुखी (ख) ब्राह्मी
(ग) कुटिल (घ) देवनागरी

80. बहराइच, सुल्तानपुर, रायबेरली किस बोली के क्षेत्र हैं?
(क) छत्तीसगढ़ी (ख) बघेली
(ग) ब्रजभाषा (घ) अवधी

उत्तरमाला

1. (घ)	2. (ख)	3. (ग)	4. (ग)	5. (क)
6. (ख)	7. (ख)	8. (ग)	9. (क)	10. (ग)
11. (क)	12. (क)	13. (क)	14. (घ)	15. (क)
16. (क)	17. (ग)	18. (ख)	19. (ख)	20. (क)
21. (घ)	22. (क)	23. (ख)	24. (क)	25. (क)
26. (घ)	27. (ख)	28. (ग)	29. (क)	30. (घ)
31. (ख)	32. (क)	33. (ख)	34. (ख)	35. (घ)
36. (क)	37. (क)	38. (ख)	39. (ग)	40. (क)
41. (घ)	42. (ग)	43. (क)	44. (ग)	45. (ख)
46. (क)	47. (क)	48. (ग)	49. (ख)	50. (ग)
51. (ग)	52. (क)	53. (क)	54. (ख)	55. (घ)
56. (क)	57. (क)	58. (घ)	59. (ग)	60. (ख)
61. (क)	62. (घ)	63. (घ)	64. (क)	65. (ग)
66. (क)	67. (क)	68. (घ)	69. (क)	70. (क)
71. (घ)	72. (ग)	73. (क)	74. (क)	75. (क)
76. (घ)	77. (ग)	78. (ख)	79. (घ)	80. (घ)

◆◆◆

Parikshā Manthan